HINDUSTANI ACADEMY
Hindi Section
Library No 1001
Date of Receipt 23/12/27

सीतारामविवाहसंग्रह ॥

गोस्वामि तुलसीदासजीकृत मानसरामायण बालकाण्ड और अनेक सद्ग्रन्थोंसे श्रीसीतारामविवाहोत्सव का संग्रह किया गया है

श्रीमान् तपोमूर्त्ति परमरसिक श्रीसीताराम शरण जी की आज्ञानुसार त्रिपाठि श्यामनाथजी कवि राधावल्लभजी मुंशी निरंजनलालजीकी सहायतासे श्रीसवाई जयनगर मध्य रसिकजन कृपाभिलाषी रामप्रताप चित्रकारने परम उत्साहयुत सज्जनोंके भावानुभाव निमित्त प्रकट किया ॥

प्रथमबार

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
अक्टूबर सन् १८९२ ई० ॥

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम
पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परम रहस्य गीताशास्त्र क
सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या
गुणसंपन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जान
के हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारव
भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर करायाहै वही उक्तभगवद्गीता वज्र
वत् वेदांत व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्त
अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासके तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल
देश भाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्यहै वहकब इसकेअन्त
राभिप्रायको जानसकेहैं—और यह प्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी
पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि
में न भासितहो तबतक आनंद क्योंकर मिलै इसप्रकार संपूर्ण
भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्जरसिकजनोंके चित्तानंदार्थ व
बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्या
विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी (सी.
आई, ई) ने बहुतसाधन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि पंडित
उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको
श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरलदेश भाषा
में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमल
सरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्र के जानने
वाले पुरुष भी जानसक्ते हैं ॥

मिताक्षरा भाषा टीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रोंका शिरोमणिहै जिसमें आचार
काण्ड,व्यवहारकाण्ड औरप्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीनकाण्डहैं
जिनसे गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के
सम्पूर्ण कर्मधर्मादि और राजसम्बन्धीकार्योंमें दायभागादि व्यव-
हारोंमें वादी प्रतिवादियोंके धर्म शास्त्रसम्बन्धी मामिले और
मक़द्दमों की व्यवस्था वर्णित है ॥

प्रकरण	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ
१	श्रीरघुनन्दन किशोर अवस्थाके चरित्र सूक्ष्म रीतिसे अरु श्रीजानकीजूकी षट्वर्षकी अवस्थामें बायेंहस्तकमलसे शिवके धनुषकोउठालेना विदेह महाराजकाप्रणकर स्वयंबरकरनेका बिचार और बिश्वामित्रजीका अपनेआश्रमसे क्वारबदी ६ को अयोध्यापुरीमेंआगमन दशरथमहाराजसे श्रीराम लक्ष्मणको यज्ञरक्षार्थ मांगकर अपने संगलै क्वार बदी १२ चारदंड दिनचढ़े चले निज आश्रमको मार्ग बर्णन अरु ताडकाबध ॥	७	३२
२	बिश्वामित्रजी श्रीअवधेशकुमारन सहित आनंदसे निज आश्रमको ५ दिनमें पहुंचे गाधिसुवनने यज्ञप्रारम्भकिया सुबाहु मारीचकाबध पश्चात् बिश्वामित्रजी राम लषणलालजूको संगले गमन किया मिथिलाको मगमें अहल्या उद्धार करके क्वार सुदी १२ को जनकपुर पहुंचे ॥	३३	५०
३	बिश्वामित्रजीकाआगमन सुनकर जनकमहाराजका मिलिबे को पधारना वा श्रीरामचंद्र लक्ष्मणको देखिकै बिदेह महाराजको अति आनंद होना और श्रीराजकिशोरनका वाहिदिन नगर अवलोकन पुरके नर नारि राम लषणजी की परम माधुरी देखकर मोहबश होना ॥	५१	७२
४	क्वार सुदी त्रयोदशीको गाधिसुवनकी आज्ञापायकै श्रीदशरथ राजकिशोर चितचोर सुमनलेने हेतु पुष्पवाटिका में पधारना वहीं श्री जानकीजीका गिरिजापूजन निमित्त समाज सहित आना वा श्रीराजकिशोर राजकिशोरीजूका परस्पर अ-		

प्रकरण	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ
	वलोकन परमानंद पुनि श्रीजानकीजू गिरिजाजू सों बरदानपाइकै निजमंदिर गमन ॥	७३	१००
५	जनक महाराज स्वयंबर साज सजिकै सतानंदजी जाय जनक बिनय सुनाय बिश्वामित्र मुनिके श्रीराम लषणजी अरु मुनि मंडली सहित स्वयंबर देखने जाना ॥	१०१	१०८
६	सतानंदजीका निदेशपाय महारानी सुनयना जीका श्रीजानकीजीको धनुष पूजनार्थ रंगभूमि में पठाना पुरजन परिजनोंका युगल माधुरीका निज २ भावानुकूल अवलोकन ॥	१०९	११५
७	रंगभूमि राजसमाज मध्य बिदेह महाराज की आज्ञासे बंदीजनोंका जनक प्रणको सुनाना तहां विविध नृपनका उपहास्य योग्यहोना समाजमें॥	११६	१२[illegible]
८	बिश्वामित्रमुनिराजकी आज्ञापायकै राजसमाजमें श्रीरामचन्द्र जी का शिव धनु भंगकरना क्वारसुदी १५ पूर्णमासी को मध्याह्नसमय ॥	१२८	१३३
९	धनुषभंग पश्चात् सतानंदजीकी आज्ञासों सुनयना जी सायुध सखीसंगदै रंगभूमि भेजना श्री जानकीजूकाजयमालाश्रीरामचंद्रजीकोपहिराना॥	१३४	१४१
१०	धनुभंग धुनि सुन परशुरामका रंगभूमिमेंआना॥	१४२	१५१
११	जनक महाराज बिवाहपत्रदैकै दूतों को अयोध्या पुरी भेजना अरु बिवाह के अनेक साज सजना मंडप इत्यादि ॥	१५२	१६८
१२	दशरथ महाराज दूतनसों जनकपुरके धनुष भंग वृत्तांतसुनकर बिवाहके बिबिधमंगल उत्साहअवध मेंकरकेबरातसजाय गमनकरना कार्तिकबदी८को	१६९	१७४

प्रकरण	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ
१३	बरातका आगमन सुनकर जनक महाराज का अगवानी लाना अवध महाराज सों मिलके जनवासे बसाय बिदेहजी का निज मन्दिर जाना और वाहीदिन मध्याह्न समय विश्वामित्रजी श्री रामलषणलालजूको संगले जनवासे आयदशरथ महाराजको देना जनकपुरमें बरातआई कार्तिक बदी १३ को और कार्तिकके १८ दिन अरु अगहन के१९दिन सब मिलकर१ मास७दिन बरातरही ॥	१७५	२०३
१४	जनवासेमें दशरथमहाराजके पास सतानन्दजी का लग्नपत्रिका लेके आना औ श्रीरामचंद्र जू के तेल चढ़ाय लौकिक वैदिक नहछूचारादि कर बरात सजाय अगहन सुदी ५ के दिन जनक मंदिरमें पधारना ॥	२०४	२२८
१५	श्रीराम सियाजूकीभांवरि और भरत लषण शत्रुहन कुमारनहुकी भांवरिहोकर कोहरघरमेंबिबिध हास्य बिलास सरहजआदि नारिनसे होकर दुलहिनिन सहित चहुँबंधुनका जनवासेआगमन॥	२३०	२७५
१६	परमप्रमोदसे कुवँर कलेऊ रहस्यकंकण खोलन चारादि अरु जेंवत समय सरहज सखिन का गारी गाना श्रीरामचन्द्रजी को ॥	२७६	२९०
१७	दशरथ महाराज जिवनार हेतु जनक मन्दिर जाना सकल रघुबंशी बरातियों का जेंवते समय नारिनका गारीगान और चौथिचारादिका होना ॥	२९१	३१४
१८	जनक महाराज का श्री जानकी जू को तीनों भगनिन सहित बिदा करना और चारौ राजकुमारन का बिदाहोने जनकमंदिर पधारना पुर की		

प्रकरण	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	स्त्रियोंका व्याकुलहोना जनक रनिवासमें मिलते भेंटते १ पहर दिन चढ़े बिदा भई कुमारिन की जनकपुर बरात रही १ मास ५ दिन औ पौष सुदी १० को अवधपुर बरात चली ॥	३१५	३५२
१६	दशरथ महाराज श्रीराम लषण भरत शत्रुहनका बिवाह करिकै अयोध्यामें प्रवेश पौष सुदी पूर्णमा को अरु मुखअवलोकनादि नियोगाचारहोकर षट् ऋतुबिहार बर्णन अरु चारों राजकुमारन सखन युत सरयूतट बनमें मृगया करना ॥	३५२	३८८
ऋतु			
१	अथ मृगया वर्णन ॥	३८८	४०३
२	हेमन्तऋतु बसन्तपंचमी उत्सवपुनि महामुनि बिश्वामित्रजीका बिदाहोना माघपूर्णमासीकेदिन॥	४०४	४१२
३	शिशिरऋतु होरी श्रीराम सियाजूकी सखा सखिन सहित परम उमंग से ॥	४१३	४२७
४	बसन्त ऋतु श्रीरामचन्द्रजीके बर्षगांठ उत्सव अरु बागबिहार और माधव शुक्ला नौमि श्रीजनकनंदिनीजूका बर्षगांठ उत्सव बर्णन ॥	४२७	४४२
५	ग्रीष्मऋतु श्रीरामसिय खस बँगले का बर्णन॥	४४३	४४७
६	पावस ऋतु श्रीराम लषण भरत शत्रुहन सखन युत बनमें बिहरना और श्रीरामचन्द्र जानकी जूका झूलन बिहार बर्णन ॥	४४७	४५८
७	शरद्ऋतु श्रीराम सिया जू सखिन सहित सरयू तट रास रहस्य और दीवाली उत्सव पुनि श्रीजानकी बल्लभजू का सिंहासन आसीन होना चारु सिलादि सहचारियों का सेवामें सन्मुख सखियों का नृत्य गान करना ॥	४५८	४७२

अथ भूमिका ॥

दोहा ॥

श्रीसीतापति अरु लषन हनुमत गुरु शिरनाय ॥
गणपति बाणी आदि कवि बसहु हृदय मम आय १
श्रीमत्तुलसीदासजू राम रसिक जे संत ॥
कोबिदजन कविजन परम सब सज्जन मतिवंत २
किंकर रामप्रताप निज सबको करत प्रणाम ॥
तुम्हरी कृपा कटाक्षते होय सकल मन काम ३
बिबिध ग्रन्थ देखैं सुनैं संतन के जे कोय ॥
बहुविध आनँद पाइहैं यह जानै सब कोय ४
ताते एकहि ग्रन्थ में नानाकथन मिलाय ॥
सीताराम बिवाह को संग्रह रचों सुहाय ५

बार्त्तिक ॥

श्रीपरमात्मा परब्रह्म सर्बोपरिपूज्य श्रीमत् रामचन्द्रजी परमेश्वर सच्चिदानन्द सबके नियंता चराचर के स्वामी द्विभुज नवलकिशोर युगल स्वरूप परमप्रकाशक सहस्त्रकिरण अज्ञान तिमिरनाशक नित्यसाकेत धाम बिहारीजूके चरणकमलनमें साष्टांग प्रणाम बारंबार करताहूं जोपरमदयालु करुणाकरकृपासागर हैं तिनकी अनुग्रहको आधारमानके अरु श्रीमंगलमूर्त्ति श्रीमारुतनन्दनजू और सद्गुरु श्रीगोपालदासजी अरु श्रीरूपलताजी महाराज के दासानुदास चरणसेवक जानकीबल्लभ शरण उपनाम रामप्रताप चित्रकार जीवनराम आत्मजने यह चाहा कि श्रीमद्गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराजने जो श्री साकेतधाम बिहारी युगल सरकारकी रहस्यलीला श्रीमानस

रामायण में भलीभांतिसों ललित दोहा छंद चौपाइयोंमें बर्णन की और भी भागवतजन रसिक संत महात्माओं ने अस्मदादि अल्पबुद्धि जीवों के उपकारार्थ जहां तहां बिबिधरीतिसे श्रीसीताराम बिवाह का बर्णनकियाहै और भी सब रसिकजन महात्माओंने अपनी जिह्वा पावनहेतु भगवत् गुणानुबाद कियाहै सो सुनि देखिकै उन सब ग्रन्थोंमेंसे संक्षेपरीतिसे दासको संग्रह करनेकी अभिलाषाहुई कि जिन महानु भावोंने एक ग्रन्थ में जिस बिषयको पूराकथनकिया तो वह प्रकरण दूसरे महात्माओं ने सूक्ष्मकरके कहा तो इन ग्रन्थोंके कथन बिषयमें कितेक दिन यही बिचाररहा परंतु संतोष प्राप्त न हुआ श्रीरामसमाज संवत् १९३५ के सालसे प्रकटहोकर राजसवाई जैपुर आमेरकी चौपड़ श्रीगिरिधारीजी के मंदिरमें अनेक सज्जन सतसंगियों संयुक्त अतिहुलास सहित होतीहै तहां कथाके समय जो दूसरे ग्रन्थ जिसमें बिवाह समय का बिशेष बर्णन है उसको कथा के संगमें व्याख्याकरतेरहैं जिससे अधिक आनंद प्राप्त होतारहा जैसे श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी ने द्वारचारको हर घरके हास्य रस आदिको सूक्ष्मकरके कहा और अनेक भक्तजनोंने इनही प्रकरणोंको बिस्तारकरके कहा जो आनंद के वास्ते परिपूर्ण हैं परंतु मेरी आकांक्षा यह हुई कि जितना प्रकरण उस प्रणालिकासे जो श्रीगोस्वामीजी महाराज ने श्रीमानस रामायण में बिवाहका प्रकरण बर्णनकिया है जो उन दोहा सोरठा छंद चौपाइयों के अंतर्गत आसके उतनाही हरएक ग्रन्थसे संचित कियाजावे और इतररीतिका प्रचार जैसे कुंवर कलेवा इत्यादि नीचे लिखेहुये परमभागवत रसिकजन संत महात्मा परमप्रेमी उपासकोंके ग्रन्थ और कथनसे दासका मनोरथ परिपूर्णहुआ ॥

ग्रन्थ और महात्माओंके नाम

१ श्रीगोस्वामीतुलसीदासजीकृत
श्रीमानसरामायण
गीतावलीरामायण पद
कवितावलीरामायण
सतसईरामायण दोहा
बरवारामायण
श्रीजानकीमंगलछन्द
विनयपत्रिकापद
२ श्रीसूरदासजीमहाराजकृत
श्रीरामायणपद
३ श्रीकृपानिवासजी कृत
श्रीरामरसामृतसिन्धु
४ श्रीअग्रस्वामीजीकृत
पदावली
५ श्रीरामसखेजीकृत
पदावली
कवितावली
नृत्यराघवमिलन
६ श्रीप्रियासरनजीकृत
श्रीसीताअयन
७ श्रीयुगलानन्यसरनजीकृत
इस्ककान्तछन्द और पद
८ श्रीकाष्ठजीह्वास्वामी अर्थात् श्री
देवस्वामीकृत
श्रीजानकीविन्दु पद
श्रीअयोध्याविन्दु पद
श्रीरामसुधा पद
श्रीरामरंग पद
श्रीरामलगनपद
९ श्रीप्रेमसखीजीकृत

ग्रन्थ और महात्माओंके नाम

नखशिख और पद
१० श्रीकृष्णरंगसखीजीकृत पद
११ श्रीसरयूसखीजीकृत पद
१२ श्रीसुधामुखीजीकृत पद
१३ श्रीज्ञानाअलीजीकृत पद
१४ श्रीकिशोरअलीकृतसवैया
१५ श्रीसीयासखीजीकृत पद
१६ श्रीचन्द्रअलीजीकृत
नवरसरहस्यप्रकाश पद
१७ श्रीरूपसरसजीकृत पद
१८ श्रीमधुरअलीजीकृत पद
१९ पंडितश्रीहरिहरप्रसादकृत दोहा
२० श्रीरघुनाथदासजीरामसनेही कृत
विश्रामसागर
२१ श्रीबैजनाथजीकृत पद
२२ श्रीजनतुलसीदासकृत पद
२३ श्रीरमणबिहारीकृत
सत्योपाख्यान
२४ श्रीविश्वनाथसिंहजीकृत
पदावलीऔरसीकारके कवित्त
२५ श्रीरघुराजसिंहजीकृत
श्रीरामस्वयम्बर और
रघुराजविलास पद
२६ कवीश्वर श्रीकेशवदासजीकृत
श्रीरामचन्द्रिका
२७ पंडित श्रीदुर्गादत्तजीकृत
श्रीरामदीपिका
२८ श्रीनन्दकविकृत छप्पै
२९ बाबूश्रीहरिश्चन्द्रजीकृत सवैया
३० कविचिन्तामणिकृत कवित्त

इन सब महात्माओंके कथित ग्रन्थ श्रीसीताराम बिवाहका बर्णन श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी महाराजकृत श्रीमानस रामायण बालकाण्ड आदि लेके अगहन सुदी ५ मंगलबार पुष्य नक्षत्र संवत् १९४० का श्रीसीताराम बिवाह संग्रह नामक ग्रन्थका प्रारंभकिया जिसको ॥ छंद चौबोला ॥ श्रीयुत सीताराम सरनजू चन्देरी महाराजा । छकेरहत सियराम ध्यानमहँ छोडि जगतके काजा ॥ करत भावना समय समय की रटत सदासुख नामा । परमसुजान शील गुणसागर मूरति अतिअभिरामा ॥ ऐसे रसिक सुजान शीलकी जहँ जस आयसुपाई । समय प्रसंग तहां संचितहो अतिसुन्दर सुखदाई ॥ पंडित श्यामनाथजू नागर नौरसको अतिज्ञाना । रघुनन्दनकी सखाभावना करत सदा मतिवाना ॥ मुन्शी निरंजनलाल सरल चित सखा मोर सुखदाई । सियारामपद कंजन अली मन राखत हृदय बसाई ॥ कबिबर राधाबल्लभ जानतसाहित ग्रन्थनिरीती । साधुस्वभाव मान कछु नाहीं हरिपद पंकज प्रीती ॥ इन सबकी औरहू सज्जनगण भक्तनकेरि सहाई । रामप्रताप पाय पूरणबल संग्रह कहत बनाई ॥ सब सज्जनोंके भावानुभव प्रकट चहतहौं कीनो । सीताराम बिवाह सुसंग्रह ग्रन्थ परमरसभीनो १ ॥

दो० संग्रह रचना करन की उर उपजी अतिचाव ॥
है भरोस भलहोयगो सज्जन कृपा प्रभाव १

इति भूमिका ॥

अथ मंगलाचरण ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतपद ॥ गाइये गणपति जगबंदन। शंकरसुअन भवानीनंदन ॥ सिद्धिसदन गजबदनविनायक। कृपासिंधु सुन्दर सबलायक ॥ मोदकप्रिय मुदमंगलदाता। बिद्याबारिधि बुद्धिविधाता ॥ मांगत तुलसिदास करजोरे। बसहिं राम सियमानसमोरे ॥

श्रीविश्वनाथसिंहजूपद ॥ जयजय बानी जनबरदानी। करनी उदय सकल मुदमंगल हरनी कलियुग ताप अमानी ॥ बीणा पुस्तक युगकर सोहत युगकर अभै अभीष्टैदेई। बाहनहंस बिभूषणपटासित बिश्वनाथ पद परि मुदलेई ॥

श्रीतुलसीदासजीपद ॥ मांगिय गिरिजापतिकासी। जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ औढ़रदानद्रवतपुनिथोरे। सकत न देखि दीन करजोरे ॥ सुख संपति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये जे शरण आरतिके लीन्हे। निरखि निहाल निमिषमहँ कीन्हे ॥ तुलसिदास याचक यशगावै। विमल भक्ति रघुपति की पावै ॥

दो० मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुतपूत।
सकलसिद्धिकरकमलतलसुमिरतरघुबरदूत ॥

पद ॥ मंगलमूरति मारुतनंदन। सकलअमंगल

मूलनिकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारा । हृदय बि-
राजत अवधविहारी ॥ मातु पिता गुरुगणपतिशारद ।
शिवासमेत शम्भु शुक नारद ॥ चरणबंदि बिनवौं सब
काहू । देहुरामपद नेहनिबाहू ॥ बंदौं राम लषण बैदेही ।
जो तुलसीके परमसनेही ॥

दो० राम बामदिशि जानकी लषण दाहिनी ओर ।
ध्यानसकलकल्याणमय सुरतरु तुलसीतोर ॥

श्रीकृपानिवासजू पद ॥ मंगलमूरति अवधबिहारी ।
सीतापतिकी मैं बलिहारी ॥ मंगल सरयू अवधपुरभा-
री । मंगल सखी सबै नर नारी ॥ मंगल नृप दशरथ
सब नारी । मंगल कौशल्या महतारी ॥ मंगल हनुमत
आनँदकारी । कृपानिवास मंगल अधिकारी ॥

संग्रहकर्त्ता दोहा ॥

श्रीहनुमत गुरु तुलसिके चरणनकरौं प्रणाम ।
दीजै रामप्रतापको अभिमत फल सुख धाम ॥
भक्तजननमुख बरणित सियबर चरित रसाल ।
लै सबसे संग्रह रचौं राम प्रताप बिशाल ॥
सीताराम उपासकहि प्रेमी रसिक सुजान ।
करौंबिनय बरदीजिये ग्रंथ होय सुख दान ॥

श्री जानकीवल्लभोजयति ॥

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी महाराजकृत

श्रीमानसरामायण बालकाण्ड

और

अनेक सद्ग्रन्थोंसे

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

प्रथमप्रकरण

विश्वामित्र ऋषिराजका अवधपुरमें आगमन दशरथ नरेन्द्र
पास और श्रीलक्ष्मणजी को यज्ञरक्षार्थ अपने
संग लेजानेको मांगना ॥

सीतारामशरणजूकृत ॥

दोहा। श्रीतुलसीकृत बिमलबर मानस परम अनूप ॥
रामायण रघुवर अयन सीताराम स्वरूप १
जिहिमें लीला व्याहकी बरणी परम विचित्र ॥
तिहिमहँ गुंफित करतहौं संग्रहब्याह चरित्र २

श्रीतुलसी दासजी कृत मूल--दोहा ॥

कोशलपुर बासीनर नारि वृद्ध अरु बाल ।
प्राणहुते प्रियलागते सबकहँ रामकृपाल १

चौ० बंधु सखा सब लोहिँबुलाई । बन मृगया नित खेलहिंजाई ॥ पावन मृग मारहिं जियजानी । दिनप्रति नृपहिं दिखावहिं आनी ॥ सवैया ॥ सरयूबर तीरहितीर फिरैं रघुबीर सखा अरु बीरसबै । धनुही करतीर नि-खंग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फबै ॥ तुलसी तेहि अवसर लावनिता दशचारि नौ तीन एकीससबै । मति भारति पंगु भई जो निहारि बिचारिफिरी उपमानपबै ॥

चौ० ॥ जेमृग राम बाणके मारे । ते तनुताजि सुर लोक सिधारे ॥ अनुज सखा सँग भोजन करहीं । मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥ जेहिबिधि सुखीहोहिं पुरलोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा ॥ बेद पुराण सुनहिं मनलाई । आपकहहिं अनुजहिं समुझाई ॥ प्रातकाल उठिकै रघुनाथा । मातु पिता गुरुनावहिंमा-था ॥ आयसु मांगि करहिं पुरकाजा । देखिचरित हर-षहिं मनराजा ॥ दोहा ॥ ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुण नाम न रूप ॥ भक्त हेतु नानाबिधिहि करत चरित्र अनूप २ ॥

संग्रहकर्ता दोहा ॥ उत मिथिलामहँ जनक गृह सीता प्रगटी आय । तबते परिजन पुरजनन अति आनँद अधिकाय ॥

प्रियाशरणजू० दोहा ॥ षष्ठम बर्ष चढ़ी जबै सीता आदि कुमारि । करति बिहार अद्भुत अमित मुदित सुप्रियपरिवारि ॥ चौपाई ॥ मैया सबै बुलाय बहोरी । भोजन के हित बिबिध निहोरी ॥ मेवा बिबिधप्रकार मँगाई । सादर कुँवरिन सकल खवाई ॥ अ-मित भांति पुनि मातु दुलारति । राईलोन क्षणहिक्षण वारति ॥ कबहुं सीयमुख चंदहि हेरति । कबहुं बनज बदनी कहि टेरति ॥

कबहूं धारति बेसर मोती । बढ़त क्षणहिक्षण प्रेमनिसोती ॥ सबके अरुण चूनरी राजै । मुक्ता गुहिय सुमांग बिराजै ॥ शीशफूल सबके शिर सोहै । चिबुकन नीलबिंदु मनमोहै ॥ दोहा ॥ छल्ला मुंदरि अंगुरिन अतिशोभाके ऐन । कंकन बाजूबंद छबि मोपै कहत बनैन ॥ चौपाई ॥ नखशिख मंजु मनोहरताई । कहिनजाय अंगन रुचिराई ॥ बिहरत महल सकल मनभावति । कबहूं हँसि हँसि तालबजावति ॥ कबहुं परस्पर नाचनचावति । कबहुं मधुरस्वर मंगलगावति ॥ कबहुं परस्पर बचन उचारति । कबहुं मुकुरलै बदन निहारति ॥ लखि छबि मगन होय पुनि जाई । मुकुर हाथते टारत नाई ॥ को तव तात कवन तुव माता । मोसन कहहु सत्य सबबाता ॥ लखि छबि निज प्रतिबिंब भुलानी । त्यहिक्षण आइ सुनैना रानी ॥ सियहि चेतभइ मातु निहारी । यह तौ है प्रतिबिंब हमारी ॥ दोहा ॥ यहि बिधि अमित बिहार सुख करति रहति दिनरैन । जननी लखि प्रमुदित रहति अतिछबि अतिसुख ऐन ॥ प्रथम राय देवरातको दियो पिनाक त्रिपुरारि । प्रतिदिन त्यहि पूजनकरत प्रीतिकि रीतिअपारि ॥ परिचर्य्या रानीकरति अपनेहाथ सनेम । दंपति शंभु पिनाकमें निशिबासर करनेम ॥ यहिबिधि जो जो रायभे निमिके बंश पुनीत । गादीपर बैठे तबहिं पूजत धनु अतिप्रीत ॥ सोई भांति श्रीजनकजी और सुनयना रानि । पूजा करति पिनाककी शिव समान प्रणठानि ॥ एकदिवस कोइ काजमें महरानी अरुझानि । सीतासन प्रमुदितकही अति प्रिय मधुर सुबानि ॥ चौपाई ॥ परिचर्य्या पिनाककी आजू । तुमहिं करहु सब साजहु साजू ॥ सिया मुदितमन आयसु पाई । नेह प्रेमलिये चलि हर्षाई ॥ जहँ शिव धनुष तहां सियगइऊ । निज करफूल बहारत भइऊ ॥ कछुक फूल धनुसंधहि अटकी । रहे त्यहिलखि सीता मनभटकी ॥ मनमहँ करि बिचार ठहराई । बामहस्तते धनुष उठाई ॥ दहिनाकरते झारि बहारी । धनुप

शुद्धकरि धरि सुकुमारी ॥ नेहकली सिय आज्ञाकीन्हा । चंदन स्वेत रक्तघसिदीन्हा ॥ मणि कोहरमहँ धरि हरषाई । अति सुगंध अतिबिमल सुहाई ॥ प्रेमकली माला कुसुमनकी । गूंथिदई सो भइ सियमनकी ॥ कोपर संपुट मणिन जराई । सकल पारषदजल अन्हवाई ॥ हेमभ्फारि कमलाजल धरेऊ । पूजा सौंज सकल तहँ करेऊ ॥ सबकरि बहुरि मातु ढिगआई । सब कीन्हो सो दयो जनाई ॥ पूजन हेतु जनक तहँ गयऊ । देखि धनुष मन चिन्ता भयऊ ॥ रानी कहँ पुनि लीन बोलाई । पूछेउ अतिसनेह समुझाई ॥ आजु कवन परिचर्य्या कीन्हा । धनुष टेढ़ सन्मुखकरि दीन्हा ॥ रानी बोली राजदुलारी । सिया कीन्ह ममरुचिहि बिचारी ॥ सीताकहँ पुनि नृप हँकराई । मातु मधुर कहि लीन्ह बोलाई ॥ पूछेउ सब वृत्तान्त जनाई । सुनिराजा मन अतिसुखपाई ॥ बहुरि बिचार कीन्ह मनमाहीं । यह कूंवरि तो बलि अतिआहीं ॥ जो तोरे धनुहा शिवकेई । सिया शीश सो सेंदुरदेई ॥ जबलगि नाहिं पिनाक कोई तोरे । सिय बिवाह मैं करब न भोरे ॥ असनिष्ठाकरि मनमहँ राखी । समयपाय रानी सनभाखी ॥ संग्रहकर्त्ता॥ याहिबिधि षष्टमबर्ष व्यतीता । करतबिहार ललित शुभ सीता ॥ दोहा ॥ एक दिवस श्रीजनकजी निज कुंजनके माहिं । बैठे निज रानिन सहित मोद बरणि नाहिं जाहिं ॥ चौपाई ॥ रानी कुँवरि न बात जनाई । भइ बिवाहकी समय सुहाई ॥ प्रथम अवधपुर चरचा रहेऊ । आवत जात लोग सब कहेऊ ॥ जबते आप प्रतिज्ञा कीना । रहा बिवाह चाप आधीना ॥ अब बिलंबकर अवसर नाहीं । ठनिये यज्ञ जो संशय जाहीं ॥ बोले नृप सुनु प्राणपियारी । बचन सत्य सब अहैं तुम्हारी ॥ कालिह सभामहँ निश्चय करिहौं । गुरुसन बूझि दिवस सो धरिहौं ॥ प्रात प्रातकृतकरि महराजा । राजसभा गये सहित समाजा ॥ कुशध्वजादि सब भ्राता आये । बैठि निजासन परम सुहाये ॥ मंत्री सकल आय तहँ राजैं । सतानंद पुनि आय बि-

राजैं ॥ राजा कीन्ह प्रणाम बड़ाई । मनको सब वृत्तान्त जनाई ॥ आदि अंत सब बर्णनकीन्हें । सुनत सतानँद मन चित दीन्हें ॥ प्रथम कह्यो मनको व्यवहारा । जो कछु मनमें प्रथम बिचारा ॥ सिय अयोनिजा ममगृहआई । सुंदरि पावनि परम सोहाई ॥ दोहा ॥ जो अयोनिजा बरमिले तब सियकरौं बिवाह । यहि निमित्त पूजनलगे गिरिजाजू के नाह ॥ दरशमिल्यो अज्ञाभई ममधन तोर निहार । त्यहि अयोनिजा यों लखो महिमा अगम अपार ॥ जब सिय शिव धनुकोलयो बांयेहस्त उठाइ । तब मम प्रण निश्चयभयो प्रणकरि धरेउ छिपाइ ॥ अब ममरमन अस आवहि धनुको यज्ञरचाइ । जेते योधा जक्तमें तिनकहँ नेवति बोलाइ ॥ निजप्रण तिनहिं सुनाइके सिद्धकरौं निज काज । सो सम्मत मोहिं दीजिये दिन धरिये महराज ॥ सुनि प्रमुदित सबहीं भये सतानंद सुनि बैन । करि बिचार बोले बचन सुखप्रद मंगल ऐन ॥ संग्रहकर्त्ता चौपाई ॥ कार्त्तिक बुध परिवा दिन जानो । जनक नरेश स्वयंबर ठानो ॥

कृपानिवास॰ ॥ सचिव बोलि नृप पत्रलिखाये । सप्तद्वीप भुवि स्वर्ग पठाये ॥ अवध पत्रिका सुभग पठाई । बिनय प्रेमलिखि बिबिध बड़ाई ॥ त्रिभुवन बिजय सुयश सुखकारनि । चरित बिपुल हित प्रण बिस्तारनि ॥

श्रीतुलसी॰ ॥ यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिल कथा सुनहु मनलाई ॥

कृपानिवास॰ ॥ यत्र अयोध्या कथा उमासुनि । प्रेर्यो प्रभु न गाधिसुवन मुनि ॥

श्रीतुलसी॰ ॥ बिश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बसहिं बिपिन शुभआश्रम जानी ॥ जहँ जपयज्ञ योगमुनि करहीं अतिमारीच सुबाहुहि डरहीं ॥ देखत यज्ञ निशाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुखपावहिं ॥ गाधि तनय

मन चिन्ता ब्यापी। हरिबिनु मरहिं न निशिचर पापी॥ तब मुनिवर मनकीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरे हरण महि भारा॥ इहिमिसि देखौंप्रभु पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई॥

पद रा० सारंग॥ चहत महामुनि याग जयो। नीच निशाचर देत दुसहदुख कृशतन तापतयो॥ शापे पाप नये निदरत खल तब यहमंत्र ठयो। बिप्र साधु सुर धेनु धरणिहित हरि अवतार लयो॥ सुमिरत श्रीसारंगपाणि क्षण में सबशोच गयो। चले मुदित कौशिक कोशलपुर सगुणनि साथदयो॥ करत मनोरथ जात पुलकि प्रगटत आनंद नयो। तुलसीप्रभु अनुराग उमगि मग मंगल मूलभयो॥

संग्रहकर्त्ता चौपाई॥ क्वार कृष्ण षष्टमि दिन मुनिवर। करत बिचार चले आनँद भर॥

श्रीतुलसी०॥ ज्ञान बिराग सकल गुणअयना। सो प्रभु मैं देखब भरिनयना॥

देवस्वामी० पद० रा० सोरठ॥ अवधकी महिमा अपरम्पार। गावतहैं श्रुतिचार॥ बिस्मिल अचल समाधिनसे जोध्याई बारंबार। तातेनाम अयोध्या गायो यह ऋगबेदप्रकार॥ रजधानी परबल कंचनमय आठचक्र नवद्वार। तातेनाम अयोध्या पावन असयजु कहत बिचार॥ अकार यकार उकार देवत्रय ध्याई जो लखिसार। तातेनाम अयोध्या ऐसो सामकरत निरधार॥ जग मग कोश जहां जहां अपराजित ब्रह्मदेव आगार। तातेनाम अयोध्या ऐसो कहत अथर्व उदार॥

श्रीतुलसी० पद राग सारंग॥ आजु सकल सुकृतफल पाइहौं। सुखकी सींव अवधि आनँदकी अवध बिलोकिहौं जाइहौं॥ सुतन सहित दशरथहि देखिहौं प्रेमपुलकि

उरलाइहौ। रामचन्द्र मुखचन्द्र सुधाछवि नयन चकोरनि प्याइहौं ॥ सादर समाचार नृपबूझिहैं हौंसब कथा सुनाइहौं। तुलसी ह्वै कृतकृत्य आश्रमहिं राम लषण लै आइहौं ॥

दोहा ॥ इहिविधि करतमनोरथ जात न लागीबार।
करिमज्जन सरयू जल गये भूपदरबार ॥

संग्रह० चौपाई ॥ द्वारपाल चरणन शिरनाई। सपदि गयउसो जहँनृपराई॥जोरिपाणियुगबचनउचारे।बिश्वामित्रमुनीशपधारे॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ मुनि आगमन सुना जबराजा। मिलन गयउ लै बिप्र समाजा ॥ करि दण्डवत मुनिहि सनमानी।निजआसन बैठारिन आनी ॥ चरण पखारि कीन्ह अति पूजा। मोसम आजु धन्यनहिं दूजा ॥ बिबिध भांति भोजन करवावा। मुनिवर हृदय हर्ष अतिपावा ॥ पुनि चरणन मेले सुतचारी। रामदेखि मुनि बिरति बिसारी ॥ भये मगन देखत मुख शोभा। जनु चकोर पूरण शशिलोभा ॥

श्रीजानकी मंगल सोहर ॥ रामहिं भाइन्ह सहित जबहि मुनि जोहेउ।नैननीर तनपुलकि रूपमनमोहेउ ॥ परसि कमल कर शीश हरषि हियलावहिं। प्रेम पयोधि मगन मनपार न पावहिं॥ मधुर मनोहर मूरति सादर चाहहीं। बारबार दशरथके सुकृत सराहहीं ॥

चौपाई ॥ तबमन हर्षिबचन कहराऊ। मुनि असकृपा कीन्ह नहिं कोऊ ॥ केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावहु बारा ॥

रघुराज०द्वो०॥बिश्वामित्र अनंदलहिरोमांचित सब गात। राजसिंह

सों कहत भे बिस्तर बैनबिख्यात ॥ कवित्त ॥ बिदित बसुंधरा बिभाकर बिशुद्ध बंश बंदित बसुंधरा धिराजन सो सर्बदा । सगर दलीप अंबरीष अंशुमान अज जैसेभये तैसेआप भुवनके सर्मदा ॥ रघुराजरावरेको भाषिबो अचर्यनाहिं परम प्रताप देवराजहूंको भर्मदा । जाके हैं बशिष्टसे हमेश उपदेशवारे ताके बैन बिप्रनके धर्म कर्म बर्मदा ॥ दो० ॥ जाकेहित आयोइतै सो सुनिये महराज । तेहि पूरणकरि होहु अब सत्यप्रतिज्ञ दराज ॥

रघुनाथदास० चौ० ॥ सुनहु नरेश तपोबनमाहीं । करनदेत मख निशिचर नाहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ असुर समूह सतावहिं मोहीं । मैं याचन आयउं नृपतोहीं ॥

रघुराज० दो० ॥ और उपाय देखायनहिं मखरक्षनकेहेतु । कठिन बस्तु मांगन परयो सुनु दिनकर कुलकेतु ॥ कवित्त ॥ नीरद बरनवारोपंकज नयनवारो भृकुटी बिलासवारो लम्बभुजवारोहै । पीतपट कटिवारो मंद मुसुकानवारो सूरसरदारो रण कबहूं न हारोहै ॥ रघुराजरावरेको रोज रोज प्राणप्यारो जालिम जुलफवारो कौशिला दुलारोहै । मांगनो हमारो होइ मेरो मखरखवारो रामनामवारो जेठो तनय तिहारोहै ॥

कृपानिवास० चौपाई ॥ यज्ञ कर्म निज धर्म प्रकाशैं । दुष्ट निशाचर आय बिनाशैं ॥

श्री तुलसी० ॥ अनुज समेत देउ रघुनाथा । निशिचरबधमैं होबसनाथा ॥

कृपानि० ॥ इन बिन काज न सुधरैकोई । बिधि शंकर हरिते नहिं होई ॥ दोहा ॥ संकट बारिधि धर्ममय अटकी नाव उबार । प्रेर पवनलों राम सुत उतरैं मुनि जनपार ॥ इनको श्रमलवलेशनहिं पाय परत दुखजाय । दिनमणि तेज प्रकाशजिमि निशितम सहज नशाय ॥

श्रीतुलसी० ॥ देहु भूप मन हर्षित तजहु मोह अज्ञान । धर्म सुयश नृप तुमकहँ इनकहँ अतिकल्यान ॥

पदरागनट ॥ राजन रामलषन जो दीजै । यश रावरो लाभ ढोटनिहु मुनिसनाथ सबकीजै ॥ डरपत हौ सांचेहु सनेहबश सुत प्रभावबिनु जाने । बूझिये बामदेव अरु कुलगुरु तुमपुनि परम सयाने ॥ रिपुरण दलि मखराखि कुशल अति अलपदिनानि घर ऐहैं । तुलसिदास रघुबंश तिलककी कवि कलकीरतिगैहैं ॥

रघुराज०दो० ॥ मेरे तपके तेजतें रक्षित राजकुमार । ह्वैहैसमरथ सकलबिधि करि निशिचर संहार ॥

संग्रहक० चौपाई ॥ हे नृप मन कछु शंक न लावो । रामलषनमम संग पठावो ॥

श्रीतुलसी० ॥ सुनिराजा अतिअप्रिय बानी । हृदय कम्प मुख द्युति कुंभिलानी ॥ चौथेपन पायउं सुतचारी । विप्र बचन नहिं कहेउ बिचारी ॥

रघुराज सिंह० ॥ दो०॥ सींच्यो राम सनेह जलनृप मनतरु सुकुमार । तापर गाधि सुवनगिरागिरी गाज यकबार ॥ कवित्त ॥ कोमल कमलपै तुषारको तोपाउ जैसे नवलातिकापै ज्यों दवारिदीह ज्वालहै । जैसे गजराज पैगराज मृगराजकेरी पुनि ग्रहराजपैज्यों सिंहिका कोलालहै ॥ भने रघुराज रघुराजको बिरह जानि मुख पियरायगयो कोशल भुआलहै । परम कसाला पाय ह्वैगयो बिहाला अति गिरिगे सिंहासनते भूमि भूमिपालहै ॥ दोहा ॥ बिकल बिलोकि नृपतिमानि परिचर अति अकुलाइ ।सुमनबिजय हांकन लगे सुरभित जलछिरकाइ ॥ उठ्यो दंड द्वैमहँ नृपति लीन्हो श्वास अघाय । मंद मंद बोलत भये कौशिक पदशिरनाय ॥

रघुराज कवित्त॥ बूढ़े भये ज्ञानी भये तपसी बिख्यातभये राजऋषि हूते ब्रह्म ऋषि तुम ह्वैगये । बिमल बिरागी भयेजगतके त्यागी भये बिश्वबड़ भागीभये बिषय उरनाबये ॥ भनै रघुराज भगवान भक्ति

मानभयेमहा धर्ममान सत्यमान जगज्वैगये। क्षमामेंअछेहक्षमा मानभये काहे मुनिमेरे छोटे छोहरापै दयामान ना भये ॥

तुलसी चो० ॥मांगहुभूमि धेनु धन कोष॥सर्वसदेउँ आज सहरोषा॥ देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं। सो मुनिदेउँ निमिष इकमाहीं॥ सब सुत प्रिय मोहिं प्राणकिनाईं। रामदेत नहिं बनैगोसाईं॥कहँनिशिचर अतिघोरकठोरा॥ कहँ सुंदरसुत परमकिशोरा॥

कृपानिवास चो० ॥ बिकट निशाचरहिं सकपापी। सुरकुलभयदा प्रबल प्रतापी॥ जिन को रूप बिरूपभयंकर। तिनसोंबालक सुभग सकैलर॥

रघुराज दो० ॥अमरसरिस सुंदरसुछबि तापरअतिगभुवार। नहिं जानत रणबिधिकछू नहिं देहौं निजबार॥ सुवन सुंद उपसुंदके संगर काल समान। भले करहिं मख विघन नहिं देहौं पुत्र अजान॥ जने यक्ष कन्या उदर खल मारीच सुवाहु। रण पंडित खंडित दुवन मंडित समर उछाहु॥ सीखे शस्त्रकला सकल दायक दैत्यअनन्द। सनमुख सुरभीसिंहके पठवावहुकुलचंद॥

कृपानिवास चौपाई ॥ येबालक सुकुमार नवीना। समरसमुझि कोइ सूर प्रवीना॥ लघु धनुहींकर खैंचन जानै। खेलत मृतिका लक्षस्वमानै॥ जो तुम्हरे हठ रामहि भारी। चलौं संग मैं पुरजन नारी॥ दैत्यानां दमन भवतांहट। चलो संग मैं हतों सकलभट॥

तुलसी ॥ सुनि नृपगिरा प्रेमरस सानी। हृदयहर्ष माना मुनि ज्ञानी॥ तब वशिष्ठ बहु बिधि समुझावा॥ नृप संदेह नाशकहँ पावा॥

कृपानिवास दोहा ॥राम दोउजन चाहलखिअसमंजसबसभाय। तासमये नृपजनककी पाती सुखभरि आय॥ चौ० ॥ पत्री बांचि

सुमंत सुनाई । जय प्रणाम बहुबिनय बड़ाई ॥ राज रावरो राम कुंवरबर । पठवो पुर ममसुता स्वयंबर ॥ दशरथमन आई कछु नाई । गुरुबशिष्ठ समुझाय सुनाई ॥ मुनि सन्मान जनकहित होई । पठवो रघुबर सुधरैं दोई ॥

तुलसी ॥ अति आदर दोउतनय बुलाये । हृदयलाइ बहुभांति सिखाये ॥

कृपानिवास ॥ गृहसुख लाल स्वमन नालावो । गुरुकृपया बर मोदबढ़ावो ॥ मोतैं अति मुनिको सुतप्यारे । यत्र कुत्र तुमको सुखसारे ॥

तुलसी ॥ मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ । तुम मुनि पिताआन नहिं कोऊ ॥ दो० ॥ सौंपेभूपति ऋषिहि सुत बहुविधिदेइ अशीश । जननीभवन गयेप्रभु चले नाइपद शीश ॥

कृपानि०चौ० ॥ हरषि राम निजधाम पधारे । मातुनिरखि मणि भूषणवारे ॥ लीय गोदभरि मोद प्राणप्रिय । मुख चुंबति बलि जाति हरषिहिय ॥ कहोलाल आवनि बलिहारी । सुफल नयन बर बदननिहारी॥।

संग्रहक० ॥ विश्वामित्र सभामहँ आई। मांगेंनृपसों हम दोउ भाई ॥ दिये हमैं मखरक्षणकाजा। जानि विप्रकारजमहराजा ॥

कृपानिवास० ॥ मातु मुदित तुव आयसुपावैं । पितुसम्मत मुनि संग सिधावैं ॥दोहा ॥ जननि शंकनहिं कीजिये सादरदेहु रजाय । दशदिनमें द्विजकाजकरि ऐहौंइतअतुराय ॥कबित्त ॥ सुनतठगीसी रही मातुनहिं बानी कही महादुखसानीसही शोचनासमातहै। सुरत संभारि नैनपरत अमितबारि बोलीहै पुकारि कौशिलाजू ऐसी बातहै ॥ भनैरघुराज मेरो जीवनअधार सुकुमारहैकुमार न विदेशरीति ज्ञातहै । भूपै किधौं लाग्योभूत रोक्योहै नमजबूत हाय मेरे पूत अवधूत लीन्हेजात है ॥ ह्वैगई समाज कैसी

लागत अनैसी जैसीहोत आजऐसी जैसी कहूंना देखातहै ।अहै सबकोऊ शूर सचिव सुहृद वोऊ बरजे न सोऊ दोऊ मुनिका बतातहै ॥ भनै रघुराज सूध दूधमुख मेरो लाल जानैनाभुआल यहैकाल करामातहै । करी कौनकरतूत मुनिको लग्यो धौं भूत देखो मेरेपूत अवधूत लीन्हेजात है ॥

पं०विश्वनाथसिंह ॥ योगीलियेजात मेरे बारे । कैसे भूपतिदिये पाणिगहि जेप्राणहुंते परमपियारे ॥ मखमलगिलिमचलतअसि-यतु तेपदबन पहुमी किमिकरि धरि हैं । नृप बिसुनाथ दुलारे दोऊ किमि कोहा मुनि सेवाकरि हैं ॥ सोरठा ॥ सुनि कौशिला प्रलाप आईसबरानीतहां । लागींकरन बिलाप रामगमन काको रुचत ॥ जननी बिकल बिचारि रघुनन्दन बोले बचन । तोको शपथ हमारि करै खेद जो नेकुमन ॥ छंदचौबोला ॥ द्विजकारज लगि क्षत्रिनको तन गाधिसुवन सेवकाई । गुरु अनुमति पुनि पितुनिदेशशिर तामें मोरभलाई ॥ क्षत्रीकुलमहँजनम बिप्रदुख काननसुनि नहिंजातो । सो अतिअधम तासु यहअपयश जननी जगनसमातो ॥ गुरु पितु अरु तुव पदप्रतापते मोर सिद्ध सब काजा । जो अनुचित कछुजानत तौ कसजानदेत महराजा ॥ ताते अब नहिं कछु शंकाकरु मंगलकरु महतारी । रंचक नहिं विशंच कौशिकसँग जात लषण सहकारी ॥ सुनत सुवनकेबचन कौशिला धरिधीरज उरभारी । बोलीबचन सूंघि सुतकेशिर जे-सीखुशी तिहारी ॥ असकहि मंगलद्रव्यसाजि सब दधि दुर्बाधरि थारी । गौरि गणेशपुजाय पूतकर मंगलबचन उचारी ॥ रक्षहिं नारायण सबथलमहँ सहित विरञ्चि पुरारी । सकलदेव दाहि-ने दशौदिशि रहैंशोकभयहारी ॥ रंगनाथको हौं सुतसौंपति इष्ट देव भगवाना । मो गरीबिनीके दोउबालक रक्षैं कृपानिधाना ॥ असकहि साबित्री तियके शिरधरिधरि कलश सदीपा । पढ़ि स्वस्त्ययन दहीटिकुलीदै कह्यो जाहु कुलदीपा ॥ जननी पद पंकज प्रणाम करि हरषि चले दोउ भाई । लौटीं सकल मातु

मंगल पाढ़ि द्वार देश पहुँचाई ॥ गये पिता दरबार बंधुदोउ दीन-बंधु बलरासी । उठी समाज सकल रघुराज बिलोकत अवध बि-लासी ॥ महाराज को करि प्रणाम तहँ राम लखन दोउभाई। गुरुबाशिष्ठ के पदबंदनकरि सबवृद्धन शिरनाई ॥ कौशिक संग गमन काननमहँ मखरक्षण के हेतू । पूषणकुलभूषण हतदूषण रूषण चित धृतसेतू ॥ मांगी बिदा पितासों रघुपति मखरक्षण उतसाही । उठितुरन्त दशरथभुआलमणि गहि पुत्रनकीबांही॥ सौंपेउ गाधिसुवनकर असकहि तुम इनके पितु माता । अहौ बिधाता मुनि गुरु भ्राता सुखदाता दोउत्राता ॥ असकहि धरा धान्यधन बहुबिधि पुत्रनदानकराई । पढ़नलगे स्वस्त्ययन भूप मणि सबसंदेह बिहाई ॥ दोहा ॥ विजयमंत्रपाढ़ि सहित बिधि अभिमंत्रितकरि अंगमंगललागे पढ़नपुनि गुरुबाशिष्ठदुखभंग ॥

तुलसीजान०सोहर ॥ नाथमोहिंबालकनसहितपुरपरिजन । राखनहार तुम्हारअनुग्रह गृह बन ॥ दीनबचन बहु भांति भूप मुनिसनकहैं । सौंपि राम अरु लषण पायँ पंकजगहैं ॥ पायमातुपितु आयसु गुरुपायँनपरे । कटि निषंगपटपीत करनिशरधनुधरे ॥ पुरबासिन्हनृपरानिन संगदियेमन । बेगिफिरहु करिकाज कुशल रघुनंदन ॥ ईशमनाइ अशीशहिं जय यशुपावहु । न्हातखसै जनि बार गहरु जनि लावहु ॥ चलत सकलपुरलोग वियो-ग बिकलभये । सानुज भरत सप्रेम रामपायँननये ॥

तुलसीसोरठा ॥ पुरुषसिंह दोउबीर हर्षिचले मुनिभयह-रण । कृपासिंधु मतिधीर अखिलविश्व कारणकरण ॥

चौपाई ॥ अरुणनयन उर बाहु बिशाला । नीलजलज तन श्यामतमाला ॥

कृपानिवास ॥ शरदसुधाकर हरणि बदनछबि । मंद हँसन बर

दशन अरुण छबि ॥ अलकैं श्याम बदनपर छाई । जनु शशि शेष सुताह्वै व्याई ॥ भृकुटबिक्र तिलक झलकाई । जनु त्रिभुवन श्रीरेख खिंचाई ॥ श्रवण सुभग मुक्ताहल कुण्डल । मकर किलोलत जनु शशिमण्डल ॥

तुलसी ॥ कटिपटपीत कसे बरभाथा । रुचिर चापशायक दुहुंहाथा ॥ श्याम गौर सुन्दर दोउभाई । बिश्वामित्र महानिधिपाई ॥

कृपानिवास ॥ भुजप्रलम्ब अंगद भूषणभर । पदपंकज पदत्राण सुखदतर ॥ संत मंडली मध्य बिराजैं । जनु शुभ साधनमें फल भ्राजैं ॥

तुलसी ॥ प्रभु ब्रह्मण्यदेवमैं जाना । मोहितपितातजे भगवाना ॥

रघुराज० दोहा ॥ राम लषन लै मुनि चले धन्य जनम निज मानि । शीतल मंद समीर तहँ बहनलग्यो सुख खानि ॥ छन्द चौबोला ॥ जगत प्रसन्नभयो तेहि अवसर देव महासुख माने । दै दुन्दुभी धुकार गगनमहँ बरषैं फूल अमाने ॥ सगुन होत अति सुखद दशौं दिशि विप्र करत जयकारा । फरकत दक्षिण नयन बाहु भ्रुव चित उतसाह अपारा ॥ आगे विश्वामित्र चले तहँ पाछे राम सुजाना । लषण चले तिनके पाछे पुनि लिहे शराशन बाना ॥ जहँ जहँ जात रामलक्ष्मण मुनि तहँ तहँ अम्बरमाहीं । मन्द मन्द मृदु बिंदु बरषि घन करत पन्थमहँ छाहीं ॥ दोहा ॥ अति सुकुमार कुमार दोउ मुनि मुख निरखत जात । करतपान पीयूष छबि तदपि न नेकु अघात ॥

कबित्त ॥ भानुसे किरीटवारे कुंडलझलकवारे कुंचित अलकवारे गौरतनकारेहैं । मन्दमुसुकानवारे नेकुनयनअरुनारे कटिमें निषङ्गकरवालनकोधारेहैं ॥ बामकर चापवारे दाहिनेसुधारे शर पीतपटवारे तीनोंलोक रखवारेहैं । भनै रघुराजमुनि संगमेंसिधारे

दोऊ काकपक्षवारे दशरत्थके दुलारेहैं ॥ दोहा ॥ दोउघनतनु समता चहत शरदबर्ष सितश्याम । चढ़े गगन हियहारि पुनि उड़त रहत बसुयाम ॥ कबित्त ॥ भाषैमुखएक रामलषनकी शोभाकौन शेष शिव शारदा उचारि हियहारेहैं । मोहत मनुजमन मंडित करत महि मन्दमन्द मगमें गयन्दगतिवारेहैं ॥ भनैरघुराज बिश्व भूषनबिराजैं दोऊ धर्मकेधुरन्धर धरामें धाकधारेहैं । कोमलकमलहूते कठिन कुलिशहूते मानो शीतभानु भानु काननपधारेहैं ॥

श्रीतुलसी० रा० कल्याण ॥ मुनिकेसंग बिराजत बीर । काकपक्षधर करकोदंडशर सुभगपीतपट कटितूनीर ॥ बदन इन्दु अंभोरुह लोचन श्यामगौर शोभासदन शरीर । पुलकत ऋषि अवलोकि अमित छबिउर न समात प्रेमकीभीर ॥ खेलतचलत करतमग कौतुक बिलमत सरित सरोवरतीर। तोरतलता सुमन सरसीरुह पियत सुधासम शीतलनीर ॥ बैठतबिमल शिलनि बिटपनितर पुनिपुनि बरणत छाहँसमीर । देखतनटत केकिकल गावत मधुप मराल कोकिलाकीर ॥ नयननि कोफल लेत निरखि मृग खगसुरभी ब्रजबधू अहीर । तुलसीप्रभुहि देतसब आसन निजनिज मनमृदु कमलकुटीर ॥

रघुराज दोहा ॥ यहिबिधि बिश्वामित्र सँग चलत चलत मग राम । अवधनगरते कोशषट आये अतिअभिराम ॥ बरवे ॥ अति कठोरलगिआतप कोमलगात । श्रमजल कणतननिकसे अतिहि सुहात ॥ तरु तमालमहँ मानहुं सीकरओस । झलमल झलकत चहुंकित पाय प्रदोस ॥ गौर लषनतनु सोहत जलकणचारु । मानहुँ रजताचलपर तारबिहारु ॥ अतिशय कोमल आनन कछु कुम्हिलान । सांझसमय जिमि अंबुज नेकुमलान ॥ देखिमहामुनि मनमें मानि गलानि । तरुछाया लखि सीरी श्रम सुख

दानि ॥ ठाढ़ेभये महामुनि समय बिचारि । मधुर बचन बोले पुनि राम निहारि ॥ सुनहु राम रघुनन्दन राजकुमार । कौशिल्या सुखकारी प्राण पियार ॥ बन्धु न लावत मोसे मन पछि तात । कारजबश का कहिये बनतनजात ॥ अमल कमल पद कोमल भूमि कठोर । कैसे पन्थ सिरैहै राजकिशोर॥ इतै सलिल अतिशीतल कीजै पान । तरुछायामें बैठो मुख कुम्हिलान ॥ असकहि ऐंचि कमंडल जलभरिल्याय । राजकुमारन मुनिबर पानकराय ॥ पोंछि प्रश्वेद पाणि निज व्यजन डोलाय। राम लषनसे बोले मुनि अकुलाय॥ छं० चौबोला ॥ जन अभिराम राम यहि रजनी इतही करहु निवासा । सकल बासकोहै सुपास इत आगे चले प्रयासा ॥ परमरम्य सुन्दर अमराई सरयू सुखद किनारे । बिश्वामित्र निवासकियो तहँ संयुत राजकुमारे ॥ संध्यासमय बिचारि गाधिसुत रामलषन सँग लीन्हें । चलिसरयू तट शुचि निर्मलजल संध्या बंदनकीन्हें ॥ पुनि आये तीनों निवासथल मुनिबर बोले बानी । शयनकरौ अब उचित लाल इत ममआँखी अलसानी ॥ सुनि कौशिकके बचन बंधु दोउ कोमल तृण बहुल्याई । निजकर कमल सुधारि शयन हित दीन्हीं सेजबनाई ॥ बिश्वामित्र बहुरि अपनेकर कियो सेज बिस्तारा । करहिं शयन सुख सहित उभैदिशि जामें राजकुमारा ॥ शयनकरन जब परे महामुनि रामलषन दोउ भाई । लगे चरण चापन कौशिकके करपङ्कज पसराई ॥ जाके कौशिक आदि ब्रह्म ऋषि पद पङ्कज रजध्यावैं । सो प्रभु कुशिक तनय पद मींजत यह अचरज सुरगावैं ॥ दोहा ॥ ऋषि बोले मंजुल बचन करहु शयन अब लाल । कौन तुम्हारे सरिस जग सत्य धर्मके पाल ॥ सुनि गुरुशासन बंधु दोउ शयन कियो तृण सेज । लागे कहन कथा कछुक बिश्वामित्र सुतेज ॥ कबित्त ॥ पावनि परम यह रजनी सुहावनिहै आवनि मयंककी अनन्द अधिकाई है । उदय उड़गण उपजावनि शयन प्रीति धावनि समीर अलसावनि स-

दाई है ॥ रघुराज दिन श्रम सकल नशावनि सनङ्ककी बढ़ावनि मयङ्क प्रभुताईहै । चोर सुखछावनि बिछावनि नयननींद शांत गति भावनि विभावरी सुहाईहै ॥ दोहा ॥ ऐसी कहिनेसुककथा शयनकियो मुनिनाथ।सोवतगुरु गुणिलषण युत शयन किये रघु नाथ ॥ कबित्त ॥ कोमल कलित सुमसेजके सोवैयादोऊ मंदिर मणीन मातु व्यजन डोलावई । सरससुगन्ध फैलीरहति अनेक भांति मणिन प्रदीपकी प्रकाशता जहँ छावई ॥ सोई रघुराज दोऊ सोवैं तृणसे जहींमें वृक्षनकी छाया वन भूमिका तमोमई । तदपि ऋषीश मुख लालनते पालनते औध ते अधिक सुखशर्वरीसो दैगई ॥ दोहा ॥ सुखसोवत रघुपतिलषण आगम जानिप्रभात । बिश्वामित्रजगे प्रथम रामदरश ललचात ॥ छं० चौ० ॥ झलमल गगनपंथ तारागन निरखिमयङ्क मलानो । मनौ समरकरि भानुसंग महँहारो हहरिपरानो ॥ बिकसनलगी कमल कलिकाकल कुमुदनगण सकुचाने । मनोबिभाकर बीर बिलोकत निशिकर सुभटसकाने ॥ करनलगे कलरव बिहंगबर बैठेवृक्षन डारैं । अंशुमान आगमगुणि मानोद्विजगण बेदउचारैं॥ तमहिं हटावत क्रमक्रम आवत पूरब दिशि अरुणाई । मनहुंराम आवनिगुणि छीजत निशिचर आयुर्दाई ॥ दोहा ॥ पायप्रमोद प्रभातमुनि मज्जनसमय बिचारि।चहेजगावन रामको छके स्वरूप निहारि ॥ मुख बिथुरी अलकैं अमल रहीं बदनकछुआय । मनहुंश्यामघन पटलते कढ़तशशी बिलगाय ॥ रामबदन सोवतरह्यो बामपाणि निहशंक । मनहुंतरणिरिपु गुणि कमल कीन्हो अंक मयंक ॥ युगुलबन्धु सोवतश्रमित सुंदर बदन सोहाय । समरसुरासुर जीतिमनु रवि शशि भे यकठांय ॥ पंथश्रमित सोवत सुखित छकितरहेउ मुनिदेखि । सकतजगाय न रामको समय प्रभात परेखि ॥ जसतसकै साहससहित जागनसमय बिचारि । मुनि बोले मञ्जुल बचनसुन्दर बदन निहारि ॥ छं० चौ० ॥ पुरुष सिंहजागहु रघुनन्दन कौशिल्याके प्यारे । करहुबिमल सरयूजल

मज्जन सज्जन प्राण अधारे ॥ हेरघुनन्दन सन्ध्याबन्दनको अब अवसर आयो।उदय उदयगिरि अंशुमानभो तुव दरशन ललचायो॥विश्वामित्र बचनसुनि रघुपतिउठे मयनअलसाने।लषणहुंको जगायमुनिबर पदबन्दोहिय हरषाने ॥ परणसेज तजि प्रातकृत्य करिसरयूतीर सिधारे । सबिधि कियो सरयूजल मज्जन धौत बसन तनधारे ॥ दै दिनकरकों अरघ मन्त्रपढ़ि उपस्थान पुनि कीन्हे । गायत्रीको जपन लगे पुनि ब्रह्मवीज मनदीन्हे ॥ यहि विधि करि सन्ध्या बन्दन रघुनन्दन मुनि ढिगआये । मुनिपद पदुमपराग शीशधरि भूषण बसन सुहाये ॥ कसि निषंग कोदंड चंड शर लैकर क्रीट सवाँरी । पहिरि युगुल दस्ताने दोउकर कीन्हें चलन तयारी ॥ राम लषण को देखि गाधिसुत अतिशय आनँदपाये । लैमृगचर्म कमंडलु मुनिवर आगे चले सुहाये ॥

संग्रहकर्त्ता० चौपाई ॥ शोभित पाछे राजकुमारे । अमित अनंग लजावनिहारे ॥ यहि विधि चले करत मगबासा । पहुंचे आय ताड़िबन पासा ॥

रघुराज छन्द चौबोला ॥ महाघोर बन सघन भयानक परत पन्थ अँधियारी । देखि राम पूंछयो मुनिवरसों नाथ कौन बन भारी ॥ मुनिवर महा भयानक कानन झिल्लीगन झनकारा । महाभयानक बोलत पक्षी दारुण पन्थ अपारा ॥ दो० ॥ विविध सिंह अरु बाघ बहु वारण विविध बराह । गरजत तरजत ओर चहुं कैसे पथिक निवाह ॥ छं० चौबोला ॥ औरहु आमिष भक्षकजे पशु विचरहिं बन भयकारी । रहहिं न मूक उलूक दिनहुं महँ नादत काक सियारी ॥ अश्व करन धव ककुभ बिल्व बक पाटल तिंदु पलासा । बंश झौंर गंभीर भीतिकर नहिं सूझत दश आसा ॥ तापर बदरी खदिर बबूरन कंटककी अधिकाई । खेले बहु शिकार सरयूबन लखी न अस बन ताई ॥ मुनिवर देहु बताय कौन बन सूझत मारग नाहीं । रवि प्रकाश आवत नहिं धरणी साखा पत्र न छाहीं ॥ सुनि रघुपतिके वचन गाधि-

सुत कही विहँसिबर बानी । सुनहु वत्स रघुबंश विभूषण जासु विपिन सुखदानी ॥ पूरब मलद करूष देशद्वै देवकिये निरमाना। पूरण रहे धान्य धन जनते सरित तड़ागहुनाना ॥ प्रथमहिंजब वृत्रासुर मारयो समर मध्य मघवाना । लगी ब्रह्महत्या बासव को क्षुधा कलेश महाना ॥ सुर मुनि जानि दुखी सुरपति को मज्जन गंग कराई।कलशन भरि अभिमंत्रित करि जल दियो शक्र नहवाई ॥ द्विजहत्या बासवकेतनते दीन्हों सकल छुड़ाई । मिटी क्षुधा पुरहूत उदरते बिमलभयो सुरराई ॥ विगत क्षुधामल देखि देवपति सुरमुनि भे सुखभीने।सो मलक्षुधा देवपतिदोहुनदेशनको पुनिदीने ॥दोहा॥ तातेमलद करूषभो दोउ देशनको नाम । द्विज हत्यालहि देशदोउ सबबिधि भयेनिकाम ॥ छंद ॥ निजउपकार जानि सुरनायक दिय देशन बरदाना । ममलधरयो करूष मलददोउ देशलहैं सुखनाना ॥ रहैं धान्यधन जनगन पूरण आधि व्याधिते हीने । सुनि सुरपतिके बचन देवसब परमप्रशंसा कीने ॥ मलद करूष देशदोउ जैसे किये शक्रउपकारा । तथापाक शासन बरदीन्ह्यो लहेदेश सुखभारा ॥ बहुतकाल मलदकरूषहु रहेपूर धनधामा । आधिव्याधि अरुसकल उपाधि बिहीन भये सबठामा ॥ कछुक कालतें पुनियक्षीयक काम रूपिणी घोरा । धारणकरि हज़ारहाथी बलहोत भईबरजोरा ॥ सुन्दनामको यक्ष भयोयक रहितासुकी दारा । नामताड़का भूरि भयावन जेहि मारीच कुमारा ॥ जाको शक्रसमान परामक्र भयकर महाशरीरा। महाबाहु अरु महाशीश जेहिबदन दरीगम्भीरा ॥ सोइराक्षसमख मोर बिनासत त्रासत देशनिवासी । जननितासु ताड़का भयामनि खातिमनुजकी रासी॥ मलद करूष देशमहं जबतेकिय ताड़कानिवासा।तबते दियोउजारि देशदोउ दै जीवनको त्रासा ॥ भये भयावन देशसकल थल गयेमनुज सबभागी । यहपन्थाते बसति कोशखट धावतिरोज अभागी ॥ दोहा ॥ कौशलनाथकुमारतुव होइसदा कल्यान । यहीपन्थ पगुधारिये बनताड़का महान ॥

रामताड़का भीतितै इतनाहिं आवत लोग। पापिनिके बधकरन कों भलो मिल्यो संयोग॥ दारुण बन वृत्तान्त यह मैं बरण्यो रघुनाथ। देशउजारयो ताड़का अबतुमकरो सनाथ॥

केशवदास कुण्डलिया॥ सुताबिरोचनकी हुती दीरघजिह्वानाम। सुरनायक वह संहरी परमपापिनीबाम॥ परमपापिनी बाम बहुरि उपजीकबि माता। नारायण सोहती चक्र चिन्तामणिदाता॥ नारायण सोहती सकल द्विजदूषण संयुत। त्योंअब त्रिभुवन नाथ ताड़का तारहुसहसुत॥

रघुराज दोहा॥महा अधर्मिनि ताड़का है न धर्मको लेश। हनहु याहि रघुबंशमणि मेटहुमनुज कलेश॥ सुनि मुनिवरके बचनबर जोरि पंकरुह पाणि।नायशीश नेसुक बिहंसि रामकहे मृदुबाणि॥ छं० चौ०॥ जबमुनिगये आप कौशलपुर पितासभामधि माहीं। मांग्यो मोहिं यज्ञरक्षन हित दियउ पिताहमकाहीं॥ तबते तुम्हहिं अहौ पितु माता भ्रातात्राता मोरे। हमदोउ बन्धुरावरे सेवक बचनसूत्र ममजोरे॥ जोकछुकहौ तौन करिहैंसब तुवशासन है शीसा। पिताबचन गौरव पितुशासन नहिंउलंघि भलदीसा॥ चलनलगे जब अवधनगरते तब पितुमम गुरु आगे। मोहिं बुझाय कह्योनरनायक बारबार अनुरागे॥ पिता मातु भ्रातागुरु सुहृदहु कौशिक अहैं तिहारे। जोकछुदेहिं तुम्हहिं शासन मुनि की जो बिनहिं बिचारे॥ सोपितुशासन पुनि तुव शासन लंघन केहिबिधि करिहै। इष्टदेव पितु आप ब्रह्मऋषि यहअपयश कहँ धरिहै॥ गोब्राह्मण हित सकल लोकहित तुवशासन हितनाथा। मैं करिहौं ताड़का निधन हठि जो हैहौं रघुनाथा॥ असकहि श्रीरघुबीर बीरमणि गहि कोदंड प्रचंडा। कियो धनुषटंकोर घोर रव भरिगे भुवनअखंडा॥ भगे बिहंग कुरंग बिपिन के बज्रपात जियजानी। धुनिटंकोर कठोर घोर अति सुनि ताडकाडरानी॥ करिकै क्रोध बोधनहिं कीन्हयो कौनयोध बरआयो। काकेकाल शीशपरनाच्यो को यहशोर सुनायो॥ दोहा॥ उठीतुरंतहि रा-

क्षसी दीन्ह्यो कालजगाय । महामीच मूरतिमनहुं ऐंड़ानीजमु हाय ॥

श्रीतुलसीचौपाई ॥ चलेजात मुनि दीन्ह दिखाई । सुनि ताड़का क्रोधकरिधाई ५

संग्रहक० ॥ अतिहिबिशाल पनितनं काल । रक्त नयन महा रूपकराल ॥

रघुराजछंदबावन ॥ जेहिरूप अति बिकराल । मुखबमति पावकज्वाल ॥ बहुवृक्ष टूटतजात । मनुबेग बननसमात ॥ अस बदन बोलतबात । कोकियो शोरअघात ॥ मगचलीआवाति कोपि । निजशत्रुभक्षण चोपि ॥ आननअमर्षित ओपि । बनधूरि धुंधहि तोपि ॥ करिदियो धुंधाकार । अवनी अकाश मँझार ॥ तेहिदेह नहिं दरशाति । केवल अवाजसुनाति ॥ बनजीव भगत चिकारि । बपु बिकट तासु निहारि॥ घनघटाकी अनुहारि । बिकरालबदन बगारि ॥ सोकाल रजनिसमान । जनुचहाति खान जहान ॥ रदरदत उड़त कृशान । चिक्करत शोरमहान ॥ को धरचो यहिबनआय । यमसदन भीति बिहाय ॥ कोकियो शोर कठोर । नहिंजानतो बलमोर ॥ असकहत आई दौर । जगपापिनी शिरमोर ॥ शिर नीलचन्दन खौर । बहुखुली केशनभौर ॥ दोहा ॥ यहिबिधि आई ताड़का कीन्हे भषन उमंग । राम लषण मुनि जहँखड़े पावक मनहुं पतंग ॥ छंदझूलना ॥ तेहि निरखि रघुबीर रणधीर करतरिलै बचन गम्भीर सौमित्रिसों कहतभे । अरुण नेसुकनयन सकल सुखमाअयन भये संग्राम के चयन धनुगहतभे ॥ यह पर्बताकार बिकरार बपु ताड़का झरतअंगार मुख मीचुकी जननिसी । उरफटत बादरन से लखत कादरन केभगत बांदरन से भट प्रलयरजनिसी ॥ दुरधर्ष माया प्रबल करत गलबल चपल भरीछलबलसकल भीति भलभासिका । कोदंड संधानि लगिकान युगबानते करतहौं हानि यहि

करन अरु नासिका ॥ बिना नाक औ कानकी भई पुनि भजि-
गई कुपथ पुनिनालई मीचुते बचिगई । नारि अनुमानि नहिं
उचितबधजानि जुपरानरनते कहो बीरछतिकाठई ॥ दोहा ॥ यहि
बिधि भाख्यो लषण सों राम ताड़का देखि । राजकुमारन को
निरखिधाईसो लघुलेखि ॥ कबित्त ॥ कीन्हेबाहु ऊरधको मूरधके
खोलेकेश लेशनादयाको ताको कोपहीको भाराहै । करतचिकार
बिकरार मुखकों बगारि धावत धरणिधाई धूरि धुंधधाराहै ॥ भ-
नैरघुराज मुनि प्रीति के बिबशह्वैकै करिकै हुंकारमुखबचन उ-
चाराहै । समरमँझार पावै बिजयअवार यह श्यामसुकुमार रण
बांकुरो कुमाराहै ॥ सवैया ॥ श्यामल गौर महासुकुमार कुमारन
अङ्गनकोमलताई । त्योंमुख माधुरी मञ्जु बिलोकत कोटिनकाम
की सुन्दरताई ॥ ताड़न ताड़का आईहुतीसो जकीसीसकी नहिं
सामुहेधाई । श्रीरघुराज बिचारेलगी छबिआजुलों ऐसीन आंखि-
नआई ॥ दैत्यन देवन देखे कितेकन चारनसिद्धनकी समुदाई ।
राजकुमारन देखे अनेकनपै नहिं देखे यथादोउ भाई ॥ श्रीरघु-
राजकहा करिये नाहिंखात बनैनहिं जातपराई । ताते उड़ाय कै
धूरिकीधार कुमारन देहुंमैं आशुभगाई ॥ दोहा ॥ अस बिचारि
जियताड़का धुरीधूरिकी धार । अतिगरजन तरजनलगी कियो
महाअंधियार ॥ कहुंघनसम कहुंशैलसम कहुंतरुसम बिकराल ।
कहूंसिंहसम व्याघ्रसम कियो बपुषततकाल ॥ जबलों आवैसांझ
नहिं तबलोंराज किशोर । हनहु ताड़काको तुरत पुनिहोई बर-
जोर ॥ छंद चामर ॥ उतैमहा भयंकरी निशंकरी अमर्षिकै । अतूल
शूलखड्ग आदि शस्त्रको प्रवर्षिकै ॥ उड़ाति आसमानमें देखा-
तिना पयानमें । निपात बज्रशोरसो कठोरकै दिशानमें ॥ पषान
पादपानको समूह भूमि डारती । नरेन्द्रके कुमारको अदृश्य ह्वै
प्रचारती ॥ प्रचण्ड धूरि धुन्धकार अन्धकारकै दियो । अनेकतार
भासकार चन्दमन्दसो कियो ॥ देखातना दिशानिशा भई मनो
सुसामनी । अनेकभांति गर्जितर्जि ताड़का भयामनी ॥ अनेक लूक

बारती बिदाहती बसुंधरा। प्रकाशती अनेक शैलसानुमानकन्द-रा॥ तहां सबन्धु कौशलेशको कुमार कोपिकै। प्रचण्ड लै को दण्डतासु अन्त चित्तचोपिकै॥ पतत्रिधार बारबार बारबार छोड़ते। बचैनतैंयही उचारि शस्त्रधारओड़ते॥ देखातनाअकारतासु शब्दही सुनातहै। बिचारि शोर ओरबाणमारतेअघातहै॥ नरेशके कुमारमारि शब्दबेधि बाणमें। कियोसुतासुगौन रोधजौन आस मानमें॥ पयान कैसकीन व्योम बाणजालछाइगे। रहीन संधि नेकुताहि शोकओकआइगे॥ प्रचंडकोप ताड़का अखंडओजमाय नी। गिरिधरा धड़ाकदै सुरेश शोकदायनी॥ अमर्षि घोरशोरकै नरेशके कुमारपै। सबंधुरामपै चली चमंकि चित्तचोरपै॥ अका-ज देवकारिणी सुगाजसी गराजिकै। यथा मयंक ओरजात राहु ओजसाजिकै॥ बिलोकि देवराम ओरजात घोरताड़का। किये हहापुकार भाषि भाषि आजआड़का॥ डगैधरा मनोमतंग नाव में सवारभो। बसुंधरा धरोगिरै दिगीश शोकभारभो॥ नरामको नलक्ष्मणै नकौशिकै ततक्षणै। बचाइहौं बिशेषिते करौं तुरन्त भक्षणै॥ अनेकबार यों पुकारि ताड़का भयंकरी। नगीचआय जोरसों मनो कला सुशंकरी॥ नपाणि है नकान है ननाक है भयामिनी। रंगीशरीर शोणितै मनोसुकाल कामिनी॥ नरेश के कुमारको ननेकुभीति होतिभै। विजैप्रभा प्रमोदनी छनैछनै उदोतिभै॥ दोहा॥ जब ताड़ितासी तड़पिकै सो ताड़कातुरन्त। महाबिकट आईनिकट करती कटकट दन्त॥ छंदतोटक॥ हरि बज्रसमान सुबाणलियो। दुखदेवन देखत कोपकियो॥ धनुशा-यक साजि सुकाननलौं। गुणखैंचि अकम्पित आननलौं॥ तकि कै तुकिकै उरपापिनिको। लखिकौद्विजदेवन सापिनिको॥ अस ठीकबिचार कियो मनमें। बधको अबकाल यही क्षनमें॥ प्रभु सोशर त्यागिन दीठिदई। पविपात अघात अवाजभई॥ दिशि दामिनिसो दमक्यो शरसो। नहिंदेखिपरयो निकस्यो करसो॥ उर जायलग्यो तिय पापिनि के। द्विज देवनके दुखदापिनिके॥

तनको शरफोरि धस्यो धरणी । तहँ तासु बिलायगई करणी ॥ शरलागत घोर चिकार कियो । सिगरे सुरकानन मूँदिलियो ॥ तहँ यक्षिणिसो भूमि भूमिपरी । पुहुमीजनु गाजगराज गिरी ॥ उलटे दृगभे रसनानिकरी । वहराक्षसि सो पुहुमी पसरी ॥

देवस्वामीपदरा॰जंगला ॥ रघुबर ताड़का तियमारी । यदपिकहेउ गुरुहतहु कोपबश तदपि न नीतिबिचारी ॥ उत्तमनरउपजत नारी से अस अवध्यकी तारी । यासेअघमै होइहैं यातेगुरुआयसु नहिं टारी ॥

तुलसीदास चौपाई ॥ एकहि बाणप्राण हरिलीन्हा । दीनि जानि तेहि निजपददीन्हा ॥

रघुनाथदास ॥ तनु छूटत भै सुन्दरभामा । अस्तुति करतगई हरि धामा ॥

रघुराज छंदतोटक ॥ मुनिकौशिक मोदितहोतभये । रघुनन्दनको मुख चूमिलये ॥ ऋषि बारहिबार अनन्दभरे । निजआंखिन ते अँसुआनढरे ॥ राघुनायक मोहिं सनाथकियो । यहपापिनि को परधाम दियो ॥ करिहैं अबसैन सुखी सिगरे । जनजे यहपापिनि ते बिगरे ॥ दोहा ॥ हन्यो ताड़का रामजब सुखी भयउ सुरराज । आये कौशिकके निकटलै सब सुरन समाज ॥छंद चौबोला ॥ सकलदेव अति भये प्रमोदित बाससंगमहंआये । देवदेव पतिकरि कौशिकनति जोरि पाणिअसगाये ॥ सुनहुमहामुनि राम ताड़का हत्योभयोकल्याना । हमअरुदेवमरुतगण संयुत सन्तोषितबिधि नाना ॥ तातेकहतसबै मुनितुमसे रघुपतिको कुछदीजै । लखैं लोकतुव नवलनेहफल अनुपमजगयश लीजै ॥ नामप्रजापतिजो कृसास्वहै ताके पुत्रअपारा । दिव्य अस्त्रअरु शस्त्र तेज निजमानहुं भानुहजारा ॥ तपबलते सिगरेअमोघजेजानहु सब मुनिराई । ते सबलषण रामको दीजै तासुपात्र रघुराई ॥ दिव्यअस्त्र पावनके लायक रघुनायक युतभाई ॥ अबैबहुतकरिहैं सुरकारज राजकुवँर

242

कहुँआइगा असकहि देवदेवपति सिगरे करिप्रणाम पुनिरामै । बन्दिचरण लक्ष्मण कौशिकके गये सुखी सबधामै ॥ विश्वामित्र चरणबन्दि मुनि राम लषण दोउभाई । लिये उठाइ अंकमहँ मुनि वर मनहुं महानिधि पाई ॥ बैठ्यक तरुतर मुनिवरलै गोद लषणअरु रामैं । बारबार शिरसूंघि सराहत पूरणभो मनकामैं ॥ फेरत पीठि पाणि पोंछत मुख चूमतबदन सुखारी । अङ्गअङ्ग पुलकावलि छाई ढारतनैननि बारी ॥ दोहा ॥ इतनेमें सन्ध्या भई अस्ताचलगे भान । रामलषणसों कहतभे कौशिक मुनि हरषान ॥ कबित्त ॥ पायो महाश्रम राज किशोर इतै यहताड़का के रणमाहीं । ह्वैहैं पिरात सुपंकज पानि प्रश्वेदकेबिंदु शरीर सोहाहीं ॥ श्रीरघुराज सुनो रघुराज बिचारिकहौं नहिंबात वृथाहीं । आज निवासकरो रजनीइत काल्हिचलौ मम आश्रमकाहीं ॥ कौशिकके सुनिबैन मनोहर राजकिशोर महासुखपाई । पंकज पायँ गहे मानेके शिरनाइकै कीन्हे बिनय दोउभाई ॥ श्री रघुराज सुनो मुनिराजन नेसुकहै हमरी प्रभुताई । आप प्रताप ते ताप बिना जगताड़नि ताड़कै मीचु सताई ॥ दोहा । रहहु आज रजनी इतै यहसलाह भलकीन । भोरचलौ जेहिओरमन चलबसंग श्रमहीन ॥ तेहिरजनी में सुखसहित बनताड़कामझार । बिश्वामित्र बसेसुखी लैदोउ राजकुमार ॥ गयो शापते छूटिबन ताही दिन ततकाल । लसतभयो जिमि चैत्ररथ बाग कुबेर बिशाल ॥ कबित्तघनाक्षरी ॥ मारिताड़का को राम बसेतेहि काननमें सुयश दिशाननमें फैलिगो दराज है । आये ऋषिवृन्द रघुनन्दकी प्रशंसाकरैं अतिहि अनंदपाइ मुनिनसमाजहै ॥ शाप छूते तापछूते बिगत बिपिन भयो रजनी बिमल सजनीसी सुखसाजहै । मुनिराज काजकरि मुनिन समाजयुत लषण समेतसोये सुखी रघुराजहै ॥ दोहा ॥ सजनीसी रजनीभई बनभो भवनसमान । कौनशोक जेहिलोक में बसे भानुकुलभान ॥ अरुणाई प्राचीदिशा नेसुककियो पसार । शशिबिकास कछु ह्रासभो जहँ

तहँ झलमलतार ॥ बिश्वामित्र उठेप्रथम सुनि धुनि लालशि-खान । अतिमंजुल बोले बचन सुनहु भानुकुलभान ॥ समर अमित शोभित विजय समितसचु सुखपाय । सूरमिलन आवत ललकि उठहु लषण रघुराय ॥ मुनिवरकी बाणीसुनत दृगमीं-जत अलसान । परणसेजमें जगतभे दिनकरवंशप्रधान ॥ मुनि पदबंदनकरि मुदित रघुनन्दन दोउभाय । संध्याबंदनकरत भे निरमल सरित नहाय ॥ मुनिमज्जनकरिकै तुरत नित्यकृत्य निरवाहि । आये ताही तरुतरे जहँ सोये सुखमाहि ॥ संग्रह कर्त्ता चौपाई ॥ बैठे रामलषण ऋषि आगे । मुनिमाधुरि निरखत अनुरागे ॥ मग मुनि लखी राम लरिकाई । बातसल्य में गयेभु-लाई ॥ सुरमुनि गौ बिप्रन दुखदाई । हतीताड़काको रघुराई ॥

तुलसी ॥ तब ऋषिनिजनाथहिं जियचीना । विद्या निधि कहं विद्या दीना ॥ जाते लागन क्षुधापियासा । अतुलित बल तनतेज प्रकासा ८ ॥

कृपानिवास ॥ विद्या कोटि अविद्या छलबल । प्रगट अमितजाकी रुचिपलपल ॥ भक्तानामर्पण अधिकारी । यथासुभावतथावृतधारी ॥

रघुराज दोहा ॥ मुनि अस्त्रन संधार मनु कीन्हें सविधिबखान । गुरुपद बंदि अनंदितें लीन्हें राम सुजान ॥ कबित्त ॥ प्रगटभयेते मूर्तिमन्त अतिभासमन्त कोई धूमधाम कोई मनहुँ अंगार हैं । चंद रवि तुल्य कोई जोरे हाथ हर्ष मोई मधुर बचन कीन्हें राम से उचारहैं ॥ भनै रघुराज हम रावरेके किंकरहैं कीजे जौन शा-सन सो करैं बिन बारहैं । हँसि रघुबंशमणि कह्योबसो मेरे मन करियोसहाय अबै जाइयो अगारहैं ॥ दोहा ॥ राम बचन सुनि हरषिकै दै परदाक्षिण चार । मनबसिहैं अस कहिगये ते सब उपसंधार ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचिते श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलप्रथमप्रकर्णसमाप्तः ॥

अथ श्रीतुलसीदासजीकृत

श्री मानसरामायण बालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

द्वितीयप्रकरण

बिश्वामित्रमुनिकाश्रीअवधेशकुमारनसहितप्रमोदसे सिद्धाश्रममेंपधारनाऔरयज्ञरक्षावाअहल्याउद्धार करजनकपुरआगमन

रघुराज दोहा॥ शीश सूंघि मुखचूमि मुनि आगेकरि दोउभाइ । चले प्रमोदित पंथमहँ बारबार हरषाइ ॥ छन्दचौबोला॥ यह ताड़का भयावन बनते निकसी पंथासूधी । सोई बिपिन मनोहर जाती नाथ कतहुं नहिं रूधी॥यही पंथ ह्वै चलब सहित सुख देश मनो-हरलागै। नवपल्लव पिकबल्लभ मंजुल पिक कूंजै बड़भागै ॥ कहुँ सर कहुँ सरसीरस संयुत सरससरस सरसाते । अतिगंभीर नीर मनि सन्निभ सीर समीर चलाते ॥ कल कुंजन गुंजत मंजुल अलि बंजुल सुरभि सोहाई । मनरंजन कंजन की शोभा मंजन योगजनाई ॥ दोहा॥ कहहुनाथ कानन कवन पंचानन ते हीन । काको यह आश्रम बिमल देखतहीं सुखदीन ॥ यहआश्रम संसार को श्रमनाशन रघुराज । बावनप्रभु परभावते सिद्धाश्रम कृत काज ॥ बावनप्रभु पद भक्तिबश मैं इतकरहुँ निवास । कापूछहु जानहुँसबै रवि किनजान प्रकास ॥ सवैया॥ याही लिये लला मांगि महीपसों ल्याये लेवाय इतैदोउभाई । आवै इतै रजनीचर घोर करै उतपात महादुखदाई ॥ श्रीरघुराज सुनो रघुराज न

दूसरी आश तिहारी दुहाई । धीर धुरंधर बीर शिरोमणि देखिहौं रावरे की मनुसाई ॥ खेलिउतै मृगया सरयूबन मारे अनेकन बाघ बराहू । सीखी कला विकला धनुकी लहे अस्त्रन तामें नि-होरन काहू ॥ श्रीरघुराज गरीब निवाज करो सुधि ज्यों गजराज औ ग्राहू । ज्यों मधु कैटभ ज्योंमुरको तिमि मारिये आजु मारीच सुबाहू ॥दोहा॥ सुनि धुनिसंयुत मुनि बचन बिहँसे राज किशोर। तुवप्रताप सब सिद्धि गुरु नहिं कछु मोर निहोर ॥ छन्दचौबोला॥ सुनिरघुनन्दन बचन मनोहर मुनिवर हियहरषाने । मिटी शंक सब ह्वै निशंक अति कहै बैन सुखसाने ॥ पहुँचव आजु राम सिद्धाश्रम हम तुम प्राण पियारे । यथा हमारो तथा तिहारो भेद नपरत निहारे ॥ असकहि मुनिनायक रघुनायक लषण सहित पगुधारे । मनहुँ पुनर्वसु युगल तारबिच इंदु प्रकाश पसारे ॥ सिद्धाश्रम महँ राम लषण मुनि कीन्ह्यों जबै प्रवेशा। लखि तहँके बासी तपरासी धाये बिगत कलेशा ॥ बिश्वामित्र चरणपंकज महँ प्रमुदित किये प्रणामा । गुरुको पूजन किये सबिधि पुनि जाने हम कृतकामा ॥

श्रीतुलसीदोहा ॥ आयुधसकल समर्पिके प्रभुनिज आश्रम आनि । कन्दमूलफल भोजन दिये भक्तहितजानि ॥

रघुराजछंदचौबोला ॥ दीनबंधु दोउबंधुनको मुनि किये परमसत कारा । दियेअशीश मुनीश ईश गुनिस्वागत बचनउचारा ॥ बैठे रामलषण मखशाला विश्वामित्रहि आगे । मुनिमण्डल मण्डित रघुनन्दन निरखहिं सबअनुरागे ॥ कुशलप्रश्न पूंछत रघुबर को बीतिगये द्वैदंडा । तब करजोरिकह्यो कौशिकसों प्रभुकरि करको दंडा ॥ आजुहिते बैठो मुनिनायक निजमख दीक्षामाहीं । करहु निशंक यज्ञ विधिसंयुत ऐहैं निशिचरनाहीं ॥ दोहा ॥ होइ सिद्धि सिद्धाश्रमहुं बाणी सत्यतुम्हारि । आपप्रताप नदापकछु पापशाप गेजारि ॥ राजकुमारनके बचन भरेबीररस रंग । सुनि कौशिक

मुनि मुदितमन कियो अरम्भ प्रसंग ॥ रामलषण मुखभाषिअस कियोनिशा सुखशैन । कौशिकमुनि सबमुनिनयुत शयन किये भरिचैन ॥ पायप्रभात प्रहर्षिउठि करिमज्जन दोउभाय । तिमि संध्याबन्दन बिमल दियोअर्घ दिनराय ॥ संग्रहक० चौपाई ॥ परममुदितमन दोनोंभाई । बिश्वामित्र चरण शिरनाई ॥

श्रीतुलसीचौपाई ॥ प्रातकहा मुनिसनरघुराई । निर्भययज्ञ करहु तुमजाई ॥

रघुराजदोहा ॥ देशकालज्ञाता युगलत्राता राजकिशोर । देशकाल अनुरूपतहँ कहेबचन बरजोर ॥ जाननचाहैं नाथहम रजनीचरजेहिकाल । विघ्नकरण कृतआवते प्रेरितकाल कराल ॥ रहैं सयुग तौनेसमय नहिंभ्रमहोय मुनीश । हमको समय बताइकै सुचितभयो जगदीश ॥ समरउमंगभरे सुनत रामलषणकेबैन । सिगरेमुनि बोलतभये तिनहिं सराहि सचैन ॥ कबित्तसवैया ॥ सुंदरसांवरे राजकिशोर भली यहबात कही मनभाई । हौसमरत्थ सबैबिधिते दशरत्थके लाड़िले आनँददाई ॥ कौशिक दीक्षालई मखकी भयेमौन बदे बिधिजैहे नसाई । आजते औ पटबासरलौं रघुराजजू रक्षणकीजै बनाई ॥ दोहा ॥ सुनतमुनिन बाणीबिमल यशी अवधपति लाल । सयुगकसे कम्मरकठिन करनसमर ततकाल ॥

श्रीतुलसीचौपाई ॥ होमकरनलागे मुनिभारी । आपुरहेमखकीरखवारी ॥

संग्रहक० ॥ रामलषण द्वौअतिबलवाना । कटिनिषंग कसे कर धनुबाना ॥

रघुराजकबित्त ॥ लसत दुकूल पीतभूषण नखतज्योति उदैमान शीतभान बदन बिराजते । करनसुहाने दशताने मणिकंचन के जाने जगबीरत्यों बखाने मुनिराजते ॥ भूपातिकिशोर बागैयज्ञशा-

ला चारोंओर तपोबन रक्षतहैं रक्षससमाजते । भनैरघुराज कोश-लेशके कुमार सुकुमार मारमदमार त्यागेनींद आजते ॥ दोहा ॥ रामलषण षटनिशि दिवस नींद भूख अरुप्यास । तजेतमकि संगर सजे मखरक्षण के आस ॥ सवैया ॥ बीतिगये जबपंचनिशा दिन आयो छठौंदिन पूरणमासी। पूरणआहुतिको समयो भयोभेमुनिवृंद विषादितत्रासी ॥ श्रीरघुराजकह्यो लषणै लला होहुतयार बिलंब बिनासी । जानिपरै हमहीं हठिआजु निशाचरसैनकी आमनिवा-सी ॥ दोहा ॥ रामबचनसुनि मुनिसकल भरे समरकेजोम । उपा-ध्याय उपरोहितौ करनलगे बिधिहोम ॥ स्रुवा कुशा अरु चमन युत कुसमहु समिधसमेत । बिश्वामित्रहि हवनमें ज्वलित धूम कोकेत ॥ ज्वालमाल लखि बेदिका मुनिसब अशुभबिचारि।कौ-शिकते बोलतभये गुनिआगम निशिचारि ॥ पंचदिवसमखविधि सहित भयो मंत्रयुत काज । छठयेंदिन अब बिघनकछु जानिपर-तमुनिआज ॥

संग्रहचौपाई ॥ लख्यो धूममख श्रुतिधुनि सुनिकै । कौशिकयज्ञ करत असगुनिकै ॥

कृपानिवास ॥ खलमारीच सुबाहु सुभटबर । करकुठार त्रिशूल तीव्रधर ॥ गतसुबोध भरि क्रोधबिमानी । खड्ग शक्ति धनु तोमरपानी ॥

श्रीतुलसी ॥ सुनिमारीच निशाचरकोही । लैसहायधावा मुनिद्रोही ॥

रघुराजकबित्त ॥ भाषत परसपर ऋषिनके भीतिभरे मौन मुनि कौशिक नबोले रामहेरिकै । दक्षिणदिशाते मानो भादवनिशाहै घोरउठ्यो अंधकार चारोंओरतेघेरिकै ॥ मूंदिगयोभासमान आस-मानहीते तहां होतभै भयानक अवाजकानपेरिकै । हल्ला मख शालामच्यो सकलबिहालाभये रक्षौ रघुराज आज भाषैंमुनि टेरि-कै॥ कोऊभगे पात्रछोड़ि कोऊभगे होमछोड़िकोऊभगे स्रुवाछोड़ि

भूसुर बिचारेहैं । कोऊमृगचर्म त्यागे लैलै मुनि जीवभागे रहे मखकर्म लागेभरे भीति भारेहैं ॥ हाहाकार माचिरह्यो विश्वामित्र आश्रममें हँसिरघुराज रामकेतन नेवारेहैं । बैठेगाधिनन्दन भरोसे रघुनन्दनके जानतहमारे रघुबीर रखवारेहैं ॥ दोहा ॥ उठै यथा कारीघटा पूरुब पौनहिंपाय । श्याम मेघमाला गगन दक्षिण परी देखाय ॥

छंदभुजंगप्रयात ॥ धरामें मच्यो धूरिको धुंधकारा । प्रलै यामिनीसो भयो अन्धकारा ॥ भईगाजकैसी गराजै दराजै । कहैं बिप्र कैधौं प्रलयहोतिआजै ॥ करैरात्रिचारी महाघोर शोरा । किहे मूढमायासो दायान थोरा ॥ चले आवते आशु आकाश चारी। महाभीम कायानिशाके बिहारी ॥ द्रुतैव्योम धामै यथाराहुकेतू। किये यज्ञके बिघ्नको भूरि नेतू ॥ महामूढ मारीच तैसे सुबाहू । सुने मातुको घातआघात दाहू ॥ धरादेवको अध्वरै ध्वंसिडारौ । रची यज्ञशाला भटौ जायजारौ ॥ बचैं बिप्रनाहीं सबैको अहारौ। लगे यज्ञजूपौ जरैते उखारौ ॥ भरौयज्ञ वेदीमलौ मूत्रधारा । उपाधी महागाधिकोहै कुमारा ॥ करै यज्ञमानै नहीं बारबारा । सहाई बोलाये उभैभूप बारा ॥ सुने बैन मारीचके रात्रिचारी । चलेचाय चारौदिशा शस्त्रधारी ॥ नहींजानते आपनो हालकाला। करै यज्ञकी रक्ष त्रैलोक्यपाला ॥ महा भीमकाया करै भूमिमाया । चढ़े व्याघ्रबाराह व्यालौ निकाया ॥ कहूंभासहोते कहूं अंधकारा । कहूंमेघ धावैं तजै रक्तधारा ॥ भरी बेदिका शोणितै बोध माहीं । लगे बर्षनै मास हाडौ तहांहीं ॥ यहीभांति कीन्ह्यों महायज्ञ भंगा । न जाने महामीचको मूढसंगा ॥ करै शोरभारी कहूंदेततारी । निशाकालचारी कहूं देतगारी ॥ यही भांति सों राक्षसी सेनभारी । कियोहै उपद्रव महा भीतिकारी ॥ नहधिर्म को लेशनेको शरीरा । करै नित्य गो बिप्रको भूरिपीरा ॥ सोरठा ॥ यहि बिधिजब मारीच सहित सुबाहु अनेकभट । जानिन आपनमीच किये उपद्रव अतिकठिन ॥ उड़िउड़ि आशु अकाश भेरं

कुण्ड शोणित समल । करि करिकोप प्रकाश धाये दाहन मख भवन ॥ कबित्त ॥ आयगे निशाचर बिलोकि रघुवंशबीर बेदीके बिलोके भरी शोणितकि धारहै । धाये कञ्ज पायनसों दोऊबंधु कोपकैके राक्षसी चमू निहारे गगन मझारहै ॥ प्रबल मरीच औ सुबाहु चोपिचले आवैं भाषतबचन आजु कौन रखवारहै । भनै रघुराज नवनलिन विशाल नैन बोले मञ्जु बैनचैन उरमें अपारहै ॥ देखोदेखो लषण भषणको भरोसो कीन्हे चषण निकारे मांस भषण पियारेहैं । धायेचले आवैं धर्मधुरा धसकावैं भीरु भीतिउपजावैं नहिं समर जुझारेहैं ॥ भनैरघुराज सीखे दिव्यअस्त्र कौशिकसे तिनकीपरिक्षा लेन मनमें हमारेहैं । मारि मानवास्त्रको उड़ाइ देतो अम्बरमें कादरकुटिल कूर कौन फल मारेहैं ॥

संग्रह क० चौपाई ॥ पढ़ि मानवा अस्त्र रघुराई । निज धनुपर शर एक चढ़ाई ॥

श्रीतुलसीदास ॥ बिनु फर बाण राम तेहि मारा । शत योजन गा सागर पारा ॥

रघुराज दोहा ॥ ताते कारज जानि कछु हरणहेत भुवभार । प्राणदान मारीचको दीन्ह्यों राम उदार ॥ उड़ै यथा कारी घटा पौन प्रचण्डहि पाय । उड़्यो तथा मारीच रण पर्‍यो सिन्धु महँजाय ॥ छंद मोतीदाम ॥ उत उड़तलखि मारीच । शुभबाहु कोप्यो नीच ॥ बोल्यो भटन ललकारि । करि कठिन करतरवारि ॥ धोखो दियो मुनि मोहि । मैं लियो प्रथम नहिं जोहि ॥ लायेउ कुमार बोलाय । निज करन हेत सहाय ॥ दोहा ॥ सरलयुद्ध मारीचकिय इन दिव्यास्त्र चलाय । धोखे धोखे रोषिरण दीन्ह्यों ताहिउड़ाय ॥ छंदपद्धरी ॥ मोहिंतदपि शंक नहिं लगति नेक । अब मारियुगल राखिहों टेक ॥ धावहु प्रबीर बाचैनभागि । मखभमनमध्य करिदेहुआगि ॥ अब खायलेहुदोउ

भूपबाल । अब दयाकेर कछुहैनकाल ॥ पुनि दौरिखाहु कौशिकहि जाय । द्विजबचैनहिं कतहुँपराय ॥ कहि योंसुबाहु करि घोरुशोर । धायो तुरंत जहँ नृपकिशोर ॥ बोल्यो प्रगर्व बाणी कठोर । धोखे उड़ायदिय बंधुमोर ॥ बचिहौन आजु तजि समरठोर । मैं लखत तिहारो बाहुजोर ॥ प्रभुकह्यो मंदमुसकाय बैन । हम क्षत्रीजाति कछुलगति भैन ॥ तुम बीरबड़े बहुपापकीन । ताते बिरंचि अब फलहुदीन ॥ तुमहनेबापुरे द्विजवृथाहि । अबलोनपर्यौ रणक्षत्रि पाहिं ॥ करियोसचेत संग्रामकाम । मम विश्वबिदितहै रामना-म ॥ तुम संगसैन लायेअपार । हम हैं अकेल भ्राताहमार । अब कठिनपरी मखभवनजाब । सकिहौन लंकपति देजवाब ॥ सुनि अस सुबाहु रघुनाथ बैन । भरि कोपमहा करि लालनैन ॥ कर बालकाढ़ि करकरिकराल । धायोप्रचंड मनुकालकाल ॥ भूधरा-कार ताकोशरीर । करि घोरशोर द्विज देतपीर ॥ दोहा ॥ धावत आवत भीमभट समरसुबाहुसुबाहु । संधान्योशर भानुकुल कुमु-दनवल निशिनाहु ॥ कबित्त ॥ परमकराल मानौ कालहूकोकाल व्याल मुनिननिहालकर तेजआलबालहै । अतिहि उतालबढ्यो पावकको मंत्रजाल उठीज्वाल मालडग्यो दिग्गजको माल है ॥ चन्द्रभाल चारिभाल लोकपाल भेबिहाल हल्लापर्यो स्वर्ग ते रसातल पतालहै ॥ सूखेताल बंदगाल बिहँसे लषणलाल रघु-राज जबै शरसाज्यो रघुलालहै ॥ दोहा ॥ छोड़तबाण कठोरतहँ भयो धनुषटंकोर । दिगदंतिनकेफोरि श्रुति चल्योविशिखबरजोर॥

तुलसी० चौ० ॥ पावक शर सुबाहु पुनि जारा । अनुज निशाचर कटक सँहारा ॥ मारि असुर द्विज निर्भयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि भारी ॥

रघुराज दोहा॥ आनँद बश मुनिनाथसों बोलि न आये बैन । ल-षन लगे दोउ बंधुकी शोभा अनमिख नैन ॥ कवित्त॥ अस्तुति करत मुनिबृंदठाढ़े चारों ओर बिश्वामित्रचूमैंमुख लेतहैं बलैया

को । झारिकै तमीचर सँहारिकै पसारियश दुखसों उबारयो मोहिं लीन्हें संग भैयाको ॥ भनैरघुराज वेद बिप्रको पलैया पायो संगको डोलैया रघुकुल के जोन्हैया को । बोले मुनिभैया सत्यबचन कहैया किधौंयाकी धन्यमैया किधौं मेरीधन्य मैयाको॥ दोहा ॥ रामबाहु पूजे मुनिन अस्तुति करत तहांहिं । यथा सुरासुर रणजिते सुरपूजे हरि काहिं ॥सवैया॥ कौशिकको लखि श्री रघुनन्दन धायगिरे पदपंकजमाहीं।जोरिकै पंकजपाणि सुखीमुख मंजुल बानि कही मुनिपाहीं॥श्रीरघुराज सुनो ऋषिराज न मोरहै जोर निहोरहु नाहीं।केवल रावरेकी कृपापाय जित्यों क्षणमें रणमें रिपुकाहीं ॥ कीजै समापत यज्ञ द्रुतै रघुराज प्रमोदित शंक बिहाई।आये इतै शठमारि गये जरिजैहैं बहोरि बचै न पराई ॥ हाजिर मैंहौं हजूरमें रावरे सेवा बरै सहितै लघुभाई।जोदशकन्धर हू चढ़ि आइहै तौ हनिजाइहै नाथदोहाई॥मुनिनायकबोले सुनो रघुनायक आपहमारे सहायकहौ । अतिदीनन आनँददायकहौ कहँलौंबरणौं सबलायक हौ ॥ रघुराज सुनो रघुराजकुमार धरे करमें धनुशायकहौ । मखपूरणमें अबशोचकहा तुमहीं जहँ रक्ष विधायकहौ ॥ दो० ॥ सुनि मुनिकी बाणी विमल राम परम सुखपाय।सज्जन प्रिय मज्जन किये प्रथम लषण नहवाय॥रघुपति शासन पायकैमुनि अरम्भ मखकीन।सबिधि सऋत्विज याग की पूर्णाहुति करिदीन॥ कौशिक यज्ञ समाप्त करि लखिदसदिसि निरबाध । राम लषणको बोलिकै बोलेबुद्धिअगाध॥सवैया॥कीन्ह्यो यथारथ मोहिं कृतारथ है न अकारथ कर्मतिहारो । स्वारथ सत्य कियो पितु बैन तथापरमारथ पूरो हमारो॥ सत्यभयो अब सिद्ध को आश्रम छायरह्यो यश बिश्वमँझारो । श्रीरघुराज सुनोरघुराज अहै तुवहाथ पदारथ चारो ॥ दोहा ॥ प्रभु बिहँसे मुनि बचन सुनि कह्यो जोरि युगपानि । हम सेवक तुमस्वामिहौ लेहु सत्य यह जानि॥मुनि मोदित मनमेंभये जानि सैनको काल । सुखी सैन कीन्हे सुचिततिमि सोये रघुलाल॥ सिद्धाश्रम सोवत

सुखी लषण राम मुनिब्रात । आनँदप्रद प्रकट्योतहां निशाप्रयाण प्रभात ॥ चौपाई ॥ करनलगे कोयल मृदुकूका । होनलगे सबमूक उलूका ॥ शशि मलीन झलमलभे तारे । कोकी कोक अशोक निहारे ॥ कलरव लागेकरन बिहंगा । बनको चरिचरि चलेकुरंगा॥शीतल मन्द सुगन्ध समीरा। बहनलग्यो नाशक सबपीरा॥ निशा सिरानी भयो भिनसारा । पूषन पूर्व प्रकाश पसारा ॥ कली गुलाबनकी चटकाती । दैचुटकी मनु बिश्वजगाती । जानि प्रभात गाधिसुत जागे । रघुपति लषन जगावन लागे ॥ उठहु लाल शुभभयो प्रभाता । मज्जन करहु देवमुनि त्राता ॥ उठे राम तब लषन जगाये । तजि आलस मुनिपद शिरनाये ॥ धौतबस्त्रले मुनि सँग माहीं । मज्जन हेतु चले सरिकाहीं ॥ प्रात कृत्यकरि सबिधि नहाये । अर्घप्रदान दीन सुखछाये ॥ करि संध्याबंदन रघुनंदन । रघुकुल चंदन दीन्ह्यों चंदन ॥ आये मुनि आश्रम रघुराई । लषन सहित शोभित सुखदाई ॥ कसि निषंग लैकर धनुशायक । सजे शुभग लक्ष्मण रघुनायक ॥ मुनि आश्रम मज्जन करि आये । पूजन हवनकिये सुखछाये ॥ बैठेमुनि मनु पावक ज्वाला । मुनिसमाज तहं लसी बिशाला ॥ अवसर जानि राजसुत आये । सानुराग मुनिपद शिरनाये ॥ दोहा ॥ निरखि युगल जोरी शुभग दशरथराज किशोर । अनमिष मुनि सिगरे लखत जैसे चंद चकोर ॥ चौपाई ॥ सहजस्वभाव सहज दोउ भाई । कौशिक लिये अंक बैठाई ॥ शीशसूंघि फेरत तनु पानी । पढ़त राम रक्षा मुनिज्ञानी ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन बिप्रनपर दाया ॥ भक्ति हेतु बहु कथा पुराना । कहें बिप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥

रघुराज ॥ समय जानि बोले रघुराई । सुनहु मोरि बिनती मुनिराई ॥ हम किङ्कर दोउबंधु तुम्हारे । सौंपेउ तुमको पिता

हमारे ॥ मातु पिता भ्राता तुम ज्ञाता । स्वजन बंधु गुरु प्रिय अवदाता ॥ हो सरबस मुनिनाथ हमारे । तुम्हरी कृपा शत्रु सब मारे ॥ अब जो शासन करहु मुनीशा । सो करिहौं निशंक धरि शीशा ॥ शासनहोइ अवधपुर जाऊं । मातु पिताकहँ सुखी बनाऊं ॥ अथवा चलौं संग जहँ जाहू । तुम सँग सब सुपास मुनिनाहू ॥ सुनि बिनीत मंजुल प्रभुबानी । कौशिक भन्यौ त्रि-काल बिज्ञानी ॥ इत रण रुधिर बही सरिधारा । प्रगटतिहैं दुर-गंध अपारा ॥ ताते चलहु और थल प्यारे । जहँ सुपास सब भांति तुम्हारे ॥

कृपानिवास ॥ तदासुपत्र जनक चरलाये । विश्वामित्र नरेश बुलाये ॥

श्रीतुलसी० ॥ तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक देखिय प्रभु जाई ॥

रघुराज चौपाई ॥ मैथिल महाराज बिज्ञानी । धर्म धुरन्धर यज्ञ विधानी ॥ तिनके भवन सुनी अस बाता । धनुषयज्ञ होई वि. ख्याता ॥ है यकधनुष धरानिपति धामा । हरको दंड कहावत नामा ॥ दोहा ॥ धनुष रहा अद्भुत परम अप्रमेय अतिघोर । परम प्रकाशी गुरु परम कोटिन कुलिश कठोर ॥ चौपाई ॥ देवन आय यज्ञमहँ दीने । लिये विदेह महामुद भीने ॥ देव दैत्य गं-धर बहु नाना । चारन सिद्ध सबै बलवाना ॥ सके न कोऊ ताहि चढ़ाई । मानुष की का कथा चलाई ॥ रच्यौ स्वयंबर भूप बिदेहू । सुनियत मुनि कीन्ह्यो प्रण येहू ॥ सकै जो कोउ को दंड चढ़ाई । सीता सुता लेइ सो भाई ॥ यह सुनिके ते राज-कुमारा । गये बिदेह नगर बलवारा ॥ राज राजसुत जुरेतहांहीं । सके चढ़ाय अबै लागि नाहीं ॥

संग्रहकर्ता ॥ चलहु ताहि तोरहु रघुराई । सुनत राम रहे नयन नवाई ॥

बिश्वनाथ पद ॥ एकसमय नृप जनक यज्ञकी जोती महि सुवरण हलसाजी । प्रमुदितमन पढ़नलगे तहँ मुनिबर महामंत्र की राजी ॥ माधोमास पक्षसित नौमी मंगल मधि दिन मंगल देनी । पुष्यनखत बर चौथचरणमें प्रगटभई सीता सुख श्रेनी ॥ करक लगन तामें शशि तिसरे केतु सातयें शनि औ मंगल । नवम वृहस्पति शुक्रराहुहै दशयें रवि एकादश बुधकल ॥ जात कर्म सिगरे नृप कीन्हें परमउछाह जनकपुर छायो । हरषि हरषि तहँ सुमन बरषि सुरन अनूप निशान बजायो ॥ उमा रमा बाणी इंद्राणी रानिनमिलि करहिं सेवकाई । सब शक्तिनकी स्वामिनि जेहिप्रकटी कहँलों करों बड़ाई ॥ नृपमन गुन्यो अयोनि कन्याहोय अयोनि जो नायक तैसो । ताको करौं बिवाह मिलन हित हरको पूजि ध्यानधरि वैसो । प्रकटि शंभुकहँ मम धनुभंजै जानहु ताहि अयोनि निज ईशा । सो सुनि नृपति स्वयंबर बिरच्यो मदबिन केतेभे अवनीशा ॥ सोई स्वयंबर फेरि रच्यो नृप टूटत धनु नहिं संगमहाई । बिश्वनाथ है सुदिन प्रातही चलहु मिटावहु नृप बिकलाई ॥

कृपानिवास चौपाई ॥ पत्र अवधपुर प्रथमहिं आये । उभयकाज हित भूप पठाये ॥ रामरसिक सुनि मनसरसाये । प्रियासुध्यान मगन सुख छाये ॥

श्रीतुलसी० ॥ धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा । हर्षिचले मुनिबर के साथा ॥

रघुराज ॥ गह्यो जनकपुर पंथ सुहाई । बन देवता सकल शिरनाई ॥ गमन समय मुनिबचन उचारा । पावहु तुम कल्यान अपारा ॥ असकहि मुनिबर सुखी अपारा । आगेकरि दोउ राज कुमारा ॥ कौशिक चले जनकपुर काहीं । गौरि गणेश सुमिरि मनमाहीं ॥ तहँ के सकल कुरंग बिहंगा । बोलि उठे सब एकहि संगा ॥ भये सगुन मंगलप्रदनाना । मंगल मूल संग भगवाना ॥

चली सकल मुनिराज समाजा । मध्य सबंधु लसत रघुराजा ।

श्रीतुलसी० ॥ आश्रम एक दीख मगमाहीं । खगमृग जीव जन्तु कोउ नाहीं ॥

तुलसी चौपाई ॥ पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी । सकल कथा ऋषि कही बिशेखी ॥

कृपानि० ॥ हतो नाम गौतम ऋषि पण्डित । ज्ञान बिरति पर भक्ति अखण्डित ॥ ब्रह्मा मन अति गौतम माने । निज कन्यादै मुनि सनमाने ॥ नाम अहिल्या रूप ललामा । पाई मुनि मन लहि विश्रामा ॥ पति सेवा तन मन बानी रति । निष्कामा तप ज्ञान भजन मति ॥ सुरपति लखि दंपति तप भारी । मम पुर हरै डरयो अविचारी ॥ एकसमय शशिसंग सिखाये । अरुण शिखा धुनि मुनि बहिकाये ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ गौतम जानेउ प्रात भयेऊ । मज्जन हित तब सरिता गयेऊ ॥

रघुराज० छं० चौबोला ॥ तब गौतमको रूपधारि हरि आयउ आश्रम माहीं । मज्जन हेतु गये मुनिबरजब प्रबिशेउ तुरत तहांहीं ॥ कह्यो अहिल्यै बचन बिहँसि कछु सरस सनेह देखाई । जानि सुमुखि ऋतुकाल तिहारोहौं आयो इतधाई ॥ मोहिलियो मनरूप माधुरी तोहिं सम बिश्व न नारी । हौं रतिदान मांगने आयों जरत अनंग दवारी ॥ गौतम वेष जानि बासवको मोहि बचनरचनाई । कियोबिहार बिचार अहिल्या महाकुमति उरआई ॥ दोहा ॥ कियोबिहार सुरेश सँग गौतम मुनिकीनारि । पुनि मुनिको डरि शक्रसों कही गिराभयभारि ॥ चौबोला छंद ॥ अपनेको अरु हमरेहुको अब रक्षनकिह्यो उपाई । जो जानिहै मुनीश कर्म यह देहै तुरत जराई ॥ कह्यो पुरंदर अतिप्रसन्नह्वै राख्यो जीवन प्यारी । नहिं जानिहै प्रसंग महामुनि हौं अब जात सिधारी ॥

रघुराजसिं०चौबोलाछंद ॥ यहिबिधि मुनि तियसो रमि बासव चलेउ कुटीसों आसू। कढ़त कुटीते मिलिगये गौतम उरउपजी अतित्रासू ॥ ज्वलिततेज तप दुराधर्ष अति आश्रमकरत प्रवेशा। अपनोरूपधरे छलबश देख्यो त्रसित सुरेशा ॥ समिध सहित कुशलिये पानिमुनियककर कुंभसनीरा। बासव छल बल जानि तपोबल कियो कोप मतिधीरा ॥ बोले बचन अरे सुरनायक कियो महाअपकारा। दुराचार ममदार नष्टकिये पैहै फल यहिबारा ॥ मेरोबपुधरि अरे सुराधम नहिं कछु धर्म बिचारी। रम्यो विप्रनारीसो सुरपति मेरी त्रास बिसारी ॥

रघुनाथदास चौपाई ॥ एक भगहित तुम आयो हमरे। होइँसहसभग सब तनु तुम्हरे ॥

कृपानवा० ॥ सदामयंक कलंकी दीना। हो मतिमंद कला सुखहीना ॥ दोउशठशापे भवन सिधाये। पत्नी देखि कोप उर छाये ॥ सद्यकुभंडे शिला भवंत्वं। पतिबंचक युवती नत्वहेस्वं॥ तप्तबात हिम सहो शरीरा। ममशापेन सदा तवपीरा ॥ यहआश्रम भवजंतु बिहीनो। तवपापेन स्वसुकृत छीनो ॥ नहिं मम दोष बिचार दयालो। शापअनुग्रह करि प्रतिपालो ॥ दोहा ॥ त्रेतायां साकेतपुर पूरण प्रकट प्रताप। सुखद रामपदरजपरसि हासीत्वं बिनशाप ॥

रघुराजसिं०सो० ॥ यहिबिधिदै मुनि शाप निजतियको अरुशक्रको। तजिआश्रम लहिताप गये हिमाचल तपकरन ॥ किन्नर चारण सिद्ध सेवित हिमगिरि सर्वदा। आश्रम एक प्रसिद्ध तहां लगे तपकरन मुनि ॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ गौतमनारी शापबश उपल देहधरि धीर। चरणकमलरज चाहती कृपाकरहु रघुबीर ॥ छंद ॥ परसतपदपावन शोकनशावन प्रकटभई तपपुंज सही। देखतरघुनायक जनसुखदायक सन्मुखहो करजोरिरही॥ अ-

तिप्रेमअधीरा पुलकशरीरा मुखनहिंआवै बचन कही । अतिशय बड़भागी चरणनलागी युगलनयन जलधार बही ॥ धीरज मनकीन्हा प्रभुकहँ चीन्हा रघुपति कृपा भक्तिपाई । अति निर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥ मैंनारिअपावन प्रभुजगपावन रावणरिपु जनसुखदाई । राजिवलोचन भवभयमोचन पाहि पाहि शरणहिं आई ॥ मुनि शाप जो दीन्हा अतिभलकीन्हा परमअनुग्रह मैंमाना । देखेउँ भरिलोचन हरिभवमोचन यहै लाभ शंकरजाना ॥ बिनती प्रभुमोरी मैं अतिभोरी नाथन बरमांगौं आना । पदकमल परागा रसअनुरागा ममम‍न मधुप करैपाना ॥ जेहिपद सुरसरिता परमपुनीता प्रकटभई शिव शीशधरी । सोईपद पंकज जेहि पूजतअज मम शिरधरेउ कृपाल हरी ॥ इहिभांति सिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरणपरी । जो अति मनभावा सोबरपावा गैपतिलोक अनन्दभरी ॥

देवस्वामीपदहोरो ॥ राम अहल्या तारी कीरति विस्तारी । इंद्र प्रबल बरबस अबलासे आइभयो बिभिचारी ॥ नारीको अपराधनहीं मुनि शापदीन न बिचारी । कातप तेज न रहा नारि में इंद्रहि डारत जारी ॥ यहिते जाना मनकी पापिनि शिलाकरी मुनिनारी । नारिनको पतिधरमनदूजो श्रुति असकहत पुकारी॥ पति से छलकरि कसनपरै शिर आइ बिपति बड़भारी ॥ जाको तारिसकत नहिंतीरथ गंगदेव श्रुतिचारी । ताको रामचरण रज समरथ तारै हांकहँकारी ॥

श्रीतुलसी०पदरागसूहो ॥परत पदपंकज ऋषिरवनी । भई है प्रकट अति दिव्य देहधरि मानो त्रिभुवन छबि छवनी ॥

देखि बड़ो आचरज पुलकितन कहत मुदित मुनिभवनी। जो चलिहैं रघुनाथ पयादे शिला न रहि है अवनी ॥ परसि जोपांय पुनीत सुरसरी सोहैं तीनिपथ गवनी। तुलसीदास तेहिचरण रेणुकी महिमाकहै मतिकवनी ॥

देवस्वामीपद०रागजंगला ॥ रघुवरमूरति सांवरिहै। याके आगे ज्ञानिनको धन आतमरूप नेछावरिहै ॥ निजसरूपको बकसत परसत जाकी पदरज नावरिहै । देवदुंदुभीबाजत सोई तरी अहल्या नारि है ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ अस प्रभु दीनबन्धु हरि कारण रहित कृपाल। तुलसिदास शठ ताहिभजु छांड़िकपटजंजाल ॥

कृपानिवासदोहा ॥ कृपनपाल करुणायतन कृपासिंधु रघुनाथ। धर्म कर्म पति पितृतजि तारी नारि अनाथ ॥ चौपाई ॥ परीधूरि जब रामचरणकी। तरी अहल्या दोषहरणकी ॥ ग्राम नगर पुर बन मुनिथाना। अवधराजसुत सुयश बखाना ॥

श्रीतुलसीचौपाई ॥ चलेराम लक्ष्मण मुनि संगा। गयेजहां जगपावनि गंगा ॥ अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा। बहुप्रकार सुखपायहु रामा ॥

रघुराज०कबित्त ॥ स्वच्छहैकछारा हंसिकरत बिहारा महातुंग है कगारामुनिमज्जत अपाराहैं। एकओर देवदारा देवनकतारालिहे विविधप्रकारा केलिकरत हजाराहैं ॥ रघुराज हीरनकेहाराइव धौलधारा धरणीमझारा धावैकरि घहरारा हैं। पुण्यको पसारा अघमानको अधारा करैं पापनको छारा कलिकालको पछाराहैं ॥

दोहा ॥ कलरव सारस हंसगण मच्योगंग दुहुंओर। चक्रवाक मालाविमल करत मनोहरशोर ॥

रघुनाथचौपाई ॥ पूंछा प्रभु किमि आई गंगा। कौशिकमुनि कह सकल प्रसंगा ॥ भूप भगीरथ तपकरिलाये। पुरिखा जेहिबिधि

स्वर्ग सिधाये ॥ जासु प्रभाव मुनिन बहुगावा । सोइ सुबोधित केहि नहिंपावा ॥

तुलसी० ॥ गाधिसुवन सबकथासुनाई । जेहिप्रकार सुरसरि महिआई ॥ तब प्रभु ऋषिनसमेत अन्हाये । विविधदान महिदेवन पाये ॥ हर्षिचले मुनिवृन्द सहाया । बेगि बिदेहनगर नियराया ॥ पुररम्यता राम जब देखी । हर्षे अनुज समेत विशेखी ॥ बापी कूप सरित सर नाना सलिल सुधासम मणिसोपाना ॥

कृपानिवास ॥ कनकभूमि परमापर छाई । सरितासर चहुंपास सुहाई ॥ कंचन तरवर मणि सोपाना । मृदुल बालुका सुमन समाना ॥ सलिल सुधासम सरस सवादी । जनकलाडिली रस परमादी ॥ बीचि बिलास बिहार बिहंगा । सेवतसकल सिंधुसर गंगा ॥ मीन मनोहर जलखग न्यारे । करत किलोल बोल रव प्यारे ॥ मुक्ताचरि जलकूल बिहारैं । श्रीसीतायश नामउचारैं ॥ कमल कुमुद बहुरंग सुहाये । कलीफूल निशिदिन छबिछाये ॥

तुलसी० ॥ गुञ्जत मञ्जु मत्तरसभृंगा । कूजतकलबहु बरण बिहंगा ॥ बरण बरण बिकसे जलजाता । त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥

कृपानिवास ॥ कंजकंजप्रति पुंजपुंज अलि । गुंज रंजु मकरंद मंजु यालि ॥

तुलसी०दोहा ॥ सुमनबाटिका बागबन बिपुल बिहंग बिलास । फूलत फलत सुपल्लवित सोहतपुरचहुंपास ॥

कृपानि०चौपाई ॥ लोकपाल कमलाबन गाये । मिथिला उपबन देखि लजाये ॥ कुंजनिकुंज सुमंजुघनेरी । शोभाकहत चकित मति मेरी ॥ त्रिविध पवन सरिभरि मकरंदा । पठइदूतिका जनु

सुखकंदा ॥ परसि अंगपिय शीतल छतियां । कहति रंगभरि सियकी बतियां ॥

तुलसी०चोपाई ॥ बनै नबरणात नगर निकाई । जहां जाय मन तहां लुभाई ॥ चारुबजार बिचित्र अँबारी । मणिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी ॥ धनिक बणिक बर धनदसमाना । बैठे सकल बस्तुलै नाना ॥ चौहट सुंदर गली सुहाई । सन्तत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥ मंगलमय मंदिर सबकेरे । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥ पुर नर नारि शुभग शुचि सन्ता । धर्मशील ज्ञानी गुणवंता ॥

कृपानिवास ॥ मायाकृतता सुर नर नारी । सिताकला जनक पुरपारी॥लघुकुलबनिता जाछबिछाई । इंद्रबधूसुरपुरनहिंपाई ॥

तुलसी० ॥ अतिअनूप जहँ जनकनिवासू । बिथकहिंबिबुध बिलोकि बिलासू ॥

कृपानि० ॥ राजभवन अति रवनविराजै । बरप्रसाद बल्लभि छवि छाजै ॥ कौस्तुभ चिंतामणि जटिताई । बनी बिपुल रचना रुचिराई ॥

तुलसी०चोपाई ॥ होत चकितचित कोट बिलोकी । सकल भुवन शोभा जनु रोकी ॥ दोहा ॥ धवलधाम मणि पुरट पट सुघटित नानाभांति । सियनिवास सुंदर सदन शोभा किमि कहिजाति ॥

रघुराज०सवैया ॥ चांदनिसी चमकै चहुंओर तनी चुनी चांदनी चारु महाई । चित्रित चित्र विचित्रबने चितये जेहि चित्तगहै चकिताई ॥ कौनकहै मिथिलेशकी संपति शक्रहु देखि लहै लघुताई । श्रीरघुराज जहां जगदंब अलंबभई तहँ कौनबड़ाई ॥

कृपानि०चोपाई ॥ जनकलाड़ली निलय ललामं । छबि शृंगार पार परधामं ॥ भावरत्न गच प्रीतिजमाई । मोद बिनोद बनी

चतुराई ॥ हास बिलास प्रकार अपारा । रंगमहल सुख चहल बिहारा॥तंसदनं किंबरणैकोविध । यत्रबिराजत प्रिया प्रेमनिध ॥ मंगलरचना बहुबिधि सोहैं । निरखिराम सीतापुर मोहैं ॥ दोहा॥ धाम सरोवर सुमनसिय प्रीति सुगंध सुहाय । रामरसिक लोभी भ्रमर राग पराग लुभाय ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ शुभगद्वार सब कुलिश कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा॥ बनीबिशाल बाजे गजशाला॥ हय गय रथ संकुल सबकाला॥ शूर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृह सरिस सदन सबकेरे ॥ पुरबाहिर सुरसरितसमीपा । उतरे जहँतहँ बिपुल महीपा ॥ देखि अनूप एक अमराई ।.सबसुपास सबभांति सुहाई ॥ कौशिक कहेउ मोरमन माना । इहां रहिय रघुवीर सुजाना ॥भलेहि नाथकहि कृपा निकेता । उतरे तहँ मुनिबृन्द समेता ॥

इतिश्रीरामप्रतापचित्रकारविरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलद्वितीयोप्रकरणसमाप्तः ॥

श्रीसीतारामोजयति

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत

श्री मानसरामायण बालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

तृतीयोप्रकरण

विश्वामित्रमुनिका मिथिलापुरमें आगमन सुनकर जनक महाराजका मिलिबेको पधारना वा श्रीरामलक्ष्मणजीको देखि कै अति आनंदहोना और श्रीराजकिशोरनका नगर अवलोकन ॥

रघुराजसिंह० दोहा ॥ वैदिक विप्रनकेविविध शकटनकी समुदाइ। अमराई डेरापरे बिलग कहूं न देखाइ ॥

कृपानिवास० चौपाई ॥ परमरम्य आराम अलोकी। बसे महामुनि सुखद बिलोकी ॥ प्रिय बंधुयुत गुरुमतपाई। गयेराम देखनफुलवाई ॥ सुमन विभूषण स्वकरबनावैं। जगभूषण भूषित छबिछावैं ॥ मिथिला महिमा परम सुहाई। सहचर बंधुहि कहि रघुराई ॥

श्रीतुलसीदासजी०चौपाई॥ विश्वामित्र महामुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये ॥ दोहा ॥ संगसचिव शुचि भूरि भट भूसुर बर गुरुजाति। चलेमिलन मुनिनायकहिं मुदितराउ यहिभांति ॥

रघुराजसिंह०छंदचौबोला ॥ शतानंद आगेकरिलीन्हे द्विजमंडली सोहाई। पढ़त वेद वैदिक धरणिसुर जैधुनि चहुंकित छाई ॥ चलत पयादे मुनिदरशन हित सबैसराहत लोगू। मिलनजात

मनु ब्रह्मसतोगुण करिविराग भवरोगू ॥ आवत देखि विदेहभूप को मुनिजन देखनधाये । आयआय कौशिकमुनिके ढिग सुखित समाज लगाये ॥ आवतजानि भूपको कौशिक द्वैमुनि तुरतपठाये । तेनिमिकुल भूपतिको करगहि मुनिनायकढिग लाये ॥

तुलसी०चौपाई ॥ कीन्हप्रणाम धरणिधरि माथा । दीन्हअशीष मुदित मुनिनाथा ॥ विप्रबृन्दसब सादरबन्दे । जानि भाग्यबड़ राउ अनन्दे ॥ कुशल प्रश्नकहि बारहिं बारा । बिश्वामित्र नृपहिंबैठारा ॥

कृपानिवास०॥भवतांगमने मंगलभारे ।दुखहारे सुख संविस्तारे ॥ ममतनु पुर परिवार सुपावनि । भयो रावरे मंगल आवनि ॥ दोहा ॥ संतकृपाबिन जीवजड़ शुद्ध सही नहिंकोय । यथा लोह पारसबिना कंचनकैसे होय ॥ चौपाई ॥ मुनि सुनि विनय प्रशंसे राऊ। अहोभाग्य तव पूरण भाऊ ॥ धर्म परायण वेदविदांबर । ज्ञानभानु त्वंविदित जगतपर ॥

तुलसी०चौपाई ॥ तेहिअवसर आये दोउभाई । गयेरहेदेखन फुलवाई ॥ श्यामगौर मृदुबयस किशोरा । लोचन सुखद विश्वचितचोरा ॥ उठेसकल जब रघुपति आये। बिश्वामित्र निकटबैठाये ॥ भेसबसुखी देखि दोउभ्राता । बारिबिलोचन पुलकित गाता ॥ मूरतिमधुर मनोहरदेखी । भयउविदेह विदेह विशेखी ॥

कृपा० ॥ रूपरास सुखबासपियारे । बने बनकबर जनक निहारे ॥ लगेललकि लोचन मनमोहे । लघुप्रबाह जनु सिंधुसमोहे॥ छकितरूप मति भूपभुलाने । रंगलूटि धन शंक बिहाने ॥ ज्ञान योग व्रत नेमनसाये । जनक रामरस प्रेमबसाये॥ तक्रत्यागिपागे नवनीता । जलरुचि कस जिहिं शशिरस पीता ॥ तनरुहखरे दरे दृगनीर। । परेप्रेमके फंद शरीरा ॥ कांपि प्रस्वेद बिकल माथ-

कता । लगनि लोभ लागीं लायकता ॥ स्वजन जानि प्रभु जनक संभारे । गोलोकी रस उरबिस्तारे ॥ जादूडारि ससुरमन करखे । परपुर प्रथम मंत्र जनुपरखे ॥ लगनिबीन रसमंत्र चलाये । भूप सनेही नागनचाये ॥ भक्ति पिटारी धरे करेबसि । योग भोग मद गहरिलगहसि ॥ रामसयाने सबसुधराई । मुनिनांसभा स्वकला दिखाई ॥ भक्तिपरत्व नानलघुताई । रामरसिक सबकोदरशाई ॥

तुलसी०दोहा ॥ प्रेममगन मन जानिनृप करि विवेक मति धीर । बोलेउ मुनिपद नाइशिर गद्गदगिरा गँभीर ॥

तुलसी०प०रा०टोडी ॥ बूझत जनकनाथ ढोटादोउ काके हैं । तरुणतमाल चारु चंपकबरण तनु कौनबड़ भागी के सुकृत परिपाके हैं ॥ सुख के निधान पाये हियहु के पिघलाये ठगकेसे लाडूखाये प्रेममधु छाके हैं । स्वारथरहित परमारथी कहावत हैं भे सनेह बिवश विदेहता बिबाँकेहैं ॥ शील सुधाके अगार सुखमाके पारावार पावतनपरपार पैरि पैर थाकेहैं । लोचन ललकिलागे मन अतिअनुरागे एकरस रूप चित्त सकल सभाकेहैं ॥ जियाजिय जोरत सगाई रामलषणसों आपनेआपनेभाव जैसे भाय जाकेहैं । प्रीतिको प्रतीतिको सुमिरिबे को सेइबेको शरणको समरथ तुलसीहुताकेहैं ॥ तुलसी०चोपाई॥ कहहुनाथ सुन्दर दोउबालक । मुनिकुल तिलक कि नृप कुलपालक ॥ ब्रह्म जो निगम नेतिकहि गावा । उभय भेषधरि सोइ कि आवा ॥

कृपानि० ॥ ब्रह्मतत्त्वबत्तैं ममबानी । इनमूरतिकी अकथ कहानी ॥ ब्रह्मरूपमें मति पहिंचान्यो । यह स्वरूप कछु जात न जान्यो ॥ ये परतत्त्व परापर कोई । प्रगट भये बपुधरि प्रभुसोई ॥

जातें पुरुष सुशक्ति नपुंसक । प्रगटे अंश अंश प्रशंसक ॥ सोइ परूप मनोहरधारी । दरशाये निजजन हितकारी । मेंमेधा बेधाकृतपारा । इनमोही मुनिसंशय भारा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सहज बिराग रूपमन मोरा । थकितहोत जिमि चंद्रचकोरा ॥ ताते प्रभु पूंछों सदभाऊ । कहहु नाथ जनिकरहु दुराऊ ॥ इनहिं बिलोकत अतिअनुरागा । बरबश ब्रह्म सुखहिं मनत्यागा ॥ कह मुनि बिहँसि कहेउनृपनीका । बचन तुम्हार न होय अलीका ॥

कृपानिवास० ॥ त्रिभुवन मोहक रूपरसीले । मम बिराग ब्रत नेमवसीले ॥ इनके पदरज स्वादिक संता । गनै न जगसुख ब्रह्म प्रजंता ॥ कह्यो स्वबसरस रूपछकाये । तपश्रमफल भ्रम सहज छुटाये ॥

श्रीतुलसी० ॥ यह प्रिय सब्रहि जहांलग प्रानी । मनमुसुकाहिं राम सुनिबानी ॥ रघुकुलमणि दशरथके जाये । मम हितलागि नरेश पठाये ॥ दोहा ॥ राम लषण द्वैबन्धुबर रूपशील बलधाम । मखराखेउ सब साखि जग जीति असुर संग्राम ॥

रघुराज०सवैया ॥ साँवँरे राजकुमार गये कुटी एकपषाणपरो रह्यो भारी । तामें धरयो सहजै पदपंकज ताते कढ़ी यक सुन्दरिनारी ॥ अस्तुतिकै गमनी पतिधामको आपनोनाम अहल्या पुकारी । शापप्रताप शिला सो रही रघुराज लला तेहि दीन्ह्यों उधारी ॥ दोहा ॥ सुनि कौशिकके बचनबर गौतम जेठकुमार । शतानंद बोलेउ बचन धनि धनि अवधभुआर ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ मुनि तव चरण देखिकह राऊ । कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ ॥ सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता । आनँदहूके आनँददाता ॥ इनकी प्रीति परस्पर

पावनि । कहि न जाय मनभाव सुहावनि ॥ सुनहुनाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ पुनि पुनिप्रभुहिंचितय नरनाहू।पुलकगात उरअधिकउछाहू॥

कृपानिवास ॥ गुरुपद परसि कौन सुख दुल्लभ । धरतैं हरितैं गुरुपद बल्लभ ॥ घररागी अनुदुख परभागी । हरिरागी जगमुक्ति बिरागी ॥ हरि बसि सहजकरैं गुरुहेता । मुक्ति भुक्तिपर भक्ति समेता ॥ कृतकृतजन रघुबर मुख देखे । तव पद सेवा के फल लेखे ॥ अब करिकृपा महल पगधरिये । परकरसह मोहिं पावन करिये ॥

तुलसी०चौ० ॥ मुनिहि प्रशंसि नाइ पद शीशा । चलेउ लिवाइ नगर अवनीशा ॥ सुन्दर सदन सुखद सबकाला । तहां बासलै दीन्ह भुआला ॥

कृपानि० ॥ देखिलाल मन मगन भुलाये । अवधिमहल सम परम सुहाये ॥

तुलसी० ॥ करि पूजा सब बिधि सेवकाई । गयउ राउ गृह बिदाकराई ॥

कृपानि० ॥ छके रामछबि दृगअरुणारे । घूमतचले मनुमदमतवारे ॥ रानी रूप छके लखिनैना । पूंछति पतिसों मृदुकहि बैना ॥ भोस्वामिन ते मनमगनाई । अद्य नवीन कुत्र प्रभुपाई ॥ प्रियाकहौं कह अकथ कहानी । लह्यो सुलाभ मयापर बानी ॥ बिश्वामित्र महामुनि संगा । युगल कुंवर छबि अमित अनंगा ॥ मनमोहन सोहन सुकुवारे । नैन प्राणमधि अटके प्यारे ॥ लली स्वयंबर देखन आये । मयाभवनकरि बिनय बसाये ॥ सुनतप्रेम बश सिय महतारी । बिसरी तन मन सुनसुखसारी ॥श्रवणदरशबर गिरा सोहानी । चलत रामकी त्रिविध मोहानी ॥ वाष्प कला प्रमदा पुल्कांगा । चक्षुचाह चित परम उमंगा ॥ तात मात

ढिग सुता पियारी । रुनक झुनक आई सुकुमारी ॥ जननी मोदगोदभरि भाई । मुखचुंबति बहुलाड़ लड़ाई ॥ पिता निहारि सुता छबिधामा । रामरूप सियरूप ललामा ॥ धरि उछंग नृप कंठलगाई । जन्म रंक जनु नवनिधिपाई ॥ लाड़भरी बानीबितरानी । मातु पिता उरबर सुखदानी ॥ तात बात का करत पुरातम । अधुनाबद यदि योग्य भानुमम ॥ वत्स मुनिन सँग कुँवरपधारे । तव समान मैं प्राणपियारे ॥ रूपराशि कछु कहत न आवै । श्याम गौर बहुकाम लजावै ॥ यदि मम ईश्वरहोय सहाई । करौं लली तुव राम सगाई ॥ सुनि मुसकाय बात बहिराई । मात तात सक स्वमन सिहाई ॥ प्रीतम ध्यानमगन मद माती । भरे नैन उमँगी सियछाती ॥ दोहा ॥ उठी गोदतजि मोदभरि ऊमस लाग दबाय । पय उफानवत रोकि सिय लाज सलिल छिरकाय ॥ भगिनी सखियन संगलै सहित गई निज धाम । बचन मंत्र मानो लगे पगे प्राण प्रिय राम ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ ऋषय संग रघुबंशमणि करिभोजन बिश्राम । बैठे प्रभु भ्रातासहित दिवसरहा भरियाम ॥

रघुराज०चौपाई ॥ मुनि निहारि नखशिख सुठिशोभा । नहिं अघात निरखत मनलोभा । मुनि मंडली तहां जुरिआई । लगे कहन मुनिकथा सुहाई ॥ पूरुब जनकबंश प्रभुताई । जनकनगर की सुंदरताई ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ विधिवतसों बरणी मुनिनाहा । सुनि सबके मन भयउ उछाहा ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ लषण हृदय लालसा बिशेखी । जाय जनकपुर आइय देखी ॥ प्रभुभय बहुरिमुनिहिं सकुचाहीं । प्रकट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥ राम अनुज मनकी गति जानी । भक्तवत्सलता हिय हुलसानी ॥ परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुरुअनुशासन

पाई ॥ नाथ लषण पुर देखनचहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥ जो राउर आयसु मैं पाऊं । नगरदेखाइ तुरत लै आऊं ॥ सुनि मुनीश कह बचन सप्रीती । कसन राम राखहु तुम नीती ॥ धर्मसेतु पालक तुम ताता । प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥

कृपानिवास० ॥ तवपरिकर सब पुर नर नारी । सुफलकरो हग छबि अधिकारी ॥ तुम सबके सुखदायक भावन । धरि पदपावन मोद बढ़ावन ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ जाय देखिआवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ । करहु सुफल सब के नयन सुन्दर बदन दिखाइ ॥ चौपाई ॥ मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥

रघुराज० ॥ पुरुष सिंह सुंदर दोउ भाई । पहुंचे पुर फाटक जब जाई ॥ ऋषिन भीर रणधीर न संगा । नगर बिलोकन भरी उमंगा ॥ रहे कोट पुर बाहर जेते । देखि युगल जोरी तब तेते ॥ ठाढ़े भये धाय पथआई । निज निज सब कारज बिसराई ॥ देखि मनोहर मूरति जोरी । त्यागे पलक भई मति भोरी ॥ कहते कौन भूपके ढोटा । आये इतै अपूरब जोटा ॥ कोउ कह दोउ अश्विनी कुमारा । चहत स्वयंबर नयन निहारा ॥ कोउ पूछहिं मुनिजनन बोलाई । कुँवर कौन के देहु बताई ॥ केहि कारण मग पग चलिआये । गज तुरंग रथ क्यों नहिं लाये ॥ कौने भाग्यवंतके जाये । मानहुं बिधि निज हाथ बनाये ॥ जो कोउ तिनहिं बतावन लागै । ते धनि कहत अवधपति भागै ॥ दोहा ॥ यकएकनते कहत महँ फैली खबरअपार । आवत देखन नगर दोउ सुन्दर राजकुमार ॥ घनाक्षरी ॥ कहे एक एकनते तेऊ एक एकनते खबर खुस्याली भै महल्लन महल्लाहै । नवलकिशोर दोऊ चारु चितचोर अब आवैं यहि ओर ठौर ठौर जोर

हल्लाहै ॥ रघुराज देखन उमंगभरे नारी नर त्यागे संग छाकेरंग अंगन उतल्लाहै । गलिनमें गल्ला वृन्द अलिन बिहल्ला पूछैं कौनके महल्ला मध्य दशरथ के लल्ला है ॥ दोहा ॥ जो जोवत सो जकिरहत नैननि पलक नेवारि । चित्र पूतरीसेभये जनक नगर नर नारि ॥ देख्यो गोपुर जनकपुर बनकबिकुंठ समान । तनक हीन नहिं बिधिरचनि कनक कलश असमान ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ बालक वृन्द देखि अतिशोभा । लगे संग लोचन मन लोभा ॥ पीत बसन परिकर कटिभाथा । चारु चाप शर सोहत हाथा ॥ तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी । श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥ केहरि कन्धर बाहु बिशाला । उर अति रुचिर नाग मणिमाला ॥ सुभग श्रवण सरसीरुह लोचन । वदन मयङ्क ताप त्रयमोचन ॥ कानन कनक फूल छबि देही । चितवत चितहि चोर जनु लेही ॥ चितवनिचारु भृकुटि वरबांकी । तिलक रेख शोभा जनु चांकी ॥

कृपानि० ॥ केशर खौर रेख अरुणाई । जनु मंगलपुर चौक पुराई ॥ अलकैं कुटिल कपोलन ललकैं । सुधापान नागनि शशि मिलकैं ॥

तुलसी० दोहा ॥ रुचिर चौतनी सुभग शिर मेचक कुंचित केश । नखशिखसुन्दरबंधुदोउ शोभासकलसुदेश ॥

रघुराज० कवित्तसवैया ॥ शिर चौतनी चारु बिचित्र बनी मणि मोतिनकी लर त्यों लहरै । छबि सिंधु मनोहर मूरति सो क्षणहीं क्षण छोनिछटाछहरै ॥ युग कंचन तूण कसे नृपसून उछाहि तदून गहेडहरै । रघुराज गरीबनेवाज दोऊ अवलोकन काज चले शहरै ॥ पटपीत बिराजिरहे कटिमें तन कोटिनकामके दर्प दहे । उर मोतिनमाल बिशाल लसै करवाल कराल जे शत्रुज-

है ॥ झनकारी मची पगनूपुरकी जिनको सुरसिद्ध मुनीशचहे । अवधेशके डावरे सांवरे गौर करैं मनबावरे पंथगहे ॥ दोहा ॥ छहरति हँसनि मरीचिका महि मंडित चहुंओर । मुखमयंक लखि आजुपुर ह्वै है सकल चकोर ॥

रघुराजसिंह ॥ कटि निषंग धनुबामकर दाहिन फेरत बान । मोल लेन जनु जात हैं जनक नगर जन जान ॥

सवैया ॥ छोटे बड़े पुरबासी सबै लखैं रूप अनूप सुभूप किशोरन । मेचक कुंचित केश मनोहर चंचल नैनन चित्तके चोरन ॥ श्रीरघुराज चलैं मगमंद अनंद उदोतकरैं सब ढेरन । खूबखुशीके खजाने खुले पुर धावन धावनखोरनखोरन ॥

तुलसी०चौपाई ॥ देखन नगर भूपसुत आये । समाचार पुरबासिन पाये ॥

कृपानिवास० ॥ आवनि कुँवरन सुनि नर नारी । उमँग्यो पुर शशि सिंधु निहारी ॥

श्रीतुलसी० । धाये धाम काम सब त्यागी । मनहुं रंक निधि लूटन लागी ॥

कृपानि० ॥ कोई प्रछालति अंगसुहाई । सुनि सुर मगन नगन उठिधाइ ॥ कोई भोजन जल अँचवन बिसरी । कोई शृंगार करति तिय निसरी ॥ काजर करति कपोल अधीरा । उलट पलट भूषण धरिचीरा ॥ कोइ पति सेवा त्यागि पराई । सदा प्राणपति रूप लोभाई ॥ कोइ कुचप्यावति शिशुतजि दौरी । रामरूपमद सुनिकृत बौरी ॥ दोहा ॥ लाज काज भोजन बसन पुत्र सुपतिनु बिसारि । रामरूप रस चावरी भई बावरी नारि ॥ वेतालछंद ॥ भईंबावरी तनसदन भूली उमँगिधाईं छबिछली । जनु सरित सावन की अमित ललचाय सागरको चली ॥ द्रुम शैल वृत धृति नेम गंजति लाज तृणबल्लीदली । नवनेह नीर तरंग मनबहुरुकत नाहिंन अतिबली ॥ कहि एक एकनिसोंभटू

किहिओर चितके चोरहैं । दृग दरशप्यासे तरफरैं मनयत्र राज किशोर हैं ॥ सब नारि कुँवर निहारि नैननि बिबश चंदचकोरसी । चहुंओर तरुणी कोरलसि मनु मयन सयन करोरसी ॥ दोहा ॥ चढ़ी अटायुवती ठटा मनहुं घटा घनवृंद । हरषति मन बरषति सुमन निरखति सुखमा कंद ॥

रघुराज०सवैया ॥ बिज्जुछटा ज्यों घटा घनमें तिमि ऊंचीअटान चढ़ीं पुरनारी । धामको काम बिसारि बधू युग बंधु बिलोकहिं होहिं सुखारी ॥ श्रीरघुराज के आनन अंबुज भे अलि अंबक आसु निहारी । पावैं यथा सुरपादपको एक बारही भागते भूखे भिखारी ॥ झांकैं झुकी युवती ते झरोखन झुंडनते झरफैं करटारी।देखि मनोहर सुंदररूप अचञ्चल कीन्हें दृगअलप्यारी॥ श्रीरघुराज सखीन समाजमें लाजको काज परे न निहारी । आपुसमें बरबैनभनैं सखि आजु लहीं फल आंखिहमारी ॥

रघुनाथदास०दोहा ॥ फिरकीसी थिरकी फिरैं खिरकिनप्रतिनव नारि । शिरकिन तजि रघुनाथछबि निरखैं पलक बिसारि ॥

श्रीसूरदासजी० पद रागबिलावल ॥ देखनको मंदिर आनिचढ़ी । रघुबर पूरण चंद बिलोकित मानो उदधि तरंगबढ़ी ॥ पियदरशन प्यासी अतिआतुर निशिबासर गुणग्रामगढ़ी । तजि कुल कानि पियमुख निरखत शीशनाइ आशीषपढ़ी ॥ भई देह जो खेहकर्मबश ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी । सूरदास प्रभु दृष्टिसुधा निधि मानों फेर बनाय गढ़ी ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ लूटो लूटोरी सबै सुखखानि खुली । मुनि संग युगल कुँवरबर आये जिनहिं जोहि मन रहत झुली ॥ छलकि छलकि जिनके तनकी छबि छावत पुर सुख क्षितिछहरी । बिश्वनाथ जब डगरत नेकइ शोभा सिंधु उठै लहरी ॥

प्रेमसखीसवैया ॥ प्रेमकी डोरी मरोरन नैनकी चालको चारो महासुखकारी । गूढ़ अथाहे बिदेहपुरी तहँ खेलनको चले औध बिहारी । लाज समाज बड़ी कुलकी जलत्याग सबै प्रभु ऊपर

वारी। बंशीभई छबिसांवरेकी जिन मीनसी खैंचिकै बाहरडारी॥ आईहुती तिया सासुरेको शुक सुंदरिसी सुकुमारि सुनारी। चौहटि ओटमें ठाढ़ी हुती उर लाज समेत लगाय किवाँरी॥ प्रेमसखी लखि लालनको निकसी गृहते नहिं देह सँभारी। बंशी भई छबि सांवरे की जिन मीनसी खैंचिकै बाहरडारी॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फलपाई॥ युवती भवन झरोखन लागीं। निरखहिं रामरूप अनुरागीं॥

कृपानिवास०चौपाई॥ निरखि लाल लोचन ललचावैं। जन्म सुफलकरि भाग्य सिहावैं॥ प्रमदा मनसा लिंगन करहीं। मोद मनोरथ सुखमाचरहीं॥ भुज परि रंभण इव मुखचुंबति। काचित उरसाजनु आलंबति॥ काचित नासा जिघ्रतिबाला। काभिर्क्रत्यं ग्रीव जनु माला॥ काचित करकुच मंडल मंडित। प्रबल प्रेम णा पीरा खंडित॥ काचित पदरज मस्तक धारैं। बिबिध भावना स्वमन बिचारैं॥ कहहिं परस्पर बचन रसाला। राम रूप रसिका बाला॥ अहो धन्य नो भाग्य भामिनी। मंगल मोद बिनोद धामिनी॥ सकल शिरोमणि प्रिय लखि नैननि। श्रुति शारद थकि बर्णत बैननि॥

तुलसी०चौपाई॥ कहहिं परस्पर बचन सप्रीती। सखि इन कोटिकाम छबिजीती॥ सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। शोभा असिकहुँ सुनियतनाहीं॥

कृपानिवा०॥ येसखि कुँवर अलौकिक प्यारे। त्रिभुवनपति छबिदेखत हारे॥

तुलसी०॥ विष्णु चारिभुज बिधि मुखचारी। बिकटवेष मुख पंचपुरारी॥

कृपानि०॥ बिष्णुलजाय दुरे जलअंतर। धरेनपुंसकनाम ब्रह्मबर॥ शंकररूप रास जब जोये। योगलियो तनु भोग बिगोये॥

भस्म जटा मृगछाला धारे । इनके प्रेमबिवश मतवारे ॥ पंकज भव जब लालनिहारे ॥ चतुरानन कर रूपबिगारे । भिक्षुकब्रत धरि बिप्रकहाये । राजकुँवर छबि सकल लजाये ॥ सुरपति रंग मयंक कलंकी । हंसबंश गुरु तदपि सशंकी ॥ काम अनंग नउपमा कोई । इनकीछबि पटतरिये जोई ॥

तुलसी० ॥ अपरदेव असको जगमाहीं । इहिछबि सखि पटतरिये जाहीं ॥ दोहा ॥ वयकिशोर सुखमासदन श्याम गौर सुखधाम । अंगअंगपर वारिये कोटिकोटिशतकाम ॥

कृपानिवा०चौपाई ॥ कुँवर छबीले अद्भुत लहिये । इनकी उपमा इनको कहिये ॥ ब्रह्माकृत जग जहँलों माई । इनलालन छबि छटानपाई ॥ कोइकह हमरेमन अतिभावें । लोचनभरि धरिपलक छिपावें ॥ सकुचैं मन बरुनि कठिनाई । मृदुल अंग परसैं सुखदाई ॥ कोइकह सखि ब्रत लाजदबाई । नतरु संगलगिकरि सेवकाई ॥ अपराबदति धूरब्रतपालानि । जो बाधाकरि सेवतलालनि ॥ पतिबंचक सानारि कहाई । क्षुद्रजीवसंग कामलुभाई ॥ ये पति के पतिप्राण बिलासी । शिव सनकादिक के उरबासी ॥ जगपति नापतिपालक बालक । निजब्रतमालक परब्रतघालक ॥ लाजकाज कहिआवत माई । जिन प्रीतमपद प्रीति दबाई ॥ लाजकनौडी भोंडी नारी । प्रीति बावरी प्रीतमप्यारी ॥ लाज सर्पिणी पालै बाला । विषयलहरि बश सदाबिहाला ॥ दोहा ॥ यदपि प्यार प्यारोकरै बैरकरै परिवार । प्रीतिपालकी त्यागिजिन लाज गधी असवार ॥ प्रीतिप्रिया पयनीरवत मिलत एकरसहोय । लाजखटाई छुवततितनु करति एकमनदोय ॥ चौपाई ॥ ब्रीडाब्रत कुल नेम नडरहीं । यद्यपि प्रभु येदासीकरहीं ॥ कोइकह पुण्य अपर नहिं कोहै । मिथिला बासबसी फलसोहै ॥ काकुलवंती युवती धीरा । इनलालन लखि होत अधीरा ॥ दृगधनु चितवनि बाण चलावै । कोशूरा जो चोटबचावै ॥ चलतकटारी कारीआँखैं । ल-

गतगिरैं नरनारी लाखैं ॥ व्रीड़ा चर्म गिरी करसोंअब । कुल व्रत नेम कवच बिखरेसब ॥ रूपसदन बरबदन मदालय । मृदुमुसक नि पुटिमादक तामय ॥ पीवतलोचन काकाव्रतधारी । पानहोत तनमन मतिवारी ॥ मृदुबोलनि बीणा मनलगनी । जोनहोत बशको मृगमृगनी ॥ रूपअलौकिक भोगसवादी । कसनपरैं बश मीनसवादी ॥ छबिमयज्योति छबीलीछावैं । काकेदृग पतंग फिर आवैं ॥ रविप्रकाश येनलिनीफूलैं । खलखद्योत जगतहीभूलैं॥ये चितचोर किशोर सुहाये । हमरे चित बित हरबेआये ॥ हरं बहुत जन परेपुकारैं । शाक लाख तजि खाकसँवारैं॥प्रेमबावरे सबसुधि भूलैं।कर्म धर्म कुल व्रत प्रतिकूलैं ॥ तनसाधी मन आशाजारी ।लगानि अगिनिकी तापसंभारी॥ जरयोअसार सार रतिपाई । सोइ भस्मी बहुरसिकरमाई । लेवैंराम रसिक लीलाबन । दरशभीख मांगै जनु अनुदिन ॥ सखि येरूप अनूपमप्यारे । अरे नैन मन टरतनटारे ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ कोइ कह हाय फँसे चख मुखछबि अब केइ निकरैं नैन निकारे । और अंग लखिबेको ललकहुँ ये तो लखि सुठिपलक बिसारे ॥ आगेते कढ़िगये कुँवरकहँ तैसहि तकतठगी सखि कोई । कोइ बिसुनाथ चली संगलागी तनमन करति निछावरि जोई ॥

संग्रहकर्त्ता दोहा । मृगनयनी चन्द्रानना पिकबैनी नवनारि । लखिछबि श्रीरघुलालकी नागरि मोहि निहारि ॥

बैजनाथ०पद ॥ चितचाहलगी रघुनन्दनकी कछु मोहिं न भावत री सखिया । गति सूरति आश चकोर भई मुखचंद अनूपजही लखिया ॥ छबिदेखिपगी नवनेहलगी सब लाजभगी जगकोरखिया । अवगाहनते बिलगात नहीं तनश्याम पयोनिधिते अँखिया ॥ तनकंपउठै बुधिभोरिभई घनदेखियथा अहिकोभखिया। बैजनाथ नहिं छूटिसकैमन जायफँस्यो मधुकी मखिया ॥

प्रेमसखी०कबित्त ॥ राजकुल नारी सुकुमारी बेशनेहवारी बूझती बिचित्रतै चितेरीने बुलायकै । मुखमांगे देहौं भरि जन्म सुधि लैहौं जर बिरह दवारि देहलेहिने बचायकै ॥ प्रेमसखी प्राणप्यारो जुलफनवारो छैलगये याही गैल नेकछबि दरशायकै । छुटत शरीर बिनुदेखेरघुबीर लिख ताकीतसबीर जाय जियौंहियेलायकै ॥

प्रियाशरण०दोहा ॥ लिखिलावहु जागैलमें नखशिखरूपनिहार । चलि सुंदरि गजगामिनी जहँ दोउ राजकुमार ॥ चौपाई ॥ यकप्रौढा बातन अरुझाई । कही राह नहिं महल सोहाई ॥ तुम काहू के गृह में जैहौ । ताते इतै जान नहिं पैहौ ॥ यह इक कहाजाइ छीकहु सो । हम तव राह बताइदेहुसो ॥ मधुर बैनकहि श्यामरिझाई । तबलगि चित्रबिचित्र बनाई ॥ बहुरि गैल उनदई बताई । मंद बिहँसि गवने रघुराई ॥ चित्तेरिनि कुवरी ढिगआई । प्रथमभयो सो देहु जनाई ॥ सुनहु बनजबदनी अलबेली । रूपराशि सुख सिंधु नवेली ॥

प्रेमसखी०सवैया ॥ कागद तो न उठै करते लिखिनी करकंपित कौन उठावैं । लालन दृष्टिपरे जबते प्रियानामसुने अँशुवा झर-लावैं ॥ प्रेमसखी मधुकी मखियां मनआयफँस्यो पुनि हाथ न आवैं । मूरति श्रीरघुनंदनकी लिखते न बनै लखते बनिआवैं ॥

प्रियाशरण०चौपाई ॥ सुनि कुवरी अतिप्रेमअधीरा । तुरित देखाय दीन्हि तसबीरा ॥ देखि बहुत अवलंब भई है । कछु मनके दुख दूरिगईहै ॥ पुनि चित्तेरिनि कही सुबानी । बहुत धीरधरि लिखेउ सयानी ॥ तुव दिशि देखि त्रासभइभारी । ताते कठिन धीरता धारी ॥ तब मैं लिखेउं चित्र मनोहर । यह बर सिया योग अति सोहर ॥ राजकुँवरि सीता ढिगआई । चित्तेरिन वह चित्रदेखाई ॥ नेह प्रेम सँग देखहिं सीता । श्याम स्वरूप अनूप पुनीता ॥ प्रथम जो सपना में बर देखी । वोही रूप चित्राम बिशेखी ॥ जो मन दशाभई तेहिकाला । नेह प्रेम जान्यो तेहिकाला ॥ त्रयकुअरीके एकसुभाऊ । देखि चित्र छबिनिधि रघुराऊ ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ इतै राजकुँवरन पुर नारी । होइ मुदित छवि लखि मनहारी ॥

रघुनाथदास ॥ जब जेहि नयन ओट चलिजावैं । भई हानि अस बचन सुनावैं ॥ एक कहै तुम भले निहारे । भइसखि बैरिनि लाज हमारे ॥ आवत निकट बदन पटदीना । भरि नयनन अवलोकि न लीना ॥ एक कहै बरबस मन मोरा । हरि लीन्ह्यो सांवरो किशोरा ॥

श्रीतुलसी० ॥ कहहु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥

रघुराज०सवैया ॥ और कह्यो सजनी रा किै पुनि कौनकेलाल महाछबि छाये । कौनहै नाम त्यों ग्राम है कौन कहो केहिकारण कौन पठाये ॥ कैसे रहे जननी जनको नाहिं नेसुकनयन दया रसलाये।श्रीरघुराज सुकोमलपायँन जातचले चखचित्तचोराये॥

बिश्वनाथ०मैथिलके भाषामें पद ॥ मुनिके संग दुइनैना ऐलिछि । सुंदररूप जादूगर छथिसे पथरा की पुतरीकमा उगि बनौलिछि ॥ हों पड़ाय कहुंएतै अैलहुंसे बिरतांत अहांके सुन व लिछि । अब भूपति बिशुनाथहोइ जैजे कछु करै क करु मन भवलिछि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी । जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥ ये दोउ नृप दशरथके ढोटा । बालमरालनिके करजोटा ॥ मुनि कौशिक मखके रखवारे । जिन रण अजय निशाचर मारे ॥ श्याम गात कलकंज बिलोचन । जो मारीच सुभुज मद मोचन ॥ कौशल्या सुत सो सुखखानी । राम नाम धनु शायक पानी ॥ गौर किशोर बेष बरकाछे । कर शर चाप राम के पाछे ॥ लक्ष्मण नाम राम लघुभ्राता । सुनुसखि तासु सुमित्रा माता ॥

रघुराजसवैया ॥ धन्यहै कौशलाराम प्रसू लषणै जननी सो सुमित्रा कहावै । आली इन्हैं अवलोकिकै आंखिन और कहौ किमि नयनसमावै ॥ श्रीरघुराज सखीन समाजमें आज मोलाजको काज परावै । जातिचली अब रोकिगली मिलौं छैलछली को भली यह भावै ॥ दोहा ॥ बिप्र काजकरि बंधु दोउ आये नगर बिदेह । यक बिदेह यहि पुर रह्यो इन किय अमित बिदेह ॥ सवैया ॥ पुनि कोइ तहां लखि राजकिशोरन बोलिउठी मधुरी बतिया । सखि येई सुबाहु मरीच हते नहिं लागत सत्य किहूं भतिया ॥ रघुराज महासुकुमार कुमार हमार हरै हिय की गतिया । निशिचारिन संग लड़ावत में कस कौशिक की न फटी छतिया ॥

कवि रसीलेकृत कबित्त ॥ मुनिमखराख्यो मारि ताड़का सुबाहु वीर चरणछुवाय जिन शिला तारदीनाहै । सुकवि रसीले आय मिथिला शहरमाहिं नर अरु नारिनको मन हरिलीनाहै ॥ सोई ये सलोने सुकुमार दशरत्थजूके राजत निहार कोटि काम छबि छीनाहै । मेरी महरानी तीनलोकमें प्रमानी सिया सोनेकी अँगूठी राम सांवरो नगीनाहै ॥

तुलसी०दोहा ॥ बिप्रकाजकरि बन्धु दोउ मगमुनि बधू उधारि । आये देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि ॥ चौपाई ॥ देखि रामछबि कोउ असकहई । योग्य जानकी यह बर अहई ॥ जो सखि इनहिं देखि नरनाहू । प्रण परिहरिहठकरै बियाहू ॥ कोउ कह इन्हैं भूप पहिंचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥ सखि परन्तु प्रण राउ न तजई । विधिबश हठ अबिबेकहि भजई ॥

कृपानिवासदोहा ॥ रामलला प्रणत्यागि जड़ धरे आन प्रण टेक । सुर गौ तजि भजि रासभी पयहित कौन बिबेक ॥ शुष्क ज्ञान मिथिलेश उर रामरसिक रसवृंद । बकवत सुख मानै नहीं

यदपि द्रवैं नितचंद ॥ लखी कठिन तिनके हृदय जे न द्रवैं लखिराम । पुरुषारथपर छारिपरि भली राम रतिबाम ॥ लली लोभ आये ललन भ्रमरकली उघरानि । भली न कीन्हीं जनक अब कंटकवत प्रणठानि ॥ शंकर यदपि सहायतो हरैं जनक हठ ज्ञान । करै व्याह मन मोदसोंगरैं सकल मनग्लान ॥ वाक्यबिलास प्रकासगुण कहहिं परस्परनारि । राम रूपरसिका सकल पगीं परापरप्यारि ॥

तुलसी०चौपाई ॥ कोउकह जोभल अहैविधाता । सबकहँ सुनिय उचित फलदाता ॥ तौजानकिहि मिलिहि बरयेहू । नाहिन आलि इहां संदेहू ॥ जोबिधिबश असबनै सँयोगू । तौकृतकृत्य होयँसबलोगू ॥ सखि हमरे आरति ताते । कबहुंक ये आवहिं यहि नाते ॥ दोहा ॥ नाहित हमकहँ सुनहुसखि इनकरदरशन दूरि । यह संघट तबहोइ जब पुण्य पुराकृतभूरि ॥ चौपाई ॥ बोलीअपर कहेउसखि नीका । यहबिवाह अतिहित सबहीका ॥ कोउकह शंकर चापकठोरा । येश्यामल मृदुगात किशोरा ॥ सब असमंजस अहै सयानी । यहसुनि अपर कहै मृदुबानी ॥ सखि इनकहँ कोउकोउ असकहहीं । बड़ प्रभाव देखत लघुअहहीं ॥

कृपानिवास ॥ हतीताड़का जगतभयंकर । भूलीछल बलछिदी एकशर ॥ कोमलप्रमदा सदा सहेली । सहजमरै लखि छबिअलबेली ॥ हते सेनसह बिनहिं कलेशा । खल मारीच सुबाहु बलेशा ॥ कौशिकमख रखवारेप्यारे । करणीकठिन रूपसुकुमारे ॥

तुलसी० ॥ परसि जासु पद पंकजधूरी । तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥

कृपानि० ॥ द्रवीभूत पाहन जिनके बल । कहाअनुप कटु देख-

तहीचल ॥ सत्यकही सब सखी सयानी। हमैंनभावति कठिन कहानी ॥ सुनहु अहल्या कथासुहाई। हुती रामपदरज रसिकाई ॥ पतिकी भय कछु बरण कनौड़ी। मिलन रघुबर लाजहि छोड़ी ॥ व्यभिचारिणिको चरित दिखायो। पतिको कोप शाप मनभायो ॥ उपलदेहकरि पति तेहित्यागी। तपै बिपिन प्रभु पदअनुरागी ॥ बिनअवगुण जग ठगनहिंटारैं। छलबलकरिपटु जगत बिसारैं ॥ जिनहिं रामरस रूपपियारो। तिनकी कही न सबकीधारो ॥ कालबदनतें छलकरि जीवैं। दोषकहा रसअमृत पीवैं ॥ जानि प्रीति प्रभु आयसँभारी। पदरजदै सबताप निवारी ॥ ऐसेद्रवी अहल्यादेही। पाहनथी पैरामसनेही ॥ धनुष कठिन सखि शठ जड़देहा। कहजानै मृदु रामसनेहा। द्रवै धनुष सखि नोचितनाई। कौन रामलखि कोमलताई ॥

तुलसी० ॥ सोकिरहे बिनु शिवधनुतोरे। यह प्रतीति परिहरियन भोरे ॥ जेहि बिरंचिरचि सीय सँवारी। तेइ श्यामलबर रचेउ बिचारी ॥ तासुबचनसुनि सबहरषानी। ऐसेइहोउ कहहिं मृदुबानी ॥

कृपानिवा०दोहा ॥ नृपरानी जामातुसुख पतिसुख सीतापाय। लोचनसुख हमहूंलहें जोप्रभुकरैसहाय ॥ सदनसदन ज्योंनारि मिस बिरमावैं प्रियराम। नेहनयो नितनित निरखि सहजबसै इहिधाम ॥ व्याही अनव्याही नई गौनेआई बाल। ललचाई परबशमनो टोनाई हँसिलाल ॥ चौपाई ॥ बाक्य बिनोद सुमोद भराई। निरखि बालदृग लालभुलाई ॥ बनिताघर बर तजि सँगलागी। फिरैं रामरसबश अनुरागी ॥

रघुराजछंदहरिगीतिका ॥ जहँ जात राजकुमारपथ पुरबार संग अपारहैं। तहँ बारबार अनेकबार अनंदढारत धारहैं ॥ करि अमितसतकारन हजारन युवतिवृंद निहारहीं। ऊँचेअगारनलगि कँगारन नैनपलक नेवारहीं ॥ आगे बतावत पंथबालक लाल

याहिमग आइये। यहिओर कौतुक बिबिधाबिधि निज अनुज को दरशाइये॥ चितवत चहूंकित चारुनगर प्रयात अमित सोहात हैं। मनु छबिपुरीमहँ मार अरु शृंगारबपु दरशात हैं ॥ दोहा ॥ पुनि पूरबादिशि गवनाकिय उभयबंधु रणधीर। पंथबतावत संग में चली बालकन भीर॥

तुलसी०दोहा ॥ हियहरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनिवृंद। जाहिं जहांजहँ बन्धुदोउ तहँतहँपरमानन्द॥ चौपाई ॥ पुरपूरबदिशिगे दोउभाई। जहां धनुषमखभूमि बनाई॥ अतिबिस्तार चारु गचढारी। विमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥ चहुंदिशि कंचनमंच बिशाला। रचे जहां बैठे महिपाला॥

केशवदाससवैया ॥ शोभित मंचनकी अवली गजदंतमयी छबि उज्ज्वलछाई। ईशमनौ बसुधा में सुधारि सुधाधर मंडल मंडि जोन्हाई॥ तामहँ केशवदास बिराजत राजकुमार सबै सुखदाई। देवनसों जनु देवसभाशुभ सीय स्वयम्बरदेखन आई॥

तुलसी० ॥ तेहिपाछे समीपचहुंपासा। अपरमंच मंडली बिलासा ॥ कछुकऊँच सबभांति सुहाई। बैठहिं नगर लोगसब आई॥ तिनकेनिकट बिशाल सुहाये। धवल धाम बहुबरण बनाये॥ जहँ बैठीं देखहिं पुरनारी। यथायोग्य निजकुल अनुहारी॥ पुरबालक कहिकहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि दिखावहिं रचना ॥ दोहा॥ सब शिशु यहिमिस प्रेमबश परसि मनोहरगात। तनपुलकहिं अति हर्षहिय देखि देखि दोउभ्रात॥ चौपाई ॥ शिशु सब राम प्रेमबशजाने। प्रीति समेत निकेत बखाने॥ निजनिजरुचि सब लेहिं बुलाई। सहित सनेह जाहिं

दोउभाई ॥ रामदेखावहिं अनुजहिं रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥ लवनिमेषमहँ भुवन निकाया । रचेजासु अनुशासन माया ॥ भक्त हेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुषमखशाला ॥

रघुराज दोहा ॥ यह प्रत्यक्ष देखहु सबै रघुपति भक्ति प्रभाउ । रीझत राम सनेहसों कौन रंकको राउ ॥

तुलसीदासचौपाई ॥ कौतुक देखि चले गुरुपाहीं । जानि बिलम्ब त्रास मनमाहीं ॥ जासु त्रास डरकहँ डरहोई । भजनप्रभाव दिखावत सोई ॥ कहि बातें मृदु मधुर सुहाई । किये बिदा बालक बरिआई ॥ दोहा ॥ सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ । गुरुपद पङ्कज नाइ शिर बैठे आयसु पाइ ॥

रघुराज०कबित्त ॥ शीशसूंघि पाणिपोंछि पीठहि अशीष देकै पूंछयो मुनि कौशिक नगर हरि आये हाल । कहांकहां बागे कहां कहां अनुरागे अति जागभूमि आगे कैसे सुखमा लखी बिशाल ॥ रघुराज मिथिलाधिराजके महल देखे लेखे कौन लोकसे सिहात जाको लोकपाल । बीथिन बजारन अगारन हजारनमें पुर नर नारिनको आये लाल कै निहाल ॥ जोरि पाणि बोले रघुबीर रणधीर दोऊ करत प्रवेशपुर भई अति जन भीर । देखेहैं हजारन अगारन बजारनमें भूति बेशुमारन धरीहै पंथ तीरतीर॥ रघुराज रंगभूमि देखेहैं स्वयंबरकी गये नहिं राजभौन जहां मिथिलेशबीर । शिष्य रावरेके अवधेशजू के डावरे बोलाये बिन बावरे से कैसे जायँ मतिधीर ॥ दोहा ॥ सुनि रघुनंदन के बचन मन्द मन्द मुसक्याय । मुनिन वृन्दमधि गाधिसुत कह अनंद उरछाय ॥ जो नहिं राखहु राम तुम सकल जगत मर्याद । तौ संहिता पुराण श्रुति वृथा कियो बहुबाद ॥

श्रीतुलसीदासजी चौपाई ॥ निशिप्रवेश मुनि आयसु दीन्हा। सबही संध्याबंदन कीन्हा॥ कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि युग याम सिरानी॥ मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई। लगे चरण चापन दोउ भाई॥

कृपानिवास ॥ उर बर लाय पलक पदपरसैं। चापतचरणचोप चितसरसैं॥ भक्ति प्रभाव प्रबल मुनि चीन्हों। परमेश्वरपद सेवक कीन्हों॥ जाके चरण प्रक्षालन पानी। शंकर शीशधस्यो गुणखानी॥ पतिबंचक अघपुंज शिलासी। पदपरसत गोलोक बिलासी॥ चरण पीठ सुर क्रीट सिहावैं। करत प्रयास समय नहिं पावैं॥ बिष्णु बिरंचि शेष शिव देवा। ईश्वरपद लहि मनकी सेवा॥ ते प्रभु मुनि पद सेवत प्रीते। राम अजित रस भक्तनि जीते॥

रघुराजसवैया ॥ हैं नख दीरघ चारिहूं ओर कढ़ी केतनी तरवान छ्यवांई। कोर कठोरनि कंटकसी रजपंकभरी उघरी सबठाईं॥ रेखन रेखन बसीहैं पिपीलिका ते पद आपने अङ्क उठाईं। कोमल कौलहूते करसों रघुराज मलैं डरसों दोउ भाई॥

तुलसी०चौपाई ॥ ते दोउ बंधु प्रेमजनु जीते। गुरुपद कमल पलोटत प्रीते॥ बारबार मुनि आज्ञा दीन्हा। रघुबर जाइ शयन तब कीन्हा॥

रघुराजदोहा ॥ बारबार जब मुनि कह्यो चरण बंदि रघुवीर। कियो शयन तृणसेजमें धर्मधुरंधर धीर॥ लषण चरणचापन लगे शरदकंज युगहाथ। बैठत उड़त मरालयुग तरुतमाल जनु साथ॥ कबित्त ॥ अतिकोमल हाथनसों रघुराजमलै प्रभुपंकज पायनको। डरपैकरमोर कठोरमहा कछु पीरनहोय सुखायनकों॥ पछितात मनै रहिजातकहूं हुलसात मलै भरिचायनको। हरषातक्षणै बिलखातक्षणै धनि रामकेबंधु सुभायनको॥ पदकी

रजलै कहुं शीशभरैं कबहूं पदपंकज शीशधरैं । मनमाहँ बिचार करैं क्षणहीक्षण कोजग मोसम मोदभरैं ॥ परिचारक लाखन औधअहै तिनको सुखलूटि हमैंअफरैं । भरतौ रिपुसूदन श्रीरघुराज नआज बराबरी मोरिकरैं ॥

तुलसी०चौपाई ॥ चापत चरण लषण उरलाये । सभयसप्रेम परम सचुपाये ॥ पुनिपुनि प्रभुकहँ सोवहु ताता । पौढ़े धरिउर पदजलजाता ॥

रघुराज ॥ यहिबिधि शयनकिये दोउभाई । रैनचैनभरि शयन सोहाई ॥ शशिकर विमल विभासिततारा । बहत मंद मारुत सुखधारा ॥ पादप पुहुपनकी झरिलाई । रहीसुगंध भूमिमहँ छाई ॥ कहुंकहुं बोलत मंजु पपीहा । सोवत और विहंग निरीहा ॥ छिटकी चन्द्रचंद्रिका चारू । चमकत नवपल्लव हरहारू ॥ चरहिं अभीत मंजु बनचारी ॥ जिमि सुराजलहि प्रजासुखारी ॥ कुमुदप्रफुल्लित मुकुलित कंजू । जिमि नय अनय मनुज मनरंजू ॥ बालित बियोग व्यथित चकवाका । चोरउलूकहु भये उड़ाका ॥ प्रविशततम शशिकर हटिजाई । कलिप्रभाव जिमि हरिगुण गाई ॥ परीसनंक विश्वमहँ कैसी । योगविवश इन्द्रिनगति जैसी ॥ विरही दुखित सुखित संयोगी । जिमि विषयी अरु हरि रसभोगी ॥ नखतउवत कोउ अथवतजाहीं । पुण्य पाप फल जिमि जगमाहीं ॥ दोहा ॥ सोवत रघुकुलतिलक निशि मध्य मुनिनिसमाज । मनु रवि शशि तारावली भलीसुछबि रघुराज ॥ सोरठा ॥ सुखसोवत रघुनाथ लषणसहित तृणसेजमहँ । सकल मुनिनके साथ रहयाम बाकी निशा ॥ दोहा ॥ गुनिप्रभातआगमहरषि लालशिखाधुनि कीन । मनुनकबि दिननाथके बोलत परम प्रबीन ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रहपरमानन्दत्रैलोक्यमंगलतृतीयोप्रकरणसमाप्तः ३ ॥

श्रीजानकीवल्लभायनमः

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह

चतुर्थप्रकरण

विश्वामित्र महाराजकी आज्ञापायकै श्रीरामलक्ष्मणजीका पुष्पबाटिकामें पधारना वहाँ श्रीजानकीजीका गिरिजापूजन निमित्त समाजसहितआना ॥

श्रीतुलसीदासजीदोहा ॥ उठेलषण निशि बिगतसुनि अरुणशिखा धुनि कान । गुरुते पहिले जगतपति जागे रामसुजान ॥

रघुराजछंदचौबोला ॥ लषण कमलकर परसिपायँ पद कछु कौशिकतेआगे । जगेजगतपति सुमिरिगुरूपद गुरुहि जगावनलागे॥ उठहुनाथ रविलसत उदयगिरि भयोभोर भवमाहीं । मुनिजन जात सकल मज्जनहित शयनकाल अब नाहीं ॥ जगे मुनीश मनहिंमन सुमिरत रामचरण जलजाता। नयनानिखोलि लखे रघुपति मुख यह मुद मन न समाता ॥ चूमिबदन शिरसूंघि पीठकर फेरत कहमुनिराई । जाहु नहाहु खाहुकछु खाजन यशभाजन दोउभाई ॥

संग्रहक० चौपाई॥ कहेबचन यहिबिधिमुनिराई । रामलषणसुनि अति सुख पाई ॥

श्रीतुलसी० चौ० ॥ सकल शौचकरजाइ नहाए। नित्यनिबाहि गुरुहिं शिरनाए॥

रघुराजछंद ॥ कोटिन दई अशीश गाधिसुत मंगल प्राणपियारे । पूजा करनलगे कौशिकमुनि रामरूप उरधारे ॥ रहेफूलनाहिं तेहि औसर महँ चेलन चूक बिचारी । जानि अनेक हेतु कुलकेतुहिं रामहि कह्यो हँकारी ॥ तात जायतुम जनक बाटिका सुमन सुगंधित लावो । तहँकी सकल कथा कहि हमसों महामोद मन छावो ॥ सुनि गुरुआयसु रघुनायक तहँ सहित लषण धनु पानी । चले कुसुम तोरन चितचोरन थोर न आनँद आनी ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ समय जानि गुरु आयसुपाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥

कृपानिवास ॥ चलत छैल छबिकी छकि नाई । मदगयंद जनु गवनिसुहाई ॥

रघुराज छंदचौबोला ॥ बामपाणि दोउदोन बिराजत दहिने करशर फेरैं । तरि भरे तूणीर कन्धयुग मंद मंद हगहेरैं ॥ बाहु मूल यकलसत शरासन बदन मदन मदहारी । पीत बसन तन बिमल बिराजत पगनूपुर भनकारी ॥ मंदमंद गमनत गयं- दगति दशरथनंदन बांके । बंक भृकुटि अतिशय निशंक मन रघुकुल कमल प्रभाके ॥ चलत पंथ सतपंथ प्रचारक छीरद मंथनकारी । मनहुं लेत मनमोल सुछबिदै मिथिलापुर नरनारी अति अभिराम अराम रामलखि लहिसुखधाम ललामा। कह्यो लषणसों ललित बचनअस यह बन मन बिश्रामा ॥ यह बिदेह बाटिका सोहावनि सुखछावनि सबहीकी । आनँद उपजावनि मनभावनि हठिहुलसावनिहीकी ॥ यहिबिधि करत बंधुसन बातन गये बाटिकाद्वारे । द्वारपाल चितचकित निहारे सुंदर राजकुमारे ॥ जोहि कुँवरदोउ मोहिगयेमन सोहिरहे दोउभाई । रामहि लखत सकल नरनारी रामलखत फुलवाई ॥ जो बिकुंठको श्रीबन तिहिमहँ नितप्रति बिहरन वारे । सोई चकित चहूं कित चित वत जनक बाटिका द्वारे ॥ सोरठा ॥ दशरथ राजकुमार प्रबिशे फुलवारी हरषि । क्षणक्षण बिपुल बहार सदा बिहार बसंतजहँ ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ भूपबागवर देख्योजाई। जहँ बसंत ऋतु रही लुभाई ॥ लागे बिटप मनोहर नाना। बरण बरण बर बेलि बिताना ॥

रघुराज कबित्त ॥ गुच्छकलसासेत्यों बितानन कसासे खासेपुहुप अवासे बहुरंगके प्रकासेहैं। कलप लतासे लता वृन्दन बिलासे झुके अजब कितासे भूमि लोरनके आसेहैं ॥ शिशिरतरासे ऋतुपतिकी हवासे हरे किसलै निकासे फूले हीरनहरासेहैं। भनै रघुराज कल्पवृक्ष उपमासे फले अति अनयासे तरुकरततमासे हैं ॥ दोहा ॥ मधुग्रीषम बरषा शरद सुखद शिशिर हेमन्त। निज गुण निजथल प्रगट ऋतु सबथल बसत बसन्त ॥ षटऋतु के मन्दिरबने षटऋतु प्रगट प्रभाव। तामें अधिक प्रभाउकरि सोहि रह्यो ऋतुराव ॥ कबित्त ॥ पल्लवलसत पिकपल्लवके पन्नासम शाखा भूमिलोरैं फल फूलन के भाराहैं। मंजु कुंज महामनोरंजन मुनीशनकी भौरनके पुंजनको गुंजन अपाराहैं ॥ बिछीबसुधामें झरे फूलनकी सेजहीसी पवन प्रसंग परि मलकोपसारा हैं। चैत्ररथ कामबन नंदनकी नीकी छबि कहैं रघुराज राम कामको समारा हैं ॥ तालन तमालनके तैसेहि लतानन के रुचिर रसालनके जाल मनभाये हैं। हेम आल बालन के रजत देवालनके आलय लोकपालनके लोकन लजायेहैं ॥ दिल देवबालनके देखेते बिहाल होत षटऋतु कालनके फूल फलछायेहैं। और महिपालनके बालनकी बातैं कौन रघुराज कोशलेश लालन लोभायेहैं ॥ दोहा ॥ राजत राजत रुचिरतरु मनहुं चंदकी जोति। कनक लता लहरैं ललित मनुरबि दोत उदोति ॥

कृपानिवास ॥ लता लवंग ललित द्रुम लुंबति। तरुणां मौले घनपटु चुंबति ॥ मध्य बेष्टि बल्लिका मल्लिका। मणि मूला बर वृक्ष बल्लिका ॥ राय बेलि चंमेली मालती। गंधा भानुसि चक्षु पालती ॥ जाय जुही बंधूक माधुरी। मदनबाण अलिप्राण

साधुरी ॥ गुल्म लता बहुलता भराई । पुष्प बाटिका बिपुल सुहाई ॥ द्रुमबल्ली संपतियुत सोहैं । जगमोहन प्रभुको मनमोहैं ॥ बनी बेदिका मणिमय कंचन । शिल्पकार बिधि बुद्धि बिचक्षन ॥ मणि प्रबंध कल्पित केदारा । बारिभरी छबिधारि सुढारा ॥ सौरभ बारि फुहारन के झर । सुमन फलानि सु नचत उपरिपर ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चातृक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहँग नटत कलमोरा ॥

रघुराज कबित्त ॥ कीरन की भीर कामिनीन ते सहित सोहैं कूजि रहे कुंज कुंज मुनिमन हारने । कोकिला कलापैं चित्त चोरत अलापैं परैं मनकी कलापैं थापैं थिरता अपारने॥भनै रघुराज केकि कूकै सुनि चूकैचित्त करत चकोर चारि वोरहू बिहारने । पिक की पुकारैं त्यों पपीहा की पुकारैं हिय हारैं हर हारैं बेशुमारैं देवदारने॥

कृपानि०दोहा ॥ कुंज केलि कारण कलित मनु बहुकामकुटीर । पुंज पुंज दंपति द्विजा क्रीड़ति प्रेमाधीर ॥ गंधमादिका पुंज अलि गुंजति शब्द रसाल । राग रागिनी तनु सुजन गावत सिय गुणमाल ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मध्यबागसर सोह सुहावा । मणिसोपान बिचित्रबनावा॥बिमल सलिल सरसिज बहुरंगा । जल खग कुंजत गुंजत भृंगा ॥

रघुराजगीतिकाछंद ॥ बहुरंग कुसुम पराग उड़त प्रसंग पौनहि पायकै । मिलि सलिल बहुबिधि रंग तरल तरंग रचत सोहाय कै ॥ शीतल सुमंद समीर सुरभित बहत सकल सरोवरै । तेहि बश उड़त झीने सुसीकर परम शीतल तृणपरै ॥ ते बिंदु तृण लागि लसत भाति मनु फरसपर मुक्ताफरै । रविकर बिवश लागि बल्लनिरंध्रनि पुष्पराज छटाछरै ॥ नहिं पुरुष तहँ कोउ जात माली रहत एक बिश्वासको । सब नारि रक्षन करहिं उपबन तरु तड़ाग अवासको ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हरषे बन्धु समेत । परमरम्य आराम यह जो रामहिं सुख देत ॥

संग्रह०दोहा ॥ राजकुँवर दोऊ गये बागवान के ऐन । जगमोहन रघुलालजू कहे मधुर बरबैन ॥ कवित्तसवैया ॥ येहो महीपति माली सुनो गुरुपूजनके हित फूल उतारन । आये इतै हम बंधु समेत उतारैं प्रसून जो होइ न बारन ॥ कैसे कहेबिन फूल चुनैं मिथिलेशकी बाटिका के मनहारन । बस्तु बिरानी को पूछे बिना रघुराजजू लेब न बेदउचारन ॥ रामके बैन अराम को पालक कानपरे गृहबाहेर आयो । देखि अनूपम भूपकुमार रह्यो ताकिकै पलकैं न लगायो ॥ पायनमें परि पाणिको जोरि पग्यो प्रभु प्रेम सुबैन सुनायो । श्रीरघुराज जू रावरोबाग न बावरो मोहिं बिरंचि बनायो ॥ दोहा ॥ लेहु फूल फल दल बिमल सुंदर राजकिशोर । जो बरजै सोइ बावरो बिश्व बिलोचन चोर ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चहुंदिशि चितै पूंछि मालीगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥

संग्रहक० ॥ सुमन सुगंधित बिबिध प्रकारा । तिनमधि बिहरत राजकुमारा ॥

रघुराज सवैया ॥ बाटिका में युग राजकुमार निहारत फूलन टोरतबागैं । दोनालिये अतिलोना उभैकर छोना मृगेश से जोवन लागैं ॥ कोशल भूपके बांकुरे बीर कहै रघुराज लता अनुरागैं । फूलै फलै तरु ताही क्षणै हरि कोमल कौल करैं जहँ लागैं ॥ बीनत बंजुल मंजु प्रसूनन कुंजन कुंजन गुंजनि भोरैं । मल्लिका मालती माधवी मालन फूल प्रबालन जालन तोरैं ॥ बागकी पालिनी मालिनी जे ते बिहालिनीहोतींचितै चितचोरैं । चाखतीं रूप सुधाभल भाषतीं श्रीरघुराज सुराजकिशोरैं ॥ तुम श्यामल गौर सुनो दोउ लालन आय कहां से उरायनमें । मिथिलेशकी बाटिकामें बिहरो हियरो हरो हेरि सुभायनमें ॥ इत कौन पठाय

दया नहिं लाये सुफूल न तोरो उपायनमें । रघुराज कहूं गड़ि जैहै लला पुहुपानिकी पांखुरी पायनमें ॥ कामकलाजित कोशल नाथ बचो मम संसृणु हेभवभावन । तानिहरेकसुमानि दलानि चिनोखि नपश्यसि मामिहपावन ॥ श्रीरघुराजतबिन्दुमुखेमम चित्तचकोर मवेहिबिभावन । त्वत्पदसेवनमद्यबिना नहिंमें शरणं क्वचिदस्तिजनावन ॥ दोहा ॥ सुनत मालिनीगणबचन दशरथ राजकुमार । मंदमंदमुसक्यायकिय नेकुनयन सतकार ॥ सवैया ॥ कहुं लेत प्रसून प्रमोद भरे ललिते लतिकान के भोरन में । कहुं कुंजन में बिसरामकरैं अवनीरुहछांह के छोरन में ॥ बर बाटिका ठौरनठौरन में रघुराजलखैं चहुंओरन में । चितचोरन राजकिशोरनको मन लागिरह्यो सुमतोरन में ॥ दोहा ॥ चित चोरत तोरत कुसुम इत अवधेश किशोर । उत बिदेह रनिवास में कियो पुरोहित शोर ॥ चौपाई ॥ जनक पट्टमहिषी छबि-खानी । नाम सुनैना परम सयानी ॥ सतानंद तेहि बचन उचारा । काल्हि स्वयंबर होमनहारा ॥ तातेआजु जानकीजाई । करै गौरि पूजन चितचाई ॥ सुनतपुरोहित की बरबानी । मै-थिल महाराज महरानी ॥ सखिनबोलि सबसाज सजाई । गिरिजा पूजन सियहिपठाई ॥ कनकथार भरि सुमनसुहावन । हरद दूब दधि तंदुल पावन ॥ धरि धरि शीशन सखी सोहाई । लिहे चारु चंदन चितचाई ॥ कनक कुंभ जल भरि धरिशीशा । आगे चलीं सुमिरि जगदीशा ॥ सखी सहस्रन सजीं शिंगारा । लीन्हें चमरछत्र छबिसारा ॥ पानदान लीन्हें कोउ नारी । पी-कदान कोउ पान पियारी ॥ अतरदान कोउ गहे दुलारी । लिये गुलाबदान कोउ भारी ॥ लिये बाल उरमाल रसाला । कोउ बीजन कोउ दर्पन माला ॥ दोहा ॥ छरी हजारन संगमें रतन ज-ड़ित सखि पानि । जै बिदेह नृपनंदिनी बोलिरहीं बर बानि ॥ चौपाई ॥ महाबिमल यक नवल नालकी । बनी हाल की रतन जालकी ॥ कीन्ही सीता सुखित सवारी । लियउठाइ बाहकिन

नारी॥पहिरे अंबर अंगसुरंगा। भूषण भूषित सुंदरअंगा। मचीतहां नूपुरभ्कनकारी। सोहिरही सिय सजीसँवारी॥ चली गौरिपूजन मनभाई। सियछबि यकमुख किमि कहिजाई॥ गावहिं मंगल गीतसयानी। सहितताल सुरसातहुंसानी॥कोउसखि तहां प्रेम रसबोरा। करहिं मनोहर सोहर शोरा॥ कोउ विदेहकुल बिरद उचारैं। कोऊ राईलोन उतारैं॥ कोउ सियभाल दिठोनादेहीं। कहि युगयुग जीवहि वैदेहीं॥ जड़ीरतनकर छरी अमोलैं। आगे फरकफरक सखिबोलैं॥ पहिरे पीतनिचोल अमोला। घेरदार घांघरो सुगोला॥ यहिबिधि गिरिजा पूजन हेतू। चली जनक कुलकीरति केतू॥ दोहा॥ राजमहलसों बागलों अंतहपुर वि-स्तार। मोटकोट कंचनबन्यो नहिं तहँपुरुषप्रचार॥ सीयचल-त बाजनबजे महामनोहर शोर। बाल बजावहिं बिबिध बिधि माचिरह्यो चहुंओर॥ कबित्त॥ दासीसंग खासी छबिरासी चप लासी चारु आनँदबिभासी रनिवासकी नेवासिनी। चन्द्रचन्द्रि कासी लसैं कमला कलासी कलकनक लतासी सबै सीयकी सुपासिनी॥ भनैरघुराज सिय प्रेमकी पियासी रहैं सर्बदाहुला-सी जे प्रकासी मंदहासिनी। रतिसी सुरम्भासी तिलोत्तमासी मैनकासी मायासी मयासी मंजु मिथिलामवासिनी॥ दोहा॥ सखीसकल गावहिं मधुर सुंदरचरण बनाय। बीण बेणु मिरदंग डफ ऊँचेस्वरन मिलाय॥ अथपद॥ जयजय मिथिला राजकु-मारी। जय विदेहनंदिनी अनंदिनि चंद मंदद्युतिकारी। निमि कुल कमलदिवाकरकी द्युति रमारमन मनहारी॥ श्रीरघुराज दिगंतनलौं निजकीरतिलता पसारी॥ पद॥ जयजय धरणिसु-ता सुकुमारी। शीलसरित करुणाकी आकरि मंजुलमूरतिधारी॥ जाकेपदबंदत बिरंचि शिव मुनिमानससंचारी। श्रीरघुराज सखी समाजसुख स्वामिनि सियाहमारी॥ पद॥ सियछबि को कहि सकैउचारी। जेहिमुख समसरकरत कलानिधि घटतबढ़त हिय हारी॥ हंसनि छटनि शशिछटनि लजावति दुगुनी द्युति उजि-

यारी। पिक कोकिल जेहि मधुरबैनसुनि लज्जित भे बनचारी॥ खंजन कंजन मीनकुरंगन दृगछबि छीन निकारी। केतेनबास दियोजलभीतर केतेन बिपिनमझारी॥ किमिकहिजाइ कनक लतिकाजड़ सियभुजसरिस बिचारी। तारनसहित पूर्णिमारजनी लखिलजाति तनसारी॥ चरणचारु नखअवलि बिमंडित बिनजावक असनारी। बसीविश्वकी कोमलता तहं करिकंजनसो रारी। श्रीरघुराजकहौं पटतरकेहि उपमा कविनजुठारी॥ महा मनोहर मूरति मुदकर बारबार बलिहारी॥ पद॥ जैजै जनक लली सुखरासी। मिथिलानगर क्षीरनिधिसंभव कांतिमतीकम लासी॥ स्वेच्छाचार बिहारिनि तारिनि उमा गिरा जेहिदासी। बरणत वेद विश्वठकुराइनि पूरणब्रह्म रूपासी॥ सरलस्वभाव प्रभाव विदित जग जेहि कीरति कलिकासी। श्रीरघुराज भाजु को यहिसम विरद विशाल विकासी॥ दोहा॥ यहिबिधि गावहिं सहचरी सानुरागबहुराग। मानहुंकूकत कोकिला बिरचाहिंबिश्व विराग॥ छंदहरिगीतिका॥ कोइबेणु बीण मृदंगडफ मुरचंगपटह उपंग हैं। कोइ ललित सलिल तरंगसहित उमंगलिय सारंग हैं॥ कोउ करकिये करतार सरस सितार सुर शिंगार हैं। कोउ मंजु मुरज अमोल ढोलन तबल अमल अपारहैं॥ यहिबिधि अनेकन बाजेबजत नलहत कविकहिपारहैं। सखिचलहिं रचहिंअनेक गति करिनूपुर न भनकारहैं॥ सखिगावतीं अहलादिनी अहलादिनी बररागिनी। गुनकली रामकली भली सुरकली सरससुहागिनी॥ यकयाम आयोदिवस तहँ सुरसुपद समय बिचारिकै। चढ़िचढ़ि बिमानन विविधआनन सीयगवन निहारिकै॥ हियहरषि बरषहिं कुसुम सुरभित कहहिं जै जगदंबिका। जेहि भजत शंकर अंबिका सो जात पूजन अंबिका॥ घनगगनछाया करत ताकेवोटदेखत देवहैं। सियराममिलन बिचारि फूलनबरषिठानत सेवहैं॥ सियसहचरी छबिकीभरी सुरसुंदरी तिन देखिकै। पछिताहिं मनहिं सिहाहिंभाग सोहाग धनिधनि लेखिकै॥ मणि

नालकीमहँ जानकी चहुंओर आलीवृन्दहैं । मनु बिमल तारागणबिराजत मध्यपूरण चंदहैं ॥ यहिबिधि बजावत बाज गावत गीत सखिन समाजहैं । स्वरमधुरछावत क्षिति चहूं कित हरषभर रघुराज हैं ॥

संग्रहक० चौपाई ॥ यहां बाग महँ दोऊ भाई । तोरत कुसम फिरत फुलवाई ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ तेहिअवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥ संगसखी सब सुभग सयानी। गावति गीत मनोहर बानी ॥

रघुराजछंदहरिगीतिका ॥ मिथिलेशजूकी लाड़िली आगमन सुनि तहँ मालिनीं । हर बर चलीं भरभर सकल सजि बसन रूप रसालिनी ॥ बहु बिरचि भूषण कुसमके भरि फूल फल दल थारने । अतिचारु उपबन द्वारचलि आगेधरे करि वारने ॥

संग्रहक० चौपाई ॥ सब मालिनि पट भूषण पाईं । निज निज काज लगीं सोइ जाईं ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ सरसमीप गिरिजागृह सोहा । बरणि न जाइ देखि मन मोहा ॥

संग्रहक० ॥ उतरी सिया सरोवर पासा । सब समाज मन परम हुलासा ॥ पट भूषण सखि दीन्ह उतारी । पहिरि दुकूल सु नवलकुमारी ॥ अन्हवावन तब सिये सिधाईं । हीरन फरस जड़ित छबिछाई ॥

कृपानिवास ॥ पद पंकज द्युति क्षिति अरुणाई । राम लगनि पट शोण बिछाई ॥ सरपैठी जल केलि किलोलैं । मानसरे जनु हंसनि लोलैं ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ मज्जनकरि सर सखिनसमेता । गई मुदित मन गौरि निकेता ॥

रघुराज ॥वृद्धवृद्ध द्विजबधू सिधाईं । पूजन साज सबै लै आईं॥

संग्रहक० ॥ बिप्रबधू जसरीति सिखाई । लागी करन सीयमनलाई ॥

कृपानिवास ॥ चंदन पुष्प सुगंध लगाये । धूप दीप नै-बेद्य चढ़ाये ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पूजनकीन्ह अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग बरमांगा ॥ एक सखी सिय सङ्गबिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥

रघुराज ॥ सहजहि तहँ मालिनि यकआई । देखी रही लषण रघुराई ॥ सखी पाणि पङ्कज गहि बोली । अपने उरकी आशय खोली ॥ कहि न सकों डरबश तोहिंपाहीं । बिनाकहे मनमानत नाहीं॥ कोउ सुंदर युग राजकिशोरे । आय बाग महँ फूल न तोरे ॥ यतनी बयस सिरानि हमारी । अस शोभा नहिं नैन निहारी ॥ देखत बनत कहे न सिराई । नैननि सों न कढ़ैं दोउभाई ॥ कहि न सकों देखनके लायक । नाम लषण लघु बड़ रघुनायक । मालिनि बचन सुनत सखिकाना । देखन हित तेहि मन लल-चाना ॥ दोहा ॥ तू देखाय देहै सखी मोहिं महीप किशोर । यह उपकार अपार मैं अवशि मानिहौं तोर ॥ चौपाई ॥ मालिनि तासु पकरि कर कञ्जन । चली लखावन मुनि मन रञ्जन ॥ लतनि वोट कहुं कुंजन वोटू । चली चलावत चखकी चोटू ॥ किये मंद नूपुर झनकारी । जाति कुसुम तोरन मिसप्यारी ॥ रुकति कहुं पुनि चलतिसयानी । राजकुंवर दर्शन ललचानी ॥ मालिनिसों पुनि पुनि फिरि भाषति । तूं तो नहिं कछु छल उरराखति ॥ कौन कुंज महँ राजकुमारा । मालिनि बेगि बताउ अबारा ॥ परत पुहुमिपग परमहुलासी । कबै बिलोकहुं बाग बिलासी ॥ मनोभिरंजन कुंजनिवासे । बिलसत इह बाटिका बिलासे ॥ कुसुमाहरण शील शुभरूपौ । नयन महासुखदायकभूपौ ॥ कब लखिहौं युगराज किशोरा । कहु मालिनि सुन्दर केहिवोरा ॥ यहि बिधि दर्शन उदधि उमंगा । उठति बचन मुख तरलतरंगा ॥ दू-रिहिते मालिनि मनभाई । दियबताय अंगुली उठाई ॥ दोहा ॥

देखुसखी यह कुंजमें सुंदर युगलकिशोर। हरयो मोर चित चोर चित हरि लैहैं हठितोर॥

संग्रह०चौपाई॥ सुनि असबचन सखी मालिनिकै। द्रुमनिवोट आगे कछु बढ़िकै॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ ते दोउ बन्धु बिलोकेउ जाई। प्रेम बिवश सीतापहँ आई॥ दोहा॥ तासु दशा देखी सखिन पुलकगात जलनयन। कहुकारण निज हरषकर पूछहिं सब मृदु बयन॥

रघुराजकबित्त॥॥ ठाढ़ीतू जकीसी त्यों थकीसी मुखमीसी मंद खीसी त्यों अनंदकीसी बेकलसी दीसीहै। पीसीहै मनोजकीसी छूटिगै छतीसीछिटी सुरति उर्द्धासीभरी भागकी न दीसीहै॥ घाउ कीलगीसी बिसेबीसी त्यों घसीटी प्रीति त्यागे कुलकानिहीसी औचकउचीसीहै।रघुराज नेहनीति रुचिररचीसी पचीतचीबिरहा नलसों ऊधममचीसीहै॥ सवैया॥एरीअली तोहिं कैसोभयोनहिं पूंछेहुपै कछु उत्तरदेती। आनंदभीजी सनेहमें सीझी चितै कछु पाछे उसासनलेती॥ श्री रघुराजकहे कहँरीझी भईतनलीझी अजों दशाएती। काहलखी अरु काहचखी सखी बेगिबताउ दुरा उनहेती॥ दोहा॥ सखी सखिनके बचनसुनि लखीपाछिलेवोर। मनपियूष फलसोंचखी कहींगिरा रसबोर॥ कबित्त॥ पूंछतकिहा है उतैकौतुक महाहै नहिंजातसो कह्यहै अबैजौन लखिपाईरी। बिधिके सँवारे राजकुँवर पधारे प्यारे विश्वमनहारे धारेविश्व सुंदराईरी॥ सांवरोसलोनो दूजो द्युतिको दिमाकवारो दृगते टरैन टारी मति अकुलाईरी। कहनासिराई रघुराज देखेबनिआई आजुलौंन देखीजौन आजु देखिआईरी॥ प्रेमसखीजूकबित्त॥ कोशल कुमार सुकुमार अति मारहूते आली घिरिआई जिन्हैंशोभा त्रिभुवनकी। फूल फुलवाईमें चुनतदोउभाई प्रेमसखी लखिआई गहेलतिका द्रुमनकी॥ चरणलुनाई दृगदेखे बनिआई जिनजी-

ती कोमलाई औ ललाई पदुमनकी । चलतसभाई मेरो हियरा डराई हाई गड़िमतिजाई पाईं पांखुरी सुमनकी ॥ पद ॥ सखीरी जोजैहै वहिवोर । कहौं बनाइ बनाइ कछूनहिं राजकुँवराचित चोर ॥ जोनमानिहै सीखसयानी पुनिनचली कछुजोर । श्रीरघुराज हालहोई सोइ जोनभयो अबमोर ॥ पद ॥ लखीहौं जबते राजकुमार । तबते इनआँखिन असदीसत श्यामभयो संसार ॥ कहौ तबहिंलौं हमहिं बावरी मानहु मोहिंगँवारि । श्रीरघुराजलखी जबलों नहिं वा मूरति मनहारि ॥ दोहा ॥ ऐसे सुनि सजनीबचन देखिदशा पुनि तासु ।उदित इंदु अभिलाषहियकियो हुलास प्रकासु ॥चौपाई ॥ सियसमीप यकसखी सिधारी । बीज मंत्र समदियो उचारी । यकसखि कछु कौतुक लखिआई । जनकलखी तोहिं चहतसुनाई ॥ सुननयोग सजनीकी बानी । चलु चलु सुन जोकहत सयानी ॥ सियसुनि सखी बचन सुखपाई । मंदमंद मनमहँ मुसक्याई ॥ पूजिगौरि मिथिलेशदुलारी । मंदिर तेबाहर पगुधारी ॥ मधुरअली तेहिसखिकर नामा । मधुरबचन ताकोरसधामा॥कहतभई मिथिलेशकुमारी । कहु कौतुक तू कौन निहारी ॥ कैसीभइ दशा सखितेरी । तोहिं बिभ्रम है अस मति मेरी ॥ सो सखि सियछबि नखशिख हेरी । सुधिकरि राजकुँवर छबिढेरी ॥ नैनमूँदि गुनि सुंदरजोरी । ईश आशपुजवै अबमोरी॥ बहुरि बालबोली बरबानी । बुधिबर बदति बिशेष सयानी ॥ हौं बाटिका बिलोकन काजू । गई बिहाय सखीनसमाजू ॥ दोहा ॥ घनीकुंज लोनीलता फूलेफूल अपार । लखी कुसुम तोरत तहां सुंदर युगुलकुमार ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥देखनबाग कुँवरदोउ आये । बयकिशोर सबभांति सुहाये ॥ श्याम गौर किमिकहौं बखानी॥गिराअनयन नयन बिनुबानी ॥

विश्वनाथपद ॥ कहौंतो जोकहिबेकी हावै । सरसरूप यहिनाम हिंरसना कहिनसकति जानै जोइजोवै ॥ हेरतउनहिं हेरायगयो

हिय अब तनसुधि तनकौहै केही । जस देह हमभई विदेहैं तुम विदेह कुलमों बैदेही ॥ सुनत बिशेषजो होउ बिदेही दुरघट होय ऐनको जैबो । बिश्वनाथ कुँवरनदर्शन जोजानिलेहु गुंगे गुरखैबो॥

संग्रह०चौपाई ॥ मुनिमन मोहन राजकुमारे । देखतहोत मनहुं मतवारे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुनिहरषीं सबसखीसयानी । सियहिय अति उतकंठाजानी ॥

रघुराजदोहा ॥ मधुरअलीके बचनसुनि बिमलअली अतुराइ । जनकललीसों बिहँसिकहि भलीबानि हुलसाइ ॥

संग्रह०चौपाई ॥ हमहूं सुनि महलन असबाते । युगुलकुँवरछबि मदनलजाते ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥एककहै नृपसुतये आली । सुनेजेमुनिसँग आयेकाली ॥ जिन निजरूप मोहनीडारी । कीन्हेस्वबश नगरनरनारी ॥ बरणतछबि जहँतहँ सबलोगू । अवशि देखिये देखनयोगू ॥ तासुबचन अति सियहि सुहाने । दरशलागि लोचन अकुलाने ॥ चलीअग्रकरि प्रिय सखिसोई । प्रीतिपुरातन लखैनकोई ॥ दोहा ॥ सुमिरिसीय नारदबचन उपजी प्रीति पुनीत । चकित बिलोकहि सकलदिशि जनु शिशु मृगीसभीत ॥

रघुराजचौपाई ॥ जब मोहिंकहयौ जगतपति बोली । लीलाकर नहेतु सबखोली ॥ देवदुसहदुख देखिदयाला । रावणबिवश त्रिलोक बिहाला ॥ हरणहेतु अवनी कर भारा । लेहौं कोशलपुर अवतारा ॥ है उतपति धरणीते प्यारी । अवशि करहु मिथिलेश सुखारी ॥ यदपि दुसहदुख होत बियोगू । यदपिधरयौ शिर नाथ नियोगू ॥ जगततिलै जनमतुरंता । इतबासिचहौं मिलैं कबकंता॥ बिरहबिवश दुख सहयौनजाई । प्रभुपठये नारदमुनिराई ॥ कही

देवऋषिसोंमैं बानी। कब मिलिहैं मोहिं शारँगपानी ॥ मुनिकह जनकबाटिकामाहीं । जगतजननि लखिहौप्रभुकाहीं ॥ यहसुधि सकल सीयकहँआई । दरशलागि लालच अधिकाई ॥ अबैप्रगट नहिं भाउजनाई । कौनेहुंमिसि देखौं पियजाई ॥

कृपानिवास ॥ चली झमकि झांकति चहुंओरी । चंदटटोरति मनहुं चकोरी ॥

रघुराज चौपाई ॥ मंद मंद गमनति सुकुमारी । चतुर सखी सब संग सिधारी ॥ माचिरही नूपुर झनकारी । बरसतरस बाटिका मझारी ॥ घनी कुंज प्रविशहिं कढ़ि भामिनि । मनहुं सघनघन दमकति दामिनि ॥ रही ललित लतिका लहराई । ललनालुकहिं लपेटि लजाई ॥ तहँ सियकी सखिसोहहिंकैसी। शशी जोन्हघन जलधर ऐसी ॥

कृपानिवास ॥ गान तान बनिता स्वरझीने । गावहिं राग रसिक रसभीने ॥

रघुराज ॥ परत पुहुमिपद संयुत ताला । मनहुं ललनसिखवैं गतिबाला ॥ परी पुहुमि बहुरंगपरागा । जानि मनहुं अपनी बड़ भागा ॥ रचितरु तंभ चूनरी धारी । देनजाति महि प्रभुहि कुमारी ॥ प्रभुहि लषण उमग्योअनुरागा। उदैइंदुमनु पूरबिभागा॥ दोहा ॥ यदपि लाजबश सियचलति मंदमंद मुसक्यात । तदपि प्रीतिबश चरणगति अधिक अधिक अधिकात ॥ चौपाई ॥ फैलि रही सखि कुंजनमाहीं । मनहुं चदैनी चारुसोहाहीं ॥ मधुरअलीकर करगहि सीता । प्रभुदरशय बिलंबहित भीता ॥ चितवत चहुंकित कुंजनमाहीं । चली चतुरि चिन्तति प्रभुकाहीं ॥ बसन सुरंग सखी सब संगा। मनहुं उदधि अनुराग तरंगा ॥ शोचति मन मिथिलेश कुमारी । कौन हेत नहिं परें निहारी ॥ जे पल तहँ दर्शन बिन जाहीं । ते पल अलप कलपते नाहीं ॥ कोकहिसकें दरश उतसाहू । होहिं यदपि शारद अहिनाहू ॥ लतनिलतनि तरुतरु आरामै । हेरति सिय रामैअभिरामै ॥ फूलनफूलन

निज प्रभुनेही। नैन दीठि अलिकिय बैदेही ॥ लखी न जब प्रभु राजकिशोरी। भई चंद बिन यथा चकोरी ॥ मधुरअली पहँ सैन चलाई। पूंछी लाज बिवश नहिं गाई ॥ मधुरअली अंगुली उठाई। लताभवन सो दियो बताई। दोहा ॥ चली चटक चित चाहचुभि चतुरि चितै चहुंवोर। मनहुं दृगंचल चंचलनि रचन चहति चित चोर ॥

पं०हरिहप्रसाददोहा ॥ पग पायल बोलति चलत मंद मधुरबर बोल। घोस मंजु घोखा सुनत क्षणक्षण डामाडोल ॥ पायल धुनिसम बोलनो चाहो पिककरि सान। पायो नहिं खायोकसक भो तन कारो बान ॥

कृपानिवासचौपाई ॥ बाजत पायल नूपुर किंकिनि। राम श्रवण आराम छई धुनि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कंकण किंकिणि नूपुर धुनिसुनि। कहत लषणसन राम हृदय गुनि॥मानहुं मदन दुंदुभीदीन्हीं। मनसा बिश्व बिजय कहँ कीन्हीं ॥ असकहि फिर चित ये तेहि ओरा। सियमुख शशि भय नयन चकोरा ॥ भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहुं सकुचि निमि तजेउ दृगंचल ॥

रघुराजदोहा ॥ दोहुंनके अभिलाष बश नैन चतुर यकबार। मिलेधाइ प्यासे सुछबि रहेबियोगीचार ॥ दोहुंनके चखमेंपरयो चपलाहीसों चौंध। उन्हैं बिसरिगो जनकपुर उन्हैं बिसरिगो औध ॥ चारुचार नैननमिलत मंजुअली तहँ जोइ। कलारचत करकमलगहि कह्यो बचन मुदमोइ ॥ पद ॥ अवलोकिय सखि राजकुमारौ। ललित लतानि लये बिलसंतौ कृतसुंदरश्रृंगारौ ॥ द्रोण कलित कलकंजकरौ कुसुमनिचेतु मभिसारौ। मंजुल बंजुल मंडितमालौ चित्त नयन गतिहारौ ॥ नवनीरद नवकनक शरीरौ जगति जसो बिस्तारौ। बिश्व बिदित वृन्दारकवृन्द सुबं-

दित मधुराकारौ ॥ ललनानन्द बिमल बिधुबनो कोटिमार सुकुमारौ । अभिरामा रामे रमनीयो जन रघुराजाधारौ ॥ कबित्त ॥ दोहुंनके बांकेनयन दोहुंनको देखिथाके दोहुंनके हीन उपमा के शोभसाकेहैं । कंज मीननाकेभरे प्रेमकेसुधाकेमंद करन मृगाके न गिराके न उमाकेहैं ॥ भनै रघुराज अनुरागके मजाके मढ़ेकाके समताके एकएक छबिछाकेहैं । मेरेमनसाके गुने कहौं न मृषा के बैन शील करुणाके कछु अधिक सियाकेहैं ॥

बिश्वनाथपद ॥ जनकनंदिनिहिं तकि रघुनंदन हियरे नहिंआनंदसमाय । बदन सुछबि दृगफँसे मंजुकर अघटित कुसुमहि रहे लगाय ॥ अंबुज अंबुक अनँद अंबुके बिंदुरहे तेहिक्षण भहराय । जनु सियदृग अरबिन्दन रीझै करत निछावरि मुक्तनल्याय ॥ कैधौं सियदृग कमलडीठि नीलकमलनकी अवली पठाय । पहुंचाई मकरंद भेंटहै ताहीमें ये रहेनहाय॥घरिक रहेदोउ तनमनभूले सो सुख मोसों कह्योनजाय । बिश्वनाथ उरजोहि युगलछबि बार बार करलेतबलाय ॥ पद ॥ सीयसुंदरी मुखछबि निरखत कांपन लागे हरि को अंग । दीपशिखा जिमि पवन डोलावै तिमि मन कीन्हों छुभित अनंग ॥ पाय परम बल बपुछबि इरषित मनमथ गमन्यो माधसमेत । ठाढ़ेभे सबरोम राम तन विश्वनाथ जनु आगूलेत ॥

कृपानिवास ॥ श्याम छके सियरूप सिहावै । रसना चलत न उपमा पावै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ देखि सीय शोभा सुखपावा । हृदय सराहत बचन न आवा ॥

कृपानिवास ॥ मनकी उमगनि मनहिं समाई । लहरि तड़ाग बहिर नाहिं जाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जनु बिरंचि सब निज निपुणाई । बिरचि बिश्वकहँ प्रगट दिखाई ॥ सुन्दरता कहँ सुन्दर

करई । छबि गृह दीपशिखा जनु बरई ॥ सब उपमा कबि रहे जुठारी । केहि पटतरिय बिदेह कुमारी ॥दोहा॥ सिय शोभा हियबरणि प्रभु आपनि दशा बिचारि । बोले शुचिमन अनुजसन बचन समय अनुहारि ॥

बिश्वनाथपद ॥ लषण मूढ़मति बिधिभोहीना । प्रकट युवति ऐसी निरखनको रोमरोम प्रति नैननदीना ॥ धौं अस समरथहि है तिय बिरचन मदनहिको अभिषेकहि कीना । बिश्वनाथ सोइ प्रकटि निपुणता मोरहु मनचाहत हरिलीना ॥

रघुराजदोहा ॥ कहत बनत नहिं सियसुछबि पटतरपरै न हेरि । रहे मौन अनमिष दृगनि फिरे न फेरे फेरि ॥ सोरठा ॥ पुनि कछु उरहि लजाइ लता ओट निज रूपकरि । सिय मुख कंज लो-भाइ चंचरीक रचि चारुचख ॥ नाहिं क्षणक्षणहिं अघाय पिअत मधुर मकरंद छबि। सो सुख मन न समाय कहै कौनकवि बापुरो॥

श्रीतुलसी०चौप.ई ॥ तात जनक तनया यह सोई । धनुष यज्ञ जेहि कारण होई ॥ पूजन गौरि सखी लै आई । करति प्रकाश फिरति फुलवाई ॥

कृपानिवास ॥ बदन चांद्रनी उपबनछाई । भानु मयंक प्रकाश दुराई ॥ रमा उमा शचि शारदनारी । या छबि कोटि कला लखिहारी ॥ गिरागणप बिधिकी निपुणाई । लघुलागी सिय पद चतुराई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ जासु बिलोकि अलौकिक शोभा । सहज पुनीत मोर मन छोभा ॥ सो सब कारण जान बिधाता। फरकहिं शुभग अंग सुनुभ्राता ॥ रघुबंशिनकर सहज सुभाऊ । मन कुपंथपग धरैं न काऊ ॥ मोहिं अतिशय प्रतीति जियकेरी । जेहि सपनेहुं परनारि न हेरी ॥ जि-नके लहहिं न रिपुरण पीठी । नहिं लावहिं पर तिय मन

डीठी ॥ मंगन लहहिं न जिनके नाहीं । तेहि नर बर थोरे जगमाहीं ॥ दोहा ॥ करत बतकही अनुजसन मन सिय रूप लुभान । मुखसरोज मकरंद छबि करतमधुप इव पान ॥

रघुराज ॥ परयो लतापट दीठि जब सीय उठी अकुलाय । मनहुं महानिधि नयन की दीन्हीं तुरत गमाय ॥

कृपानिवासचौपाई ॥ बर्णत सिय छबि राम लुभाये । लताजाल निजरूप दुराये ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ चितवति चकित चहूं दिशि सीता । कहँ गये नृप किशोर मन चीता ॥ जहँ बिलोकि मृगशावक नयनी । जनु तहँ बरष कमल सित श्रेनी ॥ लताओट तब सखिन लखाये । श्यामल गौर किशोर सुहाये ॥ देखिरूपलोचनललचाने। हरषेजनु निजनिधिपहिंचाने॥

कृपानिवास ॥ पल बियोग सियदरश बिहीना । बिकलहोत जनु जल बिनु मीना ॥

रघुराज सवैया ॥ नयन हजारन एकहीबारन राजकुमारनके तनलागे । मानौ अपार मलिंद मरंद सुपीवन अंबुजपै अनुरागे ॥ कोनकहै पलकैं परिबो थिरता अतिमय तनहूं मनजागे । श्री रघुराज बिलोकैं सदा सजनीनके वृन्द बिरंचिसों मागे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥थके नयन रघुपति छबि देखी । पलकनहूं परिहरी निमेखी ॥ अधिक सनेह देह भइ भोरी । शरद शशिहि जनु चितव चकोरी ॥

कृपानिवास॥ चंचल नयन अचंचल भयऊ । सरिता सिंधु यथा थिर थयऊ ॥

रघुराज दोहा ॥ प्रेम बिवश तहँ जानकी मूंदे नैन बिशाल । यथा बचावत योगरत करि समाधि निज काल ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ लोचन मगु रामहिं उरआनी। दीन्हें पलककपाट सयानी॥ जब सिय सखिन प्रेमबश जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥दोहा॥ लताभवनते प्रकटभे तेहि अवसर दोउभाइ। निकसे जनु युग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ॥

रघुराज सवैया॥ अरबिंदके काननते कढ़िके जिमिहंसकेशावक द्वैसरसे। पुनि ज्योंहीं तुषार अपारहिंते युगबासरनाथ प्रभावरसे॥ प्रकटे घनश्याम घटानिते ज्यों रजनीपति द्वै हियके हरसे। तिमि कोशललाल दोऊ रघुराज लतागृहते कढ़िके दरसे॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ शोभा सींव सुभग दोउबीरा। नील पीत जलजात शरीरा॥ काकपक्ष शिर सोहत नीके। गुच्छा बिच बिच कुसुम कलीके॥ भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाये। श्रवण सुभग भूषण छबि छाये॥ बिकट भृकुटि कच घूंघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे॥ चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेतजनु मोला॥ मुखछबि कहि न जाइ मोहिं पाहीं। जो बिलोकि बहुकाम लजाहीं॥ उरमणिमाल कंबुकल ग्रीवां। काम कलभ कर भुजबल सीवां॥ सुमन समेत बाम करदोना। सावँर कुवँर सखी सुठि लोना॥

रघुनाथदासदोहा॥ शारँग दृग मुख पाणिपद शारँग कटि बपुधार। शारँगधर रघुनाथ छबि शारँग मोहनहार॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ केहरिकटि पटपीतधर सुखमा शील निधान। देखि भानुकुल भूषणहिं बिसरा सखिनअपान॥

रघुराजदोहा॥ आपुसमें भाषनलगीं भूप कुमार अनूप। पगीं प्रेम सिगरी सखी रँगीं रामके रूप॥ छंदभुजंगप्रयात॥ महाशोभ

सींवा उभय बंधु बीरा । हरैं हेरि हीकी सुहेलीनिपीरा ॥ न इंदी बरौ देहकी दांजपावै । गोराई लखे पीत कंजौ लजावै ॥ दोहा ॥ पुनि कोऊ बोली सखी बाढ़्यो प्रेमदराज । मोर काज अब कछु नहीं लखब छोंड़ि रघुराज ॥ पदरागदादरा ॥ आली लखौ बनमाली सलोना । जालिम जुलुफ बिपुल व्यालीसम मोहिं डसी किमि जाउँरी भोना ॥ हरिलीन्ह्यो हिय राज कुँवर यह मंजुल हँसनि कुसुम करदोना । ठाढ़े लताभवनके द्वारे जिमि कंदर कढ़ि केहरि छोना ॥ नैन सैन हनिहरघो चैन सब मैन हैन सम कोउ अरुझोना । लागी लगन सावँली मूरति शपथमोरि अब कोउ बरजोना ॥ श्रीरघुराज राज ढोटापर तनमनवारि भई अब मोना । लोक लाज कुल काज बिसारिगो आजुहि होनीहोइ सो होना ॥ दोहा ॥ जनकलली अनमिष चितै श्यामल राजकुमार । धरघो ध्यान मीलित दृगनि ठाढ़ी गहि तरुडार ॥

कृपानिवास चौपाई ॥ लाल लता तजि प्रकटभये तब । जनु घनते युगचंद उये अब ॥ बनिता मोदकमोद खिले दृग । गयउ बिरह तम सौभ जौन जग ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ धरिधीरज इकसखी सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥ बहुरिगौरिकर ध्यान करेहू । भूप किशोर देखि किनलेहू ॥

रघुराज सवैया ॥ देरभई गहि शाख तमाल की ठाढ़ी अहै पग पीर न जोवै । ध्यानधरे गिरिजा बपुको मिथिलेशलली तूं वृथा क्षणखोवै ॥ पूजनकीजै बहोरि उतैचलि मांगियो जो मनमें कछु होवै । देखिले सावँरो राजकुमार खड़े रघुराज महामुदमोवै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सकुचि सीय तब नयन उघारे । सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे ॥

कृपानिवास ॥ मनभावन की लावनताई । निरखति ललकि पलक बिसराई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नखशिख निरखि रामकी शोभा। सुमिरि पिताप्रण मन अतिक्षोभा॥ परबशसखिनलखी जब सीता। भये गहरु सब कहहिं सभीता॥

रघुराजसोरठा ॥ बचन सयुक्ति बनाय सीतहि सरस सुनाइ कै। मधुरअली इत आय सुनै कछुक चाहति कहन ॥ सवैया ॥ ह्वैगे बिलंब बड़ी इतहीं अब अंबगये बिन कोपकरैगी। पूजन बाकी अहै जगदंबको लंबभये रबि बेलाटरैगी॥ श्रीरघुराज निहारि लई मनकी उपजी नहिं फेरे फिरैगी। आउब काल्हि यही बेरियां इत गौरि कृपा सब पूरी परैगी॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि आउब इहि बिरियाँ काली। असकहि मन बिहँसी इक आली॥ गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भये बिलंब मातु भयमानी॥ धरिबड़ धीर राम उर आनी। फिरी आप प्रण पितुबश जानी॥ दोहा ॥ देखन मिसु शिशु बिहँग तरु फिरति बहोरि बहोरि। निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़ी प्रीति न थोरि॥ चौपाई ॥ जानि कठिन शिव चाप बिसूरति। चली राखि उर श्यामल मूरति॥

कृपानिवास ॥ चलत अंग चितवनि अनुलहरैं। जिमि निशान ध्वज पाछे फहरैं॥ चलति गुड़ीलों जकि थकि प्यारी। लगनि डोर जनु गही खिलारी॥

रघुराज ॥ बहुरि बहुरि सिगरी सखि देखैं। बिछुरनि जानि महादुख लेखैं॥ करहिं परस्पर बचन बखाना। अस सुंदर नहिं आन जहाना॥ देखि भूपसुत श्यामल गौरा। अब न चहत चित चितवन औरा॥ करहिं बिरंचि सिद्ध यह योगू। सावँल कुवँर जानकी योगू॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख

सनेह शोभा गुणखानी ॥ परमप्रेममय मृदुमसिकीन्हीं। चारु चित्र भीतर लिखिलीन्हीं ॥ गई भवानी भवन बहोरी। बन्दिचरण बोली करजोरी ॥ जय जय जय गिरिराज किशोरी। जय महेश मुखचंद चकोरी॥ जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि द्युति गाता॥ नहिं तव आदि मध्यअवसाना। अमितप्रभाव बेद नहिं जाना ॥ भव भौ बिभव पराभवकारिनि। बिश्व बिमोहनि स्वबश बिहारिनि ॥ दोहा ॥ पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख। महिमा अमित न कहि सकहिं सहस शारदा शेख ॥ चौपाई ॥ सेवत तोहिं सुलभ फल चारी। बरदायिनित्रिपुरारि पियारी ॥ देवि पूजि पदकमल तुम्हारे। सुर नरमुनि सबहोहिं सुखारे॥ मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहु सदा उर पुर सबही के॥ कीन्हेउँ प्रकट न कारण तेही। असकहि चरणगहे बैदेही॥ बिनय प्रेमबश भई भवानी। खसीमाल मूरति मुसुकानी॥ सादर सिय प्रसाद उरधरेऊ। बोली गोरि हर्ष हिय भरेऊ॥

रघुनाथदासचौपाई ॥ जयजय श्रीमिथिलेशदुलारी। जयजगजननि जनकमनुहारी॥ जय जगमगत बिभूषणचीरा। तड़ितबरण बपु छबि गंभीरा ॥ जय जग दुस्तर दरशतुम्हारे। करि करुणा बिचरहु नृपद्वारे॥ जय भवभयभंजनि सुखदेनी। बिधि हरिहर बंदित सुरश्रेनी॥ जय जप तपकरि सुगति जेचहईं। बिन तव कृपा न सपनेहुलहईं॥सबकेपरे वेद जेहिगावै। सो तवसुमिरनते करआवै॥ दिव्यबर्षशत शंकरध्याये। रामगुरूह्वै पंथबताये॥ तब तव दर्शनते सुखलहेऊ। इमपि अगस्त संहिता कहेऊ॥ हम

समान तव कोटिनदासी। नयननिरखि नितकरैं खवासी ॥सो तुम मातु विनयमम कीन्ही। निजजनजानि बड़ाईदीन्ही॥

रघुराजचौपाई॥ बहुतकहे काफल अबहोई। भली भांति महिमा निजगोई॥ जेहिकारण लिय इत अवतारा। सोजान्यो सब भांतिहमारा॥ पैअबकहौं कालअनुसारा। सधेसकल नरनाटय तुम्हारा॥ आवतिहँसी मोहिं मनमाहीं। याचति स्वामिनि सेवकपाहीं॥ पै जस राउर शासनहोई। तैसहिकहब नजानिकोई॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥सुनुसिय सत्य अशीश हमारी। पूजिहिमनकामना तुम्हारी॥ नारदबचन सदा शुचिसांचा। सोबरमिलिहि जाहि मनरांचा॥छंदहरिगीतिका॥ मन जाहि राचो मिलिहि सोबर सहजसुंदर सांवरो। करुणानिधान सुजानशील सनेहजानत रावरो॥ इहि भांति गौरि अशीशसुनि सियसहित हिय हर्षितअली। तुलसीभवानिहिपूजि पुनिपुनि मुदितमन मंदिरचली॥ सोरठा॥ जानि गौरि अनुकूल सियहियहर्ष नजायकहि। मंजुल मंगल मूल बामअंग फरकनलगे॥

संग्रह०॥ वहां बागमहँ जनककुमारी। परमानंदभयोउरभारी॥

रघुराजचौपाई॥ मुखप्रसन्न सियको सखिदेखी। कारज सिद्धि सत्य मनलेखी॥ चढ़ीनालकी सीय सोहाई। मंदमंद गवनी सुखछाई॥ बाजन बाजिउठे यकबारा। बोलहिंसखी नकीबअपारा॥चलींहजारन संगसुकुमारी। कहैंजयति मिथिलेशदुलारी॥ यहिविधि गौरिपूजिकरि गेहू। गईजानकी जननीगेहू॥ सीतहि देखि जनकमहरानी। बोली सबै सखिनसों बानी॥ बड़िबिलंब कर कारणकहहू। सियसँग सब सयानिसखि अहहू॥ मधुरअली तहँ गिरासुनाई। जननिचरण पंकज शिरनाई॥ देखतरहीं सिया फुलवाई। फेरि सरोवरमाहँ नहाई॥ पूजी गौरि वेदबिधि

करिकै । आवत जननि बेरभइघरिकै ॥ रानीकह्यो जाउ सँग माहीं । करवावो भोजन सियकाहीं ॥ गई संगलै सखि बैदेही । करवायो भोजन पुनि तेही ॥ दोहा ॥ पौढ़ाई परयंकपर अली अशनकरवाय । लगीं चरणचापनहुलसि मंत्रनदईठि झराय ॥ चौपाई ॥ करिपूजन मुनि सबिधिसुखारी । भये मूल फल कंदअहारी ॥ बहुविधिव्यंजन सुखदबनाये । युगलबंधुकहँ बोलि जेमाये ॥ जो क्षुधाइ नहिं जागन भागा । सो अघान लहि मुनि अनुरागा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करिभोजन मुनिवर विज्ञानी । लगे कहन कछुकथापुरानी॥विगत दिवस मुनि आयसुपाई । संध्या करनचले दोउभाई ॥

रघुराज ॥ गुरुकौशिक शासन शिरधरिकै । संध्याकियो वेदवि-धिकरिकै ॥ पुनि साधारण अंबरधारी । बैठे तरुछायासुखकारी॥ तब पूरबदिशि भयोप्रकाशा । ह्वैगै मनहुं फटिककीआशा ॥ किर-णिहजारन छई दिशाना । मंदपरी नखतावलि नाना ॥ दियो दिवाकर तापमिटाई । जोन्हभूमिमंडल पसराई ॥ चितै चकोर कुमुदहरषाने । मुकुलितकमल मनहुं सकुचाने ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्राचीदिशि शशि उगेउसुहावा । सिय मुखसरिस देखिसुखपावा ॥

रघुराज॥कह्योलषणसौंप्रभुमुसकाई।लखहुमयंकमहासुखदाई॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बहुरि बिचार कीन्ह मनमाहीं । सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥ दोहा ॥ जन्म सिंधु पुनि बंधु विष दिनमलीन सकलंक । सियमुखसमता पाव किमि चंद्र बापुरो रंक ॥ चौपाई ॥ घटैबढ़ै बिरहिनि दुखदाई । ग्रसै राहु निज संधिनिपाई ॥ कोकशोकप्रद पंकजद्रोही । अवगुणबहुत चंद्रमा तोही ॥

रघुराज०सवैया ॥ रेबिधु कोकनशोकप्रदायक तूजगजाहिरपंकज द्रोही । कामकोमीतकरैअतिशीत कियोगुरुकोअपकारहैकोही ॥ भाषतश्रीरघुराजसुनै सियकेमुखकीसरितोहिंनसोही । नीकन लागतमोहिंमयंक बड़ोबिरहीजनकोनिरमोही ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बैदेहीमुख पटतरदीन्हे । होइदोषबड़ अनुचितकीन्हे ॥ सियमुखछबि बिधुब्याजबखानी । गुरु पहँचले निशाबड़ि जानी ॥ करि मुनिचरणसरोज प्रणा- मा । आयसुपाइ कीन्हविश्रामा ॥

रघुराज०दोहा ॥ राम लषण कौशिकसहित कियो रैनसुखसैन । मनहिं मयन उर चयन भरि मिलित सुमंजुल नैन ॥ चारि दंड जब रहिगई रजनी अतिअभिराम । ब्रह्म मुहूरत आइगो जगे लषण युत राम ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ बिगत निशा रघुनायक जागे । ब- न्धु बिलोकि कहन अस लागे ॥ उगेउ अरुण अवलो कहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥ बोले लषण जोरि युगपाणी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदुबाणी ॥ दोहा ॥ अरुणोदय सकुचे कुमुद उडुगण ज्योति मलीन । जि- मि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपतिबलहीन ॥ चौपाई॥ नृप सब नखत करहिं उजियारी । टारि न सकहिं चाप तमभारी ॥ कमल कोक मधुकर खगनाना । हरषेसकल निशा अवसाना ॥ ऐसहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे । होइ- हहिं टूटे धनुष सुखारे ॥ उगेउ भानु बिनु श्रम तम ना- शा । दुरे नखत जग तेज प्रकाशा ॥ रवि निज उदय ब्याज रघुराया । प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया ॥ तव भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु बिघटन परिपा-

टी ॥ बन्धु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ शुचिसहज पुनीत अन्हाने ॥ नित्य क्रियाकरि गुरुपहँ आये । चरण सरोज सुभग शिरनाये ॥

रघुराज०चौपाई ॥ उतै उठे मिथिलेश प्रभाता । कियो बिचार बुद्धि अवदाता ॥ आजु सुखद शुभ योग सुहावन । सतानंद को चहों बुलावन ॥ अस बिचारि मिथिला महराजा । मज्जन पूजनादि करिकाजा ॥ सतानंदकहँ पठयउ धावन । लाये तुरत पुरोहित पावन ॥ करिप्रणाम बोले मिथिलेशू । बोलिपठावहु सकल नरेशू ॥ रंगभूमि महँ सकल प्रकारा । करहुस्वयंबरकर बिस्तारा ॥ सीय स्वयंबर सुनि चितचाये । देश देशके भूपति आये ॥ यथायोग मंचन बैठावहु । यथायोग सतकार करावहु ॥ पौरजान पद सभ्य सुजाना । बिबिध देशबासी जन नाना ॥ कोशलेशदशरत्थ कुमारे । कौशिक मुनिके संग सिधारे ॥ दोहा ॥ बिश्वामित्र समीप चलि मुनिसमेत दोउभाइ । मेरी बिनय सुनाय तिन ल्यावहु आशु लेवाय ॥ चौपाई ॥ सुनि मिथिलेश निदेश मुनीशा । एवमस्तु कहि दियो अशीशा ॥ उठि तहँ ते सचिवन बुलवाये । राजकाज कर हुकुम सुनाये ॥ सचिव सपदि सब किये बिधाना ॥ सतानंद शासन परमाना ॥ सकल नृपन शासन पठवाये । रंगभूमि सुंदर सजवाये ॥ देशदेशके सकल महीपा । सजे समाज सहित कुलदीपा ॥ भूषण बसन बिबिध बिधि धारे । भूप अनूप रूप शृंगारे ॥ निज निज सब साहिबी समेतू । चले स्वयंबर देखन हेतू ॥ बंदी बिरदावली बखाने । भरे गर्ब मन शक्रसमाने ॥ छंदभुजंगप्रयात ॥ चढे मत्तमातंगपै भूप केते । मनो आजुही स्वर्ग को जीतिलेते ॥ महासानवारे बड़ी सैनवारे । चलेआवते भूमते वाजवारे ॥ कोऊ स्यंदनैमें बनाये सुबेशा । दिये क्रीट मुक्ता गुथे केश केशा ॥ प्रतीहार बोलैं छरी पाणिधारे । छजें छत्रचौरैं चलैं ओर चारे ॥ अनंतै किताके लसैते पताके । अरूझैं मनौ भानुके यान चाके ॥ जहां रंगभूको बनो तुंगद्वारा । तहां होत धूरै पषा-

नौ पवाँरा ॥ बने बेश बांके बड़े ऐंड़वारे । जुरे रंगभूके सबै भूप द्वारे ॥ प्रतीहार धाये बिदेहैं जनाये । महाराजभूके सबैभूपआये॥ दोहा ॥ जनक बोलाये सचिव सब दियो निदेश सुनाय । यथायोग सब नृपनकहँ बैठावहु तुम जाय ॥ चौपाई ॥ मंत्री सचिव मुसाहेब धाये । लगे सबन बैठावनचाये ॥ रहीं मंचअवली जो आगे । बैठाये राजन बड़भागे ॥ तिनमहँ बड़पनके अनुसारा । भे आसीन भूमिभरतारा ॥ तिन पाछे मंचावलि माहीं । बैठाये सब सज्जन काहीं ॥ तृती मंच अवली जो भाई । पौरजान पद दिय बैठाई ॥ रंगभूमि महँ अतिउतकर्षा । भयो महामानव संहर्षा ॥ सियप्रताप महिमा प्रगटानी । नहिं संकेत परयो कोहुजानी ॥ पूरब पश्चिम दक्षिणओरा । बैठे भूपति मनुज अथोरा ॥ राजप्रकृति उत्तर दिशि पाहीं । जनकासन ढिग बैठतजाहीं ॥ फटिक तुंग मंदिर तेहि पाछे । तहँ रनिवास बिराजत आछे ॥ दोहा ॥ रंगभूमिके मध्यमें रह्यो बिमल मैदान । कनकखंभ झालरमुकुत तान्यो बिशद बितान ॥ चौपाई ॥ रंगभूमि यहि बिधि जब भरिगै । रामदरश लालस हियअरिगै ॥ पुरचारन महँ जे पुरबासी । राम रूप देखे छबि खासी ॥ ते आपुस महँ असबतराहीं । युगलकुँवर आये कसनाहीं ॥ कोउ कह जनक बुलाये नाहीं । यह समाज किमि रच्यो वृथाहीं ॥ कोउ कह हम तो अतिललचाये । उनहीं को हम देखनआये ॥ कोउकह उत बिदेह लखिआये । दीठिलगन भय नाहिं बोलाये ॥ कोउ कह तुम जानहु नहिं हेतू । मन महँ जनक किये असनेतू ॥ नृपन बोलि उत्तर दैदेहीं । पुनि रामहिं व्याहैं बैदेहीं ॥ कोउ कह धनुष भंग बिन कैसे । प्रणतजिहैं भूपति नहिं ऐसे ॥ वादिन जे न लखे रघुराई । ते पूछहिं कैसे दोउभाई ॥ तिनहिं देहिं उत्तर जे देखे । उन बिन सकल वृथा ममलेखे ॥ दोहा ॥ यहि बिधि सिगरे नारि नर कहैंपरस्पर बैन । कोशलनाथ कुमार के लखन लालची नैन ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि राज समाज बिराजी । सचिवप्रधान सुमति कृतकाजी ॥ देखि

स्वयंबर सबसंभारा। जाय जनकसों बचन उचारा॥ नाथ सभा महँ धारिय पाऊं। आये सकल भूप भरिचाऊं॥ रंगभूमि महँ जुरी समाजा। तव आगमन चहत सब राजा॥ सुनि बिदेह पट भूषणधारे। रंगभूमि कहँ सपदि सिधारे॥ शासन भेजिदियो रनिवासा। बैठि झरोखन लखैं तमासा॥

संग्रह०॥उठि सियप्रात जननि पहँआई।रानीदेखिसुताहरषाई॥

कृपानिवास० ॥ बलिहारी लै बहु धनवारे। मातु मुदितबरडोल दुलारे॥ मुख मज्जनकरि प्रातकलेवा। दधि माखन मिश्री मृदु मेवा॥ मज्जनकरि शृंगार सँवारी। मनरंजन पितुमातु दुलारी॥

रघुराज० ॥ नृप बिदेह महिषी छबिखानी। नाम सुनैना शची समानी॥ सो निज संगहि सीय लेवाई। बैठी झीन झरोखन जाई॥ मंत्रिनयुत मिथिला महराजा। गयउ रंगमहि सहित समाजा॥ उठी समाज बिदेह बिलोकी। कोउ उरहरषित कोउ उर शोकी॥ नृप बिदेहके जेठ कुमारा। लक्ष्मीनिधि जेहिनाम उचारा॥ रंगभूमि महँ पितु सँग आयउ। मनहुं बीररस रूप सोहायउ॥ दोहा॥ सुहृद प्रकृति सरदार भट परिचर सहित समाज। सिंहासन आसीनभे निमिकुल के शिरताज॥

श्रीतुलसीदासजीकृत चौपाई॥ सतानन्द तब जनक बुलाये। कौशिक मुनि पहँ तुरत पठाये॥

रघुराज०॥ सतानन्द उत चलि मतिधामा। बिश्वामित्रहि कियो प्रणामा॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ जनक बिनय तिन आय सुनाई। हरषे बोलि लिये दोउ भाई॥ दोहा॥ सतानन्द पद बन्दि प्रभु बैठे गुरु पहँ जाइ। चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाइ॥

इति रामप्रताप चित्रकार बिरचिते श्रीसीताराम बिवाह संग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगल चतुर्थो प्रकरण समाप्तः॥

श्रीजानकीवल्लभो जयति

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीताराम बिवाह संग्रह ॥

पंचम प्रकरण

बिश्वामित्र मुनीशका श्रीअवधेश कुमारन सहित स्वयंबर देखने को जाना ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतचौपाई ॥ सीयस्वयम्बर देखियजाई। ईश काहिधौं देहिबड़ाई ॥ लषणकहायशभाजन सोई। नाथकृपा तव जापरहोई ॥ हरषे सुनि सब मुनिवर बानी। दीन्हअशीश सबहि सुखमानी ॥ पुनि मुनिवृन्द समेत कृपाला। देखनचले धनुषमखशाला ॥ रंगभूमिआये दोउभाई। असुसुधि सब पुरबासिनपाई ॥ चलेसकल गृहकाज बिसारी। बालक युवा जरठ नरनारी ॥

कृपानिवास० ॥ भूलीं अंजन मज्जननारी। रामागमन सुनत मतिवारी ॥ मातपिता पति पुत्रनभावैं। तजितजि निज इच्छा सबधावैं ॥ अगिनिलपट कोइ सहत ढिठाई। लगनि झपटनहिं जात सहाई ॥ सूरेअसि घायल थिरराजैं। प्रीतचुटे तल जे धर भाजैं ॥ नागडसे चढ़ि सहज सुभावैं। लाग डसेको लहरि भगावैं ॥ सहज शृंगारकिये कोइधाई। कोइ बिपरीत पहिरिपटआई ॥ लाज काजतजि भाजपरी सब। बीर तीरवत लक्षलगेथुब ॥ वृद्ध-

निको श्रम समुझबिहाई॥ बालक पयभय सुधि बिसराई॥ लखे राम प्रभु छके सनेही । पगेनैन मन ठगेबिदेही ॥

श्रीतुलसी०पदरागगौरी ॥ रामलषणजबदृष्टिपरेरी । अवलोकत सबलोग जनकपुर मानौबिधि बिबिधविदेहकरेरी॥ धनुषयज्ञ कमनीय अवनितल कौतुकहीभय आयखरेरी । छबि सुरसभा मनहुं मनसिजके कलित कल्पतरु रूप फरेरी ॥ सकलकाम बरषत निरषत करषत चित हित हरषभरेरी । तुलसी सबैसराहत भूपहि भले पैत पासे सुढरढरेरी ॥

विश्वनाथ०पद ॥ अँखियां निंदनयोगअहैं। राजकुंवर दोउ सुंदर निरखत यकटक क्यों नरहैं ॥ याहीते मुखश्यामल प्रणको बिरच्यो चतुरदई । विश्वनाथ छकिछकि छबिरसये अब दूवरूप भई ॥ पद ॥ कोउकह अँखियां रामकुंवरकी गुनियतु प्रथमहि देखी । मूरति श्याम गई गड़ि इनमें परहि पूतरी पेखी ॥ धाइ जाइ पुनि मिलहिन इनमें याते पलकैंधारै । विश्वनाथबहुसुछबि भरनहित नैननिनीर निकारै ॥

श्रीतुलसी०प०रा०गौरी ॥ नेकुसुमुखि चितुलाइ चितौरी । राजकुँवर मूरति रचिबेकी रुचि शुचि बिरंचि श्रमकियो कितौरी ॥ नखशिख सुंदरता अवलोकत कह्यो न परत सुखहोत तितौरी । सांवररूपसुधाभरिबेकहँ नयनकमल कल कलस रितौरी ॥ मेरेजान इन्हहिं बोलिबे कारण चतुरजनक ठयोठाठइतौरी। तुलसी प्रभुभंजि हैं शंभुधनु भूरिभाग सियमातु पितौरी ॥

संग्रहक०दोहा॥कहतपरस्पर बचनइमि मिथिलापुर सबबाल। निरखतछबि दोउबंधुकी फँसी प्रेमकेजाल ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ देखीजनक भीरभइभारी । शुचिसेवक सब लिये हँकारी ॥ तुरत सकल लोगन पहँ जाहू । आसनउचितदेहु सबकाहू ॥ दोहा ॥ कहिमृदुबचन बिनीत तिन बैठारे नरनारि । उत्तम मध्यम नीचलघु निजनिजथलअनुहारि ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ अतिउतंग मंदिर चहुंओरे । बैठि नारि नर बालकरोरे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ राजकुँवर तेहिअवसर आये । मनहुं मनोहरता छबिछाये ॥ गुणसागर नागर बरबीरा । सुंदर श्यामल गौरशरीरा ॥ राजसमाज बिराजत रूरे । उड़गणमहँ जनु युग बिधुपूरे ॥ जिनकीरही भावना जैसी । प्रभुमूरति देखी तिनतैसी ॥ देखहिंभूप महारणधीरा । मनहुं बीररस धरेशरीरा ॥ डरे कुटिलनृप प्रभुहि निहारी । मनहुं भयानक मूरति भारी ॥ रहे असुर छल जो नृपवेखा । तिनप्रभु प्रकट कालसमदेखा ॥ पुरबासिनदेखे दोउभाई । नरभूषण लोचनसुखदाई ॥ दोहा ॥ नारि बिलोकहिं हरषिहिय निजनिजरुचिअनुरूप । जनु सोहत शृङ्गारधरि मूरतिपरम अनूप ॥ चौ० ॥ बिदुषनप्रभु बिराटमयदीसा । बहुमुखकर पग लोचन शीसा ॥ जनकजाति अवलोकहिं कैसे । सजन सगे प्रियलागहिं जैसे ॥ सहित बिदेह बिलोकहिं रानी । शिशुसम प्रीति न जात बखानी ॥ योगिन परमतत्त्वमयभासा । शांत शुद्धसम सहजप्रकासा ॥ हरिभक्तन देखेउ दोउभ्राता । इष्टदेवइव सबसुखदाता ॥

कृपानिवास० ॥ स्वामी सरस दास मन भासैं । सखा भाव तिन मित्र प्रकासैं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ रामहिं चितवभाव जेहि सीया । सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥ उर अनुभवतिनकहिसक सोऊ । कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥ इहि बिधि रहा जाहि जसभाऊ । तेइ तस देखेउ कोशलराऊ ॥ दोहा ॥ राजत राजसमाज महँ कोशलराज किशोर । सुंदर श्यामल गौरतन बिश्व बिलोचन चोर ॥ चौपाई ॥ सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटिकाम उपमालघु सोऊ ॥ शरदचंद मुख निन्दकनीके । नीरजनयन भावते जीके॥ चितवनि चारु मार मद हरणी । भावत हृदय जाय नहिं बरणी ॥ कल कपोल शुचि कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदुबोला ॥ कुमुद बन्धुकर निन्दक हासा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥ भाल बिशाल तिलक झलकाहीं । कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥

कृपानिवास० ॥ अलकैं कुटिल कपोलनि बिथुरीं। शशिरसहित जनु नागिनि उतरीं ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ पीतचौतनी शिरन सुहाई। कुसुम-कली बिच बीच बनाई ॥ रेखा रुचिर कम्बुकल ग्रीवा। जनु त्रिभुवन सुखमा की सीवा ॥ दोहा ॥ कुंजर मणि कण्ठा कलित उर तुलसी की माल । वृषभकन्ध केहरि ठवनि बलनिधि बाहु बिशाल ॥ चौपाई ॥ कटि तूणीर पीतपट बांधे । करशर धनुष बामकर कांधे ॥ पीत यज्ञ उपवीत सुहाई । नख शिख मञ्जु महा छबि छाई ॥

देखि लोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥ हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनिपद कमल गहे तब जाई ॥

रघुराज ॥ कहौं कहा जानौ मुनिराई । जेहि बिधि शिवदिय धनुषधराई ॥ जौन भांति कोपे ईशाना । भाग न पायो यज्ञ बिधाना ॥ यह कोदण्ड बिरचि करतारा । दीन्ह्यो हर कहँ योग बिचारा ॥ दोहा ॥ सोई धनुलै कोपकरि देवन कह्यो महेश । खंड खंडकरि अंग सब देहो महाकलेश ॥ तब अस्तुतिकरि देवता किये प्रसन्न पुरारि । यज्ञभाग हरको दियो आपनि बिपति बिचारि ॥ पूर्व पुरुष यक ममभये देवरात महराज । धरवायो हर तिन भवन सोई धनुगुनि काज ॥ करषत महि हल कनक मय प्रकटी सुता अनूप । तासु स्वयंबर होत पुनि जुरे बहुरि सब भूप ॥ चौपाई ॥ जब प्रकटी सीता सुकुमारी । मैं राखी निजभवन कुमारी ॥ धरयोधनुष जहँ तहँ यककाले । मैं बोलायभाष्यो सिय बाले ॥ पूजन हेत पखार कुमारी । मैं नहाइ आवतो सिधारी ॥ असकहि मज्जनकरि जबआयो । कौतुकदेखि महाभ्रमछायो ॥ धनुउठाइ बायेंकरसीता । धरयो औरथल्ल परमपुनीता ॥ मम पूजनहित भूमिपखारी । यहलखि हृदय शंकभय भारी ॥ रैनसमय जब शयनहिं कीन्हा । शंकर मोहिं सपन असदीन्हा ॥ जो कोउ लेवै धनुषउठाई । साजैगुण खींचैबरिआई ॥ जोटारै कोदंडहमारा । सुतादिहयो तेहि बिनहिंबिचारा ॥ सपनदेखि जागेउँ मुनिराई । मममहिषी तब कहयो बुझाई ॥ सुताबिवाहन योग भईहै । करहुरीति सोइ प्रीतिमईहै ॥ मैंसपनो भाष्यों तेहिपाहीं । कौतुकलख्यो जो नैननमाहीं ॥ दोहा ॥ महिषीकी सम्मत समुझि रच्यों स्वयंबरनाथ । देशदेशके भूपसब जुरेएकहीसाथ ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करि विनती निजकथा सुनाई । रंग अवनिसब मुनिहिंदिखाई ॥

रघुराजछंदसमुच्चयगीतिका ॥ सोहत महीप विदेहसंग कुमार दशरथ राजके । करतारसंग मनो दिवाकर निशाकर छबिछाजके ॥ मिथिलाधिराजकुमार लक्ष्मीनिधि बिराजत संगमें । मनु अमर गण सेनाधिपति करतारसंग उमंगमें ॥ पाछेलसति मुनिमंडली तहँ तेजतरणि अखंडली । देखतसबै नरनारि अनमिष सरस सुठि शोभाभली ॥ तहँ राजमंडलमधि बिमंडित कुँवर कोशल पालके । बारघो मदनमहताब युगमनु बिबिध बीचमशालके ॥ कोउकहत कोशलनाथके नंदन महारणबांकुरे । जगसाखि मुनि मखराखि लियसुकुमार कोशलठाकुरे ॥ मनु मुदित मंदहि मंद गमनत मत्तमातँग जगयती । चहुंओर हेरत नयन फेरत हरत जनु राजनरती ॥ दोउबंधु सुखमा सिंधुलसत निषंग कंधन में कसे । बनमालउर मणिमाल कटिकरबाल ढालनमें गसे ॥ श्रमबिंदु मुख अरबिंद मनु मकरंद बिंदु सोहावने । उड़वृन्द नृपयुग उदितइन्दु सुइन्दिरामन भावने ॥ दोहा ॥ अमल कपोलनपै लसैं कुंडल मंडल लोल । बिमल आरसीमें मनहुं कलकृत हंसकलोल ॥ सवैया ॥ नारि बिलोकहिं सामली सूरति मूरति माधुरीकी मनुभाई । प्रीतिमई रसरीति छई अनुरागकीआभ अनूपानिकाई ॥ श्रीरघुराज मनो जुलफैंकी जँजीरनकी कुलफैं खोलवाई । जानिदृगंचल चंचल चोर अचंचल कै दिये बेरीभराई ॥ दोहा ॥ कहहिं परस्परनारि नरदेखे किते कुमार । पै नहिंदेखे असकतहुं नखशिखते मनहार ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जहँ जहँजाइँ कुँवरबर दोऊ । तहँतहँ चकित चितव सबकोऊ ॥ निजनिजरुचि रामहिंसबदेखा । कोउनजान कछु मर्मविशेखा ॥

रघुराज ॥ गाधिसुवनकहँ जनकलेवाई । गयेजहां धनु दियो धराई ॥ बिश्वामित्रसंग दोउभाई । चले मत्तमातंग लजाई ॥ मुनिकहँ मंजू सादरसाई । जेहिबिधि सुंदर चौकपुराई ॥हरको-

दंड जानि तपधामा । कियोमहामुनि धनुषप्रणामा ॥ मुनिकह अब बिलंब नहिं कीजै । सियआगम अनुशासन दीजै ॥ कह्यो बिदेह नाथ नहिंदेरी । लेहुसकल रचना मुनिहेरी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भलिरचना नृपसन मुनि कहेऊ । राजामुदित महासुख लहेऊ ॥

रघुराज ॥ बिरचित गजरद कनक उतंगा । जहँतहँ लगेरतन बहुरंगा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सबमंचनते मंचइक सुंदरबिशद बिशाल । मुनिसमेत दोउबंधुतहँ बैठारे महिपाल ॥

रघुराज चौपाई ॥ बैठे मुनि अवधेश कुमारे । निज आसन विदेह पगुधारे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रभुहि देखि सबनृप हियहारे । जनुराकेश उदयभयतारे ॥ असप्रतीत सबकेमनमाहीं । राम चापतोरब शकनाहीं ॥ बिनुभंजेउ भवधनुष बिशाला । मेलिहि सीय रामउर माला ॥ असबिचारि गवनहुंघर भाई । जयप्रताप बल तेज गँवाई ॥ बिहँसे अपर भूप सुनिबानी । जे अविवेक अंध अभिमानी ॥ तोरेउधनुष व्याहअवगाहा । बिनुतोरे कोकुँवरि बिवाहा ॥ एक बार कालहु किनहोई । सियहित समरजितब हमसोई ॥ यहसुनि अपरभूप मुसुकाने । धर्मशील हरिभक्त सयाने ॥ सोरठा ॥ सीयबिवाहब राम गर्बदूरिकर नृपनकर । जीतिको सक संग्राम दशरथके रणबांकुरे ॥ चौपाई ॥ ब्रथामरहुजनि गालबजाई । मनमोदक नहिं भूखबुताई ॥ सिखहमार सुनु परम पुनीता । जगदम्बा जानहु जिय सीता ॥ जगतपिता रघुपतिहिं बिचारी । भरिलोचन

छबिलेहु निहारी ॥ सुंदर सुखद सकल गुणरासी । ये दोउबन्धु शम्भुउरबासी ॥ सुधासमुद्र समीप बिहाई । मृगजल निरखि मरहुकतधाई ॥ करहुजाइ जाकहँ सोइ भावा । हमतो आजु जन्मफलपावा ॥ असकहि भले भूपअनुरागे । रूपअनूप बिलोकनलागे ॥ देखहिं सुर नभचढ़े बिमाना । बरषहिं सुमन करहिं कलगाना ॥

संग्रह चौ० ॥ जनक सचिव ढिग लेनिबुलाई । कहेउ सपदि रनिवासहि जाई ॥ धनुपूजन सिय साजिसमाजा । पठवहुजब तब बोलहिंराजा ॥ असकहिकै मंत्री चलिआयउ । मिथिलापतिको सकल सुनायउ ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलपंचमःप्रकरणंसमाप्तम् ॥

श्रीसीतारामचंद्रायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीताराम बिवाह संग्रह ॥

षष्ठप्रकरण ॥

सतानंदमुनिराजकी आज्ञापाय श्रीजानकीजूका रंगभूमिमें धनुषपूजनार्थपधारना और पुरजन परिजनोंका निजनिज भावानुकूल श्रीयुगलमाधुरीका अवलोकन ॥

रघुराज०दोहा ॥ पतिअनुशासन सुनितहां हुलसि सुनैनारानि। चतुरसखिन बोलवाइकै बोली मंजुलबानि ॥ धूरजटीके धनुषको पूजनसाजलेवाय । जाहु जानकीलै अबहिं शुभश्रृंगार बनाय ॥ चौपाई ॥ सुनत सुनैनाकी सखिबानी । सियहिंशिंगारसदन महँ आनी ॥ प्रथम सखी मज्जनकरवाई । सुरभित अंगवरराग लगाई ॥

कृपानिवास० ॥ सखी श्रृंगारत सिय सुकुमारी । कमलादिक चतुरा बहुनारी ॥

श्रीतुलसी०बरवै ॥ केशमुक्त सखि मरकत मणिमयहोत । हाथलेत पुनिमुक्ता करतउदोत ॥

रघुराज० ॥ सारीसुरंग सखी पहिराई । सुभगअंग आभरण सजाई॥अरुण कंजपद सुंदरनीके । फीकमहाउर लागतसीके ॥ मनहुं कमलमहं छप्योपरागा । दलअरुणिमा अरुणरँगलागा ॥

कृपानिवास० ॥ सुघरि महावरकरि धरिआई । भूमि अरुण

लखि पदअरुणाई ॥ हँसति करति निजरुचि शुचिरचना । पद पंकजछबि आवनबचना ॥ करुणारस मकरंदभराये । अलिदृग अलिलों रहत लुभाये ॥

रघुराज० ॥ जेपद कमल भागिबश ध्यावत । उरआवत त्रय तापमिटावत ॥ नखमणिलसत अंगुरिनमाहीं । अंगुलीयसंयुत दरशाहीं ॥ कुमुदबंधु जनु रविजनजानी । बैठेपकरि रूपबहुठानी ॥ कमलबंधु कमलनहित भाये। करिबहुरूप छोड़ावनआये॥

कृपानिवास० ॥ पदजालंकृत पानबनाये । कमलकोश जनु चौकपुराये ॥ नूपुर पायल गुल्फनिधारी । रूपलता जड़ि जनु मणिक्यारी ॥

रघुराज० ॥ कनककड़े झालरि बढ़हीरा । जनुघेरे रविता-रनभीरा ॥ अतिकोमल सुंदरअरुणारे। सीयचरण जगरक्षणहारे ॥

दोहा ॥ सियचरण बरणनकरत कविनहिं पावत पार । विदित वेदमहँ जिनविरद मोसम अघिनअधार ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ कृशकटि किंकिणि सुभग सुहाई । गिरा दाम जनु छबिलपटाई ॥ अतरोटा कटितें झुकिमूला ॥ पटन-बनि नीबीमिखतूला ॥

पण्डितहरिप्रसाददोहा ॥ हमसियतन शोभितकरब मुक्तामाल प्रचार । करिनसक्यो आपुइभयो तबते मुक्ताहार ॥

श्रीतुलसीदासजी०बरवै॥समसुबरण सुखमाकर सुखदनथोर। सीयअंग सखि कोमल कनककठोर ॥ सियमुख शरद कमल जिमि किमि कहिजाइ। निशिमलीन वह निशि दिन यहबिगसाइ ॥ बड़ेनयन कटभृकुटी भालबिशाल । तुलसी मोहतमनहिं मनोहरबाल ॥ चम्पकहरवा अंग मिलि अधिकसुहाइ । जानिपरे सिय हियरे जब कुँभि लाइ ॥ सियतुवअंग रंगमिलि अधिकउदोत । बेलि हारपहिरावों चम्पकहोत ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ दुलरी तिलरी चंपकली कल। भूषण बिबिध बिराज उरस्थल ॥ जनु रससारिभ्भक जालकिलोलैं। अंग माधुरीरंग बिलोलैं ॥ कंठमणी त्रैराग श्वेततर। सूत्ररागपर कविगुरु कुजबर ॥ केयुर कंकण बलय बिराजैं। भुज भूषण बहु सुखमाछाजैं ॥

पंडितहरिप्रसाद०दोहा ॥ अबनग्रसे कबहूं हमहिं राहुमनहिं अभिलाखि। कंगनामिस रबिशशिबसे सियकर सुरतरु साखि ॥

कृपानिवास०सोरठा ॥ हस्तसुपान अमंद कनक जड़े नगजगमगे। कला रहित लघुचंद श्रोणकमोदनि दलबसैं ॥ करज मुद्रिका पुंजराग सितासित हरितमणि। लता कोपबसिमंजु लाल कीर पिक हंस जनु ॥ सुभग सुकर अरबिंद जावक सखीश्रृंगारही। अरुण पराग अमंद सहितकमल शोभित युगल ॥ चौपाई ॥ कुंकुम केसर मृगमदप्यारी। करि कपोल रचना रुचिकारी॥ बिधु बुध जन्म सुधामरमीने। चौक साथिये जनु तियकीने ॥ सुभग नासिका नथनी नवला। नखित तदा ध्रुवधाम सुबिमला ॥ द्वितिय इंदुमधि बिंदु रेखलसि। मर्कत जटि कुलिसासन श्रीबसि ॥ अलकैं कुटिल बदनपरछाई। शशिपूजन जनु नागिनि आई॥श्रवण सुहाग बिभूषण छाये। सस्यासन युगछत्रफिराये॥ बेंदी शीशफूल चूड़ामनि। बेनी मांग सुभग सौरभसनि ॥ सारी श्याम गवरिपर मादनि। पतिको रंग कृतांगनि छादनि ॥ षोड़श तनु श्रृंगार सुहाये। रचि रुचि रोचिक सखिन बनाये ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ जानि सुअवसर सीय तब पठवाजनक बुलाइ। चतुर सखी सुंदरि सकल सादर चलीं लिवाइ ॥ चौपाई ॥ सिय शोभा नहिं जाय बखानी। जगदम्बिका रूप गुणखानी ॥ उपमासकल मोहिं लघुलागी। प्राकृत नारि अंगअनुरागी ॥ सीयबरणि तेहि उपमा देई। कवि कहाय अपयश को लेई ॥ जो पटतरिय ती-

यसम सीया। जग असयुवति कहां कमनीया॥ गिरा मुखर तन अर्द्धभवानी। रति अतिदुखित अतन पति जानी॥ बिषबारुणी बन्धु प्रियजेही। कहिये रमासम किमि बैदेही॥ जो छबिसुधा पयोनिधिहोई। परमरूप मय कच्छप सोई॥ शोभारजुमन्दर शृंगारू। मथैपाणि पंकज निजमारू॥ दोहा॥ इहिबिधि उपजै लक्षि जब सुंदरता सुख मूल। तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीयसमतूल॥ चौपाई॥ चलीं संगलै सखी सयानी। गावत गीत मनोहर बानी॥

कृपानि० ॥ कोइ करबीन भीन सुरगावै। सकल प्रवीन सुरागजमावै॥ संगसखी वय छबि समसारी। निज निज सेवासोंज संभारी॥ कोइ धरिछत्र चवर कर कोई। सूरजमुखी बिजनधरि सोई॥ कोइ तांबूल सलिलकरभारी। कोइ सुगंध पट लिये दुलारी॥ कोइ धरी छरी भरी गुनबोलैं। कोइ तजि तोल अलोल बिलोलैं॥ ललो लिवाय चलीं सबनारी। रूपछकी यौबन मतवारी॥

श्रीतुलसी॥ सोह नवलतन सुंदरिसारी। जगतजननि अतुलित छबिभारी॥ भूषणसकल सुदेशसुहाये। अंग अंग रचि सखिन बनाये॥

कृपानिवास०॥ चाल मरालमत्त गजलाजैं। नूपुर किंकिणि भूषण बाजैं॥ फरकत बसन अंगझलकावैं। कुशबादर जनु शशि दरशावैं॥ चरण माधुरी की अरुणाई। धरा सुरंग परा छबिछाई॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ रंगभूमि जब सिय पगुधारी। देखि रूप मोहे नरनारी॥ हरषि सुरन दुंदुभी बजाई। बर्षि

प्रसून अपसरागाई ॥ पाणि सरोज सोह जयमाला। औचक चितै सकल महिपाला ॥ सीय चकित चित रामहिं चाहा। भये मोहबश सब नरनाहा ॥

रघुराज०कबित्त ॥ उभैपानि अलक उठाय मिथिलेशलली हेरे चारि ओर कहां सांवरो कुमारहैं। जहां जहां भयो दृष्टिपात मैथिलीको मंजु तहां तहां बैठे जो जो भूमिभरतारहैं ॥ सोसो सब जोहि जोहि मोहि मोहि मंचनपै गिरिगे न नेकु रह्यो तनुको सँभारहैं। रघुराज राम पद कंज लागे नैनजाय कीन्हे मनोराजन समाज खेलवारहैं ॥ कोई भूमिपाल रहे दंतनसे दाबिढाल कोई करबालनको छोड़े तेहिकालहैं। कोई मोहवारिधिमें बूड़ि उतरान लाग कोई गिरे मंचनते बपुष बिहालहैं ॥ दुर्मद भुवाल के हालको कहांलो कहौं छूटी ढाल टूटी माल बंदभये गालहैं। मानो मोहनीको रूप धारयोहै बिदेह बाल रघुराज मन मुसक्यात रघुलालहैं ॥ दास देखे स्वामिनीसी दुष्टकाल यामिनीसी सखी बर भामिनीसी देवजगदंबासी। मातु दुहितासी दासी कलपलतासी दैत्य भूप कालिकासी मुनि आनँदकदंबासी ॥ सज्जन कृपासी योगीजन अजपासी सुर नारि कमलासी शठ मूरति त्यों संबासी। रहे जसआसी तिन्हैं तौन बिधिभासी लखे मातासी लषन रघुराज अवलंबासी ॥घनाक्षरी॥ शिरते चरनलगि प्यारीकी सवांरीभली सोहति नवलसारी जनककुमारी तन। परम प्रकासी आभ आनंदकीरासी फूली कलपलतासी मध्य फुल्लित कुसंभबन ॥ भनै रघुराज मनो सावनके संध्याकाल चारु चपलासी लसैं अरुन सघन घन। रजोगुण मंडलके भीतर बिराजै मनो सतोगुण मंडल अखंडल रसिक धन ॥

श्रीतुलसीदासजी०चौपाई ॥ मुनिसमीप बैठेदोउभाई। लगे ललकि लोचन निधिपाई ॥

कृपानिवास० ॥ लखे राम लोचन ललचाये। नाह नैन सिय

रूपलुभाये ॥ चपके चख चितवनि फिर आवैं । चाह चित्तकी चतुर जनावैं ॥ दोहा ॥ सकुच प्रीति लोचन भरे रहत रह्यो नहिं जात । अशन देखि पिंजरपरे खंजन ज्यों अकुलात ॥ वेतालछंद ॥ अकुलात खंजनलों चपल दृग रसिक राघवरूपके । सिय समुझि शंकित ईश्वरी यदि भक्तिबशकरभूपके ॥ बहुबढ़त अंगतरंग सरिवत घटत पल मर्यादतें । जलवत सचल चित कंपिथल तजि उपटि हृदयअगाधतें ॥ ऐश्वर्यता माधुर्यता रस उभयबसि सिय उरलरैं । कछु शीघ्रता कछु धीरता मिल स्वसुख तत्सुखखरबरैं ॥ रघुबीर धीर बिचार प्यारी पीर अंतरसों कहैं । रिपु धनुष अटक्यो भामिनी मन आपके रसबशरहैं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ गुरुजनलाजसमाज बड़ि देखि सीय सकुचानि।लगीबिलोकनसखिनतनरघुबीराहिंउरआनि॥

रघुराज०दोहा ॥ गजगामिनी सुभामिनी मधुरअली जेहि नाम। सो लेवाइगवनी सियहिं शंभु शरासनठाम॥ छंदचौबोला ॥ चापसमीप गई बैदेही सखिन समाज समेतू । राजन लषन ब्याज निरखेउ तहँ उभय भानुकुलकेतू ॥ लागी पूजाकरन धनुषकी मन रघुपति पदलागा। धूपदीप नैवेद्य आदि सब दीन्हों सहित बिभागा ॥ जेहि दिशि बैठे भानुकुल नायक तेहि दिशि ह्वै सियठाढ़ी । करसों पूजति शंभु शरासन हिये रामरति बाढ़ी ॥ करसों फेरति धनुष आरती मनसों प्रभुहि उतारै । मानहुं सब की लगी दीठिगुनि आरति मंत्रनि झारै ॥ देत प्रदक्षिण धनुको सीता जब प्रभु सनमुख आवै । करन बात आलिन के ब्याजै तहां कछुक रुकिजावै ॥ यहि बिधि चारि प्रदक्षिण दैके कियो प्रणाम पुनीता । मनहींमन बिनवति महेशको समुझि पिताप्रणसीता ॥ जयमहेश करुणागुण सागर यह कोदंड तुम्हारा । सुनत कौनकी बिनय दीन गुणि कियो न आसु उधारा ॥ आसुतोष गौरीपति शंकर जनहित औघडदानी । रामहि परसत

करहु तूलसम धनुष धूरजटि ज्ञानी ॥ बारबार बिनऊं महि शिर धरि शंकर दीनदयाला । हरहु धनुष गुरुता तुरताकरि लग्यो काम यहिकाला ॥ अंतरहितह्वै कह्यो आय शिव सीता कानन बानी । नहिं अभिलाष असत्य रावरी लेहु सत्य यह जानी ॥ कछु आनँद उरमानि जानकी पूजिधनुष तेहिकाला । चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखि वृन्द बिशाला ॥ मधुरअली सहजाको करगहि बातकरनके व्याजै । पुनिपुनि चितवति चारु चखनसों लषन राम रघुराजै ॥

विश्वनाथ०पद ॥ झांकति सीय झरोखे लागी । गुरुहिप्रणैदेवन प्रणउब मिसि सिय मुख तकि मतिरागी ॥ डरपत मन मम डीठि न लागै छबि तकि बिधिहि निहोरैं । चख बिश्वनाथ उतहि अरुझे तृण ढूंढत लहि धनुतोरैं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ रामरूप अरु सियछबि देखी । नर नारिन परिहरी निमेखी ॥ शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं । बिधिसन विनय करहिं मनमाहीं ॥ हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई । मति हमारि असदेहु सुहाई ॥ बिनु बिचार प्रणतजि नरनाहू । सीय रामकर करै बिवाहू ॥ जग भल कहहिं भाव सब काहू । हठकीन्हे अन्तर उरदाहू ॥ यह लालसा मगन सब लोगू । बरसांवरो जानकी योगू ॥ तब बन्दीजन जनक बुलाये । बिरदावली कहत चलिआये ॥ कह नृप जाइ कहहु प्रणमोरा । चले भाट हिय हर्ष न थोरा ॥ दोहा ॥ बोले बन्दी बचनबर सुनहु सकल महिपाल । प्रण बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिशाल ॥

इति रामप्रताप चित्रकार बिरचिते श्रीसीताराम बिवाह संग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगल षष्टमोप्रकरण समाप्तः ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीताराम बिवाह संग्रह ॥

सप्तमोप्रकरण ॥

रंगभूमि सभामध्य श्रीजनक महाराजकी आज्ञासे बंदीजनोंका प्रणकोसुनाना और बिबिध राजा उपहास योग्य होना ॥

रघुराज०दोहा ॥ मौनहोहु नरनाह सब करि कोलाहल बंद । महाराज मिथिलेशको यहप्रण सुनहु स्वछंद॥ कबित्तरूपघनाक्षरी॥ विदित पुरारि को पिनाक नवखंडन में परमप्रचंड त्यों अखंड वोज पारावार । बड़े बड़े बीर बरिबंड भुजदंडनसों खंड महि मंड यशजान चाहे पैरिपार ॥ आजलों न देखे तीर केते बली बूड़े बीर गरुता गँभीर नीर पीरपाय मानेहार । बाहुबल बिरचि जहाज रघुराज आज पावैपार सोई सिरताज भूमि भरतार ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ सकल राजकुल सुभट सुनीजै । आये आज काज सोइ कीजै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नृप भुजबल बिधु शिवधनुराहू । गरुअकठोर बिदित सबकाहू ॥ रावण बाण महाभट भारे । देखि शरासन गवहिं सिधारे ॥ सोइ पुरारि कोदंड कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ॥ त्रिभुवन जय समेत बैदेही । बिनहिं बिचार बरै हठि तेही ॥

रघुराजसिंह० सोरठा ॥ यहि बिधि बाहु उठाय सुमति बिमति बंदी उभै। प्रण मिथिलेश सुनाय सब राजनको जातभे ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिशय मनमाषे ॥ परिकिरि बांधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन शिरनाई ॥

रघुराज० छंदतोटक ॥ कोउ मोछनपै नृपताउदये। कोउ भूपशरासन सौंहगये ॥ कोउ बाहुसकेलत धायपरे। कोउ मंदहि मंद मिजाजभरे ॥ कोउ आपुस में झगरो करते। यकएक उठावहु क्यों डरते ॥ मिलिकै सब चापउठावहुना। यकबार समीपहि आवहुना ॥ तिनमें कोउ मल्ल महीपरह्यो। द्रुतजाय मंजूषहि पाणिगह्यो ॥ करिजोर महा अतिशोरकियो। मनु खोलिशरासन ऐंचिलियो ॥ गिरिगो मुहुंकेभर भूमितहां। चलिबैठ पराय लजायमहां ॥ कोउ देखि महीप मँजूषडरयो। नहिं जायसक्यो लहिलाज फिरयो ॥ कोउ सर्पस्वरूप लख्यो धनुको। अति कंपित अंग कियो तनुको ॥ अस बोलिउठयो नृप चाप नहीं। मिथिलाधिपको यह सांपसही ॥ केहुके दृग सिंहस्वरूप लग्यो। धनुदेखतहीं निजभौनभग्यो ॥ शिवभक्तरहे महिनायकजे। भव रूपलखे भवभायकजे ॥ नहिं चापसमीप महीपगयो। शिरनाय समाजहि त्यागिदियो ॥ हरिकेजन जेनृपज्ञानभरे। महिमें शिर दै परणामकरे ॥

संग्रहक० चौपाई ॥ जिन भूपनको धनु दरशानो। सो तोड़नको कीन्हपयानो ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ तमकिताकि तकि शिवधनु धरहीं। उठइ न कोटिभांति बलकरहीं ॥

कृपानिवास० ॥ चापमेरु जनु भूपपपीला। टारनि कठिन करैं शठलीला। पचे सकलशठ लचेनतिलभर। जिमि खल बादन भल मारगटर ॥ सीतापदरज पराशि शरासन। भयो दास चहि

रामकरासन ॥ यथाश्वास भीषम दृढथाये । काल विघन कोइ एकनलाये ॥ समयजानि परधाम सिधाये । तथा धनुष प्रभुकर मनलाये ॥ खलबलजीत प्रीति रघुबरसों । कहतनाथ परसोमृदु करसों ॥ विश्वविजय रघुबंशप्रतीते । मयाकरी भक्ताश्रमबीते ॥ नाहिं पिनाक रुद्रकी हेती । खलगण नाक सुहरी अगेती ॥

श्रीतुलसीदास०चौ० ॥ जिनके कछुबिचार मनमाहीं । चाप समीप महीपनजाहीं ॥

कृपानिवास० ॥ मातु पिता सियराम बिचारैं ॥ दरशलाभ निज जन्मसुधारैं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ तमकिधरहिं धनुमूढ़नृप उठइनचल-हिंलजाइ । मनहुं पाइ भटबाहुबल अधिकअधिक गरु-आइ ॥ चौपाई ॥ भूप सहसदश एकहिबारा । लगेउठाव-न टरइनटारा ॥ डगै न शंभुशरासन कैसे । कामी बचन सतीमन जैसे ॥ सबनृपभये योगउपहासा । जैसे बिनु विराग संन्यासा ॥ कीरतिविजय बीरताभारी । चलेचा-पकर बरबसहारी ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ गयेमान श्रीहानतनु रहेप्राण दुखहेत । ज-नुप्रमदापति नाशअनु षोड़शशोक सहेत ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ श्रीहतभये हारिहियराजा । बैठे निज निज जाइसमाजा ॥ नृपनबिलोकि जनक अकुलाने । बोलेबचन रोषजनुसाने ॥

कृपानिवास० ॥ मया पत्रिका सकल पठाई । चापचढ़ावनि कथालिखाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ द्वीपद्वीपके भूपति नाना । आये सुनि हम जो प्रणठाना ॥ देव दनुजधरि मनुजशरीरा । बिपु-लबीर आये रणधीरा ॥

कृपानिवास० ॥ आये कौनभरोसे भोरे । शशाशिकार इवान जनुदौरे ॥ देखि सिंह जनु भूंकिपराये। तुम निलज्ज क्यों हमहिं लजाये ॥ क्षत्री कुलकी सभा लजावो । बूड़िमरो किन बदन दिखावो ॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ कुँवरिमनोहरि बिजय बड़ि कीरति अतिकमनीय। पावनहार बिरंचिजनु रच्यो न धनुदमनीय॥ चौपाई ॥ कहहु काहि यहलाभ न भावा। काहुनशंकरचाप चढ़ावा ॥ रहो चढ़ाउब तोरब भाई । तिलभरि भूमि न काहु छुड़ाई ॥ अब जनि कोउमाषै भटमानी ॥ बीरबिहीन महीमैंजानी ॥ तजहुआश निजनिज गृहजाहू। लिखान बिधि वैदेहि बिवाहू ॥ सुकृतजाय जो प्रण परिहरऊं। कुँवरि कुँवारिरहो काकरऊं॥ जोजनत्योंबिनु भटभुविभाई । तौप्रणकरि होत्योन हँसाई ॥ जनकबचनसुनि सबनरनारी। देखि जानकी भये दुखारी॥ माषे लषण कुटिलभइँ भौंहैं। रदपुटफरकत नयन रिसौंहैं॥ दोहा॥ कहिनसकत रघुबीरडर लगेबचन जनुबाण। नाइरामपद कमलशिर बोलेगिरा प्रमाण॥ चौपाई ॥रघुबंशिनमहँ जहँ कोउ होई। तेहिसमाज असकहइनकोई ॥

कृपानिवास०॥ हंस बंस अवतंस सुभटतर । अधुना अत्र बिराजैं रघुबर ॥ श्रीपति सेव्य शंभु बिधि बंदन । प्रबलप्रताप कुताप निकंदन॥ बिदित सुरासुर राम रसिक बस। कही धरा बिनशूर नृपति कस॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कही जनक जस अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुल मणि जानी॥ सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहौं सुभाव न कछु अभिमानू ॥ जो राउर अ-

नुशासन पाऊं । कंदुकइव ब्रह्मांड उठाऊं ॥ काचे घट इमि डारों फोरी । सकों मेरु मूलक इव तोरी ॥ तव प्रताप महिमा भगवाना । का बापुरो पिनाक पुराना ॥ नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुक करों बिलोकिय सोऊ ॥ कमल नाल इमि चापचढ़ावों । शतयोजन प्रमाण लैधावों ॥ दोहा ॥ तोरों छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ । जो न करों प्रभुपद शपथ पुनि न धरों धनु हाथ ॥ चौपाई ॥ लषण सकोप बचन जब बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥ सकललोक सब भूप सकाने । सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने ॥ गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥ सैनहिं रघुपति लषण निवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥

रघुराज०दोहा ॥ प्रभु नयनन की सैन लखि लषण बन्दि पद कञ्ज । भयेमौन छबि भौन तहँ करि महीप मद गञ्ज॥ कबित्त ॥ अरुण नयन जब लषण बखानै बैन सिय हिय प्राची सुख सूर प्रगटानेहैं । लोकपाल माने मोद सुकबि बखाने यश मिथिला नगरबासी बीरबर जानेहैं ॥ रघुराज मंद मंद मृदु मुसक्याने मन बिश्वामित्र पानि पीठि फेरे सुखसानेहैं । मिथिलाधिराज सकुचाने त्यों डराने भूप बहरी ससाने जनु खगसे सकाने हैं ॥ दोहा ॥ लषण बचन की धाकसों परयो समाज सनांक । जिमि सिंधुर गण बाकमें परै सिंहकी ढांक ॥ चौपाई ॥ बिश्वामित्रमहामुनि ज्ञानी । बोलत भे औसर जियजानी ॥ सुनहु बिदेह भूप मतिमाना । जो अब तुम कछु बचन बखाना ॥ सो अनुचित रघुकुल मणि आगे । इनके बैन बाणसम लागे ॥ लषणकही सोऊ लरिकाई । बदन बदत कहुं बीर बड़ाई ॥ जो अनुशासन

होइ तुम्हारें । धनु समीप अब राम सिधारें ॥ करहिं यतन टोरनको येऊ । और न जाहिं भूप तहँ केऊ॥ अथवा पुनि जेहि होइ घमंडा । तेई करैं जोर बरिबंडा ॥ कोशलपाल कुवँर सुकुमारे । सबके पाछे चहत सिधारे ॥ अबै लेहिं करि भूप अघाऊ। रहै न पुनि पाछे पछिताऊ ॥ मख कौतुक देखन चित चाये । मेरे संग कुवँर दोउ आये ॥ धनु दरसन परसन अभिलाखा। येऊ अपने चितकरि राखा ॥ जो राउर अब होय रजाई । धनुष समीप जाइँ रघुराई ॥ दोहा ॥ सुनिकै बिश्वामित्र के बचन बिदेह बिचारि। बोलेउ पद बंदनकरत नैन बहावत बारि ॥ चौपाई ॥ का कहिये मुनि नहिं कहिजाई । कोमल कुवँर धनुष कठिनाई ॥ प्रण परिहरे न होत प्रबोधा । हारि रहे जगती के योधा ॥ जो ममभाग बिवश रघुराजू । तोरहिं शंभु शरासन आजू ॥ तौ पुनि इनहिं छोड़ि ममबाला। काके गल मेलिहि जयमाला ॥ तुम जानहु हमरी गति सिगरी । जानहु सोऊ बात जो बिगरी ॥ नाथ तुम्हारि अनुग्रहताई । करिहि अवशि रघुराज सहाई ॥ ताते कहहु कृपाकरि नाथा । चाप समीप जाइँ रघुनाथा ॥ राम धनुष भंजैं मुनिनाहा । तौ देखी सिय राम बिवाहा ॥ मिटै मोर परिताप कराला । जिमि रबि उदय नाश तम माला ॥ असकहि मुनिसों पुनि मिथिलेशू । दीन्हो बंदिन बिदित निदेशू ॥ द्वीपद्वीप के सकल महीपा । अब नाहिं गवनहिं धनुप समीपा ॥ अब अवधेश कुवँर तहँ जैहैं। निज भुजबल सबको दरशै हैं ॥ दोहा ॥ प्रभु शासनसुनि तैसही बंदी किये बिधान । परी सनंक समाज कोउ कहत न कानौं कान ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ विश्वामित्र समय शुभजानी । बोले अतिसनेह मृदुबानी ॥ उठहुराम भञ्जहु भवचापू । मेटहुतात जनक परितापू ॥ सुनि गुरुबचन चरण शिर नावा । हर्ष विषाद न कछुउरआवा ॥ ठाढ़भये उठि स-

हजसुभाये । ठवनियुवा मृगराज लजाये ॥ दोहा ॥ उदि-तउदयगिरि मंचपर रघुवर बालपतंग । बिकसे सन्त सरोजसब हरषेलोचन भृंग ॥ चौपाई ॥ नृपनकेरि आशा निशिनाशी। बचननखत अवलीनप्रकाशी ॥ मानीमहि-प कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूकलुकाने ॥ भयेवि-शोक कोकमुनिदेवा। बर्षहिंसुमन जनावहिं सेवा ॥ गुरु पदबन्दि सहित अनुरागा । राम मुनिनसन आयसुमां-गा ॥ सहजहि चले सकल जगस्वामी। मत्त मञ्जु कुं-जरबर गामी ॥

रघुराज०कबित्त ॥ उतरि चले हैं मंदमंद उच्च मंचहीते मंदर ते मानो कढ़िआयो मृगराजहै । मानो महामत्त मंद चलत म-तंग मग मूर्तिमान मंड्यो मानो बीर रसराजहै ॥ भूमिभरता-रनको तारन सो तेजहरि आवत उदैगिरिते मानो दिनराजहै । काज करिबेको मन लाज भरी नैननमें राजन समाज मध्य राजै रघुराजहै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चलतराम सब पुर नरनारी । पुलकि पूरितन भयेसुखारी ॥ बन्दिपितर सुर सुकृतसँभारे। जो कछु पुण्यप्रभाव हमारे ॥ तौ शिवधनुष मृणालकिनाईं। तोरहिंराम गणेशगुसाईं ॥

कृपानि० ॥ एवंप्रेम बिवश नरनारी । पुलकित तनु मन दशा बिसारी ॥ अंतस गुण इंद्री समुदाई । सिमिट सकल दृग द्वारे आईं ॥ राम सुअंग माधुरी पीवैं । राम रसिक रामाश्रय जीवैं ॥ निरखि सुनैना कुवँर मृदुलता । द्रवति प्रेमतनु जनु नवनीता ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ रामहिं प्रेमसमेतलखि सखिन समीप बुलाइ।सीतामातु सनेहबश बचनकहै बिलखाइ॥चौपाई॥ सखि सब कौतुक देखनिहारे। जोउकहावत हितूहमारे॥

कोउन बुझाइकहइ नृपपाहीं । येबालक असहठभलना हीं॥रावणबाणछुवा नहिंचापा॥हारेसकल भूपकरिदापा॥

कृपानिवा० ॥ जगत प्रलयकरता करकोहै । रसिक खिलोने कर क्यों सोहै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सो धनु राजकुँवरकरदेहीं । बालमरालकि मंदरलेहीं ॥

कृपानिवास० ॥ कौशल्या मृदुलाड़ लड़ाये । मुखचुंबन करि गोद खिलाये ॥ अंक प्रयंक नेक नहिं टारैं। भूमि धरतपग सकुच दुलारैं ॥ दोहा ॥ पलक पूतरी लोचन करि पाले जिहिं लाल । उर पयोधि राखे सदा बालाबालमराल ॥ रानी पाले बालकनि कहत धरोधनु हाथ । दयादुराईनृपसभा कुलिशहृदय ममनाथ ॥ कहसिकहा दशरथबधू मिथिला बसहिं कठोर । कठिन चापसों भेरिये येमृदुबाल किशोर ॥ मुनिबनबासी पविहृदय करत कठिन उपदेश । ज्ञानधरैं पहिंचान बिन प्राणप्रेम नहिंलेश ॥ भोरेलाल भुरायकैं लियेलाय निज संग । बालक दुख सुख गनत नहिं कौतुक राचे रंग ॥ पाती प्रेरि बुलाय नृप नीके लाड़ लड़ाय । कुवँरि न दीन्हीं धनुष दै सुख हरि दुख दरशाय ॥

रघुराज० सवैया ॥ तीरथ जाय सुपात्रको पाय न दानको देइ भरो अभिमानै । संगर शत्रुको पायन मारत आरत पायकरै नहिं त्रानै । श्रीरघुराज सुताबरयोग जे पायन व्याहत बेद बिधानै । तू समुझाय कहै पियको जन चारि कहावत औनिअजानै॥ दोहा ॥ तैंहीं जाय बुझाय कहु कंतहि बचन हमार । ना तो मैं हीं लाज तजि कैहौं चलि दरबार ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भूपसयानप सकल सिरानी । सखि विधिगति कछु जायनजानी ॥

रघुराज० ॥ युवावैस मृदुगात अनोखे । कोशलपाल बाल चितचोखे । महाभीम भूपति बलभारे । राज़ कुवँर सम कौन

निहारे ॥ बैठेशीश नवाय नरेशा । सके उठाय न धनुष महेशा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बोली चतुरसखी मृदुबानी । तेजवन्त लघुगणियन रानी ॥ कहँकुंभज कहँसिंधुअपारा । शोषेउसुयश सकलसंसारा॥ रविमण्डल देखत लघुलागा। उदयतासु त्रिभुवन तमभागा ॥ दोहा॥ मन्त्र परम लघु जासुबश बिधि हरिहर सुरसर्ब । महा मत्तगजराज कहँ बशकर अंकुशखर्व ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ लघुपवि दीरघ शैल बिदारे । सिंहसुवन गज मस्तक फारे ॥ कोमल बारि तुषार शीतबरु । गिरिबर गरैं सुजरैं बिपिनतरु ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ काम कुसुमधनु शायकलीन्हे। सकल भुवन अपनेबश कीन्हे ।।

कृपानिवास० ॥ जन्म मनोज हृदय श्रुतिगाये । बिश्व बिजय कर बंब बजाये ॥ मरैं जन्म जगशस्त्र सुमारे । दृगमारे सबजगतें न्यारे ॥ और घावकर यतन भरावैं । नैन चोटको यतन नपावैं ॥

रघुराज० ॥ साधारण बालक नहिंरानी । जानि परत पूरण गुण खानी ॥ चितवत बनत न तेज अपारा । मानहुंसत्य बिष्णु अवतारा ॥ है अयोनिजा तोरि कुमारी । तासु योग बर यही निहारी ॥ यहजानहु बिधिकै करतूती । बैठे भूप गवाँय सपूती ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सखी बचनसुनि भइपरतीती । मिटा बिषाद बढ़ी अतिप्रीती ॥

रघुराज० सोरठा ॥ सुनत सखिन की बानि रानी उर धीरज धरयो । मनहिं महेश भवानि लगी मनावन बिबिध बिधि ॥ चाप समीपहि जात जनकनन्दनी प्रभुहिं लखि । अतिशय जिय अकुलात प्रेम बिवश भूली सुरति ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ तब रामहिं बिलोकि वैदेही।सभयहृद-

य बिनवत जेहितेही ॥ मनहीं मन मनाय अकुलानी । होहुप्रसन्न महेशभवानी ॥

कृपानिवास० ॥ भो धनु देखि कुँवर मृदु शोभा । होउ कमल कदली की गोभा ॥

रघुराज० सवैया ॥ हे करुणाकर शम्भु सुजान करी तुम्हरी अबलों सेवकाई । आय परयो अबकाम सोई परिपूरण कीजिये मोरि सहाई ॥ श्रीरघुराज के पंकज पाणि तिहारे शरासनकी गुरुताई । मूलहुते पुनिफूलहुते तिमितूलहुते न लहैअधिकाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ करहुसुफल आपनि सेवकाई । करिहि-तहरहु चापगरुआई ॥ गणनायक बरदायकदेवा । आ-जुलगे कीन्ही तवसेवा ॥ बारबार बिनतीसुनि मोरी । करहु चापगरुता अतिथोरी ॥ दोहा ॥ देखिदेखि रघुबीर तन सुरमनाव धरिधीर । भरेविलोचन प्रेमजल पुलका-वली शरीर ॥ चौपाई ॥ नीके निरखि नयनभरि शोभा । पितुप्रण सुमिरि बहुरि मनक्षोभा ॥

कृपानिवास० ॥ बिवश प्रेम प्यारी मतिवारी । गदगद कण्ठ सुगिरा उचारी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ अहहतात दारुण हठठानी । समुझत नहिं कछुलाभ नहानी ॥

कृपानिवास० ॥ कमठ पृष्ठवत चाप कठोरा । कोमलकर अर-बिन्द किशोरा ॥ मे मन पीर धीर नहिं धरही । कुँवर कलेश सह्यो नहिं परही ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सचिवसभय सिखदेइनकोई । बुध स-माजबड़ि अनुचितहोई ॥ कहँ धनुकुलिशहु चाहिकठो-रा । कहँ श्यामल मृदुगात किशोरा ॥

कृपानिवास० ॥ कुलिश चोट यो नग नहिं चगियो । पुष्प मार सों सो कहुं डगियो ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बिधि केहिभांति धरौं उरधीरा । सिरससुमन किमि बेधिहि हीरा ॥ सकल सभाकी मतिभइ भोरी ॥ अब मोहिं शम्भुचाप गति तोरी ॥ निजजड़ता लोगनपरडारी । होहु हरुअ रघुपतिहिनिहारी ॥ अति परिताप सीयमनमाहीं । लवनिमेष युगसम चलिजाहीं॥

रघुराज०सोरठा ॥ यहि बिधि करत बिचार धरतधीर नहिंजानकी । लखि अवधेश कुमार कोटि कल्प बीतत पलक ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥प्रभुहिंचितै पुनि चितहिमहि राजतलोचनलोल।खेलतमनसिज मीनयुगजनु बिधुमंडलडोल॥

रघुराज०सवैया ॥ लोयन लोल ललोहे ललीके मनोज मनौ मनमें मुदछाकी । डोल बनाय मयंक को मंडल डोली उभय सफरी छबिसाकी ॥ श्रीरघुराज सुश्याम कुमारै बिदेहसुता मनकी गति थाकी । झोकिकै प्रीतिसों झीने झरोखनि झारिकै झाकी झकाझक झांकी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ गिराअलिनि मुखपंकज रोकी । प्रगट नलाज निशाअवलोकी ॥ लोचनजलरहु लोचनकोना॥ जैसे परम कृपणकरसोना ॥ सकुची व्याकुलता बड़िजानी । धरिधीरज प्रतीति उरआनी ॥ तनमन मोरबचन प्रणसांचा । रघुपति पदसरोज मनरांचा ॥ तौ भगवान सकलउरबासी । करिहहिं मोहिं रघुपतिकी दासी ॥

कृपानिवास० ॥ धूरपरौं इहि लाज निगोड़ी । काज बिगारा आज बिछोड़ी ॥ धरैं दोषते धरो जरोशठ । बरौं श्याम नहिंटरो करौं हठ ॥ मृदुल भावजिय लखि कठिनाई । बदति बिवशभइ मन बिकलाई ॥ सखी सँभारि सकल समुझावैं । प्रभु प्रभुता

कहि धीर बढ़ावैं ॥ लगनि अनल प्रबल उर बाढ़ीं । बैठति उठति रही चकि ठाढ़ीं ॥ नैन सलिल तनु पुलकि प्रकंपाति । गत धीरज गुण धुरउरसंपति ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जेहिके जेहिपर सत्यसनेहू । सो तेहि मिलहि नकछु संदेहू ॥

कृपानिवास० ॥ प्रीति सचाई श्रुति सुरगाई । बहुअंत्राय उलंघि मिलाई ॥

श्रीतुलसी० ॥ प्रभु तन चितै प्रेम प्रण ठाना । कृपानिधान राम सब जाना ॥

सवैया ॥ मो मन में निश्चय सजनी यह तातहूंते प्रण मेरो महाहै । सुंदर प्यारो सुजान शिरोमणि मोमनमें रमि श्याम रहाहै ॥ रीति पातिमुख राखिचुकी मुख भाखचुकी अपनो दुलहाहै । चाप निगोडो अबै जरिजाउ चढ़ो तो कहा न चढ़ो तो कहा है ॥

कृपानिवास० ॥कुत्रस्वातिकः सीपजलाश्रयः । बरषिबदन मुक्ता फल साश्रयः ॥ उड़ी पवन बल गुड़ी गगनपर । मिलैआय पुनि जो गुण हितकर ॥ कहत नैन फरकै भुज बामा । सगुनसमुझि सिय मन बिश्रामा ॥ लगी बिलोकन लाल लजोही । दृष्टिपगी करि पलक निचोही ॥ लाल चले गजचाल झूमते । प्यारीछबि मदमत्त घूमते ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सियहिबिलोकि तकेउ धनुकैसे । चितव गरुड़ लघुब्यालहि जैसे ॥

इति रामप्रताप चित्रकार बिरचिते श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगल सप्तमोप्रकरण समाप्तः ॥

श्रीजानकीवल्लभायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

अष्टमोपकरण ॥

बिश्वामित्र मुनिराजकी आज्ञापायकै श्रीरामचन्द्र जीका धनुष भंग करना ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ लषण लखेउ रघुबंशमणि ताकेउ हर कोदंड । पुलकिगात बोलेबचन चरणचापिब्रह्मंड ॥ चौ० ॥ दिशिकुंजरहु कमठ अहिकोला । धरहुधरणि धरि धीर नडोला ॥ रामचहहिं शंकरधनु तोरा । होहुसजगसुनि आयसु मोरा ॥ चापसमीप राम जबआये । नरनारिन सुरसुकृतमनाये ॥ सबकरसंशय अरु अज्ञानू । मन्द महीपनकर अभिमानू ॥ भृगुपतिकेरि गर्बगरुआई । सुरमुनिवरनकेरि कदराई ॥ सियकरशोच जनकपछितावा ॥ रानिनकर दारुण दुखदावा ॥ शम्भुचाप बड़बोहित पाई । चढ़ेजाइ सब संगबनाई ॥ रामबाहुबलसिन्धुअपारा । चहतपार नहिं कोउकनहारा ॥ दोहा ॥ रामबिलोके लोग सब चित्रलिखे से देखि । चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिशेखि ॥ चौपाई ॥ देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कल्पसम तेही ॥ तृषित बारि बिनु ज्यों

तनुत्यागा। मुयेकरैका सुधातड़ागा॥ काबर्षा जब कृषी सुखाने। समयचूक पुनि कापछिताने॥ अस जियजानि जानकी देखी। प्रभुपुलके लखि प्रीतिविशेखी॥

रघुराज० दोहा॥ सकल महीपनके लखत चाप समीपहिजाय। अचल नीलमणि शृंगसम ठाढ़े सहज सुभाय॥ चौपाई॥ चाप समेत महीप अपारे। रामहिं ठाढ़े सहज निहारे॥ भरे हरष बिस्मय सबकोई। निश्चयपरति न कोउकहँ जोई॥ कौशिक अरु सीता अरु देवा। जानत धनुषभंग कर भेवा॥ जनकरानि अरु भूप बिदेहू। क्षण आनँद पुनि क्षण सन्देहू॥ पुरजन सकल नारिनर जेते। लागे देव मनावन तेते॥ टोरहिं शम्भुचाप रघुराई। सबिधि करब हम सकल पुजाई॥ अस कहि लखत मौनजन कैसे। स्वाति बुन्द घन चातक जैसे॥ पानि ठोंकि मंजूषा काहीं। रघुनायक चितये गुरु पाहीं॥ दोहा॥ सहज स्वभाव दुरावनहिं तेज कोटि दिनराउ। कहे बचन रघुराउ मृदु सुनहु विनय मुनि राउ॥ चौपाई॥ हे गुरु असमानस कछुमेरो। करो यतन धनु ऐंचन केरो॥ धनुष उठाय चढ़ावन काहीं। चढ़ति चोप नेसुक चित माहीं॥ पूँछिलेहु मिथिलेश नरेशै। यतन करन कहँ देहु निदेशै॥ मुनि मिथिलेशै कह मुसक्याई। तुव निदेश चाहत रघुराई॥ नृपकह भली कही रघुनाथा। खैंचन चाप लगावहिं हाथा॥ अस कहि ठाढ़ भयउ मिथिलेशा। सुमिरण लागेउ रमा रमेशा॥ बोले बिश्वामित्र पुकारी। गहहु राम धनु पटलउघारी॥ इतना सुनत सबै पुरबासी। ठाढ़े भये लखन के आसी॥ ठाढ़ भई तहँ सकल समाजा। काह करन चाहत रघुराजा॥ नवकिशोर बय तन घनश्यामा। अभिरामहुंते अति अभिरामा॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ गुरुहिप्रणाम मनहिंमन कीन्हा। अतिलाघव उठाइधनुलीन्हा॥ दमकेउदामिनि जिमि घन

लयऊ । पुनि धनु नभमण्डल समभयऊ ॥ लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े । काहुनलखा देखसब ठाढ़े ॥ तेहिक्षण मध्य राम धनु तोरा । भरेउभुवन धुनि घोर कठोरा ॥ कबित्त ॥ सीयकेस्वयंबर समाज जहां राजनिको राजन के राजा महाराजा जानैं नामको । पवन पुरंदर कृशानु भानु धनदसे गुणके निधान रूपधाम शोभा कामको ॥ बाण बलवान यातुधानपसरीखे शूर जिन्हकेगुमान सदा शालिम संग्रामको । तहां दशरत्थके समरत्थ नाथतुलसीके चपरि चढ़ायोचाप चंद्रमा ललामको ॥ मयन महनपुर दहन गहन जानि आनिकै सबैको सार धनुष गढ़ायोहै । जनकसदसि जेते भलेभले भूमिपाल किये बलहीन बलआपनो बढ़ायोहै ॥ कुलिशकठोर कूर्मपीठि ते कठिनअति हठिना पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है । तुलसी सो रामके सरोज परसत टूट्यौ मानोबारेते परारिही पढ़ायोहै ॥

रघुराज० दोहा ॥ टूटतहरको दण्डके भयो भयावन शोर । मनहुं सहस पविपात यकबार भयो तेहि ठोर ॥ कवित्त ॥ सिंहावलोकन ॥ कारा मेहरंग व्योम भानुके तुरंग भाजे भाजे भये भीतिके अरूझे जाय तारामें । तारा टूटि टूटिपरे अवनि अपारा पारा बिंद से बिराजैं राजैं परिगे खभारा में ॥ भारा-भरे लाजहीं में सबै मानि हारा हारा गये हीरनके काच के अकारामें । कारागारा द्वारेके केवाँरा खुले जानेंदेव देवपति माने रघुराज रक्षकारामें ॥ चौंकिउठ्यो चारि मुख चितवत चारोंओर चंद्रचूड़ चेते चित चषन उचायकै । गगनते गिरेंगीरवानजे बिमाननमें छोनिको छुअत अस उचे अकुलायकै ॥ रंगभूमि भूपति समाज नरनारि जेते एकैबार गिरिगे प्रचंड

शोरपायकै। रघुराज लषण बिदेह मुनि ठाढ़ेरहे राम जब तोरयो शंभु चापको चढ़ायकै॥ हाल्यो कैलाश हाल्यो महामेरु मंदरहूं हाल्यो बिंध्य पर्वत हिमाचल हूं चाल्योहै। हाल्यो इन्द्रलोक तैसे हाल्योहै बिरंचिलोक हाल्यो है ब्रह्मांड शब्द शेषशीश हाल्यो है॥ रघुराज कोशलकिशोर शंभु चापटोरयो हहलि हहलि उठे महल पताल्योहै। हाल्यो भुवलोक त्योंहीं हाल्यो ध्रुवलोक त्योंहिं हाल्यो बिश्व एकहरि हाथ नहिं हाल्योहै॥ कैधौं उनचासौं पौन फोरि कढ़ेहैं मेरु फाटिगो सुवर्णशैलताहीको तड़ाकाहै। बावन बहुरि कैधौं फोरयो फेरि ब्रह्मअंड मारि पगदंड सोईरवको भड़ाकाहै॥ ग्रहनको सूर शशि तारागण भारापाय टूट्यो शिशुमार कैधौं गगन पड़ाकाहै। कैधौं रघुराज रणधीर अवधेश ढोटो भंज्यो धूरजटि धनु धुनि को धड़ाकाहै॥

बिश्वनाथ० आकासेछन्द॥ शोर उद्धत महि खूब लटपटतसब सिंधुसंघटत जल बेलथल छूटिगो। शेषफण फटत तल बासि हारटत बाराहबल घटत युग डाढ़सो टूटिगो॥ दन्त चट चटत महि शैलयुत छटत दिग दंतगण हटत भल कुंभथल कूटिगो। दैत्य लटिलुटत अभिमान ते छुटत को दंड के टुटत ब्रह्माण्ड सो फूटिगो॥

श्रीतुलसी० छप्पै॥ डिगतउर्व्वि अति गुर्व्वि सर्व्व पर्व्वत समुद्रसर। ब्याल बधिर तेहि काल बिकल दिगपाल चराचर॥ दिगगयंद लरखरत परत दशकंधरमुखभर। सुरबिमान हिम भानु भानु संघटित परस्पर॥ चौंकेबिरंचि शंकरसहित कोल कमठ अहिकलमल्यो। ब्रह्मांड खंड किधौं चंडध्वनि जबहिं राम शिवधनु दल्यो॥

कुण्डलिया॥ शिवशिव वृषभ पुकारई धनुषश ब्दसुनि घोर। दिग्गज दिग्पालनभयो हृदयकंप अतिजोर॥ हृदयकंप अतिजोर कंपकैलाश ईशथल। शिव

शिर सुरसरिधार उछलि आकाश गयोजल ॥ गयोसु-
जल आकाशथल उमागणेश बिचारई । कहांभयो कैसो
भयो शिवशिव वृषभपुकारई ॥

देवस्वामीपदहोरी ॥ धनु टूट ध्वनि घोर त्रिभुवनमें छायो । धनु
जड़रचित बिश्वकरमाको मसाकिरहा कसतोर ताको ध्वनि
बज्रहुसे सौगुण इहां भ्रमत जिय मारतसहेतुन पायो ॥ सुयश
अपार रामलघु तनमें बंदरहा जनु चोर पाइ सुअवसर छूटा
गरजा निरखत बंदीछोर निजतन फैलायो जबलगि शब्द
तबै लगि जीवत नाहिंतो मृतक छिछोर शब्द नाम सुयशै को
ऐसो मुनिबरबचन निचोर अबतौ रस आयो । राम सुयशधनु
शब्द व्याजसे व्यापिरहा सबओर जनकदेव हरषित मनहींमन
हरषित दोऊ किशोर दशशीश लजायो ॥

श्रीतुलसी०हरिगोतिकाछंद ॥ भरिभुवन घोर कठोररव रवि
बाजिताजि मारगचले । चिक्करहिं दिग्गज डोलमहिअ-
हि कोलकूरम कलमले ॥ सुरअसुर मुनिकर कानदीन्हे
सकल बिकल बिचारहीं । कोदंडखंडेउ राम तुलसी ज-
यतिबचन उचारहीं ॥ सोरठा ॥ शङ्करचाप जहाज सागर
रघुबर बाहुबल । बूड़े सकलसमाज चढ़े जे प्रथमहिं
मोहबश ॥ चौपाई ॥ प्रभु दोउ चापखंड महि डारे । देखि
लोगसब भयेसुखारे ॥ कौशिकरूप पयोनिधि पावन ।
प्रेमबारि अवगाहसुहावन ॥ रामरूप राकेश निहारी ।
बढ़तबीच पुलकावलि भारी ॥ बाजे नभ गहगहे नि-
शाना । देवबधू नाचहिं करिगाना ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ रंगभूमि रघुबीरलखि बहुअनंग छबिछाय ।
बिधि शंकर सुर सिद्ध सब करहिं प्रशंसा आय ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ ब्रह्मादिक सुरसिद्ध मुनीशा । प्रभुहि

प्रशंसाहिं देहिं अशीशा॥ बरषहिंसुमन रंग बहुमाला। गावहिं किन्नर गीतरसाला॥ रही भुवनभरि जय जय बानी। धनुषभंगधुनि जातनजानी॥ मुदित कहहिंजहँ तहँ नरनारी। भंजेउराम शम्भुधनुभारी॥ दोहा॥ बन्दी मागध सूतगण विरदबदहिं मतिधीर। करहिं निछावरि लोगसब हयगय धन मणि चीर॥ चौपाई॥ झांझ मृदंग शंख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई॥ बाजहिं बहु बाजने सुहाये। जहँतहँ युवतिन मंगलगाये॥ सखिनसह्रित हर्षित अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी॥ जनकलहेउ सुख शोचबिहाई। पैरतथके थाह जनुपाई॥ पदरागटोड़ी॥ जनक मुदितमन टूटत पिनाक के। बाजेहैं बधावने सुहावने मंगलगानभयो सुख एक रस रानीराजा रांकके॥ दुंदुभीबजाइ गाइ हरषि बरषि फूल सुरगणनाचे नाचे नायकहूं नाकके। तुलसी महीशदेखि दिन रजनीश जैसे सूनेपरे शून्यसे मानोमिटाये आंकके॥ चौपाई॥ श्रीहतभये भूप धनुटूटे। जैसे दिवस दीपछबि छूटे॥

रघुनाथदास॥ तब बिदेह रामहिं सहप्यारा। सिंहासनऊपर बैठारा॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ सिय हियसुख बरणिय केहिभांती। जनु चातकी पायजल स्वाती॥ रामहिं लषण बिलोकत कैसे। शशिहि चकोरकिशोरक जैसे॥

इति रामप्रतापचित्रकारविरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानन्दत्रैलोक्यमंगलअष्टमप्रकरणंसमाप्तम्॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

——०——

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

नवमप्रकरण ॥

धनुषभंग पश्चात् श्रीजानकी जीका जयमाला श्रीरामचन्द्र जी को पहिराना परम उत्साह से ॥

रघुराजसिंहजीकृत ॥ दोहा ॥ सतानन्द आनन्द भरि गये तुरत रनिवासु। कह्यो जानकीजननि सों अबकीजे अस आसु ॥ सजि-शृंगार गावत मधुर संग सहस्रन बाल। सियहि पठावहु रामके मेलै गलजयमाल ॥ सवैया ॥ सुनिकै मुनिके मुखते नि-कसी सरबस्व मनो सिय लाभ लह्यो। उत्साह औ लाज स-मान भरी सुखसों मुखसों नहिं जात कह्यो ॥ रघुराज सोलाज उठै नहिं देति बिलोकनको जियरो उमह्यो। करि लीन्ही जो मूंदरी कंकणसो कर कंकणसो अंगुरीन रह्यो ॥ दोहा ॥ उठी सीय आनंद भरि पहिरी पीत पोशाक। डगरी सँग सिगरी सखी नूपुर बजत झनाक ॥

संग्रह०चोपाई ॥ राम दरश हित तिय हुलसानी। सजिसमाज कहि मुनिसों बानी ॥

श्रीतुलसी०चौ० सतानंद तब आयसु दीना। सीता गवन राम पहँ कीना ॥ दोहा ॥ संग सखी सुंदरि चतुर गावहिं मंगलचार। गवनी बालमरालगति सुखमा अंगअपार ॥

रघुराज०चौपाई ॥ चली जानकीलै जयमाला । पहिरावनको दशरथ लाला ॥ सोहहिं सुंदरि संग हजारन । सुरदारन सम किये शृंगारन ॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥ सखिन मध्य सिय सोहति कैसी । छबि गणमध्य महाछबि जैसी ॥ करसरोज जयमाल सुहाई। बिश्वबिजय शोभा जनुछाई । तनसकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखिपरै न काहू ॥

रघुराज०चौपाई॥महाभीर सब राजसमाजा । खैर भैर मचिरह्यो दराजा॥कुमति कुपित संमति करिलीन्हे।सियहि न त्यागब बिनु युध कीन्हे ॥ अस सुधिपाय सुनैना रानी । सायुध पठई सखिन सयानी ॥ बल्लम कुंत कटार कृपानी । कसे नारि कम्मर मरदानी ॥ मुख्य मुख्य सजनी मधिमाहीं । तिनके मधि सियलसाति तहांहीं ॥ सायुध सखि मंडल चहुंओरा । गावहिं मंगल मंजुल शोरा ॥ मनहुं समर संभव गुनिदेवीं । आयभई सिय स्वामिनि सेवीं ॥ डरपे कुमाति कुपाति अबिबेकी । टरिगे टारिटेक जो टेकी॥ बाहेर जाय यूथ सबबांधे ॥ रणहित आयुध कांधन कांधे ॥ दोहा॥ बिश्वामित्र बिचारि चित गये बिदेह समीप । कह्यो अभागीभूप सब चाहत होन प्रतीप ॥ बोले जनक सरोष तब कौशिक करहु न शंक । तारागणका करिसकत पूरण उदितमयंक ॥ चौपाई ॥ चतुरंगिणी सैन सजवाई । दिये द्वारमहँ ठाढ़ कराई ॥ इतै सखीन समाज पुनीता । आई रंगभूमि महँ सीता ॥ मानहुं संग शक्ति समुदाई । कढ़ि कमला क्षीरधितें आई ॥ आवाति सिय लखिउठी समाजा । किय प्रणाम भक्तन सब राजा ॥ पुर नर नारि जानकिहिदेखे । धन्य धन्य निज भागहि लेखे ॥ जब प्रथमहिं पूजनाहित आई । रजरंजित ग्रषिम शशिभाई ॥ पहिरावन जयमाल सिधाई । तब शारद मयंक छबि छाई ॥ सीय नयन दोउ बंधु देखाने । जिन लखि मदन शृंगार लजाने ॥ उठतीं

छबि अभंग तरंगा । क्षण क्षण नवनव द्योति प्रसंगा ॥ झुके सकल देखन नर नारी। केहिबिधि सिय जयमाला डारी ॥ मंद मंद सिय आवतिकैसे । मिलन प्रीति मनुप्रेमहिजैसे ॥

कविचिंतामणि कवित्त ॥ हंसनके छौना स्वच्छ सोहत बिछौना बीच होत गति मोतिनकी ज्योति जोन्ह यामिनी । सत्य कैसी ताग सीतापूरण सुहाग भरी चली जयमाल लै मराल मंद गा· मिनी ॥ जोई उरवसी सोई मूरति प्रत्यक्षलसी चिंतामणि देखि हँसी शंकरकी स्वामिनी । मानो शरद चंद चंद मध्यअर बिंद अरबिंद मध्य बिद्रुमबिदारि कढ़ी दामिनी ॥

श्रीतुलसी०चोपाई ॥ जाय समीप रामछबि देखी । रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी ॥

कृपानिवास०॥ सो सुख समय कहत नहिं आवै । जानहिं र सिक स्वाद जोइ पावै ॥ लाज धरैं निज कारज करहीं । चातुर ता लखि काहुन परहीं ॥ सदन चौर जनु बस्तु चुरावैं । बसै साहवत जानि न पावैं ॥ कोइ मिसलै पटफेरति प्यारी। हेरति पिय छबि रसमतिवारी ॥

रघुराज०दोहा ॥ राम रूप नखशिख निरखि अनमिख नयन लगाय । रही ठमकि मन अचलकरिदेह दशा बिसराय ॥कवित्त॥ सोहिरही नखतेशिखलौं मृदु केशरि रंगकी सुंदरिसारी । भाल बिशाल में लालसों बिंदुकरैं पग में घुंघुरू झनकारी ॥ रामै बिलोकिरही रघुराज बिदेह लली तनहूं मनवारी । कैकुज अंक मयंक मनोलसै सोनजुहीके निकुंजमझारी ॥ शोच सकोच बि· मोचभयो सुख दोहुंनके सरसान समाने । दोहुंनकी जुरी दीठि निशंक मयंक दिनेश मनो दरशाने ॥ श्रीरघुराज भरे दृगलाज हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने । दोऊ बिचित्र छके छबि में लिखे चित्रसे जानकी राम सुहाने ॥ दोऊ निमिषन नेवर जानिकै नैंननतेकरि दीन्ही बिदाई । प्रीतिकेपास में दोऊ फँसे पद

कंजदोऊके गहे थिरताई ॥ लाजको काज अकाज भयो रघुराज उछाहकी भै अधिकाई । रामको भूलिगयो धनुभंग सिया पहिरावन माल भुलाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चतुर सखी लखि कहाबुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥ सुनत युगलकर मालउठाई । प्रेमबिवश पहिराइ न जाई ॥ सोहत जनु युग जलज सनाला । शशिहि सभीत देत जयमाला ॥ गावहिंछबि अवलोकि सहेली । सिय जयमाल राम उर मेली ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ रसिकनिके मन हर्ष निज भार भुजा लचकाय । लालचाह अंकुर नई माल बाल पहिराय ॥ श्यामगरे सित दाम लसि शशि कुंडलि घनभास । सुधासरस मंगल मनो भरवरषनकी आस ॥

देवस्वामी०पद०होरी ॥ सिया रामउर मेली हर्षित जयमाला ॥ दूबसुमन महुवनसे गांथी लालपाट रागनसे नाथी यौबनमद यामें है साथी कीरति संग सहेली माला जनुबाला ॥ तन सो दूब सुमन सो मन है महुआको फल आतमधनहै तन मन धन इनको अर्पणहै देखत छबि अलबेली मनभा मतवाला । यागरहीसे लगी रहौंगी सुख दुखको सम जानि सहौंगी नहिं दूसर अवलंब गहौंगी कबहुं न रहौं अकेली जस रस बाला । यह जयमाल रूप सोहायो महादेव तंत्रनमें गायो मालनको बहु भेद बतायो रहे आप रसभेली हर सबसे आला ॥

रघुराज०सोरठा ॥ दई प्रभुहि पहिराय बिबिध रंग जयमाल गल । सो छबि कही न जाय मरकत गिरि मनु धनु उयो ॥

विश्वनाथ०पद ॥ लोयनभरि लखिले छबिसींवा । जै श्रीसहित बैठे बीरासन जयमाला कलग्रीवा ॥ आनँद घनमें मनहुं लसाति अति छबि बकुलनकी पांती । बिश्वनाथ तकि यह मूरति मुद रसपी मुनि मतिमाती ॥

श्रीतुलसी०सोरठा ॥ रघुबर उर जयमाल देखि देव बर्षहिं सुमन । सकुचे सकल भुत्राल जनु बिलोकि रवि कुमुद गण ॥ चौपाई ॥ पुर अरु व्योम बाजने बाजे । खल भे मलिन साधु सबगाजे ॥ सुर किन्नर नर नाग मुनीशा । जयजय सब कहि देहिं अशीशा ॥ नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी । बारबार कुसुमावलि छूटी ॥ पदरागकेदारो ॥ लेहुरी लोचननिको लाहु । कुंवर सुंदर सांवरो सखि सुमुखि सादर चाहु ॥ खंडि हर कोदंड ठाढ़े जानु लंबित बाहु । रुचिर उर जयमाल राजा ति देत सुखसब काहु ॥ चितै चित हित सहित नखशिख अंग अंग निवाहु । सुकृत निज सियराम रूप बिरंचि मतिहि सराहु ॥ मुदित मन बरबदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनहुं दूरि कलंककरि शशिसमर सूध्यो राहु ॥ नयन सुखमा अयन हरत सरोज सुंदरताहु । बसत तुलसीदास उरपुर जानकी को नाहु ॥

पं०हरिहरप्रसाददोहा ॥ चारिहिलों परमाग है पंचमताकेपार । गुनि निज सम सीतहिं बरे रघुनंदन सुकुमार ॥

देवस्वामी०पद ॥ आई पांच कुमारी राम बरन । लज्जा कीरति प्रीति दीनता जनकनंदिनी ठानिपरन ॥ रूपवती सिय रूपवन्त के पहिराई जयमाल गरन । बिना रूपकी चारिउ कन्या कोपि चली ते चारि ढरन ॥ मानी राजन लाज बरेसि हठि कीरति चली दिगंतरन । प्रीति जनकपुर रही दीनता परशुरामको चहत धरन ॥ राम सिया संयोग सनातन नयो नहीं संयोगकरन । देवबधूटी नाचहिं गावहिं नौबति लागी झमकि भरन ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जहँ तहँ बिप्र बेद ध्वनि करहीं ।

बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं ॥ महि पाताल नाक यश ब्यापा। रामबरी सिय भञ्जेउचापा ॥

रघुराज०छंद ॥ सब बात दीन बनाय बिधि अस कहत शीश नवावहीं। पुलकित शरीर अपीरतन निरखहिंखरे सियरामहीं॥ तहँ जनकपुर नरनारि प्रमुदित सुमिरि गणपति भारती। चहुं ओरते सियरामकी लागे उतारन आरती ॥ कपूर कंचन थार धरि दधि दूब तंदुल डारिकै। सियरामकी आरति उतारहिं दीठि दोष निवारिकै ॥ कोटिन मदन मद कदन देखहिं राम बदन सोहावनो। सुख सदन मानस फँदन दाड़िम रदन इन्दु लजावनो ॥ दुख दुसह दारुण दरण सब सुख भरण सियमुख हेरहीं। रति रंभ गौरिगिरा गुमानहिं बारिदिय अस टेरहीं ॥ चहुंओर चमकहिं आरती सियराम बीच बिराजहीं। रवि शशि निकट लखि तारगण मनु भ्रमत जोरि समाजहीं ॥ ह्वैरह्यो तहँ अति खैर भैर अनंद सकल समाजमें। यक छोड़ि हरि बिमुखी नृपति जे बिघनकारक काजमें ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करहिं आरती पुरनरनारी। देहिंनिछावरि बित्त बिसारी ॥ सोहति सीय रामकी जोरी। छबि शृंगार मनहुं इकठोरी ॥ सखी कहहिं प्रभु पद गहु सीता। करति न चरण परस अति भीता ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ परसोरी पद पंकरुह सरसोसकल सुहाग। हरिसों प्यारी भामिनी दरसो अंतरि लाग ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पदपानि। मनबिहँसे रघुबंशमणि प्रीति अलौकिक जानि ॥

कृपानिवास० दोहा ॥ पांव न परसति करकछू उरडर मुरि मुसक्यान। नारिउड़ावन नाहिंरी पाय उड़त पाषान ॥ ताराति मुद्री पान निज प्राणपते पदप्रीत। रहौ निशंक मयंकमुखि उपल

कलंकी भीत । उरकी जान सुजानहँसि प्राण युगल सुखसान । सखी समय पहिचानि सुख ठानि महारस गान ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ तब सिय देखि भूपअभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माषे ॥ उठिउठि पहिरिसनाह अभागे । जहँ तहँ गाल बजावनलागे ॥ लेहु छँड़ाय सीय कहँ कोऊ । धरिबांधहु नृपबालक दोऊ ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ धनुष तोरि कहुँ सुभटकहावैं । मुनिजादू बल भंजि सिहावैं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ तोरे धनुष चांड नहिं सरई । जीवत हमहिं कुँवरि को बरई ॥ जोबिदेह कछुकरै सहाई । जीतहुसमरसहित दोउभाई ॥ साधुभूप बोले सुनिबानी। राज समाजहिं लाज लजानी ॥ यश प्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥ सोइ शूरता कि अब कहुँपाई । असबुधि तौबिधि मुँह मसिलाई ॥ दोहा ॥ देखहु रामहिं नयनभरि तजि ईर्षा मद मोहु । लषण रोष पावक प्रबल जानि शलभ जनिहोहु ॥ चौ० ॥ बैनतेय बल जिमि चह कागू । जिमि शश चहहिं नाग अरि भागू ॥ जिमि चह कुशल अकारण कोही। सुख सम्पदा चहहिं शिव द्रोही ॥ लोभी लोलुप कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ॥ हरि पद बिमुख परमगति चाहा । तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥

कृपानिवास० चौ० ॥ उठो करो मनबांछाजैसी । हमहूं देखैंकरणी कैसी ॥ मिले सलिल मृगयूथ बिसारी । वन खोजत क्यों फिरैं शिकारी ॥

रघुराज०चौ० ॥ शशक न करत सिंहसमताई । गज न होतखर

देह बढ़ाई ॥ चहे समर नृप वृथा अभागा। पन्नगारि सम होत न कागा ॥ कोउ कह लोभिनलाज न होई। धर्म छोड़ि लहकीरति कोई ॥ यहि बिधि साधु परस्पर भाषत। हरिपद पंकज महँ चित राखत ॥ सायुधसखी खड़ी बढ़ि आगे। कहहिं भूप काकरत अभागे। प्रथमहनब हमहीं हथियारन। समर कौन करिसकै निवारन ॥ नैनन सैननसों रघुराई। दई जानिकिहिंजान रजाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ कोलाहल सुनि सीय सकानी। सखी लिवाइगईं जहँरानी ॥

रघुराज०दोहा॥ जयमाला पहिराइकै गई सीय रनिवास। राम लषण आवत भये बिश्वामित्रहि पास ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ राम सुभाय चले गुरुपाहीं। सिय सनेह बरणत मनमाहीं ॥

रघुराज०चौ०॥ परे चरण महँ दोनोंभाई। मुनि लीन्हेंनिजअंक लगाई ॥ पीठि पोंछि शिरसूंघि सुखारी। बोले बचन महा तप-धारी ॥ जीवहु युग युग सुंदर जोरी। यहि बिधि पुजवहु आशा मोरी ॥ कियो बंधु दोउ मोहिंसनाथा। देहुँ कहा कछु है नहिं हाथा ॥ प्रभु शिरनाय कह्यो करजोरी। नाथ कृपा कीरति भइ मोरी ॥ यह सबभयो प्रसाद तुम्हारे। कृपा छोड़ि बल नाहिं हमारे ॥

इतिरामप्रतापचित्रकाराविरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रहपरमानंदत्रयलोक्यमंगलनवमोप्रकरणसमाप्तः ९ ॥

श्रीसीतारामचन्द्रायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

दशमोपकरण ॥

धनुष भंग धुनिसुनिकर परशुरामजीका रंगभूमिमें आना ॥

कृपानिवासजी०सोरठा ॥ सिया मातु पछिताय पुरजन मुनि तिय शोचबश । गुरु हरि संत सहाय हरो बिघनबहु मान्यकर ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ रानिन सहित शोचवश सीया । अब धौं बिधिहि कहा करनीया ॥ भूप बचन सुनि इत उत तकहीं । लषण राम डर बोलि न सकहीं ॥ दोहा ॥ अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपनसकोप । मनहुं मत्त गजगण निरखि सिंह किशोरहिं चोप ॥ चौपाई ॥ खरभर देखि बिकल नर नारी । सब मिलिदेहिं महीपन गारी ॥ तेहि अवसर सुनि शिवधनुभंगा । आये भृगुकुल कमल पतंगा ॥ देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥ गौर शरीर भूति भलि भ्राजा । भाल बिशाल त्रिपुण्ड्र बिराजा ॥ शीश जटा शशि बदन सुहावा । रिस बश कछुक अरुण ह्वै आवा ॥ भृकुटी कुटिल नयन रिसिराते । सहजहिं चितवत मनहुं रिसाते ॥ वृषभ कन्ध उर बाहु बिशाला । चारु जनेउ

माल मृगछाला ॥ कटि मुनि वसन तूण दुइबांधे। धनु शर कर कुठार कल कांधे ॥ दोहा ॥ सन्तवेष करणी कठिन बरणि न जाय स्वरूप। धरि मुनि तनु जनु बीररस आये जहँ सब भूप ॥ चौपाई ॥ देखत भृगुपति वेष कराला। उठेसकल भयबिकल भुआला ॥ पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रणामा ॥ जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी। सो जाने जनु आयु खुटानी ॥ जनक बहोरि आय शिरनावा। सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥ आशिष दीन्ह सखी हरषानी। निज समाज लैगईं सयानी ॥ बिश्वामित्र मिले पुनिआई। पद सरोज मेले दोउभाई ॥ रामलषण दशरथके ढोटा। दीन्ह अशीष जानि भल जोटा ॥ रामहिं चितय रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन ॥ दोहा ॥ बहुरि बिलोकि बिदेहसन कहहु कहा अतिभीर। पूछत जान अजान जिमि ब्यापेउ कोप शरीर ॥ चौपाई ॥ समाचार कहि जनक सुनाये। जेहि कारण महीप सबआये॥ सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चाप खंड महि डारे ॥ अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष केइँ तोरा ॥ बेगि दिखाउ मूढ़ नतु आजू। उलटौं महि जहँलगि तवराजू ॥ अति डर उतरदेत नृपनाहीं॥ कुटिल भूप हरषे मनमाहीं ॥ सुर मुनि नाग नगर नर नारी। शोचहिं सकल त्रास उरभारी ॥ मन पछिताति सीय महतारी। बिधि सवाँरि सब बातबिगारी ॥ भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता। अर्द्ध निमेष कल्प समबीता ॥

दोहा ॥ सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर । हृदय न हर्ष बिषाद कछु बोले श्रीरघुबीर ॥ चौपाई ॥ नाथ शंभु धनु भंजनहारा । होइहि कोउ यक दास तुम्हारा ॥ आयसु कहा कहिय किन मोही । सुनि रिसाय बोले मुनि कोही ॥ सेवक सो जो करै सेवकाई । अरिकरणी करि करिय लराई ॥ सुनहु राम जेइ शिव धनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥ सो विलगाइ विहाइ समाजा । नतु मारे जैहैं सब राजा ॥ सुनि मुनि बचन लषण मुसुकाने । बोले परशुधरहि अपमाने ॥ बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं । कबहुं न असरिस कीन्ह गुसाईं ॥ इहि धनुपर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू ॥ दोहा ॥ रे नृपबालक काल बश बोलत तोहिं न सँभार । धनुहींसम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥ चौपाई ॥ लषण कहा हँसि हमरे जाना । सुनहुदेव सब धनुष समाना ॥ का क्षति लाभजीर्ण धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ॥ छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू । मुनि बिनु काज करिय कतरोषू ॥ बोले चितय परशुकी ओरा । रे शठ सुनेसि स्वभाव न मोरा ॥ बालक बोलि बधों नहिं तोहीं । केवल मुनि जड़ जानेसि मोहीं ॥ बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिश्व बिदित क्षत्रीकुल द्रोही ॥ भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हें । बिपुल बार महि देवन दीन्हें ॥ सहसबाहु भुज छेदन हारा । परशु बिलोकु महीप कुमारा ॥ दोहा ॥ मातु पितहि जनि शोचबश करसि महीप किशोर । गर्भनके अर्भकदलन परशुमोर

अतिघोर ॥ चौपाई ॥ विहँसि लषणबोले मृदुबानी । अ-
हो मुनीश महाभटमानी ॥ पुनि पुनि मोहिं दिखाव
कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥ इहां कुम्हड़
बतिया कोउ नाहीं । जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखिकुठार शरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभि-
माना ॥ भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी । जो कछु
कहहु सहों रिस रोकी ॥ सुर महिसुर हरिजन अरु
गाई । हमरे कुल इनपर न शुराई ॥ बधे पाप अप-
कीरति हारे । मारतहूं पापरिय तुम्हारे ॥ कोटि
कुलिश सम वचन तुम्हारा । वृथाधरहु धनु बाण
कुठारा ॥ दोहा ॥ जो बिलोकि अनुचित कहेउँ सुनहु
महामुनि धीर । सुनि सरोष भृगुबंशमणि बोले गिरा
गँभीर ॥ चौपाई ॥ कौशिक क्षमहु मन्द यह बालक ।
कुटिल काल बश निजकुल घालक ॥ भानुबंश राकेश
कलंकू । निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥ काल कवर
होइहि क्षणमाहीं । कहोंपुकारि खोरि मोहिंनाहीं ॥ तुम
हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रताप बलरोषहमारा ॥
लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा । तुमहिं अछत को
बरणै पारा ॥ अपने मुख तुम आपनि करणी । बार
अनेक भांति बहु बरणी ॥ नाहिं सन्तोष तो पुनि कछु
कहहू । जनि रिसरोकि दुसहदुखसहहू ॥ बीर वृत्ति
तुमधीर अक्षोभा । गारीदेत न पावहु शोभा ॥ दोहा ॥
शूर समर करणी कराहिं कहि न जनावहिं आपु । विद्य-
मान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रलापु ॥ चौपाई ॥

तुमतौ कालहांकि जनु लावा । बार बार मोहिं लागि बुलावा ॥ सुनत लषणके बचन कठोरा । परशु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥ अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू । कटुबादी बालक बध योगू ॥ बाल बिलोकि बहुत मैं बांचा । अब यह मरणहारभा सांचा ॥ कौशिक कहा क्षमिय अपराधू । बाल दोष गुण गनहिं न साधू ॥ कर कुठार मैं अकरण कोही । आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥ उतरदेत छांडों बिनुमारे। केवल कौशिक शीलतुम्हारे ॥ नतु यहिकाटि कुठारकठोरे । गुरुहि उऋणहोतेउँ श्रम थोरे ॥ दोहा ॥ गाधिसुवन कहहृदय हँसि मुनिहिं हरि-अरिन सूझ। अजगवखंडेउ ऊख जिमि अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ चौपाई ॥ कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा । को नहिं जान विदित संसारा ॥ मातुहिं पितहिं उऋणभये नीके। गुरुऋण रहा शोच बड़ जीके ॥ सो जनु हमरे माथे काढ़ा । दिन चलिगयउ ब्याज बहुबाढ़ा ॥ अब आनिय ब्यवहरिया बोली । तुरत देव मैं थैली खोली ॥ सुनि कटुबचन कुठार सुधारा ॥ हाहा कहि सब लोग पुकारा ॥

रघुराज०सोरठा ॥ अब बिलंब केहिकाम करहु जो करतबहोइ कछु । परशु उठत यहिठाम रही न भुज भुजमूलते ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भृगुबर परशु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचो नृपद्रोही ॥ मिले न कबहुँ सुभटरणगाढ़े। द्विजदेवता घरहिंके बाढ़े ॥ अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सैनहिं लषण निवारे ॥ दोहा ॥ लषण

उतर आहुति सारिस भृगुबर कोप कृशानु । बढ़त देखि जलसम बचन बोले रघुकुल भानु ॥ चौपाई ॥ नाथ करहु बालकपर छोहू । सूध दूध मुख करिय न कोहू ॥ जोवै प्रभु प्रभाव कछु जाना । तो कि बराबरि करत अयाना ॥ जो लरिका कछु अनुचित करहीं । गुरुपितु मातु मोद मन भरहीं ॥ करिय कृपा शिशु सेवकजानी । तुमसम शील धीर मुनि ज्ञानी ॥ रामबचन सुनि कछुकजुड़ाने । कहि कछु लषण बहुरिमुसुकाने ॥ हँसत देखि नखशिख रिस ब्यापी । राम तोर भ्राता बड़पापी ॥ गौर शरीर श्याम मनमाहीं । कालकूट मुखपय मुखनाहीं ॥ सहज टेढ़अनुहरै न तोहीं । नीच मीच सम लखै न मोहीं ॥ दोहा ॥ लषणकहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोध पापकर मूल । जेहि बश जन अनुचित करहिं चरहिं बिश्व प्रतिकूल ॥ चौपाई ॥ मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोपकरिय अब दाया ॥ टूटचाप नहिं जुरहि रिसाने। बैठिय होइहि पायँपिराने ॥ जो अति प्रिय तो करिय उपाई । जोरिय कोउ बड़ गुणी बुलाई ॥ बोलत लषणहिं जनक डराहीं । मष्टकरहु अनुचित भलनाहीं ॥ थरथर कांपहिं पुर नरनारी। छोट कुमार खोट अतिभारी ॥ भृगुपति सुनि सुनि निर्भयबानी । रिसि तनुजरै होइ बलहानी ॥ बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौं बिचारि बन्धु लघु तोरा ॥ मन मलीन तन सुंदर कैसे । बिषरसभरा कनकघट जैसे ॥ दोहा ॥ सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि नयन तरेरे राम ।

गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बाणी बाम ॥ चौपाई ॥ अति बिनीत मृदु शीतल बाणी । बोले राम जोरि युग पाणी ॥ सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालकवचन करिय नहिं काना ॥ बररे बालक एक स्वभाऊ । इन्हहिं न बिदुष बिदूषहिं काऊ ॥ तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥ कृपा कोप बध बन्धु गुसाईं । मोपर करिय दासकी नाईं ॥ कहिय बेगि जेहि बिधि रिसिजाई । मुनि नायक सो करिय उपाई ॥ कह मुनि राम जायरिसि कैसे । अजहुँ बन्धु तव चितव अनैसे ॥ इहिके कण्ठकुठार न दीन्हा । तो मैं कहा कोपकरि कीन्हा ॥ दोहा ॥ गर्भ श्रवहिं अवनिपरवनि सुनिकुठार गतिघोर । परशु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥ चौपाई ॥ वहै न हाथ दहै रिसिछाती । भा कुठार कुंठित नृपघाती ॥ भयउ बाम बिधि फिरेउ स्वभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥ आजु दया दुख दुसह सहावा । सुनि सौमित्रि बिहँसि शिरनावा ॥ बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरतजनुफूला ॥ जौंपै कृपाजरै मुनिगाता । क्रोधभये तनुराखु बिधाता ॥ देखु जनक हठि बालक येहू । कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू ॥ बेगि करहु किन आंखिन ओटा । देखत छोट खोट नृपढोटा ॥ बिहँसे लषण कहा मुनि पाहीं । मूंदिय आंख कतहुँ कोउ नाहीं ॥ दोहा ॥ परशुराम तब रामप्रति बोले बचन सक्रोध । शम्भु शरासन तोरिशठ करसि हमार प्रबोध ॥ चौपाई ॥ बन्धु कहै कटु सम्मत

तोरे । तू छल बिनय करासि करजोरे ॥ करु परितोष मोर संग्रामा । नाहिंत छांडु कहाउब रामा ॥ छल तजि करहु समर शिव द्रोही । बन्धु सहित नतु मारों तोही ॥ भृगुपति बकहिं कुठार उठाये । मन मुसुकाहिं राम शिरनाये ॥ गुनहु लषण कर हमपर रोषू । कतहुँ सुधाइहुते बड़दोषू ॥ टेढ़जानि शंका सब काहू । बक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू ॥ राम कहेउ रिसि तजिय मुनीशा । कर कुठार आगे यह शीशा ॥ जेहि रिसिजाय करिय सो स्वामी । मोहिं जानि आपन अनुगामी ॥ दोहा ॥ प्रभु सेवकहि समर कस तजहु बिप्रबर रोष । भेष बिलोकि कहेसि कछु बालकहूँ नहिं दोष ॥ चौपाई ॥ देखि कुठार बाण धनुधारी । भैलरिकाहिं रिसि बीर बिचारी ॥ नाम जान पैतुमहिं न चीन्हा । बंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा ॥ जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं । पदरज शिर शिशु धरत गोसाईं ॥ क्षमहुचूक अनजानत केरी । चहिय बिप्रउर कृपाघनेरी ॥ हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा । कहहु तो कहां चरण कहँ माथा ॥ राम मात्र लघुनाम हमारा । परशुसहित बड़नाम तुम्हारा ॥ देव एकगुण धनुष हमारे । नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ॥ सब प्रकार हम तुमसन हारे । क्षमहु बिप्र अपराध हमारे ॥ दोहा ॥ बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम । बोले भृगुपति सरुष होइ तुहूं बंधुसम बाम ॥ चौपाई ॥ निपटहि द्विज करि जानहि मोहीं । मैं जसबिप्र सुनावों तोहीं ॥ चाप श्रुवा सरआहुतिजानू । कोपमोर

अति घोर कृशानू ॥ समिध सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भयेपशु आई ॥ मैं यहिपरशु काटि बलिदीन्हे । समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हे ॥ मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे । बोलसि निदरि बिप्रके भोरे ॥ भंजेउ चाप दापबड़ बाढ़ा । अहमिति मनहुँ जीतिजग ठाढ़ा ॥ राम कहा मुनि कहहु बिचारी । रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥ छुवतहि टूट पिनाक पुराना । मैं केहिहेतु करौं अभिमाना ॥ दोहा ॥ जो हम निदरहिं बिप्रबदि सत्य सुनहु भृगुनाथ । तौ असको जग सुभट जेहि भयबश नावहिं माथ ॥ चौपाई ॥ देव दनुज भूपति भट नाना । सम बल अधिक होउ बलवाना ॥ जोरण हमहिंप्रचारै कोऊ । लरहिं सुखेन काल किन होऊ ॥ क्षत्री तनुधरि समर सकाना । कुलकलंक तेहि पामरजाना ॥ कहौं स्वभाव न कुलहिप्रशंसी । कालहुडरहिं न रण रघुबंसी ॥ बिप्रबंशकै असिप्रभुताई । अभयहोइ जोतुमहिं डराई ॥ सुनि मृदुगूढ़ बचन रघुपतिके । उघरे पटल परशुधर मतिके ॥ राम रमापति कर धनुलेहू । खैंचहुचाप मिटै संदेहू ॥ देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ । परशुराम मन बिस्मय भयऊ ॥ दोहा ॥ जाना रामप्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात । जोरि पाणि बोले बचन हृदय न प्रेम समात ॥ चौपाई ॥ जयरघुबंश बनज बन भानू । गहन दनुजकुल दहन कृशानू ॥ जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रमहारी ॥ बिनय शील करुणा गुण सागर । जयति बचन रचना अति नागर ॥ सेवक

सुखदसुभग सबअंगा। जयशरीरछबि कोटि अनंगा ॥ करौंकहा मुखएकप्रशंसा । जयमहेश मनमानसहंसा ॥

रघुराज० ॥ कोसारंगचढ़ावन हारो । कोपिनाककरभंजनवारो ॥ हरण हेत अवनीकर भारा । कोशल नगर लीन अवतारा ॥ तुम ब्रह्मण्य देव रघुराया। दियो भुलाय तुम्हारी माया ॥ जानेउँ जानेउँ अब प्रभुताई । कियो मोहबश मैं शठताई ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता । क्षमहु क्षमामन्दिर दोउ भ्राता ॥

रघुराज० ॥ जाउँ महेन्द्र शैलकहँ आसू । भजौं निरन्तर रमा निवासू ॥ सुमिरण करिहौं तुमहिं गोसाईं । मोर शरीर रही जबताईं ॥ असकहि रहेउ चरणलपटाई । जय कृपालु कोमल रघुराई ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ कहि जयजयजय रघुकुलकेतू । भृगु-पति गये बनहिं तपहेतू ॥ अपभय कुटिल महीप डराने । जहँ तहँ कायर गवहिं पराने ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलदशमोप्रकरणसमाप्तः १० ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

ग्यारहवांप्रकरण ॥

श्रीमिथिलेश महाराजका बिवाहपत्रिका देके दूतोंको अवधपुरको भेजना ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ देवन दीन्ही दुन्दुभी प्रभुपर बर्षहिं फूल। हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भय शूल ॥ चौपाई ॥ अतिगहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥ यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिल बयनी ॥ सुख बिदेहकर बरणि न जाई ॥ जन्म दरिद्र महानिधि पाई ॥ बिगतत्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधुउदय चकोर कुमारी ॥ जनक कीन्ह कौशिकहिं प्रणामा। प्रभुप्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥ मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई। अब जो उचित सो कहिय गोसाई ॥ कहमुनि सुन नरनाह प्रवीना। रहा बिवाह चाप आधीना ॥ टूटतही धनु भयो बिवाहू। सुर नर नाग बिदित सबकाहू ॥ दोहा ॥ तदपि जाय तुम करहु अब यथाबंश ब्यवहार। बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुरु वेद

बिदित आचार ॥ चौपाई ॥ दूत अवधपुर पठवहुजाई। आनै नृप दशरथहि बोलाई ॥ मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला। पठये दूत अवध तेहिकाला ॥

रघुराज० ॥ सुनि मुनिबचन भूप शिरनाई। बैठेउ राजमहल महँ जाई ॥ शतानंद कहँ लिये बोलाई। आनहु औरहु सचिव तुराई ॥ दोहा ॥ राम लषण संयुत इतै ऋषि सुखसिंधु नहाय। कीन्ह्यो बास निवासचलि भयेअस्त दिनराय ॥ क्वारपूर्णिमासी दिवस राजसमाज मँझार। भयो बिदित सबकाहु को भुजबल राम अपार ॥ बिश्वामित्र निदेशलहि जनकजाय दरबार। बोलि महाजन मंत्रि मुनि सभ्य सुहृद सरदार ॥ चौपाई ॥ राजमहल महँ भई समाजा। सिंहासन बैठेउ महराजा ॥ शतानंद तेहि अवसर आये। उचितभूप आसन बैठाये ॥ सचिव सुहृद सरदार सोहाये। राज काज अधिकारी आये ॥ प्रकृति महाजन पुरजन प्यारे। राज रजाय पाय पगुधारे ॥ करि बिदेह कहँ बंदन बैठे। मानहुँ सुधा सिंधु महँ पैठे ॥ भूपति करि सबके सतकारा। शतानंदसों बचन उचारा ॥ इस प्रताप ताप भै दूरी। आप कृपा पति रहिगैपूरी ॥ दशरथ कुँवर कियो धनुभंगा। जासु निछावरि अहै अनंगा ॥ इहँ लगि सुधरिगये सब काजू। अब दीजै निदेश मुनिराजू ॥ कोशलपुर पठवहु अब चारा। लिखि पत्रिका चरित यह सारा ॥ सुभगाक्षर लेखक विद्वाना। राज प्रशंस्ति जाहि सब ज्ञाना ॥ तबहिं महीप समीप बोलायउ। कनक बिचित्र पत्र बनवायउ ॥ दै सब कारज करन निदेशा। लगेउ लिखावन पत्र नरेशा ॥ बद्यो बिनोदित बचन बिदेहू। पंडित मोर बचन सुनिलेहू ॥ सावधान ह्वै थिरमतिकरिकै। लिखहु पत्र ललिताक्षर भरिकै ॥ पठवन चहौं पत्र अवधेशै। बुधसमाज बहु कोशलदेशै ॥ अक्षर लिपि प्रशस्ति अरु अर्था। होइ हँसी नहिं देखत व्यर्था ॥ यहि बिधि लिखहु बिप्र बिज्ञानी। दशरथ

भूप बिज्ञ गुणखानी ॥ निमिकुल कमल दिवाकर बैना । सुनि पंडित पायउ अति चैना ॥ कह्यो जोरिकर यथा निदेशू । लिखिहौं तेहि बिधि तजि अंदेशू ॥ कोशलपाल यदपि बड़राजा । पै इतनहिं कछु न्यून समाजा ॥ दोहा ॥ असकहि लागेउ लिखन सो दशरथ भूपति पत्र । कनक कलित कागज ललित करि मानस एकत्र ॥ अथपत्रिका ॥ श्री श्री श्री श्री श्री सकल भूमंडला खंडल बिधि कमंडल निस्सरित सरितवत् दिग्गज गंड मंडल कुंडलाकार सुयशधारक धर्मधुरंधर धरा धर्मप्रचारक रणधीर बीर शिरोमणि हंस बंशावतंस रघुकुल कमल बिमल दिवामणि प्रताप ताप तापित दिगन्त दुरित दुअन सबकाल दिग्पाल जाल मुकुटमणि नीराजित चरणचारु नखचंद्र चक्रवर्ती चक्र चूडामणि महिपाल माल मंडित अखंडित अवनि उदंड महाराजाऽधिराज राजराज राजित अवध अवधेन्द्र दशरथजू चरण समीप महीप मंडल मौलिमणि मंडित चरण सज्जन सुख ढरन भक्तजन कंठाभरण उत्तमाचरण चारिवरण धर्मशिक्षाकरण ज्ञान विज्ञानानंद संदोहभरण बेद बेदांतोच्चरण बैराग्यानुराग प्रचंड चंडकर किरण क्षरण निमिकुल कुमुद कलानिधि महाराजाधिराज नरेन्द्र शिरोमणि सीरजध्वज करकमलकलित सानंदन अभिबंदन बिलसै रावरो कृपापारावार धार बार बार पाय अपार संसार जनित दुःख संहारभये हे महोदार अवध भूभरतार ब्रह्मर्षि मुनि कौशिक कुमार संग परम सुकुमार मारहूके मदमार धर्मधराधार बलागार श्यामल गौराकार मनोहार रघुकुल सरदार रावरे कुमार नर नारि दुख बिपिनि उजारि ताडकासंहारि कौशिक मखकरि रखवारि गौतमगेहनी उधारि जनक पुर पगुधारि रुचिर रचना निहारि ममप्रण बिचारि रंगभूमि सिधारि सकल महीपनको मदगारि दिगन्त यश बितान बिस्तारि हिय न हारि मोहि शोचसिंधुते उबारि तमारि कुलकीरति बगारि पङ्कजपाणि पसारि पुरारि पिनाक तिनुकाही सो

तोरिदय, मोहिय सुख न समात छनछन उछाह उदधि उमगात पुरजन परिजन ब्रात अभिलाष यों जनात रघुकुल जलजात रविदरशह्वैजात सहित चतुरंगिनी सुभट बिख्यात जनकपुर प्रविशात लगिनगनिचात ताते मानस त्वरात पत्र यह जात कृपाबसात तात लैबरात बेगही पगुधारिये हरि प्रबोधिन्यां निशानने ॥ सोरठ ॥ यहि बिधि पत्रलिखाय चतुर चारि चारन दियो। तरलतुरंग चढ़ाय पठये अवध बिदेह नृप ॥ छंदचौबोला ॥ चारौं चारि चतुर चित चायन लै चिट्ठी चटकीले। चले चटक चितवन के चोपी दशरथ भूप रंगीले ॥ बहुरि पुकारि कह्यो मिथिलापति कहेउ प्रणाम हमारो। कोशलनाथहिं कह्यो बुझाय तुरायनाथ पगुधारो ॥ करिप्रणाम धावन सुखछावन कटि फेंटे खत कीन्हे। चंचलचले चटबाजीचढ़ि अवधपंथ गहिलीन्हे ॥

संग्रह० ॥ दूतनको पठवाय अवधपुर मिथिलापति महराजा। गुरुसों मुदित कह्यो बिवाह के करवावहु सब साजा ॥

रघुराज०दोहा ॥ ऐहैं सहित समाज इत लैबरात अवधेश। हँसी हमारी होइ नहिं सोई मोर निदेश ॥ चौपाई ॥ मुनि आयसु मंत्रिन कहँ देहू। करहिं काज सब बिन संदेहू ॥ उतबशिष्ठ इत आप सुजाना। सकल भांतिहौं उभै समाना ॥ नेत करन की है गति तोरी। जामें जाय बात नाहिं मोरी ॥ बिरचहु मंडफ लोक उजागर। बोलि शिल्पबर रचना नागर ॥ बांधहु जल थल तुङ्ग निशाना। द्वार द्वार तोरण बिधिनाना ॥ राजमार्ग कीजै बिस्तारा। सबथलरहे सुगंध प्रचारा ॥ कमलातीर होइ जनवासा। रचहु तहां बहु बिमल अवासा ॥ दोहा ॥ और कहांलगि मैं कहौं तुम्हैं मुनीश बुझाइ। लोक बेद जानत सकल सबको देहुरजाय ॥ चौपाई ॥ शतानंद बोले तब बानी। धर्मधुरंधर भूप बिज्ञानी ॥ तव प्रताप सररी सब काजा। यश दिगंत फैली महराजा ॥ असकहि शतानंद सुखछाये। राज काज मंदिर महँ आये ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बहुरिमहाजन सकल बुलाये। आइ

सबनि सादर शिरनाये ॥ हाटबाट मन्दिर सुरबासा । नगर सवाँरहु चारिउ पासा ॥ हरषि चले निज निज गृह आये । पुनि परिचारक बोलिपठाये ॥ रचहुबिचित्र बितान बनाई । शिरधरि बचन चले सचुपाई ॥

रघुराज० ॥ शतानन्द एकान्तहि जाई । बैठेउ सुमिरि सीय प्रभुताई ॥ जानत सीय प्रभाव मुनीशा । बन्दन कियो नाय पद शीशा ॥ स्वामिनि उपर कृपाकरु मोरे । निमिकुल लाज हाथ अब तोरे ॥ अनुभव महँ सिय कह्यों मुनीशै । सिद्धिसुयश संपति बिसबीशै ॥ आठौ सिद्धि नवौनिधिकाहीं । दिये निदेश बोलि मनमाहीं ॥ पूरणकरहु धान्य धन जाई । कौनौ बस्तु न न्यून देखाई ॥ सिधि निधि ऋधि सिय शासनपाई । परिपूरण प्रगटी प्रभुताई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना । जो बितान बिधि कुशल सुजाना ॥ बिधिहि बन्दितिन कीन्ह अरम्भा । बिरचे कनक कदली खम्भा ॥ दोहा ॥ हरित मणिनके पत्र फल पद्मराग के फूल । रचनादेखि बिचित्र अति मन बिरंचिके भूल ॥

कृपानिवास० ॥रचेउ महल मण्डप बर शोभित । बिधि शारद गणपति मन लोभित ॥ कोर विचित्र झालरी झलकै । हेम सुमन बिच मुक्तामलकै ॥

श्रीतुलसी० ॥ बेणु हरित मणिमय सब कीन्हे । सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे ॥ कनक कलित अहि बेलि बनाई । लखि नहिंपरै सपर्ण सुहाई ॥ तेहिके रचिपचि बंध बनाये । बिच बिच मुकता दाम सुहाये ॥

कृपानिवास० ॥अपर सकल मंगल तरु रचिये । पुंग रसाल वेणु सरु सचिये ॥ यथा सुमध्य तथा मणि मंडित । पत्र पुष्पफल

तथा अखंडित ॥ कृता जलाश्रय मणिमय सलिलं । हंस बलाहक जलचर कमलं ॥ नील अरुण सित पीत सुफूला । हरित नाल दल मणिमय मूला ॥

श्रीतुलसी० ॥ माणिक मरकत कुलिश पिरोजा । चीर कोरि पचि रचे सरोजा ॥ किये भृङ्ग बहुरङ्ग बिहङ्गा । गुञ्जहिं कूञ्जहिं पवन प्रसङ्गा ॥ सुर प्रतिमा खम्भन गहि काढ़ीं । मङ्गल द्रव्य लिये सब ठाढ़ीं ॥ चौकैंभांति अनेक पुराये । सिन्दुर मणिमय सहज सुहाये ॥ दोहा ॥ सौरभपल्लव सुभग सुठि किये नीलमणि कोर । हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोर ॥ चौपाई ॥ रचे रुचिर बर बन्दनवारे । मनहुँ मनोभव फन्द सँवारे ॥ मंगल कलश अनेक बनाये । ध्वज पताक पट चमर सुहाये ॥ दीप मनोहर मणिमय नाना । जाइ न बरणि बिचित्र बिताना ॥

कृपानिवास० ॥ मणिमय चहुँ दिशि रचि फुलवारी । मध्य बेदिका सुभग सँवारी ॥ सिंहासन आसन जड़िताई । मणिमय रचित बिबिध चतुराई ॥ आयुत मान बखानन होई । त्रिभुवन उपमा लहत न कोई ॥

श्रीतुलसी० ॥ जेहि मण्डप दुलहिनि वैदेही । सो वरणै असमति कवि केही ॥ दूलह रामरूप गुण सागर । सो बितान तिहुँ लोक उजागर ॥

कृपानिवास० ॥ बिधिकृत रंचक यत्र न पैये । कहूं कहा पटतर जिहिं दैये ॥

श्रीतुलसी० ॥ जनक भवन की शोभा जैसी । गृह गृह

प्रतिपुर देखिय तैसी ॥ जेहिं तिरहुति तेहि समय नि-हारी । तेहि लघुलगे भुवन दश चारी ॥

कृपानिवास० ॥ इन्द्र कुबेर आइ यकबारा । निज धन दे भरि जनक भँडारा ॥ दशरथ संग बरात अपारा । मति धन निघटत चढ़ै विकारा ॥ दोहा ॥ पुर पैठत बर धाम लखि राज रौस दर-शाइ । करि प्रवेश अद्भुतबनी रचना देखि सिहाइ ॥ चौपाई ॥ दे-खत युग अपरातर आये । पुरुष चौक चौकी पर छाये ॥ कंचन पाट महामणि मंडित । नवग्रह द्युति येको पर खंडित ॥ धन पालक सुरपालक शोची । निज सम्पति चौकी तें पोची । कहैं कौनत्वं श्वपचो हं प्रभु । कुत्रागता सु चौकी ते बिभु ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जो संपदा नीच गृह सोहा । सो बि-लोकि सुरनायक मोहा ॥

कृपानिवास० ॥ फिरे लजाय स्वधामसिधाये । पुर संपतिदेखन नहिं पाये ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ बसै नगर जेहि लक्षिकरि कपट नारि बरभेष । तेहि पुरकी शोभा कहत सकुचैं शारद शेष ॥

संग्रह० ॥ राम लषण बिन भूपको मनमें कछु न सुहाय । कौशल्या कहै सखिनसों सुत सनेह सरसाय ॥

श्रीतुलसी०पदरागसोरठ ॥ मेरेबालक कैसेधौं मगनिबहहिं-गे । भूख पियास शीत श्रम सकुचनि क्यों कौशिकहि कहहिंगे ॥ को भोरही उबटि अन्हवैहै काढ़ि कलेऊ देहै । को भूषन पहिराइ निछावरिकरि लोचनसुखलेहै ॥ नयन निमेषनि ज्यों जोगवै नितपितु परिजन महतारी । ते पठये ऋषिसाथ निशाचर मारन मख रखवारी ॥ सुं-दर सुठि सुकुमार सुकोमल काकपक्षधर दोऊ । तुलसी निरखि हरषि उरलैहों बिधि ह्वै है दिन सोऊ ॥ ऋषि

नृप शीश ठगौरीसी डारी। कुलगुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेवन समझि सुधारी॥ सिरस सुमन सुकुमार कुवँर दोउ सूर सरोष सुरारी। पठये बिनहि सहाय पयादेहि केलिबाण धनुधारी॥ अति सनेह कातरि माता कहै लखि सखि बचनदुखारी। बादि बीर जननीजीवन जग क्षत्रि जाति गतिभारी॥ जो कहिहै फिरि रामलषन घरकरि मुनि मख रखवारी। सो तुलसी प्रिय मोहिं लागिहै ज्यों सुभाय सुतचारी॥

बिश्वनाथ०पद॥ जबते मुनि सँग गे सुत दोऊ। कहैं कौशल्या तब ते तिनकी कही खबरि इत आइ न कोऊ॥ निजकर कछू करन नहिं जानत बिन किंकर किमि निबहतह्वैहैं। बिश्वनाथ कब हाय नयन ये तकि कुवँर न आनँद जल च्वैहैं॥

संग्रह०चौपाई॥ चारण चारिउ मिथिलाकेरे। सो आये कोशलपुर नेरे॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ पहुंचे दूत रामपुर पावन। हरषेनगर विलोकि सुहावन॥

रघुराज०छं०चौबोला॥ युग योजनते लखे अवधपुर महल अनेक उतंगा। श्वेत शरदजलधर समान बर मनहुं हिमाचल शृङ्गा॥ करि प्रणाम धावन घोरनको अतिशय चपल धवाई। सरयू सलिल पिआयो बाजिन पहुंचि अवध अमराई॥ लाग बाग चहुंओर नगरके द्वादश योजनमाहीं। लिखन चित्र लायक बिचित्र अति चितऊबन कहुं नाहीं॥ कनक कोट अतिमोट शैल सम गुरज सुरयसम सोहैं। परिखा पूरण सलिल बिशद अति देवहु दुर्गम जोहैं॥ त्रयत्रय योजनपर दरवाजे राजततुंगअपारा। कनक कँगूरे भ्राजत रूरे पूरे रतन कतारा॥ चढ़ी तोप रिपुसैन लोपकर ओप आरसी कीनी। सावधान ठाढ़े रक्षक सब तक्षक

तेजहिछीनी ॥ मंदिर बिबिध बने देवनके पुर बाहेर प्रतिबागे । सड़क स्वच्छ दोउ दिशन वृक्षयुग गच्छत घाम न लागे ॥ फबैं फूल फल सकल ऋतुनके शाखा भूपरलोरैं । वन बिचित्र नंदन हुंचित्ररथ निज महिमा मदमोरैं ॥ केकी कीर कपोत कोकिलन कलरव चहुंकित छाये । सीर समीर धीर अतिसुरभित बहत सदा मनभाये ॥ पहुंचि अवध उपबन बिदेहके धावन सरयु नहाये । दै चंदन करिकै रबि बंदन पहिरे बसन सुहाये ॥ करिकै कछु भोजन मन मोजन करि बाजिन श्रमदूरी । साज साजि पुनि चढ़े तुरंगन चले मोदभरिभूरी ॥ कनक दंड बहु रतन खचितकर लघु लघु लगे पताके । नाम लिख्यो तिनमहँ बिदेह कर सूचक धावन ताके ॥ राज महलकी डगर बतावो पूछत पथिकनकाहीं । निमिकुलनाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं ॥ कुशल पूछते बहु बिदेहकी कहैं सहित उतसाहू । सूधी राजभवन कहं लागी चले पंथ यहि जाहू ॥ यहि बिधि पूंछत जनक चार तहँ गये नगर दरवाजे । जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छबिछाजे ॥ किये न चारिहु चारन वारन कुशल उचारन करिकै । जानि जनक के जान दिये तिन बड़ेजान मुद भरिकै ॥ अवधनगर कीन्हे प्रवेश ते मिथिलापति के धावन । जात त्वरात चले यद्यपि ते निरखत नगर सोहावन ॥ दोहा ॥ जा दिन दूत बिदेह के कीन्हे नगर प्रवेश । दशरथ कौशल्या लखे ता दिन सगुन अशेश ॥ छंदचौबोला ॥ आकसमात प्रसन्न भयो मन उर उमँग्यो उतसाहू । जानिपरत अस कहन चहत कोउ होत रामकर ब्याहू ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी । बाम अंग फरकत निरखैं निज मिटिगै मनहिं गलानी ॥ दक्षिण भृकुटि नैन भुज फरकत दशरथ के तेहि काला । तैसहि भरत शत्रुसूदनके सूचत सुख अब हाला ॥ नीलकंठ पक्षी गृह आयो लगीं बिमल दश आशा । बासर परम सोहावन लागत कोमल भानु प्रकाशा ॥ लाग्यो बहन मंद मारुत तहँ स्रवैं सुरभि

पय धारा । नभते भई कुसुम की बरषा बाजनलगे नगारा ॥ खसैं फूल देवन प्रतिमाते क्षेमकरी थहरानी । बोलि उठे बिहंग बहु रंगन तति कुरंग दरशानी ॥ लखि शुभ सूचन सगुन कहहिं सब जुरि जुरि जनन समाजू । कौन अनूपम आनँद आवत अवध नगर महँ आजू ॥ राम बिरह व्याकुल कौशल्या बोलि सुमित्रहि कह्यऊ । जबते मुनि लैगे लालनको तबते सुधि नहिं लह्यऊ ॥ लषणमातु बोली प्रबोधि तेहि आजु खबरि कछु ऐहै । सगुन होत सिगरे सुखदायक यह निरफल नहिं जैहै । बाकी रह्यो याम भरि बासर तब अजनन्दन भूपा । बैठेउ आय सभा सिंहासन भूषण बसन अनूपा ॥ पुरजन परिजन सज्जन सिगरे बैठे राज दरबारे । सुहृद सखा सरदार सचिव सब जगति पतीहि जोहारे ॥

संग्रह० ॥निरखतनगरपरमसुखछाये । ताहीसमयदूततहँआये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥

रघुराज० छंद चौबोला ॥ द्वारपाल धाये तुरन्त तहँ कहैं आय तिनपाहीं । भूप शिरोमणि तुमहिं बोलायो चलिय सभा सुख माहीं ॥ ते बिदेह के धावन पावन पाये परम अनन्दा । निरखि अवधपुर राजभवन सब करत बिचार सुछन्दा ॥ धौं अलकावति धौं अमरावति ब्रह्म सदन धौं आये । करिकै कृपा बैकुंठधनी यह सरिस बैकुंठ देखाये ॥ धन्य अवधपुर धनि सरयू सरि धनि दशरथ महराजा॥धन्य धन्य रघुकुल जगपावन जहँ प्रगट रघुराजा ॥ दोहा ॥ अस बिचारिते चारि बर चार चतुर चित लाय । चढे चन्द्रशाला चटक चहुँकित चितवत जाय ॥ छंद चौबोला ॥ सभाद्वार पहुँचे जबधावन दशरथ सभा निहारे । सिंहासनासीन कोशलपति सुनासीर मदगारे ॥ लोकपाल समभूमिपाल सब बैठे उभय कतारे । ढालन सों ढालन करि चालन करवालन

करधारे ॥ बैठे रघुबंशी रिपुध्वंसी जगत प्रशंसी प्यारे । कलँगी सों कलँगी बिलगां नहिं सान शूरतावारे ॥ अचल अचल इव मौन बैन भट प्रभु मुख रुखहि निहारैं ॥ इष्ट देव सम रघुकुल नायक अपने मनहिं बिचारैं ॥ छाजत छपा छपाकर शिरपर प्रगटत परम प्रकाशा । चारि चमर चालत परिचारक खड़े चारिहू आशा ॥ आतपत्र दुहुँओर लसत युग रवि शशिबदन बनाये । राम पिता पद सेवन हित मनु दिनकर निशिकर आये ॥ बंदी बदत खड़े बिरदावलि नचत अप्सरा भावैं । गान करहिं गंधर्ब गर्ब भरि बाजन सर्ब बजावैं॥कनक छरी बहुरतन भरी करधरे खरे प्रतिहारा । निरखत नयन नरेश बदन बर कारज करत इशारा ॥ बैठ बशिष्ठ कनक सिंहासन भूप दाहिने ओरा । मार्कंडेय आदि मुनिनायक राजत तेज अथोरा ॥ सन्मुख खड़े सुमन्त सचिव बर नृपशासन अभिलाखी । भृकुटि बिलास बिचारि काज सब करत राज रुखराखी ॥ यहि बिधि मिथिलाधिप के धावन पावन भूप निहारे । धर्म धुरन्धर अवध अधीशै धरा धरेंद्र बिचारे ॥ कनक मुद्र कछु रतन लिये कर यथा राजमरयादा । चारौ चतुर चार चलिसन्मुख भरे भूरि अह्लादा ॥ पुलकित तन करिकै प्रणाम सब दंड सरिस महि माहीं । दीन्हे नजरि निछावरि कीन्हे कोशल नायक कांहीं ॥ जोरि पाणि पंकज पुनि बोले अतिशय मंजुलबानी । महाराज मिथिलाधिराज इतपठये हमहिंबिज्ञानी ॥ कह्यो रावरेको उराव भरि मिथिला राव जोहारा । बहुरि अनंदन बंदन भाष्यो भानुबंश भरतारा ॥ कह्यो कुशल पूछनको बहु बिधि अपनी कुशल जनावन । दीन्हो बहुरि बिचित्र पत्र यह रघुकुल मोद बढ़ावन ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करि प्रणाम तिन्हपाती दीन्ही । मुदित महीप आप उठिलीन्ही ॥ बारि बिलोचन बांचत पाती । पुलकि गात आई भरि छाती ॥ राम

लखंन उरकरबर चीठी । रहिगे कहत न खाटी मीठी ॥ पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुनि सांची ॥

रघुराज० ॥ खेलत रहे सरयु के तीरा । युगल बंधुलै बालक भीरा ॥ भरत शत्रुहन सखन पठावैं । प्रथम जे आवैं ते जित आवैं॥एक सखा तब पत्र जनायो । खबरि सहित पुरते लै आयो॥

श्रीतुलसी० ॥ खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित दोउ भाई ॥

रघुराज० ॥ करि बंदन अतिशय अतुराने । लपटत अक्षर बचन बखाने ॥

श्रीतुलसी० ॥ पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ॥ दोहा ॥ कुशल प्राण प्रिय बन्धु दोउ अहहिं कहहु केहि देश । सुनि सनेह सानेबचन बांची बहुरि नरेश ॥ चौपाई ॥ सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता ॥

रघुराज० ॥ पिता पाणिगहि बोले बाता । तात चलब हठ हमहुँ बराता ॥ जनक जनकपुर कब पगधरिहौं । राम लषणलखि कब सुखभरिहौं ॥ नृप हँसिकह चलिहौ तुम लाला । तीन बंधु तुमहीं सहिबाला ॥ कह बशिष्ठ उतगये जनैहैं । सहिबाला धौं दूलहह्वैहैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ प्रीति पुनीत भरत की देखी । सकल सभा सुख लहेउ बिशेखी ॥ तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥ भैया कहहु कुशल दोउ बारे । तुम नीके निज नयन निहारे ॥ श्यामल गौर धरे धनु भाथा । बय किशोर कौशिक मुनि साथा ॥ पहिचानहुं तुम कहहु सुभाऊ । प्रेम बिवश पुनि पुनि कह

राऊ ॥ जा दिन तें मुनि गयेलिवाई । तबते आजुसांचि सुधि पाई ॥ कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । सुनिप्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥ दोहा ॥ सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम समधन्य न कोउ । राम लषण जिनके तनय बिश्व बिभूषण दोउ ॥ चौपाई ॥ पूछन योग न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥ जिनके यश प्रताप के आगे । शशि मलीन रवि शीतल लागे ॥ तिन कहँ कहिय नाथ किमि चीन्हे । देखिय रविहि कि दीपक लीन्हे ॥ सीय स्वयंबर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक ते एका ॥ शम्भु शरासन काहु न टारा । हारे सकल भूप बरियारा ॥ तीन लोक में जे भट मानी । सबकी शक्ति शम्भु धनु भानी । सकै उठाय शरासन मेरू । सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू ॥ जेहि कौतुक शिव शैलउठावा । सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥ दोहा ॥ तहां राम रघुबंशमणि सुनहु महा महिपाल । भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल ॥

रघुराजकृतकबित्त ॥ महाराज सुनहु महीपमणि रावरेके डावरेमें जौन एक सावँरो कुमार है । तोरयो शंभुधनुष सरोष रंगभूमि मध्य मोरयो महिपालन को मद बेशुमारहै ॥ रघुराज सकल समाज के निहारतही मिथिलाधिराजै कियो प्रणते उबारहै । पूषन प्रताप तीनौ भुवन प्रकाश कीन्ह्यो कैसे करैं एकमुख सुयश अपारहै १ मारे ताड़ुकाको जाको देवहू डेरातेहुते गयो पंथहीमें परि तासु भरभेंटाहै । राखिक्रतु कौशिककी साखि जग मारे दुष्ट लावनको करि जैसे बाज झरपेटाहै ॥ रघुजराज राजमणि तारी नारि गौतमकी रंगभूमि भूपन खलन खरखेटाहै । दीपकलै पाणिमें पतंगको परेखै कौन बिश्वमें बिदित आपही के

बरबेटाहै २ ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य तुम अवधपति को नृप आप समान । जिनके पूत सपूत दोउ राम लषण बलवान ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ सुनि सरोष भृगुनायक आये । बहु-ती भांतिन आंखि दिखाये ॥ देखि रामबल निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा ॥ राजनराम अतुल बल जैसे । तेज निधान लषण पुनि तैसे ॥ कंप-हिं भूप बिलोकत जाके । जिमि करि हरि किशोरके ता-के ॥ देव देखि तव बालक दोऊ । अवनि आंखितर आव न कोऊ ॥

रघुराज० ॥ चलहु नाथ अब सहित बराता । देखहु पूतसपूत बिख्याता ॥ मंत्री बंधु सुभट सरदारा । चलैं संग सब सैन अपारा ॥

श्रीतुलसी० ॥ दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्र-ताप बीर रस पागी ॥

रघुराज० ॥ सुनि दूतनके बचन नरेशा । कहे बचन करि प्रेम बिशेशा ॥ मोहिं बिदेह नरेश बुलायउ । सो सुनि अति आनँद उर आयउ ॥ हैं बिदेहके सकल कुमारा । उनहीं को सब बिभव हमारा ॥ नाहिं कोशल मिथिलाकर भेदू । जस बिदेह बरणत बिधि वेदू ॥ आज करो इत रैनि निवासा । मैं चलिहौं रविहोत प्रकासा ॥ पुनि अवधेश सुमंत हँकारे । हरैं कान महँ बचन उचारे ॥ दोहा ॥ लाख लाख के आभरण बसन तुरंग मँगाय । चारिहु दूतन देहु द्रुत पठवहु नाग चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ सुनिसुमंत शासन नृपकेरा । ल्याय बिभूषण बसन घनेरा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन देन निछावरि लागे ॥

रघुराज० ॥ धरे चारिहू चारण आगे । कहे भूपमणि अति अ-नुरागे ॥ दूत देत सकुचत मनमोरा । जो कछु देहुं लगै सब

थोरा ॥ तुम पुत्रनकी खबरि जनाई । हमजनु गये फेरि सुत पाई ॥ आज भयो अस मोद अपारा । बहुरि जन्म जनु लहे कुमारा ॥ उऋण जन्मभरि हैं हम नाहीं । और कहा कहिये तुम पाहीं ॥ पान फूल सम यह कछु जोई । लीजे दूत सनेह समोई ॥ देखि दूत पटभूषण भूरी । बाणी कही धर्मरसपूरी ॥ महाराज अब माफ करीजे । यही इनाम हमहिं अब दीजे ॥ धर्म धुरंधर ध्रुव अवधेशा । हमरे शिरपर आप निदेशा ॥ रंगभूमिमहँ जबते नाथा । तोरयो शंभु धनुष रघुनाथा ॥ तबते गई बिवाहि कुमारी । यह लीन्ह्यो हम सत्य बिचारी ॥ दोहा ॥ जस हमार मिथिलेश प्रभु तैसहि प्रभु अवधेश । पै कन्याधन लेतमहँ हमको परत भदेश ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कहि अनीति तेइ मूंदेउ काना । धर्म बिचारि सबहिं सुख माना ॥

रघुराज० ॥ फेरि सुमंतहि बचन सुनाये । का बाकी जो हम नहिं पाये ॥ समधी राउ राम जामाता । लहे लाभ अस को न अघाता ॥ जबते लखे लषण अरु रामा । तबते लगत न कोउ अभिरामा ॥ पुनि देखे कौशलपति आई । सचिवगये सब भांति अघाई ॥ अब पूरहु इतनी अभिलाषन । सम समधी निरखहिं यक आसन॥मिथिलानगर उछाह अघाता । कब देखहिं अवधेश बराता ॥ सुनि भुवालमणि दूतनबानी । आनँद बिवश भरे हृगपानी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ तब उठि भूप बशिष्ठ कहँ दीन्ह पत्रिका जाय । कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाय ॥

रघुराज०चौपाई ॥ लै खत पुलकि मुनीशहु बांचे । लहि सुख सिंधु रामरति राचे ॥

संग्रह० ॥ लखि प्रसन्न गुरु भूप बिज्ञानी । बोलेउ वचन जोरि दोउ पानी ॥

रघुराज० ॥ यह सब नाथ तुम्हारी दाया। रंगभूमि रघुपति यशपाया॥ असकहि गुरुपद पंकजबंदी। बैठेउ सिंहासनहिंअनंदी॥

श्रीतुलसी० ॥ सुनि बोले मुनि अति सुखपाई। पुण्य पुरुष कहँ महि सुख छाई॥ जिमि सरिता सागर महँ जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥ तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये। धर्म्म शील पहँ जाहिं सुभाये॥ तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी। तस पुनीत कौशल्या देवी॥ सुकृती तुम समान जगमाहीं। भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥ तुम ते अधिक पुण्य बड़ काके। राजन राम सरिस सुत जाके॥ बीर बिनीत धर्म्म ब्रत धारी। गुण सागर बालक बर चारी॥ तुम कहँ सर्ब्ब कालकल्याना॥ सजहु बरात बजाय निशाना॥

रघुराज० ॥ कालिह सुदिन सुंदर शुभ योगा। सजन बरातहि देहु नियोगा॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ चलेउ बेगि सुनि गुरु बचन भलेहि नाथ शिरनाइ। भूपति गवने भवन तब दूतन बास दिवाइ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ समाधानकरि दूत बसाये। राय राम जननी गृह आये॥ अंतहपुर उमग्यो सरभारी। चलीं कोटि सरिता जनुनारी॥

रघुराज० ॥ ह्वै आसन आसीन भुवाला। राम मातु कहँ बोलि उताला॥

श्रीतुलसी० ॥ राजा सब रनिवास बुलाई। जनक पत्रिका बांचि सुनाई॥ सुनि संदेश सकल हरषानी। अपर कथासब भूप बखानी॥ प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी। म-

नहुँ शिखिन सुनि बारिद बानी ॥ मुदित अशीश देहिं गुरुनारी । अति आनन्द मगन महतारी ॥ लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदयलगाइ जुड़ावहिं छाती ॥ राम लषणकी कीरति करणी । बारहिंबार भूपबरबरणी ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ पुर बनिता सुनि प्रमदा दौरीं । राम पत्रिका सुनिभईं बौरीं ॥ युवती गण नृप घेरे आईं । राय पत्रिका बांचिसुनाईं ॥ सुनत सकल प्रमदा गण झूमैं । बीणबजत मृगनी जनु घूमैं ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगलग्यारहवांप्रकरणसमाप्तः ११ ॥

श्रीसीतारामचन्द्रायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसियाराम बिवाह उत्सव निरूपण संग्रह करिकै ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

नामकग्रन्थ बारहवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराजका दूतनसों जनकपुरके धनुषभंग वृत्तांत सुनिकर बिवाहके विविध मंगल उत्साह अवधमें कर बरात सजके गमनकरना ॥

रघुराजसिंह कृत चौपाई ॥ सुनि तियलागीं मंगल गावन । एक एकसों कछु न बतावन ॥ भरयो भुवन सुख जब न समाना । उमड़ि चल्यो जनुसिंधुरिगाना ॥

संग्रह० ॥ रानिनयुत दशरथ महराजा । परम अनंदित सकल समाजा ॥

श्रीतुलसी॰चौपाई ॥ मुनि प्रसाद कहिद्वारसिधाये । रानिन्ह तब महिदेव बुलाये ॥ दिये दान आनंद समेता । चले बिप्रबर आशिष देता ॥ सोरठा ॥ याचक लिये हँकारि दीन्ह निछावरि कोटि बिधि । चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्ति दशरत्थके ॥ चौपाई ॥ कहतचले पहिरेपटनाना । हर्षि हने गहगहे निशाना ॥

रघुराज० ॥ राम मातु उत तुरत सिधाई । रंगनाथके मंदिर

आई ॥ करि पूजन बहुबिधि सनमानी । पुरवहु सब सुख शा-रँगपानी ॥ दोहा ॥ उतै सुमित्रा केकयी प्रेम मगन मनमाहिं । ब्याह साज साजनलगीं बोल्यउ कुलगुरु काहिं ॥

संग्रह०चौपाई ॥ आये मुनि अंतःपुर माहीं । रानिन किय प्रणाम तिन काहीं ॥

रघुराज० ॥रंगनाथको पूजन करिकै । कौशल्या आई मुदभरिकै॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा । गुरुसों बोलीं बचन बिचित्रा ॥ हमहिं भयो सुख कृपा तुम्हारे । हिय न होति परतीत हमारे॥ द्वादश बर्ष बैस ममबारे । कौन भांति ताड़ुका सँहारे ॥ केहि बिधि भे मुनि मख रखवारे । डरे न रजनीचरन निहारे ॥ कमलहु ते कोमल कर जाके । हर धनुभंग सजत किमि ताके ॥ लालकरी मुनि बडी ढिठाई । भय बिन राज समाज मझाई ॥ तब बोले मन बिहँसि मुनीशा । कृपा सकल जानहु जगदीशा ॥ रघुकुलके बांकुरे कुमारे । कालहुके रण जीतनहारे ॥ रानी कछु न करहु संदेहू । अब बिवाह कारज मनदेहू ॥ दोहा ॥ कहीकौशला केकयी गुरुजस देहु बताय । ब्याह चार तस वेदबिधि करैं बिशेषबनाय ॥ चौपाई ॥ तब गुरु कह्यो सुनहु महरानी । कुलदेवन पूजहु सुख-दानी ॥ इतै गीत मंगलकरचारा । होई सहित बिधानअपारा ॥ ब्याह चार औरौ सब जेते । मिथिलामहँ ह्वैहैं अब तेते ॥ तब दशरथ गुरु निकट सिधारे । बंदि चरण अस बचन उचारे ॥ नाथ सभामहँ सचिव बोलाई । देहु त्वराय रजाय सुनाई ॥ कालिह पयान जनकपुरहोई । सजै बरात चलै सबकोई ॥ सुनि नृपशासन ब्रह्मकुमारा । गये राजकारज आगारा ॥ बोलेउ स-चिव सुमन्त प्रधाना । आये मन्त्रीगण मतिमाना ॥ दिये सुनाय नरेश निदेशा । कालिह कूचहै तिरहुतदेशा ॥ राम बिवाह बरात सोहावन । साजहुसकल साज छबिछावन ॥ मंत्री सुभट बंधु सरदारा । रघुकुलके सवराजकुमारा ॥ साज साजि मातंग तुरंगा । शकट पालकी तखत सतंगा ॥ दोहा ॥ साज साजिआवैं सबै

सजै बिख्यात बरात । गोधूली बेला बिमल चलिहैं नृपग्रव-दात ॥ अस निदेश नरनाथको सचिवन सकल सुनाय । भरि हुलास निज बासको गवनकियो मुनिराय ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये ॥ भुवन चारिदश भरेउ उछाहू । जनकसुता रघुबीर बिवाहू ॥ सुनि शुभकथा लोगअनु-रागे । मग गृह गली सँवारन लागे ॥ यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । रामपुरी मंगलमय पावनि ॥

कृपानिवास०॥ अवध सदा मंगलमय सुंदर । तदपि करैं सुख में सुख रसबर ॥

श्रीतुलसी० चौ० ॥ तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई । मंगल रचना रची बनाई ॥

कृपानि० ॥ रचे वितान सुजान सुहाये । मणि मुक्तामय साज सजाये ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ ध्वज पताक पट चामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ॥

कृपानि० ॥ कलश पताके ध्वजा धाम शिर । मेरु शिखर रवि शशि कोटिन थिर ॥ बहुरंगी मणि बंदनवारे । रसहित मदन फँदन बिस्तारे ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ कनक कलश तोरण मणिजाला । हरद दूब दधि अक्षत माला ॥

कृपानि० ॥ गज मणि चौक नगर में घर घर । धूप सुदीप सुगंध सकल पुर ॥ दोहा ॥ मंगल द्रुम फल पुष्परचि लता बाटिका बाग । मणिमय पक्षी भ्रमर मृग सुभग भरे अनुराग ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ । बीथी सींची चतुर सब चौके चारु पुराइ ॥

कृपानि० ॥ अवधपुरी शोभा निरखि मुनिजन मन आवेश । श्रुति गणेश महेश गिरा शेष न पावत लेश ॥ चौपाई ॥ चहुँदिश मंगलपुरी बिराजैं । त्रिभुवन धाम अत्रछाबि छाजैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि । सजि नवसप्त सकल द्युति दामिनि ॥ बिधुवदनी मृगशावक लोचनि । निज स्वरूप रतिमान बिमोचनि ॥ गावहिं मंगल मंजुलबानी । सुनि कल रव कलकंठ लजानी ॥ भूप भवन किमि जाय बखाना । बिश्व बिमोहन रच्यो बिताना ॥ मंगल द्रव्य मनोहर नाना । राजत बाजत बिपुल निशाना ॥ कतहुँ बिरद बन्दी उच्चरहीं । कतहुँ वेदधुनि भूसुर करहीं ॥ गावहिं सुन्दरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ॥ बहुत उछाह भवन अति थोरा । मानहुँ उमँगि चला चहुँओरा ॥ दोहा ॥ शोभा दशरथ भवनकी को कबि बरणै पार । जहां सकलसुर शीशमणि राम लीन्ह अवतार ॥

रघुराज०चौबोलाछंद ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी । पूजनलागीं रंगनाथको ईश गणेश भवानी ॥ इष्टदेव कुल देव देव बन ग्रामदेव कहँ पूजैं । कुशल लखहिं दुलहिन दूलह कहँ मन अभिलाषा पूजैं ॥ कारज करहिं नारि सब निज निज गावहिं मंगलगीता । राम जानकी ब्याह गानसुर दशदिशि करहिं पुनीता ॥ व्यंजन बिबिधप्रकारनके रचि जाको जैसो योगू । ते देवनकहँ देहिं तौन बिधि पढ़ि पढ़ि मंत्रन भोगू ॥ फूली फिरत रामकीमाता नहिं सुख उरहि समाता । द्वार द्वार देवनको बिनवति कहि कहि मंजुल बाता ॥ गुरुजनको अभिवंदनकरती सहज सुभाय सयानी । दृगभरि देखब दुलहिन दूलह तुम्हरी पुण्य महानी ॥ महल महल मचिरह्यो अवधपुर चहल पहल

तेहि रजनी । कोउ गावैं कोउ आवैं जावैं धामै धामै सजनी ॥ धूमधाम पुर धाम धाममहँ काल्हि बरातपयाना । आपु सजहिं औरेनकहँ साजहिं पट भूषण विधिनाना ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ सकल उमाहैं रैनि बिहावै । चक चकई लों भोर मनावै ॥ अमित चाह चातकलों चाहैं । राम रसिक रस स्वाति उमाहैं ॥

रघुराज०चौबोलाछंद ॥ दीपावली देव आलय महँ भौनबजारन माहीं । करत बरात तयारी भारी नींद नैन महँ नाहीं ॥ करहिं बिनय पुरजन देवनसों सपदिहोइ भिनसारा । चलै बरात राम ब्याहन हित आशु बजाय नगारा ॥ परी खभैरी ताहि शर्वरी करैं हर्बरी लोगू । कहै हर्यरी मेटि कर्बरी कब प्रभु करी संयोगू ॥ राम बिवाह प्रमोद पौरजन देहिं द्विजातिन दाना । करहिं जनकपुर जान तयारी नारि करहिं कलगाना ॥ बाजिरहे घरघर बहु बाजन धरे कलश प्रतिद्वारा । नौवतझरत राजमंदिर महँ नादहिं निकर नगारा ॥ आये जे बिदेहके धावन पृथक पृथक तिन काहीं । सनमानी रानी मुदमानी लिये कछुक तिन नाहीं ॥ पृथक पृथक पुनि अवधप्रजा सब दूतनको सतकारैं । लेत कोहू की कछुक बस्तु नहिं अपनो धर्म बिचारैं ॥ बढ़ी उमंग अयोध्या बासिन क्षण क्षण शंभु मनामैं । सो दिन बेगि देखाउ कृपाकरि लखैं लषण अरु रामैं ॥ भरत शत्रुसूदन अतिहरपित नैन नींद बिसराई । मुदित कराहिं मातनसों बातन कब देखब दोउभाई ॥ यहि बिधि देवी देवनपूजत करत बरात तयारी । निरमाणत भूषण पट बहुबिधि सनमानत त्रिपुरारी ॥ राम बिवाह उछाहहि आनत ठानत गवन उमंगा । बचन परसपर बिबिध बखानत सानत चित रतिरंगा ॥ अपने कहँ जानत जिय धनि धनि भानत दुख संसारा । दानदेत बिप्रन प्रियमानत छानत सार असारा ॥ बिबिध बरातिनको पहिचानत सनमानत परिवारा । नहिं आनत नींदहिं निज नैनन होतभयो भिनसारा ॥ दोहा ॥

ब्रह्म मुहूरत जानिकै उठेउ सो कोशलपाल । प्रातकृत्य निरबाहिकै करि मज्जन ततकाल ॥ अर्घ प्रदानादिक कियो रंगनाथपद बंदि । पहिरि बिभूषण बसन बर बैठेउ सभा अनंदि ॥ चौबोलाछंद॥ मंत्रिन प्रजा महाजन सुभटन सरदारन कुल वारे । पौरजान पद सभ्य सुजानन कोशलपाल हँकारे ॥ आये सकल सभामंदिर महँ दशरथ राज जोहारे । सहित समाजन यथा योग तिन प्रतीहार बैठारे ॥ तबसुमन्तको पठै तुरन्तहि गुरु बशिष्ठबोलवाये । राम काजको काज जानि तहँ मुनिबर हरबर आये ॥ पद अरबिंदन बंदन करिकै कनकासन बैठाये । आज जनकपुर चलन चाय चित चारु निदेश सुनाये ॥ चलहिं धनिक सब अवधनगर के अर्ब खर्ब धनलीने । खाली रतन बिभूषण संयुत बड़ लघुनवल नगीने ॥ साजि साजि सबसाजु समाजन चलहिं अवधपुरबासी। औरहु जाति ज्ञाति सनबंधी लेहु बोलि छबिरासी ॥ रघुकुल के सब राजकुमारन सुकुमारन बोलवाई । लेहु बरात संगकरि सादर नेवतो भवन पठाई ॥ देवलोकते गंधर्वनको अरु अपसरन बोलाई । मही मंगला मुखिन सुखिनको दीजे प्रथम चलाई ॥

इतिश्रीरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबारहवांप्रकरणसमाप्तः १२ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

———०———

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

तेरहवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराजका आज्ञादेना बरात सजानेकी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हय गय स्यन्दन साजहु जाई ॥ चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥ भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥

संग्रह० ॥ अवध नरेन्द्र उठन तब चाये । चारण चारि सभा महँ आये ॥

रघुराज०छं०चौबोला ॥ कौशलपाल कमल पद बंदे कहे कमल करजोरी । गवनबिलंब अबनृप राउरि आलसजनी न थोरी ॥ दूतनसों पुनि कह्यो अवधपति गोधूली शुभबेला । चली बरात जाय सरयूतट रहिहै अबनहिं झेला ॥ जाहु दूत दीजे बिदेहको आशुहि खबरि जनाई । चौथे दिवस दरशकरिहैं हम मिथिलापुर महँ आई ॥ सुनिकै दूत अकूत मोदलहि चले तुरत तिरहूता । गायदान मंदिर दशरथ इत बोलेउ बिप्रनपूता ॥ हय गज भूमि कनक पट भूषण धेनु धाम धन बेसा । किये दरिद्र हीन जग याचक राम लषण उद्देसा ॥ फेरि गीत मंगल करवाये संयुत वेद बिधाना । कौशल्या केकयी सुमित्रा नृपरानीतहँ नाना॥

रंगनाथको पूजनकरिकै गौरि गणेशहु पूजी । करिकै सकल शिंगार सहचरी रति रंभा जनु दूजी ॥ वृन्द वृन्द युवती तहँ गावत मंगल गीत सुरीली । चलीं मृत्तिका लेन सरयुतट आनँद रली रँगीली ॥ बन्यो कनकको महामनोहर मंडप रतन जड़ीलो । मनो मदनको सदन अनूपम सुर मुनि चित्त गड़ीलो ॥ लै बिधियुत सरयूतटते मृदु गावत मंगल गीता । लैआईं मंडपहि मृत्तिका परिचारिका पुनीता ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा किये ब्याह को चारा । इष्टदेव कुलदेव पूजि सब आनँद भयो अपारा ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ रुचि रुचि जीन तुरँगतिन साजे । बर्ण बर्ण बर बाजि बिराजे ॥ सुभग सकल सुठि चंचल करणी । अय जिमि जरत धरतपग धरणी ॥ नाना जाति न जाहिं बखाने । निदरि पवन जनु चहतउड़ाने ॥ तिन सब छैल भये असवारा । भरत सरिस सब राजकुमारा ॥ सबसुंदर सब भूषणधारी । कर शर चापतूण कटिभारी ॥ दोहा ॥ छरेछबीले छैल सब शूर सुजान नवीन । युग पदचर असवारप्रति जेअसिकला प्रवीन ॥ चौपाई ॥ बांधे बिरद बीररणगाढ़े । निकसि भये पुरबाहर ठाढ़े ॥ फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना । हरषहिं ध्वनि सुनि पणव निशाना ॥ रथ सारथिन बिचित्रबनाये । ध्वज पताक मणि भूषण छाये ॥ चँवर चारु किंकिणि ध्वनि करहीं । भानु यान शोभा अपहरहीं ॥ श्यामकर्ण अगणित हय होते । ते तिन रथन सारथिन जोते ॥ सुंदर सकल अलंकृत सोहैं । जिनहिं बिलोकत मुनिमनमोहैं ॥ जेजलचलहिं थलहिंकी नाईं । टाप न बूड़ बेगअधिकाईं ॥ अस्त्र शस्त्र सबसाज सजाईं । रथी सारथिन लियेबुलाईं ॥

दोहा ॥ चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात । होत शकुन सुंदर सबहिं जो जेहि कारजजात ॥ चौपाई ॥ कलित करिवरन परी अंबारी । कहि न जात जेहि भांति संवारी ॥ चले मत्तगज घंट बिराजे । मनहुं सुभग सावन घनगाजे ॥

कृपानिवास० ॥ चढ़े नरेशसुरेश लजावैं । ऐरावतछबिलेश नपावैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ बाहन अपर अनेकबिधाना । शिविका सुभग सुखासनयाना ॥ तिनचढ़िचले बिप्रबर बृंदा । जनु तनु धरे सकल श्रुति छंदा ॥ मागध सूतबन्दिगुण गायक । चले यान चढ़ि जो जेहि लायक ॥ बेसर ऊंट वृषभ बहुजाती । चले बस्तुभरि अगणितभांती ॥ कोटिन कांवर चले कहारा । बिबिध बस्तुको बरणैपारा ॥ चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साजसमाज बनाई ॥ दोहा ॥ सबके उरनिरभरहरष पूरित पुलकशरीर। कब चलिये कब देखिये रामलषण दोउ बीर ॥ चौपाई ॥ गरजहिं गजघंटा ध्वनि घोरा । रथरव बाजिहींस चहुं ओरा ॥ निदरि घनहिं घूमरहिं निशाना । निज पराव कछु सुनहिं न काना ॥ महाभीर भूपति के द्वारे । रज होइ जात पषाण पवांरे ॥

रघुराज० दोहा ॥ खैर भैर माच्यो अवध सुंदर सजी बरात । गोधूली बेला सुभग आई अति अवदात ॥ छं० चौबोला ॥ लै गुरु सकल पुरोहित जनको भूपति सदनसिधारे । सुमिरि गौरिगिरिपति गणपति हरि सुंदर बचन उचारे ॥ महाराज सुदिवसआयो अब करहु बिजय मिथिलाको । दधि दूबा तंदुल घृत थारनदरश

परशकरि याको ॥ सुनि बशिष्ठके बचन भूपमणि गुरुपद बंदन कीन्ह्यो । सकल पुरोहित औरेन बिप्रन हेमदान बहु दीन्ह्यो ॥ दधि दुर्वा तंदुल कर परस्यो रंगनाथ कहं ध्यायउ । लखिहौंराम चारिदिनबीते असगुनि सुख न समायउ ॥ उठे चक्रवरती आसनते मंद मंद पगुधारे । पढ़त स्वस्त्ययन बिप्रमंडली स्वरयुत बेद उचारे ॥ कनक कलश धरि शशि सहस्त्रनआगे सधवानारी। करहिं मंगलामुखी गानबहु मंगल सुरन सवाँरी ॥ रतिरंभा मैनका उर्बशी सरिस चलीं नृपआगे । जय जय शोर चारिहूंओर न करहिं पौर अनुरागे ॥ गुरु बाशिष्ठआगू पगुधारे पाछे कोशल भूपा । सोहत मनहुं देवगुरु संयुत देव अधीश अनूपा ॥ यहि बिधि चारु चक्रवरती नृप चारु चौक पगुधारा । भरत शत्रुहन सजे खड़े तहँ सुंदरयुगल कुमारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । लये आरती मंगल थारी ॥ गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनँद नहिंजाइ बखाना ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ मुक्ता मंगल बरषि शुभ करहिं आरती नारि । साकेते सानंद लखि सुरमुनि सदन बिसारि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ तब सुमन्त दुइ स्यन्दन साजी । जोते हय रवि निंदकबाजी ॥ दोउरथ रुचिर भूप पहँ आने । नहिं शारद प्रतिजायँ बखाने ॥ राज समाज एक रथ साजा । दूसर तेज पुञ्ज अति भ्राजा ॥ दोहा ॥ तेहिरथ रुचिर बशिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेश । आपुचढ़े स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश ॥ चौपाई ॥ सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे । सुरगुरु संगपुरंदर जैसे ॥ करि कुल रीति बेद बिधि राऊ । देखि सबहिं सब भांति बनाऊ ॥ सुमिरि राम गुरु आयसुपाई । चले महीपति

शंख बजाई ॥ हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥

रघुराज०चौबोलाछं० ॥ भरत शत्रुसूदन सुमंतको कह्यो बोलाय नरेशा। सैन चलावहु जौन भांति हम प्रथमहिं दियो निदेशा ॥ करि अभिबंदन दिगस्यन्दन पद तिनहुंगये तुरंता। रिपुहन हय गन भरतनागगन रथगन रहे सुमंता ॥ चली बरात अवधपुरते तब करि दुंदुभी धुकारे। नौबत झरत चली नागनमहँ बरकरनाल अपारे ॥ सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगलगीता। दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन बैदेही सीता ॥ छैल छबीले राजकुवँर सब शत्रुशालकेसंगा। क्षण क्षण क्षिति महं नचतचलावहिं चंचल चारु तुरंगा ॥ मुकुट कनक कुंडलाहिय हारनपीत पोशाक सवाँरे। पटुका पाग छोर छहरे क्षितिझरै मुकुत जनु तारे ॥ कहूं धवावैं कहूं कुदावैं बाजिन राजकुमारा। झमकावैं असि कला देखावैं रिपुहनपाय इशारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भयेउ कोलाहल हय गज गाजे। ब्योम बरात बाजने बाजे ॥ सुर नर नारि सुमंगलगाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥ घंट घंट ध्वनि बरणि न जाहीं। सरों करैं पायक फहराहीं ॥ करहिं बिदूषक कौतुकनाना। हास कुशल कल गान सुजाना ॥ दोहा ॥ तुरँग नचावहिं कुँवरबर अँकनि मृदंगनिशान। नागरनट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बिधान ॥ चौपाई ॥ बनै न बरणतबनी बराता। होइँ सगुन सुंदर शुभदाता ॥ चाराचाख बाम दिशि लेहीं। मनहुँसकल मंगल कहिदेहीं ॥ दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरश सबकाहूं पावा ॥ सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सबाल आव बरनारी ॥ लोवा फिरि फिरि दरश दिखावा। सुरभी सन्मुख शि-

शुहिं पियावा ॥ मृगमाला फिरि दाहिन आई । मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई ॥ क्षेमकरी कहँ क्षेम बिशेखी । श्यामा बाम सुतरुपर देखी ॥ सन्मुख आयउदधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइबिप्र प्रबीना ॥ दोहा ॥ मंगल मय कल्याणमय अभिमत फल दातार । जनुसब सांचे होन हित भये सगुन इकबार ॥ चौपई ॥ मंगल सगुन सुगम सब ताके । सगुणब्रह्म सुंदर सुतजाके ॥ रामसरिस बरदुलहिनि सीता । समधी दशरथ जनक पुनीता ॥ सुनि असब्याह सगुन सब नांचे । अबकीन्हें बिरंचि हम सांचे ॥ इहिबिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गज गाजहिं हनहिं निशाना ॥ आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन जनक बँधाये सेतू ॥ बीच बीच बरबास बनाये । सुरपुर सरिस संपदा छाये ॥ अशन शयन बर बसन सुहाये । पावहिं सब निज निज मनभाये ॥ निति नूतन सुखलखि अनुकूले । सकलबरातिन मंदिरभूले ॥

रघुराज॰ छंदचौबोला ॥ उतै दूत जे गये अवधपुर लै बिदेह की पाती । जोरि पाणि कीन्हें पद बंदन आय तीसरी राती ॥ दूत बिलोकि बिदेह बिनोदित कहैं कुशल सब आये । कहहु कुशल कोशल भुआलकी कब एहैं सुखछाये ॥ दूतनकही खबरि तहँकी सब नृप रनिवासउराऊ । प्रीतिरीति पुनि लै बरातको बरण्यो चलनि त्वराऊ ॥ पुहुमीपति यहिपुरहि पहुँचिहैं परसौं सहित बराता । कही प्रणाम आपको बहुबिधि दशरथ बिश्व बिख्याता ॥ दशरथ दुनी दूसरोदिनकर बिभौ सरिस सुरराजा । का कहिये तापर ताकेसुत भये लषण रघुराजा ॥ राउरि कुशल पूंछि कोशलपति हमहिं बहुत सतकारे । तेहिदिन दुपहर हमहिं बिदाकरि सांझ आप पगुधारे ॥ प्रथमबास सरयूतटह्वैहै दूसर गंडक तीरा ।

तृतियबास इतते युग योजन परेउ मिलन मतिधीरा ॥ नाथ कृपा हमपर कीन्हें अति दीन्हें अवध पठाई। अति अभिराम रामपुर देखेउ सुखमा बरणि न जाई ॥

संग्रह० दोहा॥ सुनि दूतनके बचनबर मिथिलापति हरषाय। अति अमोल पटभूषण दिय तिनको मँगवाय ॥

रघुराज०छंदचौबोला ॥ इतैबरात चली रघुकुल की रामदरश अभिलाषी। लषणरामको लखबकालिह हम चले परस्पर भाषी ॥ आनँद बिबश होतमग बिभ्रम संभ्रमभाषन माहीं। को बरणै दशरथ अनंद अब रामहिं ब्याहन जाहीं ॥ आठपहरभे आठ युगनसम कबपहुँचैं मिथिलाको। बिश्वामित्र बिदेह सहित कब देखहिं रामललाको ॥ अतिउत्साहित उठत आशुपद ठमकति क्षणकनछाया। हय गजरथ पैदरसम जाते तदपि न पंथसिराया॥ जे याचतयाचकजगतीके जगतीपति पथमाहीं। तेयाचकपुनिहोत अयाचक याचत पुनिजगनाहीं ॥ धायधाय देशनके बासी देखत आय बराता। पूछत प्रथमहिं राम लषणके पिताकौन बिख्याता॥ जाके पूत सपूत बांकुरे तासुदरशअघहारी। तृणसों जिन त्रिपुरारि धनुष दलि ब्याहत जनक दुलारी ॥ मारि ताड़ुका मुनिमष राख्यो गौतमकी तियतारी। सुनि नृप कहत यदपि सतपै मोहिं लगति हँसी असखारी ॥ मिथिलादेश प्रवेश नरेश कियो बरात लै भारी। तब ते हँसि हँसि हुलसि हुलसि जन देत माधुरी गारी॥ मंगलगान करत युवती जुरि होहिं पंथमहँ ठाढ़ी। सदल दीपधरि कलश शीशपर बरदेखन रतिबाढ़ी ॥ तेलखिभरत शत्रुशालहुको सुंदर दूलह कहहीं। कोउ कह दोउ दूलह सहिबाले बर।मिथिलापुर अहहीं ॥ अतिहि त्वरात प्रयात बरात गई जब कमला तीरा। तहँ ते जनकनगर युगयोजन जनक सचिव तहँ धीरा ॥ जोरि पाणि बोलेउ सुमन्तसों इत सबभांति सुपासा। अब मिथिलापुर है युगयोजन करै बरात नेवासा ॥ जाय सुमन्तकह्यो भूपतिसों नृपकीन्हों स्वीकारा। कमलातीरपरे सब

डेरा बन रसाल मनहारा ॥ तुंग मेरु मंदरसम सुंदर भूपति सिविर सोहाये । बिमल बिख्यात सोहात कनातन बड बितान छबि छाये ॥

संग्रह०दोहा ॥ मिथिलाके परिचर तहां सबकर किये सत्कार । सकल सराहत जनकके अतिउत्तम व्यवहार ॥

रघुराज०छं०चौबोला ॥ करि भोजन सुखशयन अवध नृप उठेउ रहे दिन यामा । सभामध्य मंडित धरणीपति भये सुपूरण कामा ॥ प्रचुर पठै परिचारक दलमहँ खबरि बरातिन लीन्हीं । आवनकी पुनि अशन शयनकी सबन खातिरी कीन्हीं ॥ सबैबराती सुखी सकल बिधि रंच बिसंच न पाये । धामन आय धरणिपति को अस बिस्तर बचन सुनाये ॥ कौशलपाल तुरन्त सुमन्तहि बोलि कही अस बानी । सजवावहु बरात आजुहिते काल्हि होनि अगवानी ॥ सचिव काल्हि मिथिलाधिराजको मिलि मुनिराज समेतू । सानुज कौशल्यानंदन लखि मिटी बिरह दुखजेतू ॥ बन बन बागत बहुत दिननते कृशतनु ह्वैहै प्यारे । करत रह्यो ह्वैहै को सोपति दूधबदन दोउबारे ॥ छोड़तरहे न क्षणभरि जिनको खेलत सांझ सकारे । एक मास बीत्यो बिन देखे राम लषण सुकुमारे ॥ कह्यो सुमन्त जोरकर कंजन धन्यधरणि अवधेशा । राम लषण जिनके कुमार जग उदित दिनेश निशेशा ॥ राम बिवाह बिलोकि बिलोचन ह्वैहैं सफल हमारे । को अस जेहि नहिं राम प्राण प्रिय एकोबार निहारे ॥ करिकै बिदा सभासद वृन्दन उठेउ भूप संध्यासी । दिनकर निरखि अस्तगिरि गमनत दीन्हो अर्घ हुलासी ॥ हवनादिककरि नित्य नेम सब अतिथिपूजिश्रद्धयालू । रंगनाथको ध्यानधरयो कहि पुजवहु आश दयालू ॥ सकल शोध लै भूप बरातिन कियो शयन महराजा । देखे सपनआय कौशिक मुनि दिये लषण रघुराजा ॥ पुनि जनु कौशिक अरु बशिष्ठमुनि बोले बचन उछाही । जैहौं अवश अवधपति मोदित चारिउ कुवँरन ब्याही ॥ सीताराम बिवाह बिदित जग औरहु सुनहुभु-

आला । द्वितिय और सो नाम उर्मिला जनक भूप लघुबाला ॥ तासु बिवाह लषणको होई कुशध्वज लघु नृप भ्राता । तेहि तनया मांडवि श्रुतिकीरति कीरति छबि बिख्याता ॥ करिहैं भरत बिवाह मांडवी श्रुतिकीरति रिपुशालू । यहि विधि चारिहु कुवँर व्याहि जब चलिहौ अवधभुआलू ॥ कुशल सहित कोशलपुर जैहौ कोशलनाथ उदारा । ऐसो सपन देखि रजनी महँ नृपजगि कियो बिचारा ॥ जबते सपनलख्यो जगतीपति तबते नींद न आई । जाय याम बाकी निशि गुरुपहँ दीन्हो सपन सुनाई ॥ कहबशिष्ठकछु शंककरहु जनि देहु देवाय नगारा । चलहु बरात साजि मिथिलापुर सपनभयो सुखसारा ॥ सजन सैन हित दिय निदेश नृप गमन दुंदुभी बाजे । सैनिक सकल बाजि गज स्यन्दन अतिहि अनंदन साजे ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबारहवाँप्रकरणसमाप्तः १२ ॥

श्री सीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

चौदहवांप्रकरण ॥

जनकपुरमें बरातका आगमन अवधपुरसे ॥

श्री तुलसी० दोहा ॥ आवत जानि बरातबर सुनि गहगहे निशान। सजि गजरथ पदचर तुरँग लेन चले अगवान ॥ चौपाई ॥ कनक कलश कल कोपरथारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥ भरे सुधासम सब पकवाना। भांति भांति नहिंजाइ बखाना ॥ फल अनेकबर बस्तु सुहाई। हरषि भेंट हित भूपपठाई ॥ भूषण बसन महामणि नाना। खग मृग हय गय बहुबिधि याना॥ मंगल सगुण सुगंध सुहाई। बहुत भांति महिपाल पठाई ॥ दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि कांवरि चले कहारा ॥

रघुराज०त्रिभंगीछं० ॥ फहरन्त निशाना नदत निशाना गायक गाना करतचले। सज्जन मतिमाना हिय हुलसाना किये पयाना भाउभले ॥ रथरतन सवाँरो अति बिस्तारो बाजिन चारो चारुमहा। राकाशशि छत्रा परमबिचित्रा आतपपत्रा राचिरहा॥ तापर मिथिलेशा चढ़ेउ सुबेशा मनहुं सुरेशा सोहिरह्यो। लक्ष्मी

निधि प्यारो राजकुमारो तुरँगसवारो गैलगह्यो ॥ पुरते छबि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चाकनकी । बहुबजे सोहावन बाजन पावन जिनध्वनि छावन नाकनकी ॥ दोउ नृपन मिलापा मोदकलापा देव अलापा करतसबै । देखनके आसी नाकनिबासी गुनि सुखरासी ठानि जबै ॥ सुरचढ़े बिमानन बहुबिधि आनन दशहुँ दिशानन नभआये । बरषैं बहुफूला गतसबशूला मंगल मूला यशगाये ॥ उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कमबेशा महराजा । दुहुँ पुण्यहुजागी जगबडभागी समअनुरागी छबिछाजा ॥ दश शुतुरसवारे जनकहँकारे बचनउचारे तुम आवो । ममअरजसुनावो नृपद्रुत आवो बिलंब बिहावो सुख छावो ॥ द्रुतधावन धाये नृपदल आये बचनसुनाये दशरथ को । कहि जनक प्रणामा दरशनकामा चलियहिजामा गहिपथको ॥ ठाढ़े सुखमानी हितअगवानी आंखिलोभानी दरशनको । लै बिशद बराता आवहुताता अवछनआता हरषनको ॥ सुनि मैथिल बैना भरिउर चैना सजल सुनैना अवध धनी । कहबचन तुरंता सुनहु सुमंता नहिं बिलवंता चलै अनी ॥ दोहा ॥ करहु सेनकोशीघ्रही दुयाचंदआकार । हमअरुगुरु मधिमें रहब अरुयुग राजकुमार ॥ आगे पैदर शुतुरयुत पुनि बाजी रथफेर ॥ पुनि मतंग मंडल चलै करहुव्यूह बिनदेर । शासनपाय सुमंत तहँ तैसहिसैनबनाय । मिथिलाओरहि शीघ्रगतिदियो बरातचलाय ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥अगवानन जबदीख बराता । उर आनंद पुलकभर गाता ॥ देखिबनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन हने निशाना ॥

कबित्त ॥ एक ओर मंडली किशोर निमिबंशिनकी बिरद बिचित्र शस्त्र लखि न सकायको । शूरशिरताज राजमान रघुबंशिनमें शीलवंत ठाकुर न दूसरो सुभायको ॥ छरीदार जांगरे नकीबनकी भीरभारी नीतिगुण भूषित बिभूति अनुभायको । मन्दमन्द ल्यावत सुजन सँग मरोरवारो चतुर सुजात बेटा ति-

रहुतिरायको ॥ चमू चतुरंग मध्य राजत गयंद गोल गाजत बलाहकसे भारी रोर शोरकी। मत्त शिरताज गजराज राज भूषण सों जटित जवाहिर जंजीर जंग जोरकी॥ भूप शिरताजको कुमार शिरताज लिये लसत गरूरवारी चलनि मरोरकी। एक ओर बाहिनी बिचित्र निमिबंशिनकी एक ओर सेना लाल अवधकिशोरकी॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ हरषि परस्पर मिलन हित कछुकचले बगमेल। जनु आनन्द समुद्रदुइ मिलतबिहाय सुबेल॥

रघुराज०चौबोलाछं०॥ फहरनि नवल निशाननकी छबि तुंग तरंग समाना। राजी गज बाजीनकीराजो महाजंतु बिधिनाना॥ मिलत युगल चतुरंग उमंगन बिलसै मनहुं अकाशा। घनमंडल भल युगल अखंडल मिलतआय दोहुं आशा॥ मानहुं लै भारी तारादल तारापति हुलसायो। लेनहेत अगवानी आशुहि अंशुमानकी आयो॥ इत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रहसम सब रघुबंशी। उत महीप मैथिल मयंकसम उड़गणसम निमिबंशी॥ भूमंडल सम सजी सैन मिलि निमिकुल रघुकुल वारी। इत कोशलपति मिथिलापतिको बड़ अरु छोट उचारी॥ छैल छबीले राजकुवँर कोउ तरलतुरंग धवाई। जनकहि करहिं प्रणाम हर्ष बश बाजी बेस नचाई॥ तैसहि कोउ निमिबंश रँगीले हर बर अर्ब उड़ाई। अभिबंदन करि अजनन्दनको मिलहिं सैन निज जाई॥ मिले तुरंगमसों तुरंगबर मिले मतङ्ग मतंगा। मिले पैदरनसों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा॥ प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना। इतते कोशलपाल गयउ तहँ उत मिथिलेश महाना॥ गुरु बशिष्ठ अरु सतानंद मुनि भरत शत्रुहन दोऊ। चढ़े तुरंग कुंवर लक्ष्मीनिधि आयगयउ तहँ सोऊ॥ दशरथ जनक नयन जुरिगे जब दोउ अभिबंदन कीन्हे। दोउ पंकज पाणिपसारि मिलायलूटि सुखलीन्हे॥ कियोप्रणाम बिदेह बशिष्ठहिं पूछेउ कुशलसुखारी। सतानन्द पद दशरथबंदे छै

पगपाणि पसारी ॥ भरत कुंवर रिपुसूदन संयुत जनकहिं किये प्रणामा। लक्ष्मीनिधि कोशलपति बंद लै अपनो मुख नामा॥ पुनि बशिष्ठ के चरणगहे चलि गौतम सुवन सुजाना। रघुकुल गुरुदीन्ह्यो अशीष तेहि पाये मोद महाना॥ सतानन्द के चरण गहे पुनि भरत शत्रुहन दोऊ। आशिष दीन्हेउ गौतम के सुत भये मगन मुद ओऊ॥ दोहा ॥ पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन किये बशिष्ठ प्रणाम। आशिष दीन्हेउ ब्रह्मसुत होय पूर मनकाम॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदितदेव दुंदुभी बजावहिं॥

रघुराज० ॥ पूछि परस्पर सब कुशलाई। उभै भूप मुदलहे महाई॥ कहे बिदेह बहुरि करजोरी। तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरी॥ तुम तो कुशल रूप महराजा। धर्म धुरंधर पुण्यदराजा॥

संग्रह० ॥ असकहि कोशलपतिसों बानी। भूप बिदेह शील गुणखानी॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बस्तु सकल राखी नृप आगे। बिनय कीन्हतिन्ह अतिअनुरागे॥ प्रेमसमेतराउ सबलीन्हा। भै बकसीस याचकन दीन्हा॥

संग्रह० ॥ पुनिकह जनक दोउ करजोरी। हृदय मांह अति प्रीति न थोरी॥

रघुराज० ॥ सबबिधि मोहिं धन्यकरि दीन्ह्यो। मिथिला नगर आगमन कीन्ह्यो॥ टूटीफूटी मोरि मडैया। तिरहुतिके सब लोग लोगैया॥ तिन्हैं जानवी अवध बसैया। सत्यकहौं करि धर्म दोहैया॥ सुनि मिथिलापति बचन सुखारे। कहदशरथ दृग बहत पनारे॥ जनकराज तुमहौ सब लायक। कसन कहौ अस बचन सोहायक॥ ज्ञानवान बिज्ञान स्वरूपा। बिश्व बिरागी भक्ति अनूपा॥ दानि शिरोमणि निमिकुल भानू। कहँलगि करिय आप गुणगानू॥ मोपर कृपाकीन मिथिलेशू। सकल भांति हरि

लीन कलेशू ॥ दोहा ॥ आये कौशिक संगमें मेरे युगल कुमार । लहे सुयशजग जोकछुक तौनप्रताप तुम्हार ॥ चौपाई ॥ कह अवधेशबसे दोउभाई । कौनहेत लाये न लिवाई ॥ सुनत बिदेह कह्यो करजोरी । दोउ मर्य्यादा राखीमोरी ॥ जगपालक बालकनृप तेरे । रिपुघालक मालकहैं मेरे ॥ पूत सपूतनकी बड़बारी । सकैं न शेश गणेश उचारी ॥ राउर सुवन सहज जिन जाने । त्रिभुवनमहँ तिन होत बखाने ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ सुधा सरिस बर गिरा सुहाई । मिथिलापति अतिशय हुलसाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करिपूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहँ चले लिवाई ॥

रघुराज० ॥ दशरथ लक्ष्मीनिधि बोलवाई । लिये आपनेयान चढ़ाई ॥ जनक बोलाय भरत रिपुशाले । निज रथ लिये चढ़ाय उताले॥उभय महीपनके युगजाना । मिले बरोबरि कीन्हपयाना ॥ गुरु बशिष्ठ अरु गौतम नंदन । उभय ओर चढ़ि राजत स्यन्दन ॥ दोहा ॥ निमिबंशी रघुबंशी अरिध्वंशी रणधीर । पूरण जगत प्रशंसी मिले बीरसों बीर ॥ चौपाई ॥ चली चारु जनवास बराता । सो सुख यक मुख नहिं कहिजाता ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ देखत मिथिलापुरकी शोभा । जो बिलोकि मुनिवर मन लोभा ॥

रघुराज० ॥ नगर निकट ह्वै चली बराता । लखन हेत पुरबासिन आता ॥ यूथयूथ मारग महँ ठाढ़े । नर नारी आनँदरस बाढ़े ॥ जनकनगर महँ फहली बाता । जनवासे कहँ जाति बराता ॥ मंद मंद उत भूपति दोऊ । दोऊ सैन बीर सबकोऊ॥ निरखत नगर जात जनवासा । करत बिबिध बिधि हास बिलासा ॥ भरत शत्रुसूदन दोउ भाई । लरिकाई बश अतिअतुराई ॥ देहु जनक नृप हमहिं बताई । केहि थल बसत लषण रघुराई ॥ राजकुँवर के बचन सोहाने । सुनत बिदेह हरषि मुसक्याने ॥

चूमि बदन बोले सुनुताता। यहि पुर बसत युगल तवभ्राता॥ लखिहौ आजु अवशि निज भाई। कौशिक सहित लषण रघुराई॥ सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा। कह्यो जनकसों अवध भुआरा॥ सुंदर भई पुरी निरमाना। अलका अमरावती समाना॥ आपु सरिस हरिदास प्रधाना। बसै सहित जहँ ज्ञान बिज्ञाना॥ है बैकुंठ सरिस पुर सोई। आवहिं सदा संत सब कोई॥ दोहा॥ धायधाय देखैं सबै मिथिलापुर नरनारि। बारहिबार बखानहीं दशरथभाग उचारि॥ चौपाई॥ धन्य धन्य कौशल्या रानी। धन्य धन्य दशरथ गुणखानी॥ जाके राम सरिस सुत भयऊ। अबकाभव बैभवरहिगयऊ॥ अस सब कहहिं बिबिध बिधि बानी। दशरथ भाग न जात बखानी॥ पुनि कोउ कहहिं परम बिज्ञानी। परयो हमहिं सबको अस जानी॥ जनक सुकृत मूरति बैदेही। जासु प्रभाव बिदित नहिं केही॥ हम सब धन्य जनकपुरबासी। लखे भूप दोउ पुण्य प्रकासी॥ कोउ तिय कहै सुनै सखि बानी। सुंदर जोरी जस मुनि आनी॥ तैसहि युगल कुवँर अतिलोने। दशरथ सँग आये मिठ लोने॥ और हजारन राजकुमारे। तिनके सरिस न परैं निहारे॥ बिश्वभरे की सुंदरताई। लीन्ही दशरथ कुवँर चोराई॥ यहि बिधि करहिं परस्पर बाता। सुख न समात बिलोकि बराता॥ बरषहिं सुमन ससुमन अपारा। चढ़े बिमानन देहिं नगारा॥ दोहा॥ जय मिथिलापति अवधपति मच्यो गगन महिशोर। उपर अमर अधजन नगर रह्यो न बाकी ठोर॥ चौपाई॥ करत बराती हासबिलासा॥ आये सकल सुखद जनवासा॥

संग्रह०॥ तजि तजि बाहन खड़ी समाजा। रथते उतरे कोशलराजा॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥ बसन बिचित्र पांवड़े परहीं। देखि धनद धन मद परिहरहीं॥ अति सुन्दर दीन्हेउ जन-

वासा । जहँ सब कहँ सब भांति सुपासा ॥ जानी सिय बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगट जनाई ॥ हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भूप पहुनई करन पठाई ॥ दोहा ॥ ऋधि सिधि सिय आयसु अकनि गई जहां जनवास । लिये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास ॥

रघुराज० ॥ निरखे सब अनूप जनवासा । सत्यसत्य जनु स्वर्ग बिलासा ॥ बन्यो राजमंदिर अतिभारी । शक्र सदन सम जासु तयारी ॥ महा मेरु मंदर सम तुङ्गा । चमकहिं मनहुं हिमाचल शृङ्गा ॥ सभा सदन अतिबन्यो बिशाला । शयन सदन सुंदर शशिशाला ॥ मज्जन भोजन भवन बिभागा । चहुं कित चारु तड़ाग सुबागा ॥ कल कंचनकी कलित कियारी । झरहिं फुहारन सुरभित बारी ॥ परसि भूमि लतिका लहराहीं । फूलि फूलि परमलपसराहीं ॥ लता भवन बर लता बिताना । फूल सकल ऋतुके फल नाना ॥ कुंजन कुंजन गुञ्जहिं भौंरा । कलरव करहिं बिहग चहुंओरा ॥ तन्यौ चौकमहँ बसन बिताना । कनक रतन रंजित बिधिनाना ॥ दोहा ॥ चारिहु भाइनके भवन राजभवन विस्तार । भिन्नराज कारज भवन बिस्तरकोषागार ॥ चौपाई ॥ गज शाला बहुबाजिन शाला । सचिव सदनभट सदन बिशाला ॥ चौहट हाट बनी हाटककी । मरजा आमन फाटककी ॥ कनक कपाटन कलित दुआरा । परिजन भवन परम बिस्तारा ॥ कमलातीर मनोहर बासा । योजन युगल बन्यो जनवासा ॥ सीरी सघन सुखद अमराई । शाखा क्षिति छ्वैछ्वै छबि छाई ॥ अति उतंग चहुं ओर देवाला । पुरइव गोपुर बन्यो बिशाला ॥ सचिव सभासद भट सरदारा । सबके पृथकहिपृथक् अगारा ॥ कहे जनक कोशलपति पाहीं । यदपि रावरे लायक नाहीं ॥ तदपि निवास करहु

नृपराई। गुनि निजसदन सहिय सकराई॥ जो कछु बन्यो सो दिय बनवाई। नाथ देखावत लाजहि आई॥ कह्यो अवधपति हँसि सुखमोई। याते अधिक बिकुंठहि होई॥ दोहा॥ भलरचना कीन्ही नृपति दिय सुरलोक बनाय। बसबइतै हमसब सुखि आप बसी गृहजाय॥ चौपाई॥ जनकबेगि अवगणक बोलाई। तनक चित्तदै लगन शोधाई॥ गुरु बशिष्ठ गौतममुनि काही। ज्योतिषके आचारज आही॥ सतानंद आदिक मुनिराई। रचहु समाज आज उतजाई॥ करि सिद्धांत लगन महिपाला। फेरि करहु व्योहार बिशाला॥ याचक बहुयाचनबिधि कीना। दान होत दाता आधीना॥ तुम दाता बिदेहमहिपाला॥ हम राउर याचक यहिकाला॥ आये अमित नरेश कुमारा। अब सबके नृप आप अधारा॥ दानि शिरोमणि भूप बिदेहू। मिटिहैं अवशि सकल संदेहू॥ सुनत सयुक्ति अवधपति बानी। भूप बिदेह महा मुदमानी॥ बोलेउ मंदमंद मुसक्याई। काछति जहँबशिष्ठ मुनिराई। असकहि मांगि बिदा मिथिलेशा। बंदनकरि पुनि चलेउ निबेशा॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥ निज निज बासबिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भांती॥ बिभव भेद कछु काहुन जाना। सकल जनककर करहिं बखाना॥ सिय महिमा रघुनायकजानी। हरषे हृदय हेतु पहिचानी॥

रघुराज० ॥ सुखी बरात बसी जनवासा। लहे सकल जनु स्वर्ग बिलासा॥ जाय निवास बिदेह उदारा। पठये बिबिध भांति सतकारा॥ दोहा॥ सुमति सचिव गौतम सुवन ल्याये सब सतकार। देहु बरातिन बासवर यथायोग्य आगार॥ कनक कलश कोपर बहुथारी। कुंड कुंभ मंजूषा भारी॥ भरि भरि भोजन पान प्रकारा। सुधा सरिस पकवान अपारा॥ पुहुप बिभूषण रतन समेतू। बिबिध भांति फल सुधा निकेतू॥ बि-

बिध भांतिकी बनी मिठाई । बस्तु अमित घृत पक्क सोहाई ॥ बिबिध भांतिके रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य बर पेय प्रकारा ॥ भोजन योग बस्तु चहुं ओरा । जे नरलोक मांह शिरमोरा ॥ जौन बस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जेवहिं लोकहि माहीं ॥ सकल बरातिन बसन अपारा । रह्यो जौनजस लघु बड़बारा ॥ कनक रजत रंजित जरतारी । तन धारक पत मुकुत किनारी॥जे लखि भूपति देवसिहाहीं । खानपान धारन मनमाहीं ॥ यथायोग जस जौन बराती । अति उत्तम नृपकहँ सब भांती ॥ दोहा ॥ मंडप कुसुमन के बिबिध पुहुप फरस बिस्तार । और पदारथ मोदप्रद कहँलगकरौं उचार॥ चौपाई ॥भरि भरि कांवर सुघरकहारा । तिमि भरि शकटन ऊंट अपारा । सतानंद अरु सचिव लेवाई । कोशल-पालहि नजरकराई ॥ दीन्हे पूरि बरातिन काहीं । रही कछुक अभिलाषा नाहीं ॥ भूपतिहेत पदारथ जेतें । सादर लै बांटे नृप तेते ॥ बिश्व उदार शिरोमणि राऊ । लघुबडजान्यो एकहिभाऊ ॥ सतानंद अरु मंत्रि सुदामन । आये अवधनाथ ढिग पावन ॥ तिन आगे चूरा दधि राखे । बोले बचन जनक जस भाखे ॥ जोरि पाणि युग नावत शीशा । जनक कह्यो सुनु अवधअधीशा ॥ दधि चूरा उपहार हमारा । लेहु कृपा करि अवधभुआरा ॥ अवध बिभव बासव नहिं तूलै । किमि सतकारकरौं सुखमूलै ॥ जो कछु बिभव नरेश हमारा । सोसबअहै बिशेषि तुम्हारा ॥ सुनत बिदेह बचन नृपराई । दधि चूरा लै शीश चढ़ाई ॥

संग्रह० ॥ प्रीति रीति दशरथकी जोई । बरणत लोग मुदित सबकोई ॥ उतै रामसे खबरि जनाये । लैबरातकोशलपतिआये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पितु आगमनसुनतदोउभाई । हृदय न अति आनंद समाई ॥ सकुचित कहि न सकत गुरु पाहीं । पितु दरशन लालच मन माहीं ॥ बिश्वामित्र बिनय बहु देखी । उपजा उर सन्तोष बिशेखी ॥

संग्रह० ॥ मध्यदीव समय शुभजानी । राम लषण सँग लै मुनि ज्ञानी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये । पुलकअंग लोचन जल छाये ॥ चले जहां दशरथ जनवासे । मनहुँ सरोवर तके पियासे ॥

रघुराज० दोहा ॥ भोजनकाल बिचारिके उठन चहेउ नरनाह । हल्लापरयो बरातमें यकबारहि तेहिकाल ॥ राम लषण लै संग में दशरथ दरशन हेत । आवत बिश्वामित्र अब तुरित गाधिकुल केत ॥ कबित्त ॥ भोजन करत रह्यो भोजन बिसारि धाये पान को करत जोई पान बिसरायो है । सोवतरह्यो जो वैसेही सो उठिधाये मज्जन करत धाये नीके न नहायो है ॥ करत हतौ जोकाम जौन जौन जोईजन परत अवाज कान तौनही भुलायोहै । सकल बरातमाहिं चारोंओर शोर छायो रघुराज आये आज रघुराज आयोहै ॥ रामसखा जेते रहैं तेते सब धाय धाय नगरकढ़त राम लषणको लीन्हेहैं । नामलैलै आपने बताय निज काम धाम बापको बताय कहैं आप हमैं चीन्हेहैं ॥ मुनिमख राखिबेको जबते कढ़ेहो मीतहमको न काहे एक पाती पठैदीन्हेहैं ॥ रघुराज ब्याहहोत ह्वैगई बेलंदआंखैं मिथिला निवासिनि मिताई नई कीन्हेहैं ॥ खाये एकसाथ अरुखेले एकसाथहीमें साथसाथ शैनकीन्हे सैरत्योंशिकारको । मातुमानि एकभेदनाहिंराखेनेकटारे नाहिं कीन्हें टेक ना बिबेकबार बार को ॥ अब दिन दशतें निकरि अवधूत संग मिलत मिजाज नहिं कौशला कुमार को । टोरि कै पुरानी धनुहीको आज रघुराज भूलिगै हमारी सारी यारी प्यारे यारको ॥ दोहा ॥ प्रेम लपेटे अटपटे सुनिसखानके बैन । मुनि सकोचबश नहिं भनत बिहँसत राजिवनैन ॥ कीन्ह्यो शयन प्रवेशजब राम लषण मुनिसंग । जुरे अवधबासी सकल मच्यो महासुख रंग ॥ चौपाई ॥ परहिं चरणकोउ अवध निवासी । देहिं प्रदक्षिण कोउ सुखरासी ॥ चूमहिं बदन मदनछबिवारी । सालि

सुखात लही जनु बारी ॥ गद्गद गर रोमांचित देहा । बचन कढ़त नहिं अधिक सनेहा ॥ निरखहिं राम लषण मुख चंदा । बिते कल्प मनु मिल्यो अनंदा । कह्यो नृपहि कोउ भरयोउमंगा। आवत राम लषण मुनिसंगा ॥ भईभीर दशरथके द्वारे । निकसत जन करि जोर निकारे ॥ भरत शत्रुहन अति अतुराई । आयगये सुनि राम अवाई ॥ आयोतहँ निषादपति आसू । बाढ्यो रघुपति दरश हुलासू ॥ आये रघुकुल राजकुमारा । राम लषण लालसा अपारा ॥ राम लषणकी सुनत अवाई । गुरुबशिष्ठ आयेहरषाई ॥ गुरुबशिष्ठ अरु कोशलपाला । सहित निषाद भरत रिपुशाला ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत । उठेउ हरषि सुखसिंधुमहँ चलेथाहसीलेत ॥

रघुराज०चौपाई ॥ इत ते करि बशिष्ठ मुनि आगे । राज समाज गई अनुरागे ॥ उतते आये गाधि कुमारे । सहित युगल दशरत्थ दुलारे ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठहि देखी । कियो प्रणाम महामुद लेखी ॥ पूंछिपरस्पर मुनि कुशलाई । बारहिंबार मिलेसुखपाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा । बारबार पद रज धरि शीशा ॥ कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि अशीश पूँछी कुशलाई ॥

रघुराज० ॥ गद्गद कंठ कढ़त नहिंबाता । खड़े जोरि नृपकर जलजाता ॥ पूंछत कुशल पुलकि मुनिनाहा । बहत भूप दृग अम्बु प्रबाहा ॥ दोहा ॥ धनुषयज्ञ पुत्रेष्टिकरि कौशिक यज्ञकुमार । आय आजुहीं जनुदिये युगल कुमार उदार ॥ चौपाई ॥ जस तस कै नृप सुरति सम्हारी । बोलेउ बचन बहत दृगबारी ॥ नाथ कृपा फल मोहिं दरशायो । राम लषण मैं आजुहि पायो ॥ जो कछु कीरति सुगति बड़ाई । सुनियत राम लषण इतपाई ॥ सो तुव पद पंकज प्रभुताई । द्वितिय भांति नहिं सजतिबड़ाई ॥ तुम समान को दीनदयाला । दीन्हेउ मोहिं देखाय दोउलाला ॥

तापर सुयश प्रताप बड़ाई। जनकबंशमहँ व्याहकराई ॥ तुम से सज्जन जे जगमाहीं। तिनकहँ यह अचरज कछु नाहीं ॥ असकहि पुनि पुनि बंदतचरणा। दशरथ हर्ष जायनहिं बरणा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि दण्डवत करत दोउभाई। देखि नृपति उर सुख न समाई ॥ सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे। मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥

रघुराज० ॥ अज महेश ध्यावत जेहिकाहीं। शेष बरणि यश पार न जाहीं ॥ नेति नेति जेहि वेद बखाना। वेद बिबुध मुनि कारक जाना ॥ दोहा ॥ ताहि गोद लै अवधपति नैनन नीर बहाय। कहत गाधिसुतकी कृपा गये पूत मैं पाय ॥ चौपाई ॥ गद्गद गर कछु बोलि न आवत। पुनि पुनि तन फल पनसबनावत ॥ मनहुँ बिरंचि खेलावन हेतू। लिये अंक रबि शशि सुख सेतू ॥ मनुबत्सल रस परमनिशंका। कीन्ह्यो दास्य शृंगारहि अंका ॥ मनु कश्यप अश्वनी कुमारा। लीन्हेअंक अनंद अपारा ॥ चूमत मुख सूंघत पुनि शीशा ॥ गद्गद गर नहिं बदत महीशा। सुमनस सुमन बरषि झरिलाये। दून दुंदुभी दिशि न बजाये ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि बशिष्ठ पद शिर तिन नाये। प्रेम मुदित मुनिवर उरलाये ॥

रघुराज० ॥ आशिष दै बशिष्ठ मुनिराई। लिये दुहुँन कहँ अंक उठाई। चूमि बदन सूंघेउ पुनि शीशा। चिरजीवहु अस दीन अशीशा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बिप्र वृन्द बन्दे दुहुँ भाई। मन भावत अशीश तिन पाई ॥ भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा। लिये उठाइ लाइउर रामा ॥ हरषे लषण देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

रघुराज० ॥ रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई। कौशिक चरण गहे हरषाई ॥ गाधिसुवन दिय आशिरबादा। सुखी रहौध्रुव भुव

मरयादा ॥ दोहा ॥ सखा सखा कहि दौरि पुनि मिले निषादहि राम । मिलन देखि रवि रथ रुक्यो भयो दून सो याम ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ पुरजन परिजन जाति जन याचक मन्त्री मीत । मिले यथा बिधि सबहिं प्रभु परम कृपालु बिनीत ॥

रघुराज० ॥ यहि बिधि सबसों मिलि तहां पितु मुनि बंधु समेत । जाय बितान तरे मुदित बैठेउ कृपानिकेत ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाय बखानी ॥

रघुराज० ॥ कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु बशिष्ठ कौशिक बैठाये ॥ चापत चरण महीपति बैठे । मानहुं मोह महोदधि पैठे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धनुधर्मादिक तनु धारी ॥

रघुनाथदास० ॥ दहिने दिशि हैं लक्ष्मण रामा । बायें भरत शत्रुहन नामा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुतन सहित दशरथ कहँ देखी । मुदित नगर नर नारि बिशेखी ॥

रघुनाथदास० ॥ धन्य भूप भल देव मनाये । जो सुत चारि मनोहर पाये ॥

संग्रह०॥ रामनिकट बरराजकुमारे । मानहुं मदन रूपबहुधारे ॥

रघुराज० ॥ देखत सुछबि लहत अहलादा । सायुध ठाढ़ो राज निषादा ॥ जबते राम लषण दोउ भाई । किये प्रवेश बरातहि आई ॥ जबते बिरह ताप दुखदाई । मिटे मेघ जिमि मारुतपाई ॥ सबके हिय नहिं हर्ष समाई । दशरथ दशा जाय किमिगाई ॥ जस तसकै धरि धीरज राजा । बोलेउ कौशिकसों तजिलाजा ॥ गृहते मोहिं बोलाय पठायो । प्रभु शासन शिरधरि इत आयो ॥

चारिहु कुवँर रावरे केरे । मैं नहिं जानहुं हैं मुनि मेरे ॥ उचित होय सो शासन दीजै । मोहिं अपनो सेवक गुनि लीजै ॥ पालै पोषै जो जेहि काहीं । सो ताको पितु संशयनाहीं ॥ दोहा ॥ राज राज मुनिके बचन सुनि कौशिक मुसक्याय । सुखसानी बानी कही मनमानी मुनिराय ॥ मख रक्षणहित मांगि मैं लायों युगल कुमार । तुमहिं समर्पण करतहौं लीजे अवध भुआर ॥ चौपाई ॥ असकहि राम लषण गहिहाथा । सौंपेउ नृपहि मुदित मुनिनाथा ॥ दशरथ कह्यो न मैं अब लैहौं । दीन बस्तु नहिं घरलैजैहौं॥ राउर सुत रह राउर पासा । आप कृपाबश मोहिं न त्रासा ॥ मुनि मुसुकाय कही तब बानी । राउर सुत सबके सुखदानी ॥ सबके निकट भिन्न सबहीते । कबहुं न टरतहमारे हीते । को अस जगमहँ भूप सुजाना । इनहिंछोड़ि लागै प्रिय आना ॥ जगतमहाप्रिय जगहितकारी । जे इन लखत तासु हृदचारी ॥ धन्यधन्य तुव अवध अधीशा । पाये सुत दायाजगदीशा ॥ अब यह शासन मम सुनिलीजै । चारिहु कुँवर संगमहँ कीजै॥भोजन भवन तुरंत सिधारी । अशन करहु लैपुत्रनचारी॥

संग्रह० ॥ अस सुनि गाधि सुवनकी बानी । दशरथ भूप परम सुखमानी ॥ सतानंद अरु सब मंत्रीगन । बिदा होन चाह्यो तिनके मन ॥

रघुराज०दोहा ॥ सादर बोले अवधपति कहि प्रणाम मुनि मोर । पुनि बिदेहसों अस कह्यो सकल अनुग्रह तोर ॥ अहहु महात्मा ज्ञानिबर निमिकुल पंकज भानु । यहप्रसाद सब रावरो भवभागवत प्रधानु ॥

संग्रह०चौपाई ॥ बिनय प्रेम दशरथको जोई । करत प्रशंसाअति सब कोई ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ सुमन बरषि सुर हनहिं निशाना । नाक नटी नाचहिं करि गाना ॥ सतानंद अरु विप्र

सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥ सहित बरात राउसनमाना । आयसु मांगि फिरे अगवाना ॥

संग्रह० ॥ कहमुनि हमहूं चहत सिधाये । उठि नृपचरणन महँ शिरनाये ॥ ऋषि अशीशदीन्हेउ मतिधामा । होवहु सिद्ध सकल मनकामा ॥

रघुराज० ॥ हम बशिष्ठ पुनि आउब काली । करब बिवाह उछाह उताली ॥ असकहि कौशिकमुनि सुखसेतू । गये बशिष्ठ समेत निकेतू ॥ दोहा ॥ उठेउभूप भोजन करन संयुत चारि कुमार । चले राजबंशी सकलसंग करन ज्योनार ॥ छंदचौबोला ॥ भोजन करन लगेउ भुआलमणि भोजन शाला माहीं । आगे पुरट पटन बैठाये चारिउ भाइन काहीं ॥ सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे । बैठ चक्रवरती चामीकर चौकी महँ मधिठोरे ॥ कनकथार कंचनभाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना । प्याले पुरटबिशाले जलभरिल्याये सूदसुजाना ॥ कंठन कटुले कड़े करन में हीरन जड़े अपारे । सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीतांबरन पखारे ॥ यथायोग पुनियथायोग रुचि परुसे भोजन मीठे । अमृत लगत आगे जिन सीठे कबहुं न खात उबीठे ॥ दै बलि बैश्वदेव अचवन करि भोजन बिधि निरधारी । भाषिसबै लक्ष्मीनारायण खानलगे सुखधारी ॥ भोजन करतजात भूपति मणि लखत लषण अरु रामै । पूछत कौन भांति मखराखे करि निश्चर संग्रामै ॥ कौनभांति ताड़का संहारी लगी न डर लखिघोरा । सुनियत गौतमनारि प्रकटभै परसिपाउ पुनितोरा ॥ कौन उपाय पुरारि पिनाकहिं भंज्यो मध्य समाजा । कहँ पायो यतनो बल लालन जहां बली सब राजा ॥ प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारणकोई । आपप्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर येतनोई ॥ कौन कलेऊ देतरह्यो तोहिं किमि सोये तृणसेजू । चले चरणकोमल कठोर महि मुनि कसक्यो नेक करेजू ॥ बनबन आतप बात सहत बहु

बिथा न भै तनमाहीं। कोसोपति सबभांति कियो तब घरकेकोउ सँगनाहीं॥ प्रथम लषण लरिकाईके बश कहेबैन मतुराई।पिता अवधतेकढ़त महामुनिविद्यायुगल पढ़ाई॥काकहियेविद्या प्रभाव पितुभूख प्यासनहिं लागी। थाक नींद आलस्यप्रबलता हमरे तनतेभागी॥ रामकह्यो सो पति सबजैसी कौशिक करी हमारी। तस नहिं किन्हीं अवध महलमें त्रिशत साठि महतारी॥ जानि परो नहिं हमहिं बिपिन दुख घरहुते सुख अधिकाना। जिमि राखती पलक नैनन तिमि राखेउ मुनिभगवाना॥ सुनि भूपति करणी कौशिक की महामोद मन मान्यो। बारहि बार सराहि पुलकि तन समाधान उर आन्यो॥ यहिबिधि भोजन करत सुतनयुत बदत बचन सुख साने। करि आचमनउठे अवनी पति आनँद माहिं अघाने॥ धोइ चरणकर पहिरि बसन कछु शैन सदन नृपगयऊ। इतै राम लै बंधु सखा सब बैठि प्रमोदित भयऊ॥ पूछन लागे कथा सखा सब भरत लला करि आगे। कहन लगे प्रभुचरित कियो जस सहजलाज रसपागे॥ हँसि बोलेउ कोउ राम बिवाहहु काहे जनक कुमारी। जहँ चाहहु तहँ तुम पषानते लेहु प्रकट करि नारी॥ सुनतहासरस हँसे सखा सब प्रभुने सुक मुसुक्याने। लषण कही तुम प्रकटत पेखे सब थलनारिपषाने॥ कोउकह मारि नारि निशिचरकी रसिकनाम किय हानी। हरि हँसिकह्यो हते पापिनिकेहानि भईसुखखानी॥ दोहा॥ मांगि बिदा सब सखागण आये निज निज ऐन।संध्यादिक रघुबीरकरि बंधुनयुत कियशैन॥चौपाई॥ जगे सकारेहिचारिहु भाई। प्रातकर्म कीन्हें चितलाई॥ ब्रह्ममुहूरत दशरथ जागे। संध्याबंदन किय अनुरागे॥ जगे बराती होत बिहाने। रामदरश हित मन ललचाने॥ करिकै सभाभूप मुदभीना। सुतनसहित नृप भोजन कीना॥ कौशिक मुनि बशिष्टकरि भोजन। निज मंदिर बैठे सहओजन॥ वहां सतानँद गणक बुलाये। बुधजन केरि समाजकराये॥ पुनि गौतमसुत शिष्य पठाये। बिश्वामित्र

बशिष्ठजु आये ॥ सतानन्द मनमोद अपारे । करि सनमान मुनिन बैठारे ॥ तब बशिष्ठ बोले मृदुबानी । लगन बतावहु मंगलखानी ॥ गुरुबशिष्ठके बचन सुहाये । सुनत ज्योतिषीमन हुलसाये ॥ पुनिलागे बुधकरन बिचारा । शोधि लगनबर बचन उचारा ॥ मार्गशीर्षसुदि पंचमिबारा । लगन नखत ग्रहसबसुख सारा ॥ सुरभीरजसमये बर पावन । होय राम भाँवरि सुखछावन ॥ दोहा ॥ करि सिद्धान्त बशिष्ठमुनि अवधनाथ ढिगजाय । मास दिवस तिथिलगनबर दीन्हों सकल सुनाय ॥ दिगस्यन्दन आनंद मन प्रमुदित सकल बराति । उतमिथिलापुर अति खुशी जनक भूपकुल ज्ञाति ॥

रघुराज० छंद चौबोला ॥ भोग बिलास बरातिनको तहँ लहैकौन कहिपारे । एक एक रघुबंशिन को थल लोकपाल लखिहारे ॥ घटी घटी सुरनटी नटै तहँ घटै न घट घट हर्षा । भरि गुण गर्ब सर्ब गंधर्वा गाय करते सुम बर्षा ॥ महा मनोहर बाजन बाजत संयुत तालबँधाना । सबके डेरन बने जरीके बिस्तर तने बिताना ॥ बाग तड़ाग नहर सुरभित जल बने बिचित्र अगारा । पूरण सकल अपूरब वस्तुन जो नहिं कबहुं निहारा ॥ जो जहँ चहत जौन मनमें जन मिलत तौन अनयासा । इन्द्र कुबेर बरुण देवनसम पावत भोग बिलासा ॥ बीतत बासर रैन चैन महँ जागत शैनहुं माहीं । अवधबिलास बरातिन भूलेउ कहहिं जाब अब नाहीं ॥ ब्याहि कुमार चारि कौशलपति बसैं इतै सबकाला । अस सुख कबहुं न लहे जन्मभरि जस अब लहे बिशाला ॥

संग्रह० ॥ सभामध्य शोभित दशरथ नृप सिंहासनआसीना । मुरछल चमर दुरावत सेवक ठाढ़े परमप्रवीना ॥ तेहि औसर धावन द्वै आये कहे जोरि युगपानी । केकै महाराज के नंदन नाम युधाजित जानी ॥ आवत काशमीर नृपनंदन आगे हमहिं पठाये । खबरि देनहित राज राजमणि हम आये अतुराये ॥ सुनि

आगमन युधाजित को तब कोशलपति हरषाये। तेहि अगवानी करन भरत रिपुसूदन को पठवाये॥ कछुक दूरते भरत जाय निज मातुलको लैआये। जोहि युधाजित अवध भूपको बारबार शिरनाये॥ उठेउ भूप सादर ताको मिलि दै आसन अनुरूपा। कह्यो युधाजित सों कुशली हैं कुलयुत केकै भूपा। राम लषण अरु भरत शत्रुहन मातुल किय परणामा॥ मिले युधाजित दै आशिष बहु सिद्ध होय मन कामा॥ कह्यो युधाजित पुनि दशरथसों हमहिं पिता पठवाये। बारबार पूंछी कुशलाई भूपति तमहिं उराये॥ हमहिं कह्यो तुम जाहु अवधपुर भरत सुतासुत मोरा। लैआवहु तेहि लषण अनुजयुत लखन हेतु यहि ठोरा॥ काशमीर ते चले प्रथम हम अवधनगर को आये। द्वै दिन भे निकसे बरातको ताते तुमहिं न पाये॥ सुन्यो बिवाह भागिनेयनको होत जनकपुर माहीं। परम प्रमोदित चले बराबर आये हमहुं इहांहीं॥ यहां प्रमोद पयोनिधि बाढ्यो रही भाग्य मम भारी। राम बिवाह बिलोकि बिलोचन ह्वैहैं हमहुं सुखारी॥ दोहा॥ सुनत युधाजितके बचन हरषेउ अवधभुवाल। बारबार सतकार करि कीन्हेउ स्याल निहाल॥ छंदचौबोला॥ दियो युधाजित को डेरा नृप भरत महल महँ जाई। सकल भांति सो पति भूपति किय करि सतकार बड़ाई॥ रहेउ युधाजित चैन पाय अति ऐन अनूपम माहीं। भोजन समय चारि कुवँरनयुत आनेउ नृप तेहि काहीं॥ हिलिमिलि भोजन करनलगे नृप ठानत हास बिलासा। कहेउ युधाजितसों कोशलपति सहित मंद मुखहासा॥ करहु युधाजित तुम उछाह युत दूसर ब्याह हमारा। वृद्धजानि कीजे जनि मन भ्रम लेहु सुयश संसारा॥ कहेउ युधाजित आप कुमारिन किये सदारन जोई। अभिलाषा यह अवशि रावरी पूरणकरिहैं सोई॥ यहिबिधि हासबिलास करत नृप करि भोजन सुखसाने। उठि अचमन कीन्हे सुगंध जल सुभगबसन परिधाने॥ निज निज भवन शयन हित गवने

आनँद मगन अपारा । सांझ समै पुनि सहित कुमारन नृपबैठे दरबारा ॥ मंत्री सचिव सुभट सरदारहु कवि द्विजगण पगुधारा । देवनटी गंधर्व सर्व युत करनलगीं नटसारा ॥ राम लषण अरु भरत शत्रुहन सहित युधाजित आये । पुत्रनको सनमुखके-कयि सुत निज समान बैठाये ॥

संग्रह० ॥ समय समाज बिदाभये सिगरे गय निज निज अस्थाना । परम प्रमोदित सकल बराती जागे होत बिहाना ॥ चौपाई ॥ अवध लोग मिथिलापुर बासी । आपुस में अति प्रीति प्रकासी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रथम बरात लगनते आई । ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥ ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं । बढ़ै दिवस निशि बिधिसन कहहीं ॥ दोहा ॥ राम सीय शोभा अवधि सुकृति अवधि दोउ राज । जहँ तहँ पुर-जन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥ चौपाई ॥ जनक सुकृति मूरति बैदेही । दशरथ सुकृत रामधरि देही ॥ इन सम काहु न शिव अवराधे । काहु न इन्ह समान फल साधे ॥ इनसम कोउ न भयउ जगमाहीं । है नहिं कतहुं न होनेउ नाहीं ॥ हम सब सकल सुकृत की रासी । भये जग जन्मि जनकपुर बासी ॥ जिन जानकी राम छबि देखी । को सुकृती हम सरिस बिशेखी ॥ पुनि देखब रघुबीर बिवाहू । लेब भली बिधि लोचन लाहू ॥ कहहिं परस्पर कोकिल बयनी । यह बिवाह बड़लाभ सुनयनी ॥ बड़े भाग्य बिधि बात बनाई । नयन अतिथि होइहैं दोउ भाई ॥ दोहा ॥ बारहिं-बार सनेह बश जनक बोलाउब सीय । लेन आइहहिं

बंधु दोउ कोटिकाम कमनीय ॥ चौपाई ॥ बिबिधभांतिहो-
इहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुरमाई ॥ तब
तब रामहिं लषण निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सु-
खारी ॥ सखि जस राम लषणकर जोटा । तैसेइ भूप
संग दुइढोटा ॥ श्याम गौर सब अंगसुहाये । ते सब
कहहिं देखि जे आये ॥ कहा एक मैं आजु निहारे ।
जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे ॥ भरत राम एकहिं अ-
नुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥ लषणश-
त्रुसूदन इकरूपा । नखशिखते सब अंग अनूपा ॥ मन
भावहिं मुख बरणि न जाहीं । उपमा कहँ त्रिभुवन
कोउ नाहीं ॥ छंदहरिगीतिका ॥ उपमा न कोउ कह दास
तुलसी कतहुं कबि कोबिद कहैं । बल बिनय बिद्याशी-
ल शोभा सिंधु इनसम यइअहैं ॥ पुरनारि सकलपसारि
अंचल बिधिहिं बचन सुनावहीं । ब्याहि चारिउ भाइ
इहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

प्रियाशरणजीकादोहा ॥ यहि बिधि पुर नरनारि सब मगन प्रेम
आनंद । नित देखत अति हर्षहिय सियमुख पूरणचंद ॥

इतिरामप्रताप चित्रकार बिरचिते श्रीसीताराम बिवाहसंग्रह
परमानंद त्रैलोक्यमंगल तेरहवांप्रकरणसमाप्तः १३ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

—o—

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

चौदहवांप्रकरण ॥

जनवासे में श्रीदशरथ महाराजके पास सतानन्दमुनि का लग्नपत्रिका लैके पधारना और श्रीरामचन्द्रजीके तैल चढ़ाय लौकिक व वैदिक नहछूचारादि करके जनकमहलको पधारना ॥

कृपानिवास०चौपाई॥ नेह बिदेह अछेह जनावैं। नित सन्मान अधिक सरसावैं॥ महामोद रसभरि उरमाहीं। बासर निशि मिसि भासत नाहीं॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ गये बीति कछुदिन यहि भांती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती॥ मंगल मूल लगन दिन आवा। हिम ऋतु अगहन मास सुहावा॥ ग्रह तिथि नषत योग बर बारू। लगन शोधि बिधि कीन्ह बिचारू॥ पठैदीन्ह नारद सनसोई। गनी जनककेगणकन जोई॥ सुनीसकल लोगन यहबाता। कहहिं ज्योतिषी अपर बिधाता॥

संग्रह०॥ लगन सुनत प्रमुदित मिथिलेशा। गौतम सुतको दियउ निदेशा॥

कृपानिवास० ॥ करि प्रकाश रनिवास सतानँद । पूजि बिनायक बाने सानँद ॥ करि कुलरीति बजाय बधाई । पंच शब्द ध्वनि मंगल गाई ॥

श्रीतुलसी०छंदसोहर ॥ सीय रामहित पूजहिं गौरिगणेशहिं। पुरजन परिजन सहित प्रमोद नरेशहिं ॥ प्रथम हरदि बंदनकरि मंगल गावहिं । करि कुलरीति कलश थपि तेलचढ़ावहिं ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ लली तैल महदी जबधारी । परम सुहाग भाग भरि भारी ॥ बेद बिप्र युवती गण गावैं । उबटनि साज सखी अन्हवावैं ॥

संग्रह०॥इतै सकल करिकै कुलचारा। जनवासेमुनिवरपगुधारा॥

कृपानिवास० ॥ कनक थार धरि लगन सुपांती । भेट सोज सजि अगणित भांती ॥ भूषण बसनरत्न मणिमुक्ता । कञ्चन रचित द्रव्य बहु युक्ता ॥ कुंकुम केसर मलय कपूरे । धूप गंध धरि कोपर रूरे ॥ अक्षत दल श्रीफल पुंगी फल । मेवा मिश्री पकवान बहुत कल ॥ धरे अमित जन चले लिवाई । बनिठनि नारि सुवासिनि आई ॥ सतानन्द कर थार सुहाये । भूसुर बिपुल निगम सुरगाये । रंग अबीर बरषि कुसुमांजलि । बजत निशान गान युवती मिलि ॥ करत धूम जनवासे आये । भेटधरी कहि लगन सुनाये ॥ बांचि बशिष्ठ करी निजरीती । धारि यथा विधि पूजि सुप्रीती ॥

संग्रह० ॥ सतानन्द गे मांगि बिदाई । कह्योबशिष्ठ सुनहु नृपराई ॥ तैल चढ़ावन आदिक चारा । करहु काल्हि बर मंगल बारा ॥ सुनि गुरु बचन परम सुखदाई । समय जानि नृप सुतन बोलाई ॥

रघुराज०समुच्चयछं०चोबोला ॥ चारिहु कुवँर सहित भोजन करि नृप बैठे पर्यंका । राम लषण रिपुहन भरतहु को बैठाये निज

अंका । लगे सिखावन कुवँर सोहावन बेटा यह ससुरारी । कियो न चपलाई चलि परघर ह्वैहै हँसी तिहारी ॥ ससुर सास को बन्दन करियो मोहिं सम गुन्यो बिदेहू । बिना बोलाये उतै न जइयो नहिं वाग्यौ बहुगेहू ॥ बहुत हँसी करियो नहिं काहु सों उत्तर दियो सम्हारी । मिथिलापुर की चतुर नारि देहैं जुरि जुगुतिन गारी ॥ सुनत बैन पितु राम बन्धुजन लज्जित शीश नवाये। करजोरे भोरे इव बैठे मनहींमन मुसुक्याये ॥ यतनेहीमें प्रतीहार तहँ आशुहि खबरि जनाये । मिथिलाधिप व्योहार पठाये सुमति सचिवलै आये ॥ उठेउ हरषि देखन कोशलपति सहित कुमार सिधारा । एक एक बस्तुन के लागे पूरण प्रथित पहारा ॥ बहु बिधान पकवाननके तहँ पान बिधानहु नाना । लघुते लै परजंतु बस्तु बडिबसन बिभूषणनाना ॥ निज निज अभिलाषन अनुसारन पाये सकल बराती । रही न कोहु के कछुक कामना तोषित भे सबभांती ॥ भई सांझ भूपति सन्ध्याकरि बैठेउ कुवँर समेता । पूर्बचित्ति मेनका उर्बशी रम्भा आदि सुचेता । बिश्वावसु तुम्बुरु आदिक तहँ करन लगे कलगाना । साजि समाज बिराजि बिभूषण नचहिं अप्सरा नाना ॥ मन अभिलाषित भूप दीन तिन बसन बिभूषण नाना । भाइन सहित बिलोकि राम छबि भूलेउ भान अपाना ॥ शयनकाल गुनि भूप कुमारन निज निज भवन पठाई । महामोद महँ मगन महीपति शयन कियउ गृहजाई ॥ दोहा ॥ नाच गान व्यवधान महँ खानपान सनमान। मगन बराती जगतही पायो पुलकि बिहान ॥ सोरठा ॥ बन्दीवृंद अपार ब्रह्म मुहूरत जानिकै । अवध भूपके द्वार बदन लगे बिरदावली ॥ छन्द ॥ जय जय इक्ष्वाकु बंश बारिधि के चन्दिरै । धर्म के निशान ज्ञान मान मोद मन्दिरै ॥ भानु बंश भानु भूप कोशलाधिराजहौ । राज के समाज के दराज शीशताजहौ ॥ आपने सुबंश में बिचारि राम ब्याहको । अंशुमान आवते भरे लखै उमाहको ॥ तजौ सुसैन चैन सों सनींद नैन खोलिये ।

प्रदान अर्घ्य कीजिये सुबेद मंत्र बोलिये ॥ दिनेश भीति मानि तार वृन्दहू बिलाइगे । उलूक चूक हूक मानि मूक ह्वै पराइगे ॥ नरेश आप मित्रसे प्रफुल्ल कञ्ज वृन्द भे । अरीनसे अनेक कैरवानि वृन्दमन्दभे ॥ सखा सुमंत्रि बंधु बर्ग देहु देत्र दर्शने॰ स्वपक्ष रक्ष दक्ष आप चक्र ज्यों सुदर्शने ॥ मुकुंद ध्यान ठानिकै प्रभात कर्म कीजिये । अनेक बिप्र वृंदको अनेक दान दीजिये ॥ दोहा ॥ अज नंदन आनन्द भरि अभिबंदन हितद्वार । वृन्दनके वृन्दन खड़े सचिव सुहृद सरदार ॥ सुनि बंदिनके बरबचन निशा व्यतीत बिचारि । जग के पति जागतभये नयनन नींद निकारि ॥ पितुके पूरुब कछु जगे चारिहु राजकुमार ॥ राम दरश तिन आयकिय तीनहुं बंधु उदार ॥ रघुनंदन भ्रातन सहित पितु दरशन कियजाय । चरण बंदि आशिषलहेगमने पाइ रजाय ॥ प्रातकृत्य निरबाहि सब सुरभित सलिल न हाय । अर्घ प्रदानादिक किये दिय द्विजदान बुलाय ॥ रघुनंदन चंदनदिये गायत्री जप कीन । नित्य नेम निर्बाहि सब बंधुन बोलि प्रबीन ॥ बसन बिभूषण पहिरिकै करि सुंदर शृंगार । चले चारिहू बंधु तहँ करन पिता दरबार ॥ दशरथ इतै प्रभात को नित्य नेम निरवाहि । बैठे सभासुरेश समबोलेउ कुलगुरु काहि ॥ मार्कंडेयादिक मुनिनलिये तुरंत बोलाइ । बिश्वामित्रहि बोलि पुनि बोलेउ कौशलराइ ॥ चौपाई ॥ तैल चढ़ावन आदि प्रचारा । करवाइय जस होइ विचारा ॥ पुनि करवाइय मुनि गोदाना । मंगल मण्डित वेद बिधाना ॥ सुनि नृपबचन परम अह्लादी । बिश्वामित्र बशिष्ठहु आदी ॥

संग्रह ॥ रामचन्द्रकोलिये बुलाई । कृत्य अरंभ किये मुनिराई ॥

रघुराज॰ ॥ पूजन गौरि गणेश कराये । ते निज रूप प्रत्यक्ष देखाये ॥ पूजन लेन ब्याज सब देवा । आवहिं करन राम की सेवा ॥ करि बाचन पुण्याह सुखारी । लिये बोलि द्विज पंच कुमारी ॥ निकट पुरट घट चट पट धरिकै । सदलसदीप अमल

जल भरिकै ॥ नवलपतिपट भूषण नाना । बिप्रकुमारी करिपरि-धाना ॥ लै हरिद्रदूर्बा तेहि बेला । प्रभुकहँ लगी चढ़ावनतेला ॥ जस जस व्याहकृत्य तहँ होती । तस तस तिनतनलाजउदोती॥ दोहा ॥ तेल चढ़ावहिं कन्यका प्रभुको बदन निहारि । तकि तकि छबि छबि छकिरहै जकि जकि मृदुल निहारि ॥ छंदचौबोला ॥शिर कंधन जानुनी पगन महँ फेरहि पाणि कुमारी । मनहुं पूजि शशि नील रतनगिरि उतरहि कुमुद सुखारी ॥ परिकर सचिवा-दिक महलादित करहिं निछावरि आई । मणिगण सुबरण बसन बिभूषण पावहिं धाय धवाई ॥ रतनालिका बीरमणि ठाढ़े राई-लोन उतारैं । राम सुछबि लखि लखि दृग छकि छकि मानहुं तन मन वारैं ॥ जासु प्रसाद गणेश आदि सुरहरैं बिघनकरि मंगल । सो प्रभु शिरनाव मंगल हित गणपति थापि कमंडल ॥ नभमहँ बाजन बजत बिबिधबिधि गावहिं देवनदारा । मच्यो हुलास महाजनवासे द्विज धनलहैं अपारा ॥ विश्वामित्र बशिष्ठ राम को दिये तेल चढ़वाई । भये अनंदित सकल बराती बहु धन दिये लुटाई ॥

संग्रह० ॥ करवायउ गोदान रामको गुरु बशिष्ठ मुदभीना । चारि कुमारनयुत शोभितभे सिंहासन आसीना ॥

रघुराज० ॥ जैसे चारिहु लोकपालयुत राजतसभा बिधाता । तैसेहि चारि कुमारनतेयुत दशरथ भूप बिभाता ॥ ताहीसमय जनक पठवाये सतानंद मुनि आये । उठि आसन दीन्ह्यो अव-नी पति चरणकमल शिरनाये ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ आदि मुनि मंडल भूप बोलाये । यथायोग्य आसनदै सबको बारबार शिर नाये ॥ गौतम तनय कह्यो भूपतिसों बिनती कियेउ बिदेहू । बीते चारिदंड यामिनिके व्याह लगन गुनिलेहू ॥ गोधूली बेला महँ ह्वैहै काल्हि द्वारको चारा । महाराज लै चारि मारन करैं पवित्र अगारा ॥ सुनत चक्रवर्ती अवनीपति मन अभिलषित सुबानी । गदगदकंठ सुमिरि बिकुंठपति कह्यो जोरि युगपानी ॥

संग्रह० ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ राम को अभ्युदय श्राद्ध करायो। बिधिपूर्बक सों तैल चढ़ायो पुनि गोदान दिवायो॥

रघुराज० ॥ नहछू काल्हिकराय महामुनि सुंदर साजिबराता। धेनुधूलि बेलामहँ आउब कहहु जाय मुनि बाता॥ दोउ ब्रह्मर्षि बशिष्ठ गाधिसुत सहित जनकपहँ जाहू। बेद बिधान साज सब साजहु जस भाषैं मुनिनाहू। सुनि कै सतानंद सानंदित लै रघुकुल गुरु संगा। बिश्वामित्र समेत चलेउ तहँ रँगेउ प्रीति के रंगा॥ मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सतकारा। साजे सकल ब्याह सामग्री जस बिधि बेद उचारा। पुनि बशिष्ठ कौशिक बिदेह ढिग कही मनोहर बानी। सकल चार ह्वै गयउ उभय दिशि रह्यो ब्याह सुख खानी॥ दोहा॥ यथा हुलास प्रकास है राउर के रनिवास। तैसहि हास बिलास सुख दशरथ के जनवास॥ दाता तुम दशरथ अहैं आज ग्रहीता दान। यह सुख मुख कहिजात नहिं समधी उभयसमान॥ सुनि बशिष्ठ के बैन बर बोलेउ बचन बिदेह। दोऊ दशरथ भूप हैं का बिचार निज गेह॥ मेरो घर कुल राज धन सब दशरथको आय। एक अहै मिथिला अवध दूसर नाहिंदेखाय॥सुनिबिदेहके बैनबर पाय बशिष्ठ प्रमोद। जनवासे गमनत भये लखि बिनोद चहुं कोद॥ छंद चौबोला॥ फैलिगई यह बात चहूं कित रनिवासे जनवासे। ह्वैहै काल्हि बिबाह रामको सुनि सब भये हुलासे॥ सोर भोर मचिरह्यो नगर महँ घर घर होत तयारी। अवध लोग इतसजनि सजावत काल्हि बरात सिधारी॥यकयक रघुबंशिन के डेरनहोन लगे नटसारा। बैठे राम ब्याह सुख भाषत होतभयो भिनसारा॥ नहिं जनवासे नहिं रनिवासे नहिं पुरके कोउ सोये। करत तयारी महासुखारी जागतही रबिजोये॥ दशरथ सुतन कराय बियारी शयन अयन पठवाई। पौढ़ेउ यदपि भूप पर्यंकहु तदपि नींद नहिं आई॥ बात कहत इव रातिसिरानी लाग्यो होन प्रभाता। द्वार देशमहँ गावन लागे बंदी बिरद बिख्याता॥

भूपति उठि उछाह बश आतुर प्रातकृत्य सबकरिकै । दैदै दान बोलाय द्विजनको सुतन बोलि सुख भरिकै ॥ करि जलदी ज्यो-नार बारयुत साधारण पट पहिरी । बैठेउ आय राज सिंहासन जेहि सुखमा अति गहिरी ॥ बोलवाये बशिष्ट कौशिकको सचिव सुमंत तुरंता । दियो निदेश बरात सजावन सुमिरि चरण श्री-कंता ॥ पुनि बोलेउ कौशिक बशिष्ठसों नाथ मुहूरत भाखौ । तौन मुहूरत साधिचलो इत लै बरात सुख चाखौ ॥ बिश्वामित्र वशिष्ठ मुहूरत शंकर भणित बनाई । कह्यो भूपसों बचन बिनोदित रहे याम दिनराई ॥

संग्रह० ॥ नहछूचार करहु दूलहको कुलरीती जस कीजे । अ-भिजित मुहूरतमें बरातको लै नृपमणि चलिदीजे ॥

रघुराज० धेनु धूलिबेला रेला सुखहोय द्वारको चारा । याम याम यामिनी लगन शुभ पाणिग्रहण सुखसारा ॥ अर्धरात्रिलो सकल चारकरि आयजाहु जनवासे । होय बिलंब कुमारनको नहिं सोवहिं सुखी सुपासे ॥ कौशिक संवत जुबानीबर सुनि बशिष्ठकी भाखी । कह्यो तुरंतहि बचन सुमंतहि महामोद मिति नाखी ॥ सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बोलवाय । डेरन डेरन रघुबंशिनके शासन सपादि पठाये ॥ आवैं आज पहरदिन बाकी सजि समाज सरदारा । सजे मत्तमातंग तुरंगहु पैदर सुरथ अपारा ॥ धावन धाय पुकारन लागे जस सुमन्त कहिदीने । आवन लगे बराती सज्जिसजि शक्र सरिस सुख भीने । एकओर बाजिन की राजी एकओर गज वृन्दा । यकओर रथ के यूथ पंथ महँ पैदर खड़े सनन्दा ॥ नौबत झरनलगी चारों दिशि बाजे बिबिध नगारे । हिंहिंनाते हय बर घहनाते घंटा शंख अपारे ॥

संग्रह०दोहा ॥ समय जानि श्री राम को बुलवायउ भूआर । नहछू करवावन लगे जस कुल को व्यवहार ॥

रघुराज०चौपाई ॥ समय पाय मिथिलापुर केरी । आई नाउनि सजी घनेरी ॥ अवध भूप पहँ खबरि जनाई । नहछू करन हेत

हम आई ॥ सुनत जनकपुर नाउनि राजा। लीन बोलाय जानि बड़ काजा ॥ सजी शृंगारन नापित नारी। मनहुं मनोज बधू छबिवारी ॥

संग्रह० ॥ गुरु आयसु प्रभु मज्जन कीना। पीताम्बर युग धारि नवीना ॥ रतन जड़ित चौकी अभिरामा। तेहि पर बैठे छबिनिधि रामा ॥

रघुराज० ॥ मिथिलापुरकी नाउनिआई। दूलह देखि दून सुख पाई ॥ युग श्यामल युग गौर कुमारा। हँसी करन लखिकियो बिचारा ॥ तिन महँ चतुर एक छबि छाई। करि कटाक्ष बोली मुसक्याई ॥ यगल गौर युग श्याम कुमारा। एकहि पितुके चारिहु बारा ॥ सुनि नृपकह यह इहैं बिवेका। एक मातु पितु होत अनेका ॥ दोहा ॥ सुनत सुघरि नापित घरनि हँसि रस वश अनुरागि। नख करतनिलै कंजकर नखनछुआवनलागि ॥ चौपाई ॥ नख करतनि नख परश सोहाये। मनु ढिग बिधुन बिधुन्तुद आये ॥ कनक थार भरि नीर उरायनि। लागी देन महाउर नायनि ॥ भरि भाजन जावक बडभागी। चरणकमल कर धोवन लागी ॥ परत कमल पदतल अरुणाई। नाउनि जावक गई भुलाई ॥ जिन पद ललित बिश्व अघखोवै। धनिनाउनि ते पद करधोवै ॥ तरसत जिन पदरजकहँ देवा। नाउनि करति सुतिन पद सेवा ॥ बसहिं स्वयंभु शंभुचित जेई। नाउनि करनिमलति पद तेई ॥ जेपद मुनिमानससरबासी। ते नाउनि कर करत प्रकासी ॥ जिनहिं न तुलित मुक्तिप्रद कासी। ते पद भे नाउनि कर बासी ॥ भरयो कमंडलु बिधि जिनपदजल। सोइ सुरसरि ह्वै हरति बिश्व मल ॥ तेइपदपंकज पाणि पखाराति। नाउनि दशपितु पतिकुल ताराति ॥ पतितन पावन जिन पद पानी। धनिनाउनि धोवत निजपानी ॥ दोहा ॥ निजकर कठिन बिचारि अति प्रभुपद कोमल कंज। परसति पुनिडरपति हिये छनक रंज छनरंज ॥ चौपाई ॥ देति महाउर चित्र बिचित्रा। युग पद

पंकज बिश्व पवित्रा ॥ लसहिं चिह्न प्रभु पदतल जेते । नाउनि लिखनि उर पद तेते ॥ जानि राम नाउनि चतुराई । दीन्ह्यो ज्ञान हरयो जड़ताई ॥ जानि जगतपति सो बड़भागी । लीन्ह्यो नेग भक्तिरस मांगी ॥ दीन्हीं भक्ति ताहि रघुराई । चली भवन सो शीश नवाई ॥ जड़ित जवाहिर भूषण नाना । लगेदेन नृप नेग महाना ॥ सो कह लह्यो नेग हम जैसो । अतिदुर्लभ पावत कोउ ऐसो ॥ असकहि प्रमुदित नापित रमनी । मंगलगीत गावती गमनी ॥ इत अप्सरगण गावन लागा । रामब्याह मंगल शुभ रागा ॥ गावहिं मंगल रागसहाना । रामसुयश पावन कर काना ॥ गुरुबशिष्ठ नहछूकर चारा । करवायो जस बंशप्रचारा ॥ कंकण गुंजा गुच्छन केरे । कनककलित लगि रतन घनेरे ॥

संग्रह०दोहा ॥ गुरुबशिष्ठ रघुनंद के कंकण बांध्यो हाथ । बीर बहूटिन कंजको मानहुं कीन्हो साथ ॥

रघुराज०चौपाई ॥ पुनिबोल्यो दशरथ नृपराई । ब्याहबसन पहिरावहु जाई । लागेउ आपहु करन पोशाका । भिन्नभवन चलि कै सुखछाका ॥ यहिविधि करिनहछूकर चारा । सजन भवनगे राजकुमारा ॥ तहँ परिचर पहिरावनलागे । सचिव सुमंत बतावन लागे ॥ बहुमणि मंडित मौर प्रकाशी । करतमंद दिनकर रुचिराशी ॥ सो रघुराजहिं शीश बिराजा । मनहुँ नीलमणि गिरि दिनराजा ॥ तुर्रा तड़प उभय दिशि कैसी । मेदुर मेघ बकावलि जैसी ॥ काकपक्षबिच भाल सोहावत । जनु रणराहु जीति शशि आवत ॥ भाल बिशाल बीच अति लोना । लसत धात्रि करदीन दिठोना ॥ मनहुं मयंक मीत मनमानी । शृंगारहि लीन्हो उरआनी ॥ भृकुटि बंक मनु मदन कमानू ॥ तिलक रेख जनु शर संधानू ॥ दोहा ॥ अमल कपोलन के उपर युग चख डोरे लाल । मनहुं उछलि सरते लसत फँसे मीन युग जाल ॥ सवैया ॥ को बरणै रघुनन्दन के दृग मीन औ खंजन कंजन जीते । सैनके सैफन कीन्हे कटा जिन मानिनि मान के दुर्ग

अजीते ॥ हैं रतनारे बड़े अनियारे सदा रघुराजके प्यारे सुजीते । नीतिसों प्रीतिसों प्रेम प्रतीतिसों आजलों ना रसरीतिसों रीते ॥ दोहा ॥ कुंडल काननमें लसैं मञ्जुल मकराकार । मनहुं सुछबि युगवापिकन झलकत झख शृंगार ॥ सवैया ॥ पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर बागो । मंडित मोतिन जाल बिशाल बिचै बिच हीरन को सुम लागो ॥ घेरु बड़ो मनो फेरु सो फाबित मेरु मयूषनसों द्युति जागो । तापर भावै बिभाकर ज्यों मणिमौर कहै रघुराज सपागो ॥ कटिमें पटुको छबिछाय रह्यो क्षितिछ्वै छबि छोरनकी छहरैं । पच रंग मणीन की ढाल बँधी करवाल बिशाल बिभा भहरैं ॥ पद अम्बर सम्बर शत्रुरचो जनु त्यों पदत्राण प्रभा लहरैं । नव नूपुर ते पद पंकज में रघुराज भजे भवशोक हरैं ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ हाटक कटक करमें चटक हीरनछटा छूटैं घनी । नव रतन अंगद बाहु मूल अतूल बिचबिच बहुमनी ॥ माणिक सुपन्नापदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा । मन मीन फाँसन हेत मनु मनसिजरच्यो कल केहरा ॥ बैकुण्ठपति के कण्ठ तेज अकुण्ठ कंठाभरन हैं । मनु अंबुनिधि सुत कम्बु बन्धुहि मिलत लम्ब सुकरन हैं ॥ मणि इन्द्र नील सुपद्मराग बिभागकृत सेल्ही भली । मनुमेरु चारिहु ओर तारन कलित मारुत की गली ॥ हियरो हरति हेरतहि हठि हियहीरकी हारावली । मनु तरणि तेजहि तापि शशिबल तड़पती तारावली ॥ धात्री रुचिर रतनालिका कज्जल दृगनि देतीभई । निज पाणि राईलोन बरन उतारि पावक में दई ॥ चुटिकीनको चटकाय पुनि बलिजाय बारहिबारसो । आनन्द अम्बु बहाय अम्बक सुमिरि त्र्यंबक बारसो ॥ कर जोरि बोली गुरुबशिष्टहि यंत्र मंत्र न बांधिये । नहिं दीठि लागे ललन के यहि हेतु हर अवराधिये ॥ गुरु कह्यो इनके डीठि मूठि लागती अस को कहै । दुनिया भरे की डीठि इन के मूठि में सब दिन रहै ॥ उत भूप पहिरे पीत पट दीन्ह्यो मुकुट पुखराज को । पुखराज के उरहार जामा जर-

कसी सुख साज को ॥ कटिकसो पटुको पीत माला पहिरि पीत प्रसून को । मिथिलेश को समधीसजेउ सुख दून देखन सूनको ॥ यक कर सहजकरवाल तुलसी माल यक कर सोहई । रघुराज पितु ऋतुराजसो राजन समाजन सोहई ॥

संग्रह० ॥ दूलह लखनहित भूपदशरथ सुरपतीसम आयऊ । अवलोकि सुतकी भेषरचना राउ अति सुखपायऊ ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ धेनु धूलिबेला बिमल सकल सुमंगल मूल । बिप्रन कहेउ बिदेह सन जानि समय अनुकूल ॥ चौपाई ॥ उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अबबिलंब कर कारण काहा । सतानंद तब सचिव बुलाये । मंगल कलश साजि सब लाये ॥ शंख निशान पणवबहुबाजे । मंगल कलश शकुन शुभ साजे ॥ सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ॥ लेनचले सादर यहि भांतीं । गयेजहां जनवास बराती ॥ कोशल पतिकर देखिसमाजू । अतिलघुलाग तिन्हहिंसुरराजू ॥

रामप्रियाशरण० ॥ सतानंद दशरथ ढिग गयऊ । नृपउठि पद शिर नावत भयऊ ॥ पुनि सादर बैठायउ राजा । हरषे दशरथ सहित समाजा ॥ जेतनी बस्तु भेट हित गयऊ । नृप सम्मुखपधरावत भयऊ ॥ लखि राजा प्रमोदमन भारी । बांटदईयाचकन्ह हँकारी ॥ कछु बचिगई लेत कोउ नाहीं । धरी रही जनवासे माहीं ॥ बहुरि सतानँद कहि मृदुबानी । मंगल मोद परम सुखखानी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भयउ समय अबधारिय पाऊ । यह सुनि परा निशानन घाऊ ॥

रघुराज०छंदहरिगीतिका ॥तब कह्यो बचन बशिष्ठ यहि छन भूप परिछनकीजिये । दूलह चढ़ाय तुरंगमहँ पुनि गमनशासन दीजि-

ये ॥ तबतुरततरल तुरंग चारु समाज साज मनीनकी । अनुपम सुछबि मोहरो लगाम ललाम दुमची जीनकी ॥ पगमें पुरट पैजन परेहै कलसु हीरनके जड़े । चामर सड़ाके अतिप्रभाके गासिया मखमलमड़े ॥ पायरसुपन्नाके बने कलँगी कलित मुनि गुच्छकी । यदि जमै मंदिर माथ सुरतरु ताहुकी छबि तुच्छकी ॥ चोटी गुही मोती अमल तिन जानु लोलर लरकती । मनु शरद बारिद की घटा जलबिंदु अवली ढरकती ॥

संग्रह० ॥ अस सज्यो बाजि बिलोकि गुरु रघुलाल को आज्ञा दये । श्रीराम तुरंग सवारभे छबि देखि मुनि प्रमुदित भये ॥

रघुराज०॥ लै पाणि दधि अक्षत सगुन दीन्ह्यो त्रिकुटि टिकुली भली । मानो मयंक निशंक कीन्ह्यो अंक निज सुत बुधबली ॥ पुनि दियो दधि अक्षतन बिंदु बिशाल भाल भुआलहै । लागेउ उतारन आरती तेहिकाल होतनिहालहै ॥ बरषहिं सुमन सुर देत दुंदुभि करत जयजयकारको । बाजे बजाय बरातमहँ जन लहत मोद अपारको ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ गुरुहि पूछि करि कुलबिधि राजा । चले संग मुनि साधु समाजा ॥

संग्रह० ॥ शत्रुंजय गज भूपमँगाई । चढ़े मुदित मन हरि शिरनाई ॥

रघुराज०दोहा ॥ लसेउ नरेश सुनागपै मणिगण दिये लुटाय । मनहुँ उयउ उदयाचलै दिनकर कर छिटकाय ॥ होतसवार भुआरके परयो निशानन घाव ॥ गुरु कौशिक को युगलगज लिय चढ़ाय तहँ राव ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ भाग्य बिभव अवधेश कर देखिदेव ब्रह्मादि । लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि ॥ चौपाई ॥ सुरन सुमंगल अवसर जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निशाना ॥ शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा ।

चढ़े विमानन्ह नाना यूथा ॥ प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू। चले बिलोकन राम बिबाहू ॥

संग्रह० ॥ लखिबरातकी सुंदरताई। कहतपरस्पर सुरहरषाई ॥

देवस्वामी०पदरा० ॥ बराती भयउ मनहुं ऋतुराज। उत बरषाको साज ॥ नारि गान कोइल जनु कुहुकत डंका घनसो गाज। उठत सुगंधमहींसे चहुंदिशि बरसत रसअंदाज ॥ लाल लाल कर पल्लव लाखन फूले सुमन समाज। नभमें उड़त मनहुं बकमाला होय न सकत अंदाज ॥ मनमें मानस पंकज फूले छूटिगई जनु लाज। बहुत अरगजा पंकमहींमें लहरतजीव अनाज ॥ पूरणकामदेव नर किन्नर सिद्धहोत सबकाज। दामिनिसे भूषण असिचमकत दोउ भूपति शिरताज ॥

संग्रह०दोहा ॥ बिप्रनिगम धुनि बंदिजन करहिं सुयशउच्चार। बाजिनपै चहुंदिशिलसैं रघुकुल राजकुमार ॥

रघुराज०छंद चौबोला ॥ चारिहु बंधु तुरंगन सोहत अंग अनंग लजावन। यक जोरी मूरति मरकतसी युगलपांडिक छबिछावन। जात नचावत कछुक चलावत पुनि झमकावत बाजी। बाहन युत शिवसुवन लजावत भावत सखन समाजी ॥ जस जस नचत तुरंग तरलगति तिल तिल पगमहि काटै। तस तस छमछमात पैंजनि धुनि सुरन ठाटबहु ठाटै। सखा उछालत ऊरधबाजिन तेहिथल पुनि लै आवैं। जन समूह नहिं परस होत कोउ अद्भुत कला दिखावैं ॥ राम बंधुयुत बीच बिराजत चहुँकित सखा सोहाये। तिनपाछे शत्रुंजय गजपर अवध नाथ अति भाये ॥ चढ़े मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरु कौशिक राजैं। जनु ऐरापति चढ़ेउ पुरंदर शुक्र बृहस्पति भ्राजैं ॥ देखि देखि दशरथ को सुरमुनि कहहिं कौन अस भागी। त्रिभुवनपति को चलेउ बिवाहन पुत्र प्रेमरस पागी ॥ जस जस झमकत नचत रचत गति रामबाजि अभिरामा। तसतसदिल

डरपत दशरथको छुटै न पग कहुँ ठामा॥ कोउ झमकावत कोउ सिखवावत कोउ दरशावत सोई। कोउ मुरकावत कोउ बढ़ि जावत रुकिजावत रचि कोई॥ राजकुमार कला दरशावत पावत परम प्रशंसा। सखा प्रमोदित परामिलावत जहँ रघुकुल अवतंसा॥ अहैं बरोबर बैस सखा सब लहि समान सनमाना। भूषण बसन समान सुहावन को समान तिन आना॥ वृद्ध वृद्ध रघुबंशी कुलके पीछे सिखवत जाहीं। करहु न चंचलता बहु लालन अवधनगर यहनाहीं॥ वृद्धनबचन सुनत सकुचत अति दूलह भूपदुलारे। मंदहि मंद चलावत बाजिन देते सखा इशारे॥ तनक बाग ऊंची करिदेते नभ उडिजात तुरंगा। चमकिबीजुरी सो पुनि बहुरत नहिंकंपत कछु अंगा॥ चलत हंसगति कहुँ मयूरगति कतहुँश्येनगति लेही।उच्चैश्श्रवा करत मद रद हद मानहुं गरुड़सनेही॥ राम तुरंग नाम सुग्रीवहि इसव लषणको बाजी। भरत अश्वको पुहुप बलाहक रिपुहन मेघ मिजाजी॥

संग्रह०॥ राम बनाके दुहुँदिशि चामर मुरछल करहीं आछे। छत्र सुरजमुखि लिये मुदित जन चलत अश्वके पाछे॥

रघुराज०छंद॥ आवत जानि बरात जनकपुर मंगल साज सवाँरी। यूथयूथ घट पुरट शीश धरि खड़ी बिलोकत नारी॥ खबर राजमंदिर महँ पहुँची आवत चली बराता। कहेउ बिदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाव लेन तुम ताता॥ जनक कुमार सुनत चढ़ि बाजी चलेउ लेन अगवानी। धरे कनकघट शिर सँगवातिय चलीं सहस छबि खानी॥ तेहि बिधि औरहु बहु पुर नारी धरे कलश युत दीपा। गावत मंगल गीत सोहावन दूलह लखन समीपा॥ सजनी सजी बजी मिथिलाकी तिन मिलि रूप छिपाई। शची गिरा गौरी आदिक सब सुरतिय सुखित सिधाई॥ दोहा॥ धरे शीश कञ्चन कलश गावत मंगल गीत। दूलह देखन निकट ते गमनी परम पुनीत॥ मिथिलापुर की कोउसखी बोली भरी अनंद। करहि मंद सखि चंद को नृप नंदन मुख चंद॥ पद॥

ब्याहन आये दशरथ लाल । माथे मौर पीत अम्बर तन राजत हिय बनमाल ॥ सुन्दर तरल तुरँग झमकावत भावत अतियहि काल । श्री रघुराज निछावरि याकी त्रिभुवन छबि तिहुँ काल ॥ धनि धनि सीता जनक दुलारी । जाके हित सुन्दर बनरा यह बनिआयो मनहारी ॥ हम सीता बालकपनते यक संग रहीं खेलारी । श्रीरघुराज आज अब यहि सम कोउ नहिं परत निहारी ॥ गावहु मंगल गीत सखीरी । अस अवसर कबहूं नहिं पैहौ पुनि बिधि नाहिं लिखीरी ॥ कोशलपति किशोर चितचोर सु छबि जिन नाहिं लखीरी । तेहि रघुराज कहत जगजीवत सति बिष बेलि भखीरी ॥ दोहा ॥ लक्ष्मीनिधि के संगमें सोहत राज कुमार । छटे छबीले छबि भरे गवने पंच हजार ॥ अगवानी आये निकट रुकिगै सकल बरात । लक्ष्मीनिधि बंदन कियो नृप पूँछी कुशलात ॥ सुत बिदेहको नेहबश अवधनाथ हरषाय । पकरिपाणि निज नाग में लीन्हेउ चटकचढ़ाय ॥ नारिन शीशन पुरट घट दीपावली सोहाय । मनहुँ भई थिर बीजुरी लै तारन समुदाय । रानि सुनैना सहचरी तंदुल दधि भरि थार । राम भाल टिकुली दई सुमिरि महेश कुमार ॥ महामणिन के छत्र पुनि राका इंदुअकार । पठवाये मिथिलेशके दूलहके हितचार ॥ कोशल छत्र उतारि कै मिथिला छत्र लगाय । मिथिलाके परिकरचले दूलह संग सुहाय ॥ अगवानीको चार करि गमनी चारु बरात । राजकुवँर चहुं ओरके बाजि नचावत जात ॥ छंद हरिगीतिका ॥ गमनत बरात सोहत यहि बिधि निकट शहर पनाहके । आई जबै पुरलोग सब देखत भरे सुउमाहके ॥ जुरि सकल जन यूथन अनेकन त्यों बरूथन नारिके । देखत बरात अघात नहिं बतरात बचन बिचारिके ॥ हमरे सुकृत फल सीयराम बिवाह मिथिलापुर भयो । को आज हम सम धन्य महितल सुफल लोचन करिलयो ॥ कोउ कहैं दूलह देखु सियको मदन निउछावरि करो । नहिं रामसम कोउ

भुवन सुंदर तोरि तृण धरणी धरो ॥ अस कहहिं युवती परस्पर झुकिरहीं दूलह देखने। भरि प्रीति गावहिं गीत मंगल मोद मगन अलेखने ॥ सूर्यास्त समय बरात प्रविशी जनक नगर सुहावनो। देखत बराती नगर सौभग इन्द्र नगर लजावनो ॥ फहरैं पताके तुंग चहुंकित बिबिध रंग अनंगसे। तोरण कनक तड़िता तड़प घट पुरटद्वार पतंगसे ॥ बर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार बिराजहीं। अतिशय उतंग अवास हिमगिरि शृङ्गशोभ पराजहीं ॥ सींची गली सुरभित सलिल बिस्तार बृहद बजार को। द्रविणाधिपति सम बणिक बैठे करहिं बस्तु प्रचारको ॥

बिश्वनाथसिंह० चौपाई ॥ जोहन हित तिय चढ़ीं अटारी। आनँदमय सब खबरि बिसारी ॥ कोऊ केश अध गूँथत धाई। फूलन झरत परम छबि छाई ॥ छंद हरिगीतिका ॥ झरि कुसुम तिनके कचनतें क्षितिपरत अति छबि पावहीं। जनु ब्योमतें हरि ब्याह निरखन अवनि उडुगण आवहीं ॥ कोउ एकही पगदिये जावक राम जोहनको चली। कोउ एकही दृगदिये अंजनअटन पट लागी भली ॥ दोहा ॥ बिनहि कसे कोउ कंचुकी चढ़ी दरश हितधाइ। अति उत्कंठित कोउ चढ़ी बांधि किंकिणी पाइ ॥

रघुराजसिंह० छंदहरिगीतिका ॥ शारद घटाऊंची अटाछन छटासी युवती चढ़ी। अति हरषि बरषि प्रसून लाजा बरलखन चोपहिं मढ़ी ॥ आई बरात बजारमहँ नर नारि दूलह देखहीं। दशरथ जनक अरुभाग आपन अधिक उरहि उरेखहीं ॥ घर घर बजत बाजन बिबिध मिथिलापुरी धुनिमय भयी। देते बरातिन नारि नर करि युक्तिगारी रसमयी ॥ सुनिकै बराती मुदितमन मुसक्यायरहत निहारिकै। को कहै परम उछाह सबउर जनकपुर नर नारिकै ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ दशरथ पूरण पर्व बिधु उदित समय संयोग। जनक नगर सर कुमुदगण तुलसी प्रमुदित लो-

ग ॥चौपाई॥ देखि जनकपुर सुर अनुरागे । निजनिज लोक सबहि लघुलागे ॥ चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिकनाना ॥ नगरनारिनर रूपनिधा-ना । सुघर सुधर्म सुशील सुजाना । तिनहिं देखि सब सुरपुरनारी । भये नखत जनु बिधु उजियारी ॥ बिधिहि भयउ आचरजबिशेखी । निजकरणी कछु कतहुँ न देखी॥ दोहा ॥ शिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु । हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर विवाहु ॥ चौपाई ॥ जिनकर नाम लेत जगमाहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥ करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सियराम कहेउ कामारी ॥ यहि बिधि शंभु सुरन समुझावा । पुनि आगे बरबसह चलावा ॥ देवन देखे दशरथ जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥ साधु समाज संग महिदेवा । जनु तनुधरे करहिं सुरसेवा ॥ सोहत साथ सुभग सुतचारी । जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥ मरकत कनक बरण बर जोरी । देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी ॥ पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे । नृपहिं स-राहि सुमन बहु बरषे ॥ दोहा ॥ रामरूप नखशिख सु-भग बारहिबार निहारि । पुलकगात लोचन सजल उमासहित त्रिपुरारि ॥ चौपाई ॥ केकि कंठ द्युति श्यामल अंगा । तड़ित बिनिन्दक बसन सुरंगा ॥ ब्याह बिभूषण बिबिध बनाये । मंगलमय सबभांति सुहाये ॥ शरद बिमल बिधुबदन सुहावन । नयननवलराजीव लजावन॥

कृपानिवास० ॥ कल कपोल मृदु बोल अमोले । नासाकीर श्रवण युग तोले ॥ मकराकृत कुंडल मुक्ताहल । चञ्चल चलत

सुभग गंडस्थल ॥ अलकैं कुटिल कपोलनि बिथुरीं । शशि रस हित जनु नागनि उतरीं ॥

केशवदास०दोहा ॥ अमल कपोलै आरसी वाहू चंपक मार । अवलोकनै बिलोकिये मृगमदमय घनसार ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ त्रिभुवन श्री श्री तिलक बिराजैं । भाल बिशाल जगत उपलाजैं ॥ मस्तकमौर मनोहर मणिमय । जनु शृंगार शीश त्रिभुवन जय ॥ सिहरा सुभग बदनपर छायो । रूप जाल जनु चंद छिपायो ॥ जादू जाल जानकी प्रेरचो । लाल बदन कछु कारण घेरचो ॥ छंदबैताल ॥ घेरचो बदन त्रैकाज हित रघुराज मंडप राजहीं । लोचन कटीले मुख छबीले प्रगट लखि ढिग लाजहीं ॥ बदनारबिंद सुबृन्द सुखमा दृष्टि मुष्टि न परस-हीं । शशिसहित नवफनि कीर खञ्जन जलज इकसर दरशहीं ॥ यह जानि चित्र महान प्यारो जाल भावनिता धरचो । निज लाड़ करुणा प्रेमको परनेम मनु मनथिर करचो ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सकल अलौकिक सुन्दरताई । कहि न जाइ मनही मन भाई ॥ बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥ राजकुँवर बर बाजि नचावहिं । वंश प्रशंसक बिरद सुनावहिं ॥ जेहि तुरंग पर राम बिराजे । गति बिलोकि खगनायक लाजे ॥ कहि न जाइ सबभांति सुहावा । बाजि बेष जनु काम बनावा ॥ छंदहरिगीतिका ॥ जनु बाजि वेष बनाइ मनसिज राम हित अति सोहहीं । अपने बय बलरूप गुणगति सकल भुवन बिमोहहीं ॥ जगमगति जीन जड़ावज्योति सुमोति माणिक तेहि लगे । किंकिणि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

रघुराज०कवित्त ॥ राजे सबै बाजिन की राजी बीच राम बाजी जातिको सुताजी महा मारुत मिजाजी है । भानुहू के बाजिनको

जीति लीन्हों बेगि बाजी उच्चैश्रवै पाजीकरि बेगता बिराजी है ॥ रघुराज मानसको काजी मन भाजी गति पन्नगारि दांजी करैं पतंग पराजी है। नाकत त्रिलोकपै बचावत बिचारि बुद्धि परि है त्रिबिक्रम के बिक्रममें भाजी है ॥ बेगके विवशनासा फरफरहोत जाकी बूटी बूटी थरथरकांपती है अंगकी । ज्वलन जरत अस परत पुहुमि पाय शील से समेटे गति मारुत के संगकी ॥ बाग राग रचितसो तड़िता तड़प इव तड़पि थिरत छबिहरततरंगकी। रघुराज जौलौं चहै शारदा बखाने तौलौं आने आने होती छबि राम के तुरंग की ॥

बिश्वनाथ० ॥ चोटीके छुयेतें बोटी बोटीलौं फर फरात छोटी दुम मोटी सुम शोभा सरसावते । पूंजीपटा पुच्छराजे जरी जर बिलीजीन चौंर चारु चंद्रिकाकी चंद्रिका लजावते॥ रामचन्द्र रावरे ये रूरे गुण पूरे बाजि बिश्वनाथ बिदित बिनोद दरशावते। ब्रह्मा बिष्णु बामदेव पावते जो ऐसो कहूं काहेको बिहंग बैल बाहन बनावते ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ प्रभु मनसहि लयलीन मन चलत बाजि छबि पाव। भूषित उडुगण तड़ित घन जनुबर बरहि नचाव ॥ चौपाई ॥ जेहिबर बाजि राम असवारा। तेहि शारदहु न बरणै पारा॥ शंकर रामरूप अनुरागे। नयन पंचदश अति प्रियलागे ॥ हरिहित सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे ॥ निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने॥ सुर सेनप उर बहुत उछाहू। बिधिते डेवढ़ सुलोचन लाहू॥ रामहि चितय सुरेश सुजाना। गौतम शाप परमहित माना॥ देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं ॥

संग्रहकर्ता ॥ सकल अमर करहिं इमिबाता । रामरूप लखि मन न अघाता ॥

बिश्वनाथसिंह० दोहा ॥ ऊंचे महलनिके जहां मंजु झरोखनि चाहि । बैठी जहँ तिय चंद मिलि चंद जानिगतिजाहि ॥

संग्रह० ॥ विधुबदनी मृगलोचनी पिकबैनी सुकुमारि । बनरा गावन तियलगीं रघुबर रूपनिहारि ॥

कृष्णरंगसखीजीकृतपद ॥ बनरासलोना माई रघुबरराज । माथे मौर खौर चंदनकी अँग अँग भूषणसाज ॥ गज रथ तुरँग नचावत आवत राजत राजसमाज । कृष्णरंग बड़भाग सियाको बर पायो शिरताज ॥ सुन्दरता को बर्णन ॥

बैजनाथ० ॥ देखु सखी छबि राम बनेकी । कंचन मौर खौर चन्दन शिर जगमग द्युति मणि माल घनेकी । पग जावक कंकण कर राजत भूषण सकल सुदेश ठनेकी । बैजनाथ कहि कौन सकै गति मृदु कटि पर पटपीत तनेकी ॥

श्रृंगारका बर्णन ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ बिबिध रंग मणिमौर इन्द्रधनु धोर बाल शशिसौर सरपांती । गजमुक्तनकी गलमाला कल राजिरही बकऔलि उड़ाती ॥ सोहति फहर पीतपट प्यारो दमकिदामिनी थिर तेही छन । बिश्वनाथ है पवन चलावत बरसावत सुख हरि श्रृंगार घन ॥ (सनेहताको बर्णन) दृगन देखु सिय दूलह नीको । भावत हयफरकावत आवत ऐसो सुंदर द्वितिय दुनीको ॥ बपुकी सुछबि अपार निहारत मार श्रृंगार शरीर सुधारैं । बिश्वनाथ छबि तकत शिरीपतिं तन मन धन इन ऊपर वारैं ॥ सुन्दरता को बर्णन ॥

कृपानिवासकृतपददादरा ॥ सईयोआजु बना दोबना नीकीभांति। पग में जावक कर में मेहँदी शिरसे हरेदी पांति ॥ अंग उमंग अनंग बिमोहत छायरही नवक्रांति । कृपानिवास निरखि सीता बर लोचन पाईं हैं जल स्वाति ॥

सरयूसखीकृतपद ॥ बनाजी प्यारी चितवनि है चित चोर। भौंहैं कमान बान बांके लोचन कजरारे दृगकोर ॥ जुलफैं जुलुम करत मुखऊपर अंग अंग भरी है मरोर । तुरँग नचावत आवत सजनी दशरथ राजकिशोर ॥ सरयू सखी बनराकी छबि पर वारिय काम करोर ॥

रघुराजसिंह० ॥ बानिकवेष अवध बनरेकी । चंपकरंगबिराजत बागो उर पुखराज सुछबि गजरेकी ॥ शीश मौर सेहरा सोहावन कुंडल कानन बनीमकरेकी । श्रीरघुराज राज अलबेलो मति गतिहेरि हरत हियरेकी ॥

रसिकअलीकृत ॥ अनोखोमाई राजकुँवर बनरा । खंजन मद गंजन अंजन युत नैनहरे मनरा ॥ मोतियनमय शिर मौरमनोहर उर मोतिन गजरा । रसिकअली लखि राम बना छबि मनमें मार मरा ॥

रघुराजसिंह कृत ॥ हो सलोना बना राजकुँवर वारी जाउं । हँसनि फँसनि फांसत आलिनको बिहँसनि में वारी जाउं ॥ मैन सैन उरहोत दुशाले चितवनि में वारी जाउँ । श्रीरघुराज मदन नेवछावरि बोलनि में वारी जाउं (अथ सखी प्रति सखी बचन) दोहा ॥ कोउ सखिजन संघर्षवश जस तस कै कढ़िजाय। पुनि आवनि चाहत लखन बोली सजनिं सुनाय ॥ पद ॥ देख-नरी चलु अवध दुलारो । आयो बनि बनरा मिथिलापुरहौं ज्यों त्यों यक बार निहारो ॥ नयनन परत धस्यो हियरे महँ केहूं निकसत नाहिं निकारो । श्रीरघुराज सांवली छबि पै हौं तुरंत तकि तनमन वारो ॥

प्रेमसखीकृतसवैया ॥ दर्पणसे मुख गोल कपोल सखी अवलो-कतही रहिये । नैन समेत फँसे मनबुद्धि कहो उपमा अब क्यों कहिये ॥ अंचलओट भये सजनी लघुमीन ज्यों बारिबिना दहि-ये । प्रेमसखी हिय माहँ बसै तिनको फिर साधन क्याचहिये ॥

आसक्तताको बर्णन ॥

किशोरअलीकृतसवैया ॥ अति राजि रही पगड़ी शिर पै कलँगी मणिमै लटकी लसिकै। कलकंचुकि त्यों बिलसै अँगमें पटुका कटिखीन बँधो कसिकै॥ सखि मैं तो झरोखाहिते निरखी निरख्यो मुखमोरि सोऊ रसिकै। चित चोर सो राजकिशोर अली मन मेरो चुरायलियो हँसिकै॥

रामसखेकृतपद ॥ कोशल राजकिशोर तेरे रतनारे नैनलगे। मिथिलापुरमें आय सबनिके बरबस प्राणठगे॥ लिये श्यामता कछुक सिताई सुआशृँगारपगे। रामसखे लखि जनु रतिपतिके शायक से उरमाहँ खगे॥

प्रियाशरण० पद ॥ रामलाल बनरा मोय मोही चेटक डारि दईरी। माथे मौर मणिन मोतिनमय लखि सुधि भूलिगईरी॥ चितवनि चारु मदन मन हरनी दूलह राम बिहारी। सुरँग बसन ढिग मणि मुक्तावलि जरित महाछबिकारी॥ अस शोभा कहुं सुनी न देखी जस यह राज सलोना। नखशिख शुभ माधुरि मन मोहत ठौर ठौर बरटोना॥ लखि छबि मगनसखी सब गावति मंगलराग सोहाई। प्रियाशरण मनहरण लालछबि नयनन रही समाई॥

युगलानन्यशरण० गजल ॥ सखी श्याम बनेकी अदां दिल बीच बसी है। भूले न भुलाये मुझे लयलीन लसी है॥ क्या खूब झलक सेहरेकी सब तौरसे प्यारी। कुर्बान हुआ आपही शुचि सार शशी है॥ दरदस्त पांय मेहँदी मुबारिक चेखुश लगे। आशिकके कत्लम करनेके लिये लाल असी है॥ जुलफैं मरोरदार सुरत शोकसे सोहै। जी जुम्मका जिसबीच बांध छोड़हँसी है॥

रघुराज०पदरागदादरा ॥ आली सिया बर कैसा सलोना। कोटि मदन मूरति नेउछावरि दै दै सखी चलि भाल दिठौना॥ डरत मोर जिय डगर नगरमहँ कोऊ सखी करिदेइ न टोना। हौं तो जाइ ललकि उर लगिहौं रैहौं न देइ जो मोहिं भरि

सोना ॥ कहरपरी यह जनक शहरमहँ छूट्यो री खानपान निशि सोना । श्रीरघुराज मोर वारेपर अबतो हमहिं फकीरिन होना ॥

बैजनाथ० पद ॥ आली सियाबर अजब रँगीला । पग जावक कटि बसन पीतकर कंकण शिर सुमौर चटकीला ॥ बदन तँबोल बोल मृदु बिहँसानि कुण्डल श्रवण अलक सोमीला । अधर बुलाक नयन अंजनयुत सुभग भालपर तिलक रसीला ॥ मेहँदी करपग रुचिर महाउर छबि लखि नवलनेह उमगीला । बाल बिहाल हाल यहि पुरकी बिषधर मनहुँ मंत्रसों कीला ॥ परत न चैन रैन दिन नयनन मनहुं चकोर चंदकी लीला । बैजनाथ रघुनाथ बने पर अबतो लाज शरम सब ढीला १ आली सियाबर डारि मोहनियां । नारि निहारि वारि तनमन धन क्षण न परत कल कछु न सोहनियां ॥ बैन न आव रैन दिन यकटक रूप भरत करि नैन दोहनियां । प्रेम पियास अंक लागनकी शंक नहीं गुरुलोक कहनियां ॥ अहंकार बुधि चित हरिलैगे धीरज धरम शरम समुझनियां । बैजनाथ रघुनाथ कुवँरकी बोलनि हँसनि चलनि चितवनियां २ ॥

रघुराज०पद ॥ रघुबर कैसीहै तेरी नजरिया । एकहुबार परति जेहि ऊपर रहत न तनहिं खबरिया ॥ हे अवधेश लला बनरा बन डोलहु डगर डगरिया । श्री रघुराज जनकपुर नारी मोहैं झांकि झँझरिया १ अब कुलकानि सुरति नहिं आवै । देखत बनत अवध बनराको और नहीं कछु भावै ॥ बरबस चलि लगि हौं निशंक उर कोऊ कितेक बुझावै । श्रीरघुराज लगनके मनको को पुनिकै मुरकावै ॥

रामसखे०पद ॥ ये मा अजब बना बनिआयो । देख्यो सुन्यो न या पटतर कोउ जस सीता बर पायो ॥ माथे मौर बांधि चेटकमय सबको पतिव्रत नायो । रामसखे वारिहौं मैंहुं अब रूप अतिहि मन भायो १ बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो । दशरथकुँवर सांवरो अदभुत सोहत परमछबीलो ॥ अनब्याही ब्याही सब

ब्याही देखत रूप ठगीलो । रामसखे अबलगत प्राण सम प्यारो अवध नवीलो २ ॥ अथसुंदरताको बर्णन ॥

प्रेमसखीकृतपद ॥ अजब सलोना बनिआया । बनरा ॥ शिरसोने को मौर बिराजै मुतियन झालरि लाया ॥ सुंदर सब अंगन प्रति भूषण करमें मेहँदी लाया । प्रेमसखी बलिहारि बदनछबि बनरी के मन भाया ॥

रूपसरसकृतपद ॥ बनराने मनरा लीन्हों । नैन सैनते मैनबिवश करि हर सुधिबुधि छलकीन्हों ॥ बदनचंद इतफेरनवीलोमंदमुसकि रसदीन्हों । रूपसरस अस छैलछटाबिन धृकजीवन जग चीन्हों १ मोको आली बनराछबि बशकीन्ही । भूषण बसन जाल छैली गति फांस मृगी ज्यों लीन्ही ॥ मोमनमीन गह्यो दृगबंसी अलक डोरि रसभीन्ही । तबतें रंग पतंग सदृश कुल कानि उडी रति चीन्ही ॥ भई निशंक लोक परलोकहु इत्यादिक भयहीन्ही । रूपसरस अबतो सियबर सँग रहिहै नित रतिभीन्ही ॥

युगलाननकृतपद ॥ बनेकी बांकीछबिहेरो । लोकलाज कुलकाज गाज सम मानि समुद्रमें गेरो ॥ सुहाई नख शिख ललिताई । उपमा सम उपमा न मिले कहुँ थकिगई कविताई ॥ अनोखे चोखेपन चोखे । लसत अमल आभरन हरन मन मनमथ तर तोखे ॥ सनेई श्यामा सुखदाई । जुलफ कुलफ चित चमकि रही रस बरसत द्युतिपाई ॥ मधुर मुसक्यान खान सुख की । श्री युगलानन्य अली अवलोकत कथा कवन दुखकी ॥

सुधामुखीकृतपद ॥ बनो सखि साँवलियो बनरा । दृग खंजन अंजन की रेखा मोह लेत मनरा ॥ मनोहर मौर शिर सोहै । कर कंकण महदी बनिआई कोटि काम कोहै ॥ पगन छबि जावककी नीकी । सुधामुखी मुसक्यान मिटावै प्रबल ताप जीकी ॥

शृंगारका कथन ॥

बैज० १५०पदलावनीमे ॥ बनो बनरा जो सीताको । लोक समिता नहीं ताको ॥ जरी रंग पीत को जामा । मैन लखि लाजत

तनश्यामा ॥ सजे मेहँदी भली हाथे । मौर मणि हेमको माथे ॥ रचित महाउर पाउँ में उर मोतिन की माल । पीत बसन कटि कसन रँगीली सिंह ठवनि गज चाल ॥ निरखि मोही अली ताको । कमल नव नयनन में कजरा । सजै गर फूलन का गजरा ॥ अधर छबि नासिका मोती । कानमें कुंडलद्युति होती ॥ झलकत अलक कपोलपै पलक न लावत बाल । बैजनाथ जाओर रँगीली चितवनि दशरथ लाल ॥ चितै हरि लीन्हों ही ताको ॥

युगलानन कृतपद ॥ बना तेरी छबिपर बलि बलिजाऊं । ऐसी द्युति अनमोल लहीकित कहो कौनबिधि गाऊं ॥ सौरभ सदन सरस सोहन तन सुखमा लखि हरषाऊं । मोहनि मन उन्माद बढ़ावनि मधुर बचन हिये लाऊं ॥ चितवनि चपल चित्त चोरन तकि छकि जकि होश गमाऊं । प्रियबर बैन सुधानिन्दत सत सुनि सनेह सरसाऊं ॥ युगलानन्य अली दूलह लखि देह गेह बिसराऊं ॥

रघुराजसिंह०पद ॥ बैठोरी घर द्वार देवाई । बारबार मैं कहौं बुझाई ॥ नृप कोशल कुमार कलकारी अलक पाश पसराई । फांसत नारि बिहङ्ग मन क्षण क्षण कछु न चलत मनुसाई ॥ अबलों रहे येई यहि पुर में यक बिदेह नृपराई । अबतो अवध छैल सिगरो पुर दियो बिदेह बनाई ॥ देखन को सुकुमार श्याम तन जो जैहौ बरिआई । श्री रघुराज लखौ वाकी छबि दैहौ गरब बिसराई ॥

बैजनाथकृतपद ॥ श्याम सुन्दर रघुनाथ बनेकी । छबि लखि मन न अघातरी माई । निरखत ललकि पलक नहिं लागत देह बिवश होइ जातरी माई ॥ आठौ याम श्याम रंगभीनी काम न कछू सुहातरी माई । बैजनाथ भूली सब सुधि बुधिदृग माधुरि पगि जातरी माई ॥

संग्रह०दोहा ॥ कहत परस्पर अस बचन मिथिलापुरकी बाम ।

मोह्यो सखिमन सबनको राम सुछबि अभिराम ॥ चौपाई ॥ प्रेमासक्त भईं सब नारी। लोक लाज कुल कानि बिसारी ॥ मनमथ कोटि निछावरि कीजे। राजकुवँर छबि दृगभरि लीजे ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ विषमदृष्टि गौतमहू अहई। लोकपाल इरषा तें कहई ॥ शापहु सहज न दिय सबकाहीं। हैंप्रसन्न अपराधहि माहीं ॥ यहिबिधि तियन सुरनकी बानी। सुनतजात प्रभु अति सुख मानी ॥

संग्रह० ॥ भये मोह बश नर अरु नारी। रामचंद्र मुखचंद निहारी ॥ तियन सहित सुर चढ़े बिमाना। बाद्य बजाय करहिं कल गाना ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मुदित देवगण रामहिं देखी। नृप समाज दुहुँ हरष बिशेखी ॥ छंदहरिगीतिका ॥ अति हर्ष राजसमाज दुहुँ दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी। बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जयजयति जय रघुकुल मनी ॥ इहिभांति जानि बरात आवत बाजने बहुबाजहीं। रानी सुआसिनि बोलि परिछनहेतु मंगल साजहीं ॥

संग्रह०दोहा ॥ रूपलता अंतःपुर नारि कहहिं असबैन। सिय प्यारीके दुलहको लखिलीजे भरि नैन ॥

इतिश्रीरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलचौदहवांप्रकरणसमाप्तः १४ ॥

श्री सीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

पन्द्रहवांप्रकरण ॥

श्रीरामचन्द्रश्रीजानकीजीकाऔरप्रियबंधुनसहितभावँरीहोकर दुलहिनिनसहितजनवासेमेंपधारना ॥

रघुराज०सोरठा ॥ जब मिथिलापति द्वार आई अवध बरात बर । तेहिक्षणको सुखभार बरणि पारकिमिजाय कवि ॥ दोहा ॥ मिथिला जन तिमि अवधजन तिमि सुर सबै अपार । तिमि महि के बासी मनुज प्रगट्यो पारावार ॥ जनक महलके द्वारको चौक महा बिस्तार । भरत भीर जस जस मनो तस तस बढ़तअपार ॥ चौपाई ॥ कनकखचित बरबसन बनाये । चित्र बिचित्र रंग तिन भाये ॥ परिचर तहँ बिदेह के ल्याये । डारि पावँरे अति सुखछाये। गोपुरते अंतःपुर द्वारा । परीपाँद बिस्तार अपारा ॥ जनकराज महिषी छबिखानी । साजि सुआसिनि अतिहरषानी ॥ रचिआरती कनक मणि थारा । पठई जहां द्वारकर चारा ॥ द्वारचार थल रच्यो बनाई । मोतिन माणिक चौक पुराई ॥ कनककुंभ करि बदन स्वरूपा । आवाहन करि मंत्रअनूपा ॥ थापित करत माहँ तेहिकाला । भे प्रत्यक्ष गणनाथ बिशाला ॥ गौरि अवाहन किय सनमानी । मूर्त्तिवंत भै प्रगट भवानी ॥ रामदरश लालस मन माहीं । समय समय सुर प्रगटत जाहीं ॥ उभय ओर आसन

अतिपावन। धरे पुरोहित शुचि छबिछावन॥ गौतम सतानंद बडज्ञानी। याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी॥ दोहा॥ राजत भै मुनिमंडली रामदरश अभिलाख। द्वारचार करवावने बैठे युत श्रुतिसाख॥ चौपाई॥ उज्वालित आरती अपारा। लीन्हें पाणि पुरट के थारा॥ खड़ी सुआसिनि किहे कतारा। कनक कुंभ शिर सजत अपारा॥ भई भूमि थिर मनहुँ दामिनी। गावहिं मंगल गीत भामिनी। सचिव सुदामन जनक पठाये। लक्ष्मीनिधि कहँ बचन सुनाये॥ महाराज अस दियो निदेशा। ल्यावहिं सुतन सहित अवधेशा॥ रहे चौक महँ खड़ी बराता। आवहिं रघुकुल नृप बिज्ञाता॥ रामसखा सब संग सिधारे। देखे दूलह द्वारनचारे॥ सचिव सकल मिथिलेश निदेशा। राजकुवँर सों कह्यो अशेशा॥ जनक कुवँर दशरथ पद बंदी। पितु रजाय सब कह्यो अनंदी॥ सुनि कोशलपति अति सुख पाये। तुरंगन ते कुवँरन उतराये॥ चारु सुखासन बरन चढ़ाये। सखा और कुलवृद्ध बोलाये॥ भये पालकी राउ सवारा। शोभा निरखि धनद हियहारा॥ दोहा॥ सब तुरंग मातंग रथ औरहु सकलबरात। खड़ी करायो चौकमहँ बाजत बाजनब्रात॥ चौपाई॥ परत पांवड़े पांयन मन्दा। करि आगे दूलह सानन्दा॥ राम भरत लक्ष्मण रिपुशाला। तिन पाछे दशरथ महिपाला॥ चलेउ द्वार को चार करावन। जनु बिधि लोकपाल युतपावन॥ चढ़ी अँटा अन्तःपुर नारी। लखि दूलह छबि तनमन वारी॥ दशरथ तुरत सुमन्त बोलाये। सादर सुखद निदेश सुनाये॥ रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई। दोउ आनहु पालकी चढ़ाई॥ कश्यप मार्कण्डेय उदारो। कात्यायन जाबालि हकारो॥ और मुनिनकहँ लेहु बोलाई। द्वारचार करवावहिं आई॥ ल्याये तुरत सुमन्तलेवाई। रामब्याह प्रमुदित मुनिराई॥ चढ़िपालकी बशिष्ठ सिधारे। तिमि कौशिक तप तेज अपारे॥ दोहा॥ मुनिमंडल महिपालमणि मंडितभये अपार। रविशशि अश्विनितनय मनु

वेद सहित करतार ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि अन्तःपुरके द्वारे । लै दूलह नरनाथ पधारे ॥ लै दूलह जब अवध महीपा । द्वारचार की चौक समीपा ॥ आयउ मुनि मंडल लै भारी । तब बशिष्ठ अस गिरा उचारी ॥ धरहु सुखासन बरन उतारी । अवधनाथ आपहू पधारी ॥ अस कहि पढ़न लगेउ स्वस्तैना । उतरि भूप युत कुवँर सचैना ॥ चौक समीप कुवँर करि आगे । ठाढ़े भये भूप अनुरागे ॥ तहां सुआसिनि परम हुलासिनि । सजी सकल मिथिलापुर बासिनि ॥

श्रीतुलसीदासजी कृत दोहा ॥ सजि आरती अनेक बिधि मंगल कलश सवाँरि । चली मुदित परिछनकरन गज गामिनि बर नारि ॥ चौपाई ॥ बिधुबदनी मृगशावक लोचनि । सब निज तनु छबि रतिमदमोचनि ॥ पहिरे बरन बरन बरचीरा । सकल बिभूषण सजे शरीरा ॥ सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिं गान कलकंठ लजाये ॥ कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं । चाल बिलोकि काम गजलाजहिं ॥ बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥ शची शारदा रमा भवानी । जे सुरतिय शुचि सहज सयानी ॥ कपटनारि बर वेष बनाई । मिली सकल रनिवासहिं आई ॥ करहिं गान कलमंगल बानी । हरष बिवश सब काहुनजानी ॥ छंद हरिगीतिका ॥ को जान केहि आनन्द बश सब ब्रह्मबर परिछन चली । कल गान मधुर निशान बरषहिं सुमन सुर शोभा भली ॥ आनन्दकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई । अम्भोज अम्बुक अम्बु उमँगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

अथ सुनैनाजीआदि निमिबंशियोंकी रानियोंका गान ॥

प्रियाशरण॰सुगंधाछंद ॥ मंगल मूरति रामबना छविअयन है। जेहि छबि कहत लजात शेष शिव बयन है॥ सुंदर मौर मनोहर शीश बिराजहीं। नखशिख मणि शृंगार महाछबि छाजहीं ॥ काजर नयन बिराजित अति शोभामई। केसर तिलक ललाट तड़ित द्युति छबिछई ॥ मणि मोतिनकी माल उर सुशोभाकरे। श्यामगात नभमध्य नखत जनु छबि धरे ॥ कटि तट किंकिणि रटतमधुर स्वर बाजहीं। नूपुरछबि अवलोकि मदनबहुलाजहीं॥ रघुबर बना सलोना रानिन भावहीं। प्रियाशरण छबि देखि सुमंगल गावहीं ॥

श्रीतुलसीकृतदोहा ॥ जो सुखभा सिय मातु मन देखि राम वर वेष। सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस शारदा शेष ॥

रघुराज॰चौपाई ॥ सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी। जनक पतोह क्षमा छबि छमनी॥ औरहु वृद्ध जनक कुल नारी। लखि दूलह तनमन धनवारी ॥

प्रियाशरणकृत ॥ पुनि धरिधीर राम मुख देखी। हर्षीं सब रनिवास बिशेखी ॥

श्रीतुलसी॰चौपाई ॥ नयन नीर हठि मंगल जानी। परिछन करहिं मुदितमन रानी ॥ छंदसोहर ॥ नखशिख सुंदर रामरूप जब देखहिं। सब इन्द्रिन महँ इन्द्र बिलोचन लेखहिं ॥ परमप्रीति कुलरीति करहिं गजगामिनि। नहिं अघाहिं अनुराग भागभरि भामिनि ॥ नेगचार महँ नागरि गहरु लगावहिं। मुनिमन अगम अनंद सुलोचनि पावहिं ॥ करि आरती निछावरि बरहिं निहारहिं। प्रेम मगन प्रमदा गण तन न सँभारहिं ॥

चौपाई ॥ बेद बिहित अरु कुल आचारू। कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू ॥

संग्रह० ॥ मुनिवरकी अनुशासन पाई। बैठेउ आसन पर रघुराई ॥

रघुराजसिंह० ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ उदारा । बैठ राम ढिग गुनि अधिकारा ॥ मंजुल बाजन बजत अपारा। गाय रहीं सुर नर मुनि दारा ॥ अंतःपुर महँ कह कोउ नारी। द्वारचार देख-हू सिधारी ॥ दोहा ॥ बिज्जु छटासी कोउ सखी बैठि अटा सुख छाय। कहत सखी सों बैन बर औरहु सखिन सुनाय ॥ पद ॥ सखि लखन चलो नृप कुवँर भलो मिथिलापति सदन सिया बनरो। शिर मौर बसन तन में पियरो ॥ उरसोहत मोतिनको गजरो । रतनारी आंखिन में कजरो ॥ चितये चित चोरत सखि हमरो। चितये बिन जिय न जिये हमरो ॥ अलकैं अलिअजब लसै चेहरो। झपि भूमि रह्यो कटिलों सेहरो ॥ युवती जनको जालिम जहरो। मन बैठत लखत मैन परो ॥ पुनि ऐहैं नाहिं जनक शहरो। ले लोचन लाहु नेक गहरो ॥ यकहै वहि लखत बड़ो अनरो। पुनि रुकत न रोकेहु तें उनरो ॥ रघुराज त्यागि जगको झगरो ॥ दोहा ॥ कोउ सखि पाछे परिगई तेहि कोउ कहति पुकारि। खरी कहां तू यहि घरी अरी आउ सुकुमारि ॥ पद ॥ चलुरी चलु देखसिया बनरो। यह राजकुमार हरताहियरो ॥ शिर को पागो बागो पियरो। युग जुल्फ जुलम करती जियरो ॥ जेहिं डहरत डहर करतकहरो। चित चख चोरत चेटकचहरो ॥ सखि प्राण पियार सदा हमरो। रघुराज अनुज सोहहि जमरो ॥

रामसखेकृतपद ॥ श्यामलरा बना राघौ जू महराज । अजब बन्यो प्यारी अँखियन कजरा दशरथ सुत शिरताज ॥ रतन मौर केस-रिया बागो और बिबिध मणि साज । रामसखे यह रूप अटकि मन हरी लोक कुल लाज ॥ दोहा ॥ यहि बिधि भाषहिं तिय सकल बचन सरस रसबोर। सिय बनरे मुख चन्दके कीन्हे नैन

चकोर ॥ चौपाई ॥ लाग्यो होन द्वार कर चारा । किये वेद बिधि मुनिन उचारा ॥ पूजन भयउ जौन तेहि देशू । लिय प्रत्यक्ष ह्वै गौरि गणेशू ॥ करवायउ मुनि बेद बिधाना । मानि आपनो भाग्य महाना ॥ वेणु थम्भ पूज्यो भगवाना । जनु निमि कुल जस ध्वज फहराना ॥ तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आये । साराजोरी चार कराये ॥ यहि बिधि भयो द्वार कर चारा । भरयो भुवन आनन्द अपारा ॥ सतानन्द तब बचन उचारा । सुनु बशिष्ठ गुरु गाधिकुमारा॥आयो अब लगनहुँ कर बेला । मण्डप तर बर चलहिं झपेला ॥ दोहा ॥ नाऊ बारी महर सब धाऊ धाय समेत । नेग चार पाये अमित रह्यो जासु जस हेत ॥ उपरोहित निमि बंशको सतानन्द मुनिराय । लिये नेग बझिराम सु मम हिय बसहु सदाय ॥ तहँ बशिष्ठ बोलेउ हरषि सुनहु राज शिरताज । दूलह सहित पधारिये मण्डप तर सुख काज ॥ चौपाई ॥ बिश्वामित्र महा सुख पागे । सुखित स्वस्त्ययन भाषन लागे ॥ औरहु सकल मुदित मुनिराई । पढ़न लगे स्वस्त्ययन सोहाई ॥ तेहि अवसर बहु बजे नगारे । नौबत झरन लगी प्रति द्वारे ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ पंच शब्द धुनि मंगल गाना । पटपांवड़े परहिं बिधि नाना ॥

संग्रह० ॥ आयसु पाय सुनैना रानी । कंचन थार लियो निज पानी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ करि आरती अर्घ तिन्ह दीना । राम गवन मण्डप तब कीना ॥

रघुराज० ॥ उचीं नारि सब एकहिबारा । मंडपतर गमनी भरि थारा ॥ ह्वैगो सकल द्वारको चारो । आपहु मंडपतर पगुधारो ॥ सुनि दशरथ बशिष्ठकी वानी । सुमिरि गणेश महेश भवानी ॥ रंगनाथ पद पंकज ध्याई । उठेउ अनंदित कोशलराई ॥ सतानन्द गुरु गाधिकुमारा । करि आगे मुनि और उदारा ॥ पुनि

आगे दूलह छबि भारी । अन्तःपुरकहँ चलेउ सुखारी ॥ राम व्याह गावहिं सब नारी । देहिं सुआसिनि अर्घ सुखारी ॥ मणि दीपिका दिपै गृह माहीं । थल थल करहिं प्रकाश तहांहीं ॥ कक्षा तीनि बिभूति अपारा । निरखत हरषत अवध भुवारा ॥ गये खास रनिवास दुवारा ॥ जहँते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा ॥ दोहा ॥ धवल धाम ध्रुव धाम इव चामी करके चारु । हिमगिरि मन्दर मेरु जिन जोवत मानत हारु ॥

कविकेशवदासकृत पद्धटिकाछंद ॥ गज दंतनकी अवली सुदेश । तहँ कुसुमराज राजति सुवेश ॥ शुभ नृपकुमारिका करतिगान। जनु देविनके पुष्पक बिमान ॥

रघुराजसिंह० चौपाई ॥ चौक चंद शाला छबि शाला । लखि ललचत अमरावति पाला ॥ राम निरखि ससुरारि बिभूती । मन महँ गुनी सीय करतूती ॥ निरखि बिदेह बिभव अवधेशा । मनमहँ करत अमित अँदेशा ॥ धौं सुरपुर इत शक्र बसायो । ब्रह्म सदन धौं इत चलि आयो ॥ किधौं बिदेह भक्ति जिय जानी । हरि हरपुरी आय निरमानी ॥ निज तप बल यह बिभव अपारा । लह्यो बिदेह दीनकरतारा ॥ यहि बिधि देखत सुख अवगाहा । दशरथ बारहिंबार सराहा ॥ गे ड्योढ़ी अन्तःपुर केरी । सजी नारि तहँ खड़ी घनेरी ॥ लिहे सहस्रन सखी म-साला । चलीं देखावत सब सुर बाला ॥ तहँ रनिवास पौर अधिकारी । जोरि पाणि जय जीव उचारी ॥ करत प्रवेश नेगसो माँग्यो । दिय मणिमाल राउ अनुराग्यो ॥ सोरठा ॥ करि आगे मुनि वृन्द तिनपाछे करि कुमारको । नाहिंसमाह आनन्द अन्तः-पुर प्रविशे नृपति ॥ दोहा ॥ लीन्ही परिकर करनते चमरछत्र बहु नारि । चली चलावत चायभरि करि दूलह बलिहारि ॥ चौपाई ॥ आयेराम जबै रनिवासा । अन्तःपुरमहँ भयो हुलासा ॥ धाईं दूलह देखन नारी । देखि देखि जाती बलिहारी ॥ रहहिं जोहिं जकि कढ़ै न बानी । चित्र पूतरीसी छबिखानी ।

बहुरि परस्पर कहहिं सयानी । निजकर बिधि मूरति निरमानी ॥ कहँ अनंग बापुरो अनंगा । कहँ सुर बिगत पलक रसभंगा ॥ लखी आजलों असछबि नाहीं । अबलों लोचन रहेवृथाहीं ॥ आजुहि आंखिनकर फल पायो । बिधिबनाय दैपलक नशायो ॥ युवति यूथ असभाषहिं बातैं । रामदरश नहिं नैन अघातैं ॥

संग्रह० ॥ इतअवधेश लखत रचना बर । मंद गवन मन अति आनँद भर ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ दशरथ सहित समाज बिराजे । बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥ समय समय सुर बरषहिं फूला । शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥ नभ अरु नगर कोलाहल होई । आपन पर कछु सुनै न कोई ॥ इहिबिधि राम मंडपहि आये । अर्घदेइ आसन बैठाये ॥ छंदहरिगीतिका ॥ बैठारिआसन आरती करि निरखि बर सुखपावहीं । मणि बसन भूषण भूरिवारहिं नारि मंगल गावहीं ॥ ब्रह्मादि सुर बर बिप्रबेष बनाइ कौतुक देखहीं । अवलोकि रघुकुल कमल रवि छबि सुफल जीवन लेखहीं ॥ दोहा ॥ नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ । मुदित अशीषहिं नाइ शिर हरष न हृदय समाइ ॥

कृपानिवास०चौ०॥ मंडपद्वार लसैं नृपदशरथ । सुख समाज अहिराज थकै कथ ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ मिले जनक दशरथ अतिप्रीती। करि बैदिक लौकिक सबरीती ॥ मिलत महा दोउ राज बिराजे । उपमा खोजि खोजि कविलाजे ॥ लही न कतहुँ हारि हिय मानी । इनसम यइ उपमा उर आनी ॥

कृपानि० ॥ पगे भायभरि चगे न अंगा । पुलकिद्रवत दृग मनसि

उमंगा॥उपमा सम नहिं त्रिभुवनपाई । तदपि न मानति मतिकछु गाई ॥ मनहुँ मोद रस बोध स्वरूपा । परमंगल लखि मिलत अनूपा ॥ प्रेमसूत्र जनु विवश मेर भरि । बिच मनिका सुख व्याह और धरि ॥ दाम शीश द्वै बिलग बिराजै । भजन अवधि फल मूरति भ्राजै ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ समधी देखि देव अनुरागे । सुमनबर्षि यश गावन लागे ॥ जग बिरंचि उपजावा जबते । देखे सुने व्याह बहु जबते ॥ सकल भांति सब साजसमाजू । समसमधी देखेहम आजू ॥ देव गिरासुनि सुंदरि सांची। प्रीति अलौकिक दुहुँ दिशि माची ॥ देत पांवड़े अर्घ सुहाये । सादर जनक मंडपहि आये ॥

रघुराज० ॥ फहरि रहे पताक बहुरंगा । छबिसागर जनु तरल तरंगा ॥ कनक इक्षु दंडन ते छायो । तापर बिशद बितानतनायो॥ रतन यतनयुत जड़यो अमाना । जगमगात द्युति जाति दिशाना॥

कविकेशवदास०पद्धटिकाछंद ॥ गजमोतिनकी अवली अपार । तहँ कलशनपर उर मति सुढार ॥ शुभ पूरित रतिजनु रुचिर धार । जहँ तहँ अकाश गंगा उदार ॥

रघुराज०दोहा ॥ मोतिन माणिककी फबति झालरि झूलि अपार । मनहुँ फँसावन मनबिहँग रच्यो जाल करमार ॥ चौपाई॥ तहँ मणिदीप प्रदीपहि नाना । फटिक फरस बिस्तार महाना ॥ आखत पीत पुहुप बर नाना । अलंकार बेदिका बिधाना ॥ पुरट पालिका अगणित भारी । लसै जवांकुर की हरियारी ॥ लसत अमोले कनक करोले । भरे सुरभि जल धरे अतोले ॥ कनक थार कोपर रतनाली । धूप दीप भाजन मणिमाली ॥ खंभ प्रकाश असंख्य उदोता । धरेश्रुवा शुक सुरसरि सोता ॥ अर्घपात्र मंडित मणि मोती । लाजा भाजन सुछबि उदोती ॥ कंचन थारी थार कटोरे । जगमगात चितवत चितचोरे ॥ बिछे पवित्र

दर्भ महिमाहीं। तहँ रतनासन चारु सोहाहीं॥ मगरोहन छबि नहिं कहिजाई। सहित स्वर्ग छवि मेरु लजाई॥दोहा॥ दिपति दिव्य दीपावली तारावली प्रमान। रतन बिहंग बिराजहीं छबि सुरवृक्ष समान॥ मंडप खंभन में लगे मणिमय मुकुर बिशाल। जगमगात प्रतिबिंब बहु बस्तुब्रात तेहि काल॥

श्रीतुलसी० छंद हरिगीतिका॥ मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे। निज पाणि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे। कुलइष्ट सरिस बशिष्ठ पूजे बिनय करि आशिष लही। कौशिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौन परै कही॥ दोहा॥ बामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश। दिये दिव्य आसन सबहि सबसन लही अशीश॥

रघुराज०॥ सबै देव मुनि रूपधरि मिले महार्षिसमाज। बैठे स्वामी स्वामिनी व्याह बिलोकन काज॥ चौपाई॥ बिद्याधर चारण गंधर्वा। किन्नर सिद्ध महोरग सर्वा॥ आसमान महँ चढ़े बिमाना। बरषहिं फूल बजाय निशाना॥ सुर सुंदरी करहिं कल गाना। नचहिं अप्सरा सहित बिधाना॥ रही गगन ध्वनि चहुं दिशि छाई। तैसहि जनक नगर महँ भाई॥ बाजन बाजत बिबिध प्रकारा। द्वार द्वार सोहत नट सारा॥ राजमहल सुख जाय न गाई। थल थल नाचहिं नटी सोहाई॥ भई एक ध्वनि मिलि ध्वनि भूरी। रहीपुरी पुहुमीमहँ पूरी॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा। जानि ईश सम भाव न दूजा॥ जोरि पाणिकर बिनय बड़ाई। कहि निज भाग्य बिभव बहुताई॥ पूजे भूपति सकल बराती। समधीसम सादर सब भांती॥ आसन उचित दीन्ह सब काहू। कहौं कहा मुख एक उछाहू॥ सकल

बरात जनकसनमानी । दान मान विनती बरबानी ॥ ब्रिधि हरि हर दिशिपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥ कपट ब्रिप्रबर वेष बनाये । कौतुक देखहिं अति सचुपाये ॥ पूजे जनक देवसम जाने । दिये सुआसन बिन पहिंचाने ॥ छंद हरिगीतिका ॥ पहिंचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई । आनंद कंद बिलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई ॥ सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये । अवलोकि शीलसुभाव प्रभुको बिबुधमन प्रमुदितभये ॥ कुण्डलिया ॥ राम सु भूषित जगमगे माड़व मध्य समाज । माथे मुक्ता मौर छबि नखत सहित निशिराज ॥ नखत सहित निशिराज नारि नर देखत शोभा । रघुपति मुख शशि शरद निरखि छबि तृप्त न कोभा ॥ रघुपति मुख छबि शरद शशि नयनचकोरनि लखिलगे । मदन कोटिशत वारिये राम सुभूषित जगमगे ॥ दोहा ॥ रामचन्द्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर । करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥ चौपाई ॥ समय बिलोकि बशिष्ठ बुलाये । सादर सतानन्द सुनि आये ॥ बेगि कुँवरि अब आनहु जाई । चले मुदित मन आयसुपाई ॥ रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन समेत सयानी ॥ बिप्र बधू कुलवृद्ध बोलाई । करि कुलरीति सुमंगल गाई । नारि बेष जे सुरबर बामा । सकल सुभाय सुंदरी श्यामा ॥ बारबार सनमानहिं रानी । उमा रमा शारद समजानी ॥

संग्रह० ॥ कह्यो सुनैना अति हरषाई। सुनत सखिन सीतहि अन्हवाई ॥

कृपानिवास० ॥ सखी शृंगारत सिय सुकुमारी। कमलादिक चतुरा बहु नारी ॥

रघुराज० ॥ रतन ग्रथित अम्बर पहिराई। चितै चौंध चखगई समाई ॥ पुरट पीठ सीतहि बैठाई। मणिन जटित भूषण पहिराई ॥ नख करतनि नखमाहिं छुहाई। नाउनि तहँ जावक लै आई ॥

हरिहर०दोहा ॥ कोमल सिय पद पीठ ढिग लाजत शची कपोल। सिरससुमन मखमल कहा कोमलता बेमोल ॥ ललित पद अंगुरिन की शोभा अति सरसाय। पंचदेव मानौ समुझि बैठे पद ठहराय ॥ सिय एँड़ी सम नहिं रँगी ठहरावे करि गौर। नारंगी तब धरि दिये नाम सुकबि शिरमौर ॥ सिय तरवा लाली निरखि फूल गुलाब मलान। गंग यमुन के बीच महँ दुरी सरसई आन ॥

देवस्वामी०पद ॥ सियजूके अरुणारे दोउ तरवा। मानो अनुरागनके घरवा ॥ का गुलाब का कमल कँटीलो का बड़लाल अनरवा। का कुसुंभ जल बुंद परतही बिगरत रंग निचोरवा ॥ का मखमल का सरसों कलँगी का मालती पतरवा। इनकी कोमलताके आगे का कपोल बटपरवा ॥ ऊरध पद्मफलपतरु अंकुश रेखनको उजियरवा। एक एक रेखनपर वारों त्रिभुवन को शृंगरवा ॥ जिनके धोवत डरत देवता जिनि चुइपरत अतरवा। इनसे लगन नहींतो बिरथा दंड कमंडलु करवा ॥

रघुराज० दोहा ॥ अमर यतन करि जन्म बहु लहे न जिन रद रेनु। ते पद नाउनि कर लसत निज जनके सुरधेनु ॥ चौपाई ॥ जे पद लाल प्रबालहु तेरे। शिव अज उरपुर करत बसेरे ॥ ते पदमहँ नाउनि बड़ भागिनि। जावक देन लागि अनुरागिनि ॥ चितवत चारु चरण अरुणाई। नाउनि जावक देन भुलाई ॥

जगा न जोवति जावक योगू । कियो महाउर नख संयोगू ।
सिय अंगुलिन लखि कोमलताई । नव रसालदल रहतलजाई ।

हरिहरप्र० दोहा ॥ चहुं दिशि लाली मध्य नख शोभा अति
सरसाय । जनु गुलाबके दलनपर दश बिधु बैठे आय ॥ सिय
नख बिधु लखि बिधु लज्यो भज्यो जाय आकास । कसकानि
हियकारो परयो अजहुं झांवरोभास ॥ सीता नख द्युतिकाचमक
लेश चंदके माहिं । तनिक निरंजन ब्रह्म महँ पूरण कतहूं नाहिं॥
जनक लली नख द्युति सरिस निज द्युतिकहँ नहिं जोय । ब्रह्म
ज्योति प्रगटत नहीं अजहूं लज्जित होय ॥

रघुराज०चौपाई ॥ जावकसहित लसत नख कैसे । उदित अमित
अंगारक जैसे ॥ इन्द्रनीलमणि नूपुरभाये । मनु सरोज बहुषट-
पदआये ॥ लघुअंगुरिन मुंदरी सोहाहीं । कंजकोष मनु रवि पर
छाहीं ॥ तेइ पुनि नखन निकट छवि देही । धरयो परिधि मनु
शशिनभनेही ॥ सियपदसम नहिं करिनसरोजू । सहिआतप तप
ठानत रोजू ॥ जब न भयो सियचरण समाना । तब झारत केशर
दलनाना ॥ गुलुफ सुलुफ छबि कविजन कहहीं । नहिं गुलाब
कलिका सम लहहीं ॥ धरयो चरणजलभरि जेहिथारा । भोजो-
हत जावक अनुहारा ॥ दो० ॥ जिनपदलेश कृपापरत पावतदेव
विभूति । तेधोवैति अपने करनि धनि नाउनि करतूति ॥ चौ० ॥
नहछूचार मातुकरवाई । भूषण बसन विमल पहिराई ॥ पुरट
पीठ पुनि प्रीति समेतू । बैठाई सिय सजनि निकेतू ॥ सतानन्द
सों पुनि कहरानी । चुक्योचार इतको मुनिज्ञानी ॥ कहहु जबै
मंडपतरल्यावैं । तब मुनिकह हम जबबोलवावैं ॥ असकहिं मुनि
मंडपतरआये । दूलहदेखि दुगुण सुखपाये ॥ रामकरत गणना-
यकपूजा । लीन्ह्योप्रगट मनोरथपूजा ॥

कृपानिवास० ॥ लौकिक रीति सुप्रीति दिखाई । सियाराम स-
र्वोपरि भाई ॥

रघुराज० ॥ गुरुबशिष्ठ तहँ वेदविधाना । अनल थप्यो वेदी

मतिमाना ॥ प्रगटयो परमप्रकाश हुताशा । ज्वालाबढ़ी दाहिनी आशा ॥ जनक सबंधु बशिष्ठ बोलाये । तासुपाणि मधुपर्कदेवाये ॥ गणपतिपूजन आदिकचारा । करवाये गुरु गाधिकुमारा॥ सतानन्दसों दोउमुनिगाये । बनत आशु अब सियहि बोलाये ॥ दोहा ॥ सतानन्द आनंदभरि कह्यो सुनैनहि जाय । तहां जानकी जानकी गईघरी अबआय ॥ चौपाई ॥ जनकपट्ट महिषी जगजानी । कही सखिनसों मोदितबानी ॥ मंडपतर अब चलहिकुमारी। संगसखी सब साजसमारी ॥

श्रीतुलसी० ॥ सीय सँवारि समाज बनाई । मुदित मंडपहि चलीलिवाई ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ चलि ल्याय सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी । नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥ कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं । मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति बर बाजहीं ॥

रघुराज०चौपाई ॥ बोलहिं सखीनकीब सुखारी । जैजैजै मिथिलेशकुमारी ॥ चलै चारुचामर दुहुंओरा । छजत छत्र छविछ्वै क्षिति छोरा ॥ पानदान आदिक सबसाजू । संयुत सोहति सखीसमाजू ॥

कविकेशवदास०सोरठा ॥ पहिरेबसन सुरंगपावकमय स्वाहामनो। सहज सुगंधित अंग मानहु देवीमलयकी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सोहति बनिता बृंद महँ सहज सुहावनि सीय । छबि ललना गण मध्य जनु सुखमा अति कमनीय ॥ चौपाई ॥ सिय सुंदरता बरणि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ॥ आवतदीख बरातिन सीता ॥ रूप राशि पति प्रेम पुनीता ॥ सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा । देखि राम भय पूरणकामा ॥ हरषे दशरथ सु-

तन समेता । कहि न जाय उर आनँद जेता ॥ सुर प्रणाम करि बरषहिं फूला । मुनि अशीष धुनि मंगल मूला ॥ गान निशान कोलाहल भारी । प्रेम प्रमोद नगर नरनारी । यहि बिधि सीय मंडपहि आई । प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई ॥ तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू । दुहुं कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ आचार करि गुरु गौरिगणपति मुदितबिप्र पुजावहीं । सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीष अति सुखपावहीं ॥ मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महँचहैं । भर कनक कोपर कलश सो तब लियहि परिचारकरहैं ॥ कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये । यहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥ सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखिपरै । मन बुद्धि बर बाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥ दोहा ॥ होम समय तनु धरि अनल अति सुख आहुति लेहिं ॥ बिप्रवेष धरि वेदसब कहि बिवाह बिधि देहिं ॥

प्रियाशरणजीकृत दोहा ॥ सिंहासनके तीन दिशि बहु सखियन की भीर । मणि भूषण नखशिखसजे पहिरे सबरँगचीर ॥

रघुराजसिंहकृतचौपाई ॥ एकओर भल सखीसमाजै । गावत मंगल गीत बिराजै । मुनिमंडल तहँ बिमल बिराजा । सिंहासन पर कौशलराजा ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ उदारा । चारकरावहिं सुखितअपारा ॥ सतानन्द गौतमसुत तैसे । चारकरावहिं श्रुतिकह जैसे ॥ जैधुनि सकल नगर नभपूरी । पुहुपानली पुहुमिगैपूरी ॥ तेहिअवसर असको जगमाहीं । रामब्याह जेहि आनंद नाहीं ॥ दोहा ॥ जड़ चेतन सुरनर मुनिहु पशु खग कीट पतंग । रामजानकी ब्याहलखि मगन मोदरसरंग ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जनक पाटमहिषी जगजानी। सीय मातु किमिजाय बखानी॥ सुयश सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई॥ समय जानि मुनिवरन बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई॥ जनक बाम दिशि सोह सुनैना। हिमगिरि संग बनी जनु मैना॥ कनक कलश मणि कोपर रूरे। शुचिसुगंध मंगल जल पूरे॥ निजकर मुदित राउ अरु रानी। धरे रामके आगे आनी। पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी॥ बर बिलोकि दंपति अनुरागे। पायँ पुनीत पखारन लागे॥ छंदहरिगी० ॥ लागे पखारन पायँ पंकज प्रेम तनु पुलकावली। नभ नगर गान निशान जयधुनि उमँगि जनु चहुँदिशि चली॥ जे पद सरोज मनोज अरिउर सर सदैव बिराजहीं। जे सुकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीं॥ जे परसि मुनि बनिता लहीगति रहीजो पातक मई। मकरंद जिनको शंभुशिर शुचिता अवधि सुर बरनई॥ करिमधुपमन योगीश जन जेहि सेइ अभिमत गति लहैं। ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं॥ तथारामस्वयंबर॥

श्रीरघुराजसिंहजीकृतचौ० ।पुनि वरबधू बिभूषण नाना। जटित सूर्य शशि मणिन प्रधाना॥ अमित निचोल अमोल ललामा। दिये जनक सुखभरि तेहिठामा॥ पारिजात पुहुपनकी माला। पहिराई मिथिला महिपाला॥ पूजन किय बरबधू समेतू। षोड़श बिधि नृप निमिकुल केतू॥ साधु साधु मुनिदेव बखाने। दानि शिरोमणि जनकहिजाने॥ दोहा॥ निमिकुलके सबवृद्धजन आय सहित

निज नारि । भये परमपद योगसब रघुबरचरणपखारि ॥ चौपाई ॥
यामिनि यामजात जिय जानी । बोलेउ वचन बशिष्ठ बिज्ञानी ॥
सुनहु बिदेह लगन अब आई । कन्यादान देहु सुखछाई ॥ हवन
सकल हम बिधिवत कीन्हा । पावक प्रगट रूप हविलीन्हा ॥
जनक तनक अब होइ न देरी । पाणिग्रहण यहिलगन निवेरी ॥
सुनत बिदेह नेह भरिभारी । धरी कनक मणिमंडित थारी ॥
तेहिमहँ भरयो सुगंधितनीरा । लीन्ह्यो निजकर कुश मतिधीरा ॥
कुंकुम रंगित तंदुल धरिकै । लै जानकी अंक मुद भरिकै ॥
तापरधरि मणि महा बिकासी । चूड़ामणि जेहि नाम प्रकासी ॥
रानि सुनैना गांठिहि जोरी । सो ढारति जल प्रीति न थोरी ॥
सिय करकंज कंज कर राखी । रामहिं चितै देन अभिलाखी ॥
दोहा ॥ अंबक अंब अनन्द भरि रोमांचित सबगात । प्रेम बिबश
गद्गद गरो कही राम सों बात ॥ कवित्त ॥ बेदन बखान कनि
शिष्टि गर्भाधान की सुशोभा शीतभानकी अनेक उपमानकी ।
इंदिरा समान की सुगौरी धर्म सानकी समान कुलमानकी प-
तिव्रता प्रमान की ॥ रघुराज दिनराज बंश दिनराज आजलजै
ललनानि की शिरोमणि जहान की । पालिनी प्रजानकी सुधा-
लिनी अजान की है जानकीसी जानकी कुमारी मेरी जानकी ॥
दोहा ॥ धर्मचरी तुव सहचरी सदा संचरी संग । छायासी माया
बिगत दायामय सब अंग ॥ मेरे पंकज पाणि में पंकज पाणि
लगाय । लेहु लाल अवधेश के लली मोरि चित चाय ॥ श्लोक ॥
इयंसीताममसुतासहधर्म्मचरीतव । प्रतीच्छचैनाम्भद्रन्तेपाणिंगृ
ह्णीष्वपाणिना १ पतिव्रतामहाभागाछायेवानुगतासदा । इत्यु
क्त्वाप्राक्षिपद्राजामंत्रपूतञ्जलन्तदा २ ॥ दोहा ॥ पढ़ि सुमंत्र
यहिभांति ते छोड़िदियो जल धार । सुरपुर नरपुर नागपुर मा-
न्यो जय जयकार ॥ धूपुरलों अरु भूमि भरि भूतल में यकबार ।
बाजन बाजे बिबिध बिधि भो सुख पारावार ॥ एकबार बोले
सकल जै जै दशरथ लाल । जै जै जनक लली भली हम सब

भये निहाल ॥ चौपाई ॥ लगे बजावन बाज बराती । गाय उठीं तिय जुरी जमाती ॥ मंगल मोद भयो मिथिलापुर । सुखसागर उमग्यो नहिंकेहिउर ॥ सुर मुनि सबै भये बिन भीती । रविरथ रुक्यो गगन भरि प्रीती ॥ दश दिशि निर्मल बही बयारी । शीतल मंद सुरभि सुखकारी ॥ दिशा प्रसन्न सन्न खलबृन्दा । तारन सहित रुक्यो नभ चन्दा ॥ करहिं बेदधुनि मुनिगण नाना । जनकहर्ष को करै बखाना ॥ तैसहि अवधअधीश अनंदा । कहैं जो कवि मिति सो मति मंदा ॥

बाबूहरिश्चन्द्रजीकृतसवैया ॥ वेदनकी बिधिसों मिथिलेश करी तहँ ब्याहकी रीति सुहाई । मंत्र पढ़ैं हरिचंद्र सबै द्विज गावत मंगलदेवमनाई॥हाथमेंहाथके मेलतहीतहँ बोलिउठे मिलिलोग लुगाई । जोरी जियो दुलहा दुलहीकी बधाई बधाई बधाई बधाई ॥ झूलना ॥ अगिनि अरु पौन अरु चन्द्र धरती नहीं ज्योति जगमगति नाहिं ताहितूल्यो । समयसंयोग श्रीबिष्णुसोहतभये कोटिगुण रूप पालन्नझूल्यो ॥ बिष्णुके नाभिसों कमल पैदाभयो ताहिसम तूल कैलास तूल्यो । राम करकमलपर जानकी करकमल कमलपर कमल केहिभांति फूल्यो ॥ कियो संकल्प जबजनक ऋषि जानकी देखि सब देव नर नारि भूल्यो । लाल अरु हीर नव रतन की ज्योति पर कोटि रतिकाम नहिं ताहि तूल्यो ॥ सहित सुमेरु सुखलहत चौदह भुवनमध्य हियहार हिंडोल झूल्यो । राम कर कमलपर जानकी कर कमल कमलपर कमल इहिभांतिफूल्यो ॥

अथ श्रीमानस रामायण ॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगीतिका ॥ बर कुँवरि करतल जोरिशाखोच्चार दौ कुलगुरु करैं । भयो पाणिग्रहण बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥ सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलकि तन हुलस्यो हियो । करिलोक वेद बिधान कन्यादान नृप भूषण कियो ॥ हिमवंत जिमि गिरिजा

महेशहिं हरिहिं श्री सागर दई ॥ तिमि जनक सिय रामहिं समर्पी बिश्व कलकीरति नई ॥ क्यों करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति सांवरी । करिहोम बिधिवत गांठि जोरी होनलागी भांवरी ॥ दोहा ॥ जयधुनि बंदी बेदधुनि मंगल गान निशान । सुनि हर्षहिं बर्षहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥

रघुराजसिंह० चौ० ॥लेहिं हुलासित हव्यहुताशा ।गुनी भूमि निज भार बिनाशा ॥ रामजानकी जोहहिं जोरी । तोरहिं तिय तृण प्रीतिनथोरी ॥ करहिं निछावरि मणिगण भूरी । परसहिं पाय प्रेमपरिपूरी ॥ कहहिं परस्पर नारि करोरी । युगयुगजियैं युगल जगजोरी ॥ सुरमुनि पुरुष नारिसब लेखे । अस दुलहिनि दूलह नहिं देखे ॥ दोहा ॥ मुनिमंडल पितु मातु सखि अवलोकनमिसिसीय । निरखति हरषति रामछबि कोटिकाम कमनीय ॥चौ०॥ लाज और अभिलाष समाना । मनमुसक्याहिं जानि भगवाना॥ साधु साधु भाषहिं सबदेवा । नमोनमोकहि ठानत सेवा ॥ जैजै धुनि पुनिपुनि सुरकरहीं । रामसीय सुखमा दृगभरहीं ॥ यहि बिधि पाणिग्रहण तेहिकाला । करतभये सियको रघुलाला ॥ राम बामदिशि सियबैठाई । सरबसपाये निमिकुलराई ॥ राम निकट सिय सोहहिं कैसी। कनकलता तमालढिग जैसी ॥मनहुं श्यामघन दामिनि नेरे । सोहिरही हिय हरि सबकेरे ॥ छंदगीतिका ॥ भांवरिबिलोकनहेत सब उमंगे अमित अभिलाषते । सीतारमण सीतासहित निरखत पलक परमाषते ॥ तब सतानंदहि कह्योरघुकुल गुरुगिरा सुखछामिनी । अब भांवरी करवाइयेपुनि अधिकबीतत यामिनी ॥ सुनि सतानंद सहर्ष करवावनलगे बर भांवरी । ठाढ़ेभये रघुबंशमणि तिमि जनकभूपति डावरी ॥ बेदी बिभाव सुजनक भूपहि मध्यकरि मगरोहनै । लागेफिरन फेरो फबित फटिकै फरशमन मोहनै ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ कुंवरि कुंवर कल भांवरि देहीं। नयनलाभ सादर सबलेहीं ॥ जाइनबरणि मनोहर जोरी । जोउपमा कवि कहैं सो थोरी ॥ रामसीय सुन्दर प्रति छाहीं । जग मगाति मणि खम्भन माहीं । मनहुँमदन रतिधरि बहु रूपा । देखत राम बिवाह अनूपा ॥ दरश लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥

बिश्वनाथसिंह०छदहरिगीतिका ॥ फिरि देत भाँवरि खम्भमणि प्रतिबिम्ब परहि सोहाइ कै । जनु बहुत तन धरि रामयहि मिलिरास किय सिय पाइकै ॥

रघुराज० ॥ छावति छटा क्षिति गौरि सियकी जोन्ह फरस सुफावती । रघुनाथ मुख छबि इन्द्रनीलक भूमि बहुरि बनावती ॥ गति मंद मंदहि चलत सुन्दर हरत हिय नर नारिके । घनश्याम दामिनि से लसत दोउ इष्टदेव पुरारि के ॥ जगमगत दोहुन ज्योति मनु यक यक जितत सित श्यामहै । सित श्याम मिलि मिलि होत शोभा हरित अति अभिराम है ॥ मनु बीजुरी को बसन बिरचि दिनेश शशि यकसंगही । देते सुमेरु प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त उमंगही ॥ जुरि युवति गावहिं गति मंजुल राम सिय छबि छकित हैं । करि मदर रति निवछावरै तकि भामरै चित चकित हैं ॥ युग सखी सिय के संग की अस कहहिं हँसि हँसिकै तहां । धीरे चलहु कछु लालहै सुकुमारि जनक लली महां ॥ सुनि राम नैन नवाय रहत लजाय मृदु मुसक्याय कै । अरबिन्द पूरण चंद पेषत रहत ज्यों सकुचाय कै ॥ कोउ बरबधू परफूल बरषहिं हेलि हास हुलासमें । कोउ ओढ़ि अंचल बिधिहि बिनवहिंरहहिं दोउ यहि बासमें ॥ जबलों परीं त्रय भामरी तब लों सिया आगू चली । पुनि चारि भाँवरि देतमें भे राम आगू छबि भली ॥ जबरही सियपुर सर चलत तब अस भली सोहत रहीं । जनु जात आगे भानुके सित भानु पूरनि मालहीं ॥ जब

भये दशरथ कुवँर आगे चलत जनककुमारिके । तब लसत मानहुं चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारिके ॥

श्रीतुलसी० ॥ राजत राम जानकी जोरी। श्याम सरोज जलद सुंदर बर दुलहिनि तड़ित बरण तन गोरी॥ ब्याह समय सोहत बितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी। मनहुं मदन मंजुल मंडपमहँ छबि शृँगार शोभा सोउ थोरी ॥ मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी। कनक कलश कहुं देत भांवरी निरखिरूप शारद भइ भोरी॥ मुदित जनक रनिवास रहस बश चतुर नारि चितवहिं तृणतोरी। गान निशान बेद धुनि सुनि सुर बरषत सुमन हरष कहै कोरी॥ नयननको फल पाइ प्रेम बश सकल अशीषत ईश निहोरी। तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना बरणै सुख सोरी॥ पद ॥ दूलह राम सिया दुलहीरी। घन दामिनिबर बरण हरण मन सुंदरता नख शिख निबहीरी॥ ब्याह विभूषण बसन विभूषित सखि अवलीलखि ठगिसिरहीरी। जीवन जनम लाहुलोचन फल हैं इतनोइ लह्यो आजु सहीरी॥ सुखमा सुरभि शृँगार क्षीरदुहि मयन अमियमय कियो है दहीरी। मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छबि मनहुं महीरी॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जाति कहीरी। रूपराशि त्रिरची बिरंचि मानो शिला लवनि रतिकाम लहीरी॥

ज्ञाना अलो० पद गजल ॥ चल देखिये महबूबको क्या खूब बना है। शिर मौर वो मौरी मनोहर ज्योति घना है॥ सेहरे कि

शोभा क्या कहौं छबि जाल तनाहै । करि करि यतन इसजक्त में बहुतोंने गना है ॥ कहि कहि थके पाया नहीं तिहुंलोक जना है । तन मन बचन यारूपसों जिस्को न पना है ॥ ज्ञाना अली ते दूरहै आनाभिमना है ॥

बैजनाथ०पदरा० ॥ नख शिख छबि अवलोकि अलीरी । दूलह राम जानकी दुलहिनि घन दामिनि निज एक थलीरी ॥ जावक पग नूपुर मँजीर युत सज्जन मनकिधौं मधुप बलीरी । जामा रुचिर पीत जरकस कटि पट परिधान ज्योति अमलीरी ॥ जरकसि कलित अरुण चूनरिसों पीत वसन कृत गांठि भलीरी । चन्द्रहार मणिमाल जवाकृत पञ्चदाम गर चंपकलीरी ॥ बैजंती बनमाल पदिक मणि कंठागर छबि कंबुछलीरी । बलय चूरि संघटित बिभूषण अंगुलीय कर कंजकलीरी ॥ कंकण कडा मुद्रिका भुजबलबर अंगद भुजदण्ड बलीरी । श्रवणफूल ताटंक पादिका युगप्रकाश मिलिकेशहलीरी ॥ कुण्डल मकर कपोल केश बिच तिलक रेख जस काम गलीरी । नासानथ लटकन बेंदीयुत अर्द्धचन्द्र धृत क्रीट ललीरी ॥ कञ्चन रचित समूह मणिनमय मुकुट प्रभा सब जग उजलीरी । पूरणचन्द्र प्रकाश बदन लखि बैजनाथ मन कुमुद कलीरी ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ मंडप तर सिय रघुबरजोरी । निरखि निरखि अनमिष नयनन ते भै सुर नर मुनि मति गति भोरी ॥ बिधि मनते बितान बर निरमित छबि शृंगार सब करि यक ठोरी । तेहि बिच रचि रचि वारत हारत कामा काम करोरि करोरी ॥ शिव श्रीपति निज चितको बिरच्यो ऐन अलौकिक प्रभनि भरोरी । तामें प्रीति ब्रह्म मुद मूरति थापित करि सोउ नाहिं रुचोरी ॥ कोउ कबि कहहिं कौन बिधि उपमा जिन सुखमा लव विश्व रचोरी । बिश्वनाथ इन सम है यहीरी मंडप सम नहिं बिश्व बियोरी १ दुलहिनि एक जानकीजाई । दूलह एक कुवँर दशरथ को । बिकहिं जोइ रति मनमथ बिन गथ उपमा देन सु कवि

समरथ को । मोतिन मांग बलित बंदन मो मञ्जुल मति गति भई भोरी । न्हाय त्रिबेणी नषत नश्रेणी भई न सम नभ दौरति बौरी ॥ हरि शिर सोहत मौर मणिनको ताकि ताकि अतितासु लुनाई । सम हित भयो मंजरिन सुरद्रुम लहिनहिं समगो स्वर्ग लजाई ॥ राजि रही चुनरी पंच फूली तेहि मधि तन द्युति अति भलि भावै । पंचतत्त्व मधि परम ज्योतिहै असम मानि नहिं बदन देखावै ॥ पीत पोशाक शरीर श्याम में शोभा सरस सोहाय रही है । मरकत गिरि पर परि परि आतप लहत न समता तपत सही है ॥ ग्रन्थि सहित दोउ सम हित बिजुरी छबि श्रृंगार यकठौर करी है । बिश्वनाथ सम नहिं भे अब यह दुरति फिरति हिय लाज भरी है ॥

श्रीरामरंगदेवस्वामीकृतपद ॥ अवलोकनि भाव मिलावन है । सियारामकी आपुसमें दिव्य पुरुषहै नयन तिलनमों जगजाको फैलावनहै ॥ ताके मिलत साज बाहरको वाहीको अनुधावनहै । बरकेगोत्र मिलत सो कन्या पिता गोत्र बदलावन है ॥ छूटि जात तनहूं से नाता बरसों प्रेम बढ़ावनहै । अगिनि होत दूनों को साखी मिलिके काम करावनहै ॥ सप्तधातु तनसात प्रदक्षिण दूनों लोक बनावनहै ॥ सिया राम संयोग सनातन बिधि तोको दरशावनहै । रामरंगमें देव मगन मन मानहुं बरसत सावनहै ॥

रामसखेजी०पदरा० ॥ दृगलागोरी रामा लाड़िलो बना । भांवरि देत देखि सिय संग ज्यों चुम्बक लोहकना ॥ कहि नहिं जातरूप अद्भुत सखि भय लब चक्रित जना । रामसखे छबि देखि मगन भई ज्यों मृग दीप गना ॥

रघुराज०हरिगीतिकाछंद ॥ क्षिति पर भरत अनगन कनक कन जलज हीरनकी कनी । मनु बर बधू गुरुजानि पुहुमी पुहुम पूजहिं रति घनी ॥ बहु रतन पूरित चारु चौक बिराजती बसुधा मनो । सजि बसन भूषण देन कन्या दान आई ते छनो ॥ यहि भांति सप्त पदी कराय कुमार गौतम के सुखी । बेदी निकट ठाढ़े

करायें राम सीता शशिमुखी॥ लाजा परोसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करन सों। कीन्हे निछावर सकल जन बर बधू रतनाभरन सों॥ तब जाय रघुपति निकट लक्ष्मीनिधि कह्यो मुसक्याय कै। दीजै हमारो नेग जो हम कहहिं अब चित पायकै॥ दोहा॥ मन्द मन्द रघुनन्दकह जो मांगहु सानन्द। हय गय मणि माणिक बसन भूषण आयुध वृन्द॥ सो तुमको सब थोर हैं जो कछु मेरेहोय। प्रीतिरीति जस तुमकरी तस न कियो जगकोय॥ जनक कुँवर बोलेउ हरषि यहीनेग मोहिं देहु। पद अरबिंद मरंदको मन मलिंद करिलेहु॥ एवमस्तु कहि राम तहँ निजगल की मणिमाल। द्रुतउतारि पहिरायदिय स्यालहि किये निहाल॥ नेग लह्यो मिथिलेश सुत रह्यो मनोरथ जौन। रामचरण बंदन कियो कियो गौन निज भौन॥

केशवदास० दोहा॥ रामचन्द्र सीता सहित शोभितहैं तेहिठौर। सुबरणमय मणिमय खचित शुभ सुंदर शिरमौर॥

देवस्वामी०पदराग॥ सिय भई हरित हरित भयराम। पीत श्याम दोऊ छबि मिलितै झलको तीसर धाम॥ ईश्वर आपुइ पुरुष नारि भा अंग दहिन औ बाम। अस मनु बचन प्रगट मंडपतर पूरत मनको काम॥ गहनन्हसे औ पटपहिरनसे रहा भेदको नाम। यहरस सब जन लूटि रहे हैं बिनु कौड़ी बिनु दाम॥ का जप योग ज्ञान व्रतकरिकै का पढ़िकै ऋग साम। जौं यह छबि देवन को दुर्लभ न रुची आठौंयाम॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ भये मगन सब देखनहारे। जनक समान अपान बिसारे॥ प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निवेरी॥

संग्रह०॥ सुरतरुसुमन देव बरसावैं। राम ब्याह कल मंगल गावैं॥ अति आनंद सकल नर नारी। राम सिया को रहेनिहारी॥

बाबूहरिश्चंद्रकृत सवैया॥ बिधिसों जब ब्याह भयो दोउ को

मणि मंडप मंगल चांवर भे । मिथिलेश कुमारी भई दुलही नवदूलह सुंदर सांवरभे ॥ हरिचंद महान अनंद बढ़्यो दोउ मोद भरे जब भांवरभे । तिनसों जगमें कछु नाहिं बनी जे न ऐसी बनीपै निछावरभे १ मौर लसै उत मौरी इतै उपमा इकहू नहिं जासु लहीहै । केसर रंगको बागो लसै अरुचूनरि चारु इतै सु लहीहै ॥ मेहँदी पाणि महावर सो हरिचंद महा सुखमा उलहीहै । लेहु सबै दृगको फल देखहु दूलह राम सिया दुलहीहै २

प्रेमसखीजीकृत ॥ नव अंबुदतें तन ज्योति बढ़ी सगरे अँग ब्याहकी साज लसै । मुखकी उपमा कवि कौन कहै मुसकानि सुधारस सों बरसै ॥ पट पीत सों जानकी चूनरिसों शुभगांठि बिलोकत चित्त फँसै । यह दूलह रूप सियावर को नित प्रेम सखी उरमांझबसै ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतगीतावलीपद ॥ जानकीबर सुन्दर माई । इंद्र नील मणि श्याम सुभगतन अंगमनोजनि बहु छबिछाई ॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नख द्युतिवंत कछुक अरुणाई । कंजदलनपै मनहु भौमदश बैठे अचल सुखदसि बनाई ॥ पीन जानु उर चारु जड़ित मणि नूपुर पद कल मुखर सोहाई । पीत पराग भरे अलिगण जनु युगल जलज लखि रहे लुभाई ॥ किंकिणि कनक कंज अवलीमृदु मरकत शिखरिमध्य जनु जाई । गई न उपर सभीत नमितमुख बिकसि चहूं दिशिरही लोनाई ॥ नाभि गँभीर उदर रेखाबर उर भृगु चरण चिह्न सुखदाई । भुजप्रलंब भूषण अनेकयुत बसन पीत शोभा अधिकाई ॥ यज्ञोपवित बिचित्र हेम मय मुक्तामाल उरसि मोहिं भाई । कंधतड़ित बिच जनु

सुरपति धनु निकट बलाकपांति चलिआई ॥ कंबुकंठ चिबुकाधर सुंदर क्यों कहौं दशननकी रुचिराई । पदुम कोस महँ बसे बज्र मानो निजसंग तड़ित अरुण रुचि लाई ॥ नासिका चारु ललित लोचन भ्रू कुटिल कचनि अनुपम छबिपाई । रहे घेरि राजीव उभयमानो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥ भाल तिलक कंचन किरीट शिर कुंडल लोल कपोलन झांई । निरखहिं नारि निकर बिदेहपुर निमि नृपकी मरयाद मिटाई ॥ शारद शेष शंभु निशिबासर चितवत रूप न हृदय समाई । तुलसिदास शठ क्योंकरि बरणे यह छबि निगम नेति कहि गाई ॥

सुधामुखीजीकृतपद ॥ बनो सियप्यारीको बनरा । कि बरबस मोहि लेत मनरा ॥ मौरशिर सोने को धारी । महामणि जटित तिमिरहारी । करण छबि मेहँदीकी न्यारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ दोहा ॥ कंकणकी कमनीयता कही कौन पै जाय । अलकझलक लखि ललक खलक सब पलक न परत बिहाय ॥ पद ॥ गरे गजमोतिन के गजरा ॥ चलनि चितवनि चितगति चोरी । धाम के काम दाम छोरी । गर्भ तजि विवस भइ गोरी । लाज कुल मरयादा तोरी ॥ दोहा ॥ हँसनि असी मुख म्यान तें सुधामुखी सित धार । काढ़ि कामिनी कतल करि इनको कोशल राजकुमार ॥ रँगीली अँखियनमें कजरा । बनो सिय प्यारीको बनरा ॥

केशवदासजीकृतदोहा ॥ श्रवण मकर कुण्डल लसत मुख सुखमा एकत्र । शशि समीप सोहत मनो श्रवण मकर नक्षत्र ॥

पंकजवाटिकाछंद ॥ अति बदन शोभ सरसी सुरंग । तहँ कमल नयन नासा तरंग ॥ जनु युवति चित्त बिभ्रम बिलास । तहँ भँवर भवत रसरूप आस ॥ दोहा ॥ ग्रीवा श्री रघुनाथकी लसति कंबु

बर बेष । साधु मनो बचकाय की मानो लिखी त्रिरेख ॥

जनतुलसीदासकृतपद ॥ रामको सब मुख चाहि रही । जाको मन अटको जाहिं अंग रहगयो जहँ को तही ॥ राजत राम कनक मण्डप तर संग सिया दुलही । ज्यों अक्षर मसीका कागजपर टारे टरत नहीं । तुलसी हिय हुलसी पुरनारी मुदित अशीष दई ॥

रसिकअली जीकृतपद ॥ ऐ हेलि बनि बनो सम गुणरूप । बनरा श्री अवधेश ललन बर बनि लली मिथिला भूप ॥ मोतिनमौर बना शिर सोहै बनि शिर मौरि अनूप । रसिकअली रति मदन बिमोहत सिय रघुबर को रूप ॥

देवस्वामी० पद छंद सोहर ॥ नारि सुभग मंडप तर मंगल गावहीं । सुनि सुनि सीताराम बहुत सुखपावहीं ॥ काल करम गति छेकि इहै छबि नितरहौं । निरखि निरखि सब लोग महा सुखके लहौं ॥ राम केसरिया पट सजे सिया लालको । दुवो प्रीतिके रंग रँगे यहि चालको ॥ राम बसत नित सीयमें राममें सीय हैं । दोउनके पट कहत दोऊ एक जीय हैं ॥ प्रथम चउथ औ बीचके अक्षर जोरिकै । ये दोउ तारक सीम छनत रसघोरि कै ॥ मिथिलाजाउ अवधि कि अवधि इहँ आवऊ । दिनबिछोह कर हम कहँ बिधि न देखावऊ ॥ सरबस राज अरपि नृप राखहिं रामके । नाहिंतहोइ हैं बिदेह यथारथ नामके ॥ नित बिहार सिय रामको दोउ ठाउँ में । देवकरिहि यहिभांति कुशल दोउ गाउँमें ॥

रघुराज० पद ॥ मिथिलेश जुतैं अवधेश लसैं निज पूरबपुण्य प्रभाव लखैं । शिव शक्र धनेश गणेश दिनेश लहेफल जोनहिं तौन चखैं ॥ मिथिलापुर नारि सवाँरि शृंगार खड़ी कल मंगल गानकरैं । मुनि कौशिक और बशिष्ठ सतानँद चार करावत मोद भरैं ॥ सुरदार नचैं गतिगान रचैं बहु बाजन बाजिरहैं कलहे ।

जग बाजिन स्यंदन भीरभरी कढ़ि कौनसकैं करिकै बलहे ॥ सियराम बिवाह उछाह बढ़ो बहुअंडकटाह अनंद मढ़ो । रघुराज तिलोक तेहिक्षणमें सबके मुखतें जय शोरकढ़ो ॥

संग्रह० चौपाई ॥ बिधिवतसों भांवरी कराई । बोले सतानन्द मुनिराई ॥

रघुराज० ॥ सखी करावहु सब यहिबारा । सेंदुर शीश बहोरन चारा ॥ दोहा ॥ सखी सयानी जाय तब कह्यो बचन रसपूर । करहु लाल निजपाणिसों सियहि शीश सेंदूर ॥ सेंदुर गहत न सकुचबश राम मंजु मुसुक्याय । सखी बदन तकिरहिगये नीचे नैन नवाय ॥ करगहि बिमला रामको सेंदुरभाजन दीन । लाल शीश सेंदुर भरहु भगिनि सुरति कसकीन ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ राम सीय शिर सिंदुर देहीं । शोभा कहि न जात बिधि केहीं ॥ अरुण पराग जलज भरिनीके । शशिहि भूषि अहि लोभ अमीके ॥

श्रीकृपानिवासजीकृत ॥ काम करी करकमल नील धरि । राग परागनु राग मनो भरि ॥ भ्रमर पुंज शशिधाम रुके जनु । तेषां बल्लभ इम अरपै मनु ॥

रघुराजसिंहकृतकवित्तसवैया ॥ श्रीरघुराज सिया शिरमें भरयोसेंदुर भेदहि मंद लजाई । गावन लागीं सखी सिगरी तहँ चारिहु बंधुन गारी सुनाई ॥ दूलहकी छबिमें छकिकै तकिकै जकिकै उपमा कह्यो भाई । सावन सांझकी भानुछटा घनश्यामघटा रहीरेख सोहाई ॥ श्यामल पाणि पसारिसिया शिर सेंदुर देनलगे रघुराई । ताक्षण की सुखमा लखिकै सखिसों उपमा सखी एक सुनाई ॥ श्री रघुराज बिलोकु नई मृदुमांग सों देवनदी द्युति पाई । भारति धार लिहे यमुना मिलि सांची शृंगारि त्रिबेणी बनाई ॥ सोरठा ॥ सप्तपदी करवाय सतानन्द आनंद भरि । करवाये सबचार जौन चार बाकी रह्यो ॥ दोहा ॥ गौतमसुत बर करण सों देव बिसर्जन कर्म । करवाये बिधिवत सकल लोकरीति कुलधर्म ॥

संग्रह०चौपाई ॥ नव नव सुख पावत सबकोई । नर अरु नारि राम सिय जोई ॥ ब्याहसाज सबअंग सुहावै । सुंदरता लखि चित न अघावै ॥ सबही के मन प्रेम विशेखी । मनहुँ चकोर कलानिधि देखी ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतचौपाई॥बहुरिबशिष्ठ दीन्हअनुशासन । बर दुलहिनि बैठे यक आसन ॥ छंदगीतिका ॥ बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये । तन पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये ॥ भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाहभा सबही कहा । केहि भांति बरणि सिरात रसना एक यहु मंगल महा ॥

श्रीरघुराजसिंहजूकृतपद ॥ सखि पश्य कोशल कांत सुखद कुमार मति सुकुमाकरम् । मैथिल निवास बिलास बिलसत मदन मनोपहारकम् ॥ मणिमंडये सीतायुतं सुखमाभरं सीताबरम् । सुबिवाह कर्म्म बिधान मति कुर्व्वाणमद्भुतताकरम् ॥ मणि मुकुट पीताम्बर सुमध्य मुखारबिंद मनिन्दितम् । सेंदुर सुघन मस्तक दिवामणि मिवतडिद्गणवन्दितम् ॥ किञ्चित्कटाक्ष बिकाश बिक्षित जानकी सुखमासुखम् । गुरुजन निकट लज्जा वशंगतमधो भावित शशि मुखम् ॥ जनकात्मजार्पित दृष्टिकंकण कलितकरधृत चन्दनम् । रघुराज सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम् ॥

देवस्वामी० पदराग ॥ प्रीति अलौकिक राम सियाकी । कहि न जाय मनहीमन भावै जहां नहींगति जंतु जियाकी ॥ यह हिय वा हियसे सब बोलत वह हिय यासे कहत हियाकी । दोउ हियमें पश्यंती प्रगटी चलनिन मध्यम बैषरियाकी ॥ कहेसुने देखेसे जगमें होत भावगति पुरुष तियाकी । गुण धन रूप तीनिसे उपजै औ बिनशै रतिसो विषियाकी ॥ झूठी प्रीति भूमिगंधौ

की मिटत अंतमें जीसबनियाकी। परमारथ सियरामदेव की प्रीति एकरस नहिं दुनियाकी॥

श्रीतुलसीदासजीकृत कवित्त॥ बाणी विधि गौरी हर शेषहूं गणेश कही सहीभरी लोमश भुशुंडि बहुबारिखो। चारि दश भुवन निहारि नर नारि सब नारदको परदा न नारदसो पारिखो॥ तिन्हकही जगमें जगमगात जोरि एक दूजोको कहैया औ सुनैया चखचारिखो। रमा रमरमण सुजान हनुमान कही सीयसी न तीय न पुरुष राम सारिखो॥

रघुराजसिंह० दोहा॥ सबै कह्योतहँ होतभो राम जानकी व्याह। रह्यो भुवन सुखसिंधुभरि गान तरंग उमाह॥

श्रीतुलसीदास०छंदहरिगीतिका॥ तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु व्याह साज सवाँरिकै। मांडवी श्रुतिकीरति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै॥ कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभामई। सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दई॥ जानकी लघुभगिनि सकल सुंदरि शिरोमणि जानिकै। सो जनक दीन्हीं व्याहि लषणहि सकल बिधि सनमानि कै॥ जेहिनाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सबगुण आगरी। सोइ दई रिपुसूदनहिं भूपतिरूप शील उजागरी॥ अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हिय हरषहीं। सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगण बरषहीं॥ सुंदरी सुंदर बरण सह सब एकमंडप राजहीं। जनु जीवउर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं॥

रघुनाथदासकृतकुंडलिया॥ बपुष बितान बिचित्र मधि जीव

अवध अवधेश । जाग्रत अवस्था श्रुति सुयश बिभु विश्व रिपुदेश ॥ बिभु बिश्व रिपुदेश स्वप्न मंडवी बिमल मति । बिभु तेजक सो भरत उर्मिला उदित सुषोपति ॥ उदित सुषोपति केर बिभु प्रागैकं लक्ष्मण अदुष । तुरी सिया बिभु रामजी अंतर्यामी दिवि बपुष ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ मुदित अवधपति सकलसुत बधुन समेत निहारि । जनु पाये महिपालमणि क्रियन सहित फल चारि ॥ अर्थ क्रिया आधीनता धर्म कि सरधा शक्ति । काम क्रिया कर्त्तब्यता मोक्षके केवल भक्ति ॥ श्रुति कीरति रिपुहन अरथ भरत मंडवी काम । धर्म धरणि धर उर्मिला मोक्ष जानकी राम ॥ चौपाई ॥ जस रघुबीर ब्याहबिधि बरणी । सकल कुँवर ब्याहे तेहि करणी ॥ कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मणि मंडप पूरी ॥ कंबल बसन बिचित्र पटोरे । भांति भांति बहु मोलन थोरे ॥ गज रथ तुरँग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत काम दुहासी ॥ बस्तु अनेक करिय किमि लेखा । कहि न जाय जानहिं जिन देखा ॥ लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सब सुखमाने ॥ दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासे आवा ॥ तब करजोरि जनक मृदुबानी । बोले सबबरात सनमानी ॥ छंदहरिगीतिका ॥ सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइकै । प्रमुदित महामुनि वृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइकै ॥ शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुट किये । सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये ॥

संग्रह० चौपाई ॥ असकहि बचन जनक नृपराई। अनुज सहित समधी ढिग आई॥

रघुराजसिंहजूकृत ॥ कोशलपतिको पूजन कीन्ह्यो। हय गय बसन बिभूषण दीन्ह्यो॥ स्यंदन शिविका साजि अनेका। भाजन बिबिध भांति सबिबेका॥ दै यह अंगन अतर लगाये। मोद मूल तांबूल खवाये॥ दिये अँगूठी रतन प्रधाना। बहुरि बिनय बश बचन बखाना॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगी० ॥ करजोरि जनक बहोरिबंधु समेत कोशलरायसों। बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील सुभायसों॥ सम्बंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये। यह राज साज समेत सेवक जानवी बिनु गथलये॥

रघुराजसिंहजीकृतचौ० ॥ राख्यो सुरति जानि निज दासा। मोहिं सकल विधि राउर आसा॥ मिथिलापुर निमिकुल परिवारा। और जहांलगि अहै हमारा॥ सो बिन संशय भूप तिहारा। कबहुं और नहिं किहेहु बिचारा॥ असकहि रह्योमौन करजोरी। कह अवधेश गिरा रसबोरी॥ आप सरिसहो आप बिदेहू। बसुधा बिदित प्रताप सनेहू॥ रघुकुल अवधराज सुतचारी। मोरि बिभूति नरेश तुम्हारी॥ सात द्वीप नवखंड प्रयंता। जहँलगि शासन मोर दिगंता॥ दोहा ॥ तहँलगि राउर भूपमणि सत्यसत्य मम बैन। नहिं अन्यथा बिचारियो यहमुख वृथा कढ़ैन॥

संग्रह० ॥ यहि बिधि दशरथ नृप वचन बरणे सहित सनेह। प्रेमसनी बानीसुनी बोले बहुरि बिदेह॥

श्रीतुलसी०छंद॥ ये दारिका परिचारिका करिपालवी करुणामयी। अपराध क्षमियो बोलि पठये बहुत हमढीठीदयी॥ पुनि भानुकुल भूषण सकल सन्मान बिधि समधी किये। कहिजात नाहिं बिनती परस्पर प्रेमपरिपूरणहिये॥

रघुराज० चौपाई ॥ भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं । तजि खेलन जानै कछु नाहीं ॥ समै सम्हारब क्षमि अपराधा । अबलौं लही न कौनिहुं बाधा ॥ इतते उत सुख बिभव महाना । पै शिशु भाव कछू नहिं ज्ञाना॥राजरीति सबदिहेहु सिखाई । करैं न कछु बिनशासनपाई ॥ अबलौं कोउ नहिं आंख देखाई । इनहिंकह्यो कछु माष जनाई ॥ रहीं कुमारी प्राणपियारी । भईं सकलसुत बधू तिहारी ॥ मोर मान इनकर कुशलाई । बहुत कहां लगि कहौं बुझाई॥प्रेममयी मिथिलाधिप बानी । सुनि बोलेउ दशरथ मति खानी ॥ पुत्र बधू पुनि आप कुमारी । को इनते अब मोहिं पियारी ॥ जिमि मिथिला तिमि अवध अगारा । जानहुं सब बिधि सुख उपचारा ॥ नैन पूतरी सरिस कुमारी । बसिहैं सदन सदा सुख भारी ॥ दोहा ॥ राजन देहु रजाय अब जनवासे कहँ जाउँ ॥ निशा अशन कुवँरन सहित करन हेतु ललचाउँ । चौपाई ॥ कह्यो बिदेह आप पगु धारो । बाकी कछु कोहवर कर चारो ॥ चार कराय सुतन पठवैहौं । अब नहिं कछू बिलम्ब लगैहौं ॥ बालक नींद बिवश अलसाने । किमि करिहौं बिलम्ब जिय जाने ॥ सुनि मिथिलेश बचन अवधेशा । उठ्यो प्रमोदित सुमिरि गणेशा ॥

श्रीतुलसी०छंद ॥ वृन्दारका गण सुमन बर्षहिं राउ जनवासहि चले । दुंदुभी जय ध्वनि बेद ध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥ तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै । दूलह दुलहिनि सहित सुंदरि चलीं कोहवर ल्याइकै ॥ दोहा ॥ पुनि पुनि रामहिं चितवसिय सकुचाति मन सकुचैन । हरति मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन ॥

श्रीकृपानिवासजीकृत ॥ सिय दृग पिय छबि बिहरतैं अटकै

मृदुल निचोल। जनु युग मीन सिवार फँसि चाहत सलिल किल्लोल ॥

रघुराजसिंहजीकृतचौपाई ॥ मिलि मिथिलेशहि बारहिंबारा। करि प्रणाम मुनि जनन उदारा ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ समेतू। चलेउ भूप जनवास निकेतू ॥ बिबिध भांति पुनि बजे नगारा। दिग स्यंदन स्यंदन असवारा ॥ भये सुमंत सहित तेहि काला। चली संग चतुरंग बिशाला ॥ छरे छबीले राजकुमारे। रहे राम सँग चलन पियारे ॥ तहां हजारन विमल मसाला। चलीं प्रकाश करत तेहि काला ॥

संग्रह० ॥ जनवासे आयउ नृपराई। बैठे परमानंद छकाई ॥

रघुराज० ॥ बोली तहां सुनैना रानी। बोलि सखी जनसुखी सयानी ॥ लै दुलहिनि दूलह कहँ जावो। हिलि मिलि कोहवर चार करावो ॥ सो सुनि उमग न्यो अनुरागा। सखिन यूथ जुरि कै बड़भागा। गावहिं गीत मोद सरसानी। दूलहसों अस गिरा बखानी ॥ चलहु लाल कोहबर सुखदाई। चारिहु बन्धु उठे मुसक्याई ॥ आगे आगे चलीं सुवासिनि। अर्घ देत हिय माहँ हुलासिनि ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि की बर नारी। सिद्धिनाम तुरतै पगुधारी। राम पाणि गहि चली लेवाई। जोरे गांठिनि चारिहु भाई ॥ आगे दूलहदुलहिनि पीछे। उभय ओर सबसखीतिरीछे ॥

अथ श्री रघुनन्दन की सरहज को गान ॥

प्रियाशरण०छंदसोहरमे ॥ बदन चंद रघुनंद इन्दु बदनीसिया। दूलह मिलि जस दुलहिनि दुलहिनि तसपिया ॥ पुरबासी सब धन्य युगल छबिदेखहीं। प्रियाशरण निज जन्म सुफल करिलेखहीं ॥ गौर बरण छबि अयन सिया दुलहिनि बनी। जेहि निरखत रघुलालहिं परमानँद घनी ॥ श्यामबरण शृंगाररूप बनराबनो। जेहि लखि दुलहिनिके मन आनँद अति सनो ॥ मुदित सकल पुरयुवती मंगलगावहीं। प्रियाशरण छबिदेखि युगल सुखपावहीं॥

रघुराज०चौपाई ॥ जनक नगरकी सखी सयानी । बोलहिं व्यंग भरी बहु बानी ॥ चलहु कुवँर कछु धीरे धीरे । सुनियत घर के अहौ अमीरे ॥ तुमहिं कौन चंचल गति सिखई । जननी भगिनि किधौं कछु बिषई ॥

संग्रह० ॥ बहु बिधि करति रामसों हासा । सकल तियन मन परम हुलासा ॥

रघुराज०दोहा ॥ रघुनन्दन बोले बिहँसि जहँ लक्ष्मीकर बास । तहँ चंचलता होति हठि हठि तहँ बिषय बिलास ॥ चौपाई ॥ लक्ष्मीनिधिठाकुर कहँपाई । काके भवन बिषय अब जाई ॥ जहँ चंचलता तहँ चपलाई । हमतो गहे अचंचलताई ॥ उत्तरसुनत समुझि मुसुक्यानी । राजकुमार चतुर गुणखानी ॥

संग्रह० ॥ पुनिपुनि रामस्वरूप निहारी । प्रेमासक्त भईंसबनारी॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन ॥ जावक युत पदकमल सुहाये। मुनि मन मधुप रहत जहँ छाये ॥

कृपानिवास० ॥ अरुण चरणतल श्याम पृष्टि बर । रसिक राग पर काम कलाधर ॥ कनक पैंजनी मुखर मनोहर । शारद पदसों भक्ति बिनयकर ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ पीतपुनीत मनोहर धोती । हरतबालरबि दामिनि जोती ॥ कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर। बाहु बिशाल बिभूषण सोहर ॥ पीत जनेउ महाछबि देई । करमुद्रिका चोरि चित लेई ॥ सोहत ब्याह साज सब साजे । उरआयत सबभूषण राजे ॥ पीत उपरना कांखा सोती । दुहुँ आचरन्ह लगे मणि मोती ॥ नयन कमल कुंडल कल काना । बदन सकल सौंदर्य निधाना ॥ सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भालतिलक रुचिरता निवासा ॥

कृपानिवास० ॥ अलकैं झलकैं मुखपर कारी । मदन दूतिका छुरी शिकारी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सोहत मौर मनोहर माथे । मंगलमय मुक्ता मणि गांथे ॥ छंदगीतिका ॥ गांथे महामणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं । पुरनारि सुर सुंदरि बरण बिलोकि सब तृण तोरहीं ॥ मणि बसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं । सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदि सुयश सुनावहीं ॥

रघुराज०चौपाई ॥ लक्ष्मीनारायण कुल देवा । जनक करहिं दिन प्रति जिन सेवा ॥ सोइ कोहवर मंदिर अति सुंदर । बन्यो उतंग कनक जनुमंदर ॥ मोतिन झालर तन्यो बिताना । तहँ बिभूति औरही बिधाना ॥ आगे सिद्धि सखी सब पाछे । सुरतिय सम पट भूषण आछे ॥ कुँवरि सहित बर आसन माहीं । बैठाई बर दुलहिनि काहीं । नारायण पूजन करवाई । बिप्र बधू सब चार कराई ॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगीतिका ॥ कोहवरहिं आने कुवँर कुवँरि सुआसिनिन सुख पाइकै । अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइकै ॥ लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन शारद कहैं । रनिवास हास बिलास रस बश जन्मको फल सब लहैं ॥ निज पाणि मणिमहँ देखि प्रति मूरति स्वरूप निधानकी । चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरहबश भइ जानकी ॥

रघुराज०चौपाई ॥ तहां सिद्धि अस गिरा उचारी । नेग देहु हमरो मनहारी । निगिभ बस्तु जो होइ तिहारी । सोइ सवति मम होय सुधारी ॥ तुमसंसार सार रघुराई। मुनि उपकार किये चितलाई ॥ दोहा ॥ सुनि सरहजके युक्तियुत बैन मंजु मुसक्याय । प्रेमसुधा

बरषत श्रवण कहे बचन रघुराय ॥ जिनके कुलमें कन्यका बीरज मोल बिकाय । पुहुमीते प्रगटै सुता तहँको नेग वृथाय ॥ चौपाई ॥ पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसि बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी ॥ लेहु लाह लालन लहकौरै । करहु कुवँर कर कुवँरि सुकौरै ॥ मिसिरी युत दधि देहु खवाई । कुवँरि खवैहै पुनि बरिआई ॥ सुनियत रघुकुलके बलहीना । गुरुते राखत बंश प्रवीना ॥ सुनत राम बोले चितचाये । जूँठ आजलों हम नहिं खाये ॥ सबको हम निज जूँठ खवावैं । योगी बरबस तुमकहँ पावैं ॥ कही सिद्धि पुनि गहि पटछोरा । मानहुँ लाल कहौं सति मोरा ॥ बढ़ि बढ़ि बातैं जनि बतराहू । कियो मुनिन सँग भगिनि बिवाहू ॥ आये ब्याहन जनककुमारी । भरे चरण महँ तुम बहुनारी ॥ तुम्हरे कुलमहँ सुनियत प्यारे । पुरुषहु उदर गर्भको धारे ॥ तब प्रभु हँसि अस वचन उचारा । नहिं मंथनते बंश हमारा ॥ यदपि योगिजनते तुवनेहू । तदपि बसहु भोगिनके गेहू ॥ दोहा ॥ चलहु अवध पुरको अवशि लै भगिनी नव आठ । निवसि निहंगनके निकट काहे करहु उकाठ ॥

बिश्वनाथसिं० चौपाई ॥ ताते तुमहिं उचित उरधारो ॥ अवशि अवध पुर मुदित सिधारो ॥ राम बचन सुनि कह सब आली । चतुरजेठ दूलह अति ख्याली ॥ देवनारि धरि सखी स्वरूपा । लषण राम को लखन अनूपा ॥ बैठीं सखिन मिलीं तेहि ठाईं । करहिं चार नाइनिकी नाईं ॥ तहँ शारदा राम ढिग जाई । राम पाणि गहि कछु मुसक्याई ॥ दधि मिसिरी प्रभु कर उठवाई । लगी खवा-वन सियहिं तहांई ॥ प्रभुसकुचे नीचेकरि नैना । बोले मंद मंद मृदु बैना ॥ मुखरकरहु जग जग को आजी । बैठोरूप गोपि कहुँ लाजी ॥ गिरा सुनत हरिगिरा सोहाई । बैठीजाय दूरि सकुचाई ॥ सखि स्वरूप गौरी सिय नेरे । बैठी ताहिं रामदृगहेरे ॥ करिप्रणाम बोले मुसुक्याई । गिरि गिरीश वृषतजि किमिआई ॥ कह्यो श-चिहि पुनिप्रभु अस बानी । तुमहौ त्रिभुवन की महरानी ॥ सहस

नैन कर संग बिहाई । तजिअमगवति कस तुम आई ॥ दोहा ॥ देव नारि सुनि सुनि वचन सकुचि सकुचि उठिजाय । सखिन ओट लै लै सबै बैठीं शीशनवाय ॥ चौपाई ॥ तहँ कमला शशिकला बिशाषा । बोलीं बचन भरी अभिलापा ॥ हमरे कुलकर जो कछु चारा । हम करवैहैं सहित बिचारा ॥ ये अयान जानहिं कछु नाहीं। कहँते आई यह घर माहीं ॥ अस कहि राम सीय ढिग जाई । चार करावन लगीं सोहाई ॥ प्रभु कर गहि मिसिरी दधि प्यारी । सिय मुख परस कराय सुखारी ॥ पुनि उठाय सिय कर दधि लीन्हे । परस करावन सन्मुख कीन्हे ॥ सिय कर युत सखि कर रघुराई । निज कर करि दिय ऊँच उठाई ॥ परयो सखिन शिर पर दधि पीछे । हँसन लगीं तिय ताकितिरीछे ॥ मधुरअली तब करि चतुराई । दै धोखो दधि दियोछुआई ॥ कह्यो रामसों पुनि मुसक्याई । चली न इत राउरि चतुराई ॥ जो तुम्हरे कछुमन अभिमानू । हमहीं हैं बड चतुर सुजानू ॥ खेलहु लला जुआं यहि ठाऊं । जीते चतुर धरायो नाऊं ॥ दोहा ॥ अस कहि रतन अनेक धरि कनक थार भरि नीर । लगीं खेलावन द्यूत सखि सिय को अरु रघुवीर ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतसवैया ॥ दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मन्दिर माहीं । गावति गीत सबै मिलि सुंदरि वेद युवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं ॥ रामको रूप निहारति जानकी कङ्कण के नगकी परछाहीं । याते सबै सुधि भूलिगई करटेकि रही पल टारत नाहीं ॥

रघुराजसिंहकृत ॥ मुसक्याय सुनैन नचाय तबै कह सिद्धि हरे हँसिकै बतियां । न जुवाँ में लला लली जीत न पावैं लगाये रहे अपनी घतियां ॥ सिय आजु न लाज को काज कछू छल छाजि छटे रघुराउ पिया । नतो बात जई मिथिलापुरकी पछितात जई सिगरी रतिया ॥ सजनी कोउ सिद्धिकी बोलातहां

अब जानिहैं सत्य सखी सिगरी । यदि हारिगे लाल लली ते इतै रघुबंशिन बात सबै बिगरी ॥ सतिभे नहिं कौशलनाथ सुतै यह बिश्वमें कीरतिहू बगरी । रघुराज ये श्यामल गौरनकी नहिं न्याय की नीति अबै निगरी ॥ सुनि प्यारीकी प्यारी गिरा हँसि कै लषणे दिय उत्तर मोदमये । मिथिलापुरकी हौ सुश्रासिनी तूं पै अनंग मवासिनी चित्त चये ॥ जिनके घर मातु पिता न जनै सुत भूमि को फोरि कढ़ैं अनये । रघुराज कुलै सरि तेऊ करैं हम तो यह देखि अचर्य भये ॥ दूलह त्यों दुलहीको जुवां सखियान लै सिद्धि खेलावन लागी । लै मुक्ता मणि माणिक हीरन पाणि उछालन लागी सोहागी ॥ श्री रघुराज बिदेह लली तहँ दोहुन कीदुगुनी द्युतिजागी । मानों हजारन तारनको रबि चंद सुधारन लागे सुरागी ॥ गावतीं गर्व गहे गुणको मृदु गीतन गोरी सुदैबहु गारिन । हारे लला अब हारे लला अस भाषतीं देतीं तिया बहु तारिन ॥ जीती हमारी लली रघुराज मँगावो द्रुतै अनुजा मुनि प्यारिन । नातो बिचारि कै नातो बिदेह बोलाइ हैं रावरेकी महतारिन ॥

प्रियाशरण॰सीताअयनदोहा ॥ सिद्धा लक्ष्मीनिधि प्रिया रघुबरसों बर बयन । बोली रौरे हारिली सियसों राजिव नयन ॥ अबतो सबरसरीति में होइहि रौरेहार । चेटक छबि सब कुवँरि सबतुम आसक्तबिहार ॥ सवैया ॥ रूपछिपाये रहीं गिरिजा गिरा गोरिन गोहन में लगीं गावन । जो बलते मधुकैटभ जीत्यो जिते दिति के द्वै कुमार भयावन ॥ सो बल आज कहांगयो लाल बिदेह ललीके समीप सोहावन । आजलों हारे न तूं रघुराज सो हारे गहो सिय पावन पावन ॥ आतुरी चातुरी भूलिगई सब मोहनी रूपकी रीति परानी । रावरेको ठगिबो रह्यो आवत बापुरे बावरे को पहिंचानी ॥ जानकी जानी हती न सुजान लगे जुवाँ खेलन जीतही जानी । चंचलता न चली रघुराज करी बलिसो जो छटी छल छानी ॥ दोहा ॥ रघुनंदन बोले बिहँसि होय भमानी जोय।

तेहि धोखो देनो भलो आवत बन बपुगोय ॥ हम सूधे क्षत्री बिमल नहिंजानैं छलछंद । अपनेते बरती बरण यहिपुर सुता स्वछंद ॥ चौपाई ॥ कही नागरी कोउ मिथिलाकी । करहु कला करि लला वलाकी ॥ बाती मेरवनको इतचारा । करहु लाल लागै नहिं वारा ॥ प्रभु मुसक्यात न टारत बाती । गारी देतीं नारि सोहाती ॥ बाती मेरवन मिसि तहँ प्यारी । परसहिं प्रभु कर मृदु मनहारी ॥ विबिध युक्तिके बैन सुनामैं । उतर न देत बंधु लजिरामैं ॥ बहुरि कह्यो बंधुन रघुराजू । नहिं ससुरारि लाजकर काजू ॥ नट नागरी विदेह नगरकी । आसिनि अहैं सुआसिनि बरकी ॥ यह सुनि अपर कह्यो मुसक्याई । भानुबंश की रीति सदाई ॥ तिय तौ तिय पूरुष भे बामा । नारी कवच धरायो नामा ॥

संग्रहकर्त्र० ॥ तियगण अस बहु बचन सुनावैं । राम बंधु युत सुनि मुसकावैं ॥ पुनि तहँ बोलिउठी यक गोरी । व्यंगभरी बाणी रसबोरी ॥

देवस्वामीकृत पद ॥ हँसि हँसि पूँछति हैं रघुबरसे । कौतुक घरमें नारि ॥ तुमहिं जगतको सार कहहिं मुनि कहि न सकहिं हम डरसे । तुम नहिं पुरुष न नारि कहत श्रुति खेलहु खेल मकरसे ॥ सोइ लखिपरत मकर कुंडलसे और किशोर उमरसे। दशरथ गौर कौशला गोरी तुम सांवर केहि घरसे । दोउनको हरि ध्यान प्रगटभा अस हमरी अटकरसे ॥ व्यंग चतुरता गारी सुनिकै देखा राम नजरसे । भई कृतारथ देव मनावहिं जनि ये जाहिं नगरसे ॥

संग्रह० चौपाई ॥ हँसि बोली कोउ नवल कुमारी । राजकिशोरन रूप निहारी ॥

रघुराजसिंहजीकृत ॥ देखहु सखि इन चारिहु भाई । नारिहुते अति कोमलताई ॥ अवध पुरुष अस तौ कसनारी ।

मुनि मानसकी मोहनवारी ॥ बिहँसि राम तहँ गिरा उचारी । पूरब कसनहिं लिह्यो बिचारी ॥

बिश्वनाथ० ॥ अवधनगर महँ नागर नरहैं । यहां बिदग्धा बनिताबरहैं ॥ सो जो गो अब निकट निहारी । अवधहि लाय कतकि इतबारी ॥ दोहा ॥ चारिहु बंधुनको हमैं जानि लईती नारि ॥ चारि कुमारिनि ब्याहि पुनि कीन्ह्यो काह बिचारि ॥ चौपाई ॥ अपर कही मिथिलापुर बासिनि । मंद मंद मुसक्याय हुलासिनि ॥ क्षत्री भानु बंशकुल ऊंचो । जगमें सुन्यों न नेसुक नीचो ॥ यही बिचारि कन्यका ब्याही । कहि है कोउ अनुचित यहनाही ॥ पै इक्ष्वाकुबंश प्रभुताई । लालन कौनहेतु बिसराई ॥ ब्याह्यो शृंगीऋषि भगिनीको । शांता नाम कही को नीको ॥ तुमहिं न लाज लगत रघुराजू । बाती मेरवन परिहै आजू ॥ जीते काम बाम नहिं जीते । जानकि जानि न जानहुं जीते ॥

संग्रहक० ॥ कोउ नव नागरि बुद्धि उपाई । राजकुमार छलन चितचाई ॥

प्रियाश० दोहा ॥ सब दुलहिनिकी पदतरी किंकरिते मँगवाइ । एक मूर्तिनिर्माण करि बस्तर दियो ओढ़ाइ ॥

सग्रह०चौ० ॥ सिद्धा कछुक मंद मुसकाई । राजकुमारनको दरशाई ॥

रघुराज० ॥ आये रघुबंशिनके देवा । तुमसों लाल करावन सेवा ॥ तिनको शिरनावहु सब भाई । इन्हेंदेवि कौशलापठाई ॥

प्रियाशरण० ॥ ताते शीघ्र नवावहु माथा । लेहु अशीश मुदित रघुनाथा ॥

रघुराज० ॥ भरत बिहँसि तब बचन बखाने । रंगदेव ताजि

देव न जाने ॥ जिनके घर देवन बहुताई । ज्ञान बिराग योग अधिकाई ॥ ते सेवन देवनको जानै । देवन रीति भवन महँ आनै ॥ दोहा ॥ अपर सखी बोली बिहँसि नट नागर नृपलाल । अहैं बराये चारिहूं नन्दन अवध भुवाल ॥ चौपाई ॥ करि कटाक्ष कोउ कह अस बामा । घर बाहरौ रमै सो रामा ॥ प्रभु कह सत्य कही मनभावनि । निमिकुलकी कीरति अति पावनि ॥ सुत पितु अजहूं अरु परपाजा । जनक कहावत लगति न लाजा ॥ सुनि प्रभु बचन सबै मुसक्यानी । सकल कहैं नृपसुत मतिखानी ॥ नटनागर नटखटी अनोखे । चञ्चल चारु चतुरता चोखे ॥ कहे बचन पैहौ नहिं पारा । सखी करावहु कोहवर चारा ॥ गाय गाय बर मंगल गाना । चार कराये सहित बिधाना ॥ वेदरीति कुल रीति निवाही । कहैं न बर जनवासे जाही ॥ तहँ रनिवास हासरस मांचा । सबही कर अतिशय मन रांचा ॥ जानि तहां अति काल सुनैना । आय जनक रानी कहबैना ॥ जनवासे अब कुवँर पठावो । काल्हि कलेऊ हेत बोलावो ॥ सासु बचन सुनि सिद्धि सुखारी । कही गिरा रामहिं मनहारी ॥ दोहा ॥ अब जइये जनवास को लालहोत अतिकाल । काल्हि कलेऊ के समय देहौ उतरु रसाल ॥ छंद ॥ सुनि सिद्धिके अस बचन सुंदर रचन पाय हुलास । चारिहु कुवँर प्रमुदित उठे करि बिबिध हास बिलास ॥ दिय छोरि गांठी सिद्धि सुंदरि बधुनकी सकुचाय । चारिहु कुवँर दोउ सासु को सहुलास शीश नवाय ॥ गवने हरत मन दृगन फेरत मनहुँ सखिन हुलास । छलि छीनि चारिउ छैल तेहि क्षण जात हैं जनवास ॥ मणि पट बिभूषण करहिं निवछावरि अलीगण गेरि । प्रभु सहित शील सनेह नैनन देति आनँद हेरि ॥

श्रीकृपानिवासकृतछंदहरिगीतिका ॥ तब धूप दीप सुगन्ध भर कर आरती धनवारती । नव रूपजोरी रंगबोरी तोरितृण सुनिहारती ॥

श्रीतुलसीकृतछंद ॥ कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली । बर कुँवरि सुन्दर सकल सखिन लिवाइ जनवासहिं चली ॥

श्रीरामप्रियाशरणजी कृत छप्पै ॥ महल द्वारतक चलीं सकल रानी पहुँचावन । सुआसिनिनकी भीर लगीं सखियां सबगा-वन ॥ मधि किशोर चितचोर राम छबि बरणि न जाई । कुँवरि-नकी अति छबि निहारि रतिहारि लजाई ॥ महल द्वारलों सब गईं आईं अति छबि नालकी । दुलहिनिचढ़ि बर नालकी षट बसु पोड़श पालकी ॥

श्रीरघुराजसिंहजीकृतछंद ॥ यहि भांति चारिहु बंधु द्वारे आयगे सुख छाय । तेहि काल मिथिला पाल संयुत लाल आयेधाय ॥ मिलि राम बारहिंबार भरतहि लषण अरु रिपु शाल । करजोरि सब मांगे बिदा शिरनाय दशरथ लाल ॥ दिय कोटि आशिपला-यउर पुनि नैन अम्बु बहाय । नृप कह्यो का करिये कुँवर मुख जाय नहिं कहिजाय ॥ भेव्यो बहुरि लक्ष्मीनिधिहु प्रभु मिले सहित सनेह । चारिहुकुमार सवारभे उतगये गेह बिदेह ॥ आये सखा सब राम के निवछावरें मणिकीन । बोलेबिहँसि ससुरारि प्रिय अति काल नहिं चित दीन ॥ नहिं दीन उत्तर सकुचिबश चढ़िकै तुरंग उतंग । गवने कुँवर जनवास को सुन्दर सखा सब संग ॥ बाजे नगारे शोर भारे बांसुरी करनाल । बरषे सुमन मुद मगन सुरचढ़ि गगन यान बिशाल ॥ बाजी उछालत नैन चालत चले राजकुमार । ते सखा राजकुमार गमने संग पंचहजार ॥ फहरात बिमल निशान आगे तुंग छ्वै असमान । मनु तासु प-वनहि पाय तारा वृन्द नभ बिलगान ॥ महताब और मशाल भासहिं होत दिन इव जात । बाजत अनेकन दुन्दुभी नहिंशोर भुवन समात ॥ पुर नारि नर मोदित खड़े पथ वृन्दवृन्दबजार । रीझत मनहिं खीझत पलक लखि चारु चारि कुमार ॥ यहि

भांति चारिहु कुवँरबर आवतभय जनवास। देखनबराती सबै ठाढ़े नहिंसमात हुलास॥

श्रीरामप्रियाशरणजीकृत दोहा॥ अवधपुरी दासीसकल खड़ीं महलकेद्वार। आवनिलाल निहारहीं नयननिमेष बिसार॥

श्रीतुलसीदासजीकृतछंदहरिगीतिका॥ तेहिसमय सुनिय अशीष जहँतहँ नगरनभ आनंदमहा। चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदितमन सबहीकहा॥ योगीन्द्र सिद्धमुनीश देव बिलोकिप्रभु दुन्दुभिहनी। चलेहर्षि बर्षिप्रसून निजनिजलोक जयजयजयभनी॥ दो०॥ सहित बधूटिन कुवँरसब तबआये पितुपास। शोभामङ्गल मोदभरि उमँगेउ जनु जनवास॥

संग्रह०चौपाई॥ खड़े बराती मनललचाये। देखिकुमारन अति सुखपाये॥ कुवँरन नृपकहँ शीशनवाये। दै अशीष दशरथ हरषाये॥ निवछावरैं कीन्ह नृपराई। हृदयमोद कछु कह्योनजाई॥ सुमन्तादिसब करहिं निछावर। सकलबराती परम प्रेमभर॥

रामप्रियाशरण०॥ मुनिवर बेदनिऋचा उचारैं। नभसुरगण जयजयतिपुकारैं॥

संग्रह०॥ दुलहिनिन तिय मुदितउतारी। गांठिजोरि पदपांवड़ेडारी॥

प्रियाशरण॥ लोक वेदविधि मुनिवरकीन्हा। गृहप्रवेशहित आज्ञादीन्हा॥ गये महलभीतर रघुराई। सखियन बहुबिधिमंगलगाई॥

कृपानिवास०दो०॥ करिकुलरीति सुआरती लियेगोद भरिमोद। पधराये छाये सदन नवनित प्रगट विनोद॥

रघुराज०छंद॥ अवधेशबोलेउ बचन जानि बिलंबबाढ़ि तेहिकाल। बैठहुनइत यकक्षणहु अब कीजैबियारीलाल॥ युगयाम बीतिगई निशा कहियो किसा नहिंनेक। करिकै कछुकभोजन त्वरित कीजे

शयन सबिवेक ॥ शिरनायचले कुमारसब पितुकी रजायसुपाय। हिलिमिलिकिये भोजनरजनि व्यंजनविशेष निकाय ॥

संग्रह० ॥ अचवनकियो चारिहुकुवँर गवनेसो निजनिजऐन। मणि कनकबरपर्यंकपर कीन्हासुखित तिनशैन ॥

प्रियाशरण०दो० ॥ वहांजनक निजज्योतिषिन पूंछतभे मृदुबात। कहहुरहीअब रातकेति जोसुख नहींलखात ॥

संग्रह० ॥ अर्द्धनिशापै चारिघड़ि बीतिगई सुखमूल । कुवँरिन लेहुबुलायअब भयोमुहूर्त्त अनुकूल ॥ असमुनि नृप लक्ष्मीनिधिहि कहि पठये जनवास। आयनायशिर भूपको कीन्हेबचनप्रकास॥ लक्ष्मीनिधिके बचनसुनि दशरथ गुरुनबुलाय। आयेलेन दुलहिनिन दीजिय सँगपठवाय॥

प्रियाशरण०छप्पै ॥ मंगलमोद निधान समयशुभ जानिमुनीशा। दइ आज्ञा तब बिदा कीन्ह दुलहिनि अवनीशा ॥ लक्ष्मीनिधि श्रीनिधि प्रणाम करि राय मोद मन । चले अशीशहि पाय सकल आये पुलकित तन ॥ रानी सब गोतनी सहित द्वार भेटि सुख पायऊ । मंगल गान करति सब मन्दिर आय सुहायऊ ॥ दोहा ॥ जननी सिया सनेहको को अस बर्णै गाय । जानहिं दोऊ अगम अति कवि बर कहत लजाय ॥ करति दुलार अनेक बिधि पूछति भोजन हेत । नहिं चित पाई नयन में अलसानी छबिदेत ॥ अष्ट अष्ट षोड़श सकल तिन्हें रानि समुझाय । अलसानी कुवँरी सबन शयन करावहु जाय ॥ चलीं सिया सब बहिनियुत शयन महलकी ओर । जननी गवन छबि निरखहीं कोटिन रति चित चोर ॥ महल जाय बर सेजपर पौढ़ींसकल कुमारि । चौकी में प्रमुदित रहीं षट बसु षोड़श नारि ॥ पुर युवती मंडप निकट गानकरहिं चहुंओर। नाचत गावत भोर भइ प्रेम प्रमोद न थोर॥

संग्रह०दोहा ॥ उठी सकारेहि जानकी प्रात कृत्य निरवाय। गई सीय जननी मुदित लई गोद बैठाय ॥ छंद ॥ कीन्ह बिदा

दुलहिनि को लक्ष्मीनिधि के साथ । पुनि निज सदनमें शयन कीन्हो मुदित कोशलनाथ ॥

रघुराज० ॥ कोशल निवासिन सकल आनन्द भयो जो तेहि रैन । सहसहु बदन नहिं कहिसकत यकबदन बदत बनैन॥ तहँ सकल कोशलनगर बासिन बढ़ी अतिशय प्रीति । नहिं रामब्याह किसाबिती बरणत निशा गै बीति ॥ दोहा ॥ सकल बराती जाग तैं लहे प्रमोद प्रभात । बंदीजन बिरदावली गाय उठे अवदात ॥ चौपाई ॥ उठेउ महीपति सुमिरि गोबिन्दा । करि सुरभी दरशन सानन्दा ॥ देखि बदन घृत महँ युत हेमा । सरबस परसि निवाह्यो नेमा ॥ बैष्णव विप्र वेदविद आये । सादर भूप तिन्हैं शिरनाये ॥ छ्वै क्षोणी क्षितिपति पढ़ि मंत्रा । तज्यो सेज जेहि तेज स्वतंत्रा ॥ प्रात कृत्य नृप सकल निबाही । बैठेउ राज सिंहासन जाही॥ तैसे उठि उठि चारिहु भाई । करिमज्जन पूजन सुखपाई ॥ पहिरि बिभूषण बसन सुहाये । पिता दरशहित सभा सिधाये ॥ पितु बंदन रघुनन्दन कीन्हो । तैसहि त्रैबन्धुन करि लीन्हो ॥ देखि राम युत तीनिहुँ भाई । उठि भूपति उर लिये लगाई ॥ शीश सूँघि दय आशिरबादा । रक्षहु युग युग धर्म मयादा ॥ बैठाये बर आसन माहीं । आये सचिव सुमन्त तहाहीं ॥ भूपति सकल सैन सुधि लीनी । सचिव कह्यो सैना सुख भीनी ॥

संग्रहक०दोहा ॥ परिजन पर ममता अती नीति निपुण अवधेश । निरखत चारिहु बंधु के ब्याह शृंगार सुबेश ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रहपरमानन्दत्रैलोक्यमंगलपन्द्रहवांप्रकरणसमाप्तः १५ ॥

—o—

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

सोलहवांप्रकरण ॥

परम प्रमोदसे कुवँर कलेवा रहस्यका होना ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ उतै जनक सब साजु भरि सतानंदके संग। पठवाये जनवास महँ हित व्यवहार अभंग ॥ चौपाई ॥ सतानन्द लखि उठेउ महीपा। दै आसन बैठाय समीपा ॥ पूंछि कुशल बोले कर जोरी। तुव आगमन भाग बड़ि मोरी ॥ सतानन्द बोले मुसक्याई। तुमब्रह्मण्य धन्य नृपराई ॥ यह व्यवहार बिदेह पठाये। हम बरात हित इत लैआये ॥ तबसुमन्त सों कह्यो भुवाला। यथायोग दीजै यहिकाला ॥ देन लग्यो सुमंत तब साजू। गई छूटि मिति मोद दराजू ॥ जाको जेतनो जस मन भावा। सो तेतनो अधिकौ बहु पावा ॥ उबरा सो मंगनगण पाये। ते जग जगत जनक यश गाये ॥ तृप्तभये सबभांति बराती। जात न जाने दिन अरु राती ॥ उतै सुनैना सखी पठाई। लक्ष्मी-निधि कहँ निकट बोलाई ॥ जनवासे अब लाल सिधारौ। लै आवहु लेवाय बरचारौ ॥ इतहि कलेऊकरहिं कुमारा। भवन बिभूषित होय हमारा ॥ दोहा ॥ सुनि बिदेह नंदन चलेउ राम लेवावन काज। चढ़ि तुरंग मढ़ि मोद रस संग सखानिसमाज ॥ चौपाई ॥ गयउ जहां राजत रघुराजा। सभा सभायुत राजसमाजा ॥ लक्ष्मीनिधि आवतलखि राजा। उठेउ अनंदित सहितसमाजा ॥

लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा। आशिष दई भूपमतिधामा॥ शीश सूंघि अंकहि बैठाये। चिबुक परसि बोलेउ कहँ आये॥ लक्ष्मीनिधि कह हेमहराजा। भेजहु कुँवर कलेऊकाजा॥ भूप कह्यो लैजाहु कुमारे। का पूंछहु मिथिलेश दुलारे॥ सुनत सुखित लक्ष्मीनिधि भयऊ। राम निकट आशुहि चलिगयऊ॥ बिहँसि कह्यो चलिये रनिवासा। मातु बुलाये दरशन आसा॥ करन कलेवा बंधु समेतू। आशु पधारिय रघुकुल केतू॥ उठि रघुनन्दन चारिहु भाई। पिता चरणपंकज शिरनाई॥ चढ़ेकुँवर सब तरल तुरंगा। चलेसखा सब सोहत संगा॥ डगर डगर तेहि नगरमँझारी। फैली सुधि आवत बरचारी॥ दोहा॥ पुर नर नारी लखन हित बैठअटा अरु द्वार। कहहिं कलेऊ करनहित आवहिं राजकुमार॥ चौपाई॥ इततुरंग झमकावत भावत। चारिहु कुँवर महा छबिछावत॥ जगरमगर मचिरह्यो नगरमहँ। अगर तगर भर डगर डगर पहँ॥ झमकत झझकि बाजि मग डहरैं। छोरन छुटी मुक्त क्षिति छहरैं॥ तुरँग उड़ावत पेच पाग की। छूटिजात सुधिरहत बागकी। दरशावैं बहुगति तुरंगकी। छबि छावैं क्षिति पट सुरंगकी॥ सखा चपल कोउ खेलत नेजे। मनहुँ पठाय पवन इन भेजे॥आवत जात न ते देखातहैं। यकयक तेड़े बढ़ बढ़ातहैं॥ छैल छबीले शक्र सानके। राम सखा सम पंचबानके॥ चलत बरोबर प्रभुसमानके। सनमाने करुणानिधानके॥ जेहिबाजी रघुपति सवारहैं। कहि न सकत छबि मुख हजारहैं॥ शील सुधानिधि बेग बायुको। मनहुँ लह्यो मन अवधि आयुको॥ झनकत पैंजन परत पाउके। परतचरण चौगुने चाउके॥ दोहा॥ सजेसजीले बांकुरे दशरथ राजकुमार। हेरत ही हठि हियहरत हलकत हीरनहार॥ चौपाई॥ पहुँचे सब जब मधिबज़ारमें। नारी चढ़ि ऊँचेअगारमें॥ निरखि निरखि पलकानि निवारहीं। राई लोनहिं करउतारहीं॥ वोढ़ि वोढ़ि अंचल मनावहीं। मिथिलापुरते कुँवर न जावहीं॥

संग्रह० ॥ बतरावति तिय आपुस माहीं । निरखतिराज कुमारनकाहीं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ ललित चरण कर कटि ललित लसत ललित बनमाल । ललित चिबुक द्विज अधरसह लोचन ललित बिशाल ॥ मृदुमेचक शिर रुह रुचिर शीशातिलक भ्रू बंक । धनु शर गहि जनुतड़ित युत तुलसी लसत मयंक ॥

युगलानन्यछन्द ॥ सियबल्लभ मुसक्यान सान शर अमितअस मशरमोहन । ऐसोकौन जौन बरबस बशहोयन जोहतसोहन ॥ बालयुवा बरवृद्ध बिके बिन मोलफिरैं लागि गोहन । युगलानन्य शरण आशककी संपति सुखसंदोहन ॥ जुल्फैं चिलकदार रसमय मुख मधुर माहमें छूटी । उपमा कौनकहै मनमतिगति ज्ञानपलकमेंलूटी ॥ अद्भुतछटा छैल छबिमिलि मनमथन मान मदकूटी । युगलानन्य शरण आशककी असल सजीवनबूटी ॥

मधुरअली०पद०दादरा ॥ होललन तोरेनैना शिकारी । अरुणकंज कारे अनियारे चितवनि मनो कटारी ॥ कतलकरत मनहरतसबनको बचतनहीं नरनारी । मधुरअली कछु कहतबनै ना राज कुवँर बलिहारी ॥

कृष्णरंगसखी०पद० ॥ रघुबरबना सलोना वै । बरबस चोरिलेत चितको चितवनिमें टोनावै ॥ मिथिलापुर नरनारि सबनकेपलकनगोनावै । कृष्णरंग ऐसोसुंदरबर हुआ न होनावै ॥

देवस्वामी०पद० ॥ छबीले तेरीछबिपर गईमैं वारी । छबि समुद्र मथि यामूरतिपर आपदियो जनुढारी ॥ छलकतछबि बिंदुनहींसे जनु रवि शशिगये सँवारी । आनदेव छायासे जगमग अस श्रुति कहतपुकारी ॥

सियासखी०पद० ॥ रंगभीना रघुनाथबनाको इन्हगलियनहोयलावोरी । अटाचढ़ि सबछटानिहारैं तनकीतपनि बुझावोरी ॥ अति

आनंद मगनपुरबासी घरीयक इन्हें बिलमावोरी । सियासखी गो खनमें लगिलगि रसभर गारी गावोरी ॥

कृपानिवास०पद० ॥ बनाजी थारीअँखियूँदेबिच टोना । रूपठगोरी डारिनगरमें सुंदरश्याम सलोना ॥ बनितफूल फिरे बागन में लिये बामकरदोना।कृपानिवास सियानैनोंमेंमानोंकामखिलौना॥

सियासखी०पद० ॥ जाग्योभाग तिहारो । राघोजी बनाजी । जादिनतेथे मुनिसँगआये सुधरोसकल जुथारो ॥ ऐसीदुलहिनि तुम कहांपाईहो एतो जियमें बिचारो । सूरजबंश उदैहोइआयो भाल कपाटउघारो ॥ गिनतेरहियो श्वास सियाके मन जिन कीज्यो न्यारो । सियासखी सियजूकेब्याहत धोयोकुलरोकारो ॥

सुधामुखी०पद० ॥ यह दशरथराज दुलारोरी । दूलह दिलदार प्यारोरी ॥ जिन चोरयो चित्तहमारोरी ॥ जुलफैंछबि मारडारोरी ॥ यह ऋर्षाश्रृंगीको सारोरी । नहिं बिनुअनुहार कारोरी ॥ यह सुधामुखी दृगतारोरी । माधव जगसार न्यारोरी ॥

बैजनाथ०पद ॥ राम बना जस अजब सलोना । तस नहिं सुना दीखनहिं नैनन भयो न है नहिं आगेहु होना ॥ श्याम अनूप भूप लालनको रूप समान बिरञ्चि रचोना । भूलि निरखि मुखचंद माधुरी कामिनि देह गेह सुधि होना ॥ अवसर आजु राजमन्दिर में लेवै लाभ लाज धरि कोना । सो पछिताइ खाइ बिष मरिहै खोलि नयन लखिलेवै रिजोना । मैं भरिअंक सफलतन करिहौं उमँगो मैन लाज उरभोना । बैजनाथ सीता बल्लभ पै निश्चय आजु पतिब्रत खोना ॥

संग्रह०दोहा ॥ रघुनन्दन को रूप लखि मिथिलापुरकी नारि । मोहि सयानी कुलबधू गुरुजन लाज बिसारि ॥ चौपाई ॥ जनक नगरकी सुंदरताई । सुर मुनि देखत मन ललचाई ॥

रघुराज० ॥ द्वार द्वार बहु हेमखम्भहैं । पुरटकलश युतयूपरम्भहैं॥ जनक नगरकी अति विचित्रता । भय प्रभु आगमपर पवित्रता ॥ द्वार द्वार जन जन जोहारहीं । यकटक चारिहु कुवँर निहारहीं ।

कहहिं प्रजा सब मोद झोकमें। अससुन्दर नहिंकहुँ त्रिलोकमें ॥ बिप्र बेद पढ़ि पढ़ि अशीशहीं। लहैं अनंद निहोरि ईशहीं ॥ नारि उतारहिं मुदित आरती। चिरजीवहु मुखकढ़त भारती ॥

संग्रह० ॥ करहिं निछावरि बहु बिधि नारी। हरषति चारिउ कुवँर निहारी ॥

रघुराज० ॥ राम जाय मिथिलेश द्वारमें। तजे तुरंगन सुख अगारमें ॥ जानि सुनैना राम आमिनी। पठये कलशन कलित कामिनी ॥ मिलेउ आय मिथिलाधिराज है। प्रभु प्रणाम किय सहित लाज है ॥ दोहा ॥ मिलि बिदेह आशिष दई लैगे भवन लेवाय। यथा योग भ्रातन सखन सहित राम बैठाय ॥ करत भये सत्कार बहु अंगन अतर लगाय। दैबीरी पूँछी कुशल प्रेम अम्बुदृग छाय ॥ प्रभुबोले कर जोरिकै आप कृपा कुशलात। जैसे लक्ष्मीनिधि अहैं तैसे हम सब भ्रात ॥ अति अमोल भूषणबसन तहां बिदेह मँगाय। गज तुरंग रथ पालकी दीन्हे चारिहुभाय ॥ सनमाने सिगरे सखन पट भूषण बहुदीन। मनु व्यवहारहिं व्याजते मोद मोल लै लीन ॥ छंद ॥ तहां सुनैनाकी यक आई सहचरी। कुवँर बोलावन हेत महामुद उरभरी ॥ लक्ष्मीनिधि तहँ आशुहि कुवँर लेवायकै। गये तुरत रनिबास पिता रुखपायकै ॥ सखा सचिव सरदार रहे दरबार में। भयो मोद महँ गमन जनक व्यवहार में ॥ रामहिं आवत देखि सुनैना धायकै। लै बलिहारी चूमिबदन सुख पायकै ॥ मणि मंदिरमहँ आशुहिराम लेवाय कै ॥ तीनिहुँ अनुजसमेत सुखी बैठायकै ॥ तोरयो तृण पुनिराई लोन उतारिकै। कियो आरती मंगल मंत्र उचारिकै ॥

संग्रह०छंद ॥ जानि समय रानी लइ कुँवरिन बोलिकै। बांधि मौर बर दुलहिनिपट गँठ जोरिकै ॥ चली लिवाइ कोहबर घर मंगल गावती। बिबिध भेष धरि मानहु सोहति भारती ॥ चहुँकित अंतःपुरकी राजति बालहैं। पीछे दुलहिनि आगे चलत रघुलालहैं ॥ दोहा ॥ पद पांवड़े डारत बहु बाजाबजैं अनेक।

मोहि सयानी नारि सबलखि सियबरको भेक ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि सकल समाज सोहाई । लक्ष्मीनरायण मंदिर आई ॥ बर दुलहिनि बैठे यक ओरा । तियगण करहिं सुमंगल शोरा ॥ बिप्र बधून रीति कहि जैसे । कुवँर कुवँरि पूजन करि तैसे ॥ तब सिद्धा रघुबरढिग आई । बोलीबचन मंद मुसक्याई ॥

श्रीकिशोरी जी के कंकण खोलते समय सिद्धा आदि सरहज अरु निमिबंश कुमारिन का गारी गाना चारों भाइनको ॥

प्रियाशरण०सुगंधाछंदसोहर॥सुनहुकुवँर कुवँरिनके कंकणखोलिये। कछु भावै सोइ बात परस्पर बोलिये ॥ कंकणकी बर गांठको खोलहुलालजू । प्यारीबदन बिलोकत होउनिहालजू ॥ सरहज के बरबयन सुनत पुलकित भये। कंकण खोलन के दिशि मन अरु दृगदये ॥ प्रथम दृष्टि परि नयनन नयनालगे । कंकणपर दिय हाथ हाथ रसउरपगे ॥ कंकण खोलै कौन सुधी नहिं देह है । पिय प्यारी मन मगन सबन मन हरनहै ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ कंपित करकंकग क्योंछोरैं । कठिन होति सोगांठि मसेदन लजत लजत दूनोगहि तोरैं ॥ देखिदेखि दुलहिनिछबि छकि छकि नारि निछावरि करहिं करोरैं । बिश्वनाथ धक धकि दुलहिनि उर दूलह सुख अति सिंधु हिलोरैं ॥

कविनन्द०कबित्त ॥ बीर बिरदैत बांके बेदन बिदित सुने शोभा सुखसिंधु सींव बानक बनकको । कैसे तुम ताड़ुकासँहारी सुत सेनयुत छूटत न डोरा गांठि कंकण कनकको ॥ नन्दभनै रावल के भीतर नवेली अली करतीं बिनोद अंग धरिकै जनकको । छोरो कै निहोरो कर जोरि कहौ हारे हम यहतो न होय लाल तोरिबो धनुषको ॥

प्रियाशरण०छंदसोहर ॥ कंकण डोरी छोरहु चित करि धीरकै । नहिंतो लेहु बोलाइ बहिनि कहँ बीरकै ॥ सरहज हँसि हँसि कहहिं सुनत खोलन लगे । पुनि कर भूषणदृष्टिपरी तहँई पगे ॥ कंकण गांठी कठिन छुटत नहिं प्रेमबश । मनसकुचत गणपतिहिं

निहोरल बारदश ॥ करकंपित बिलोचन चंचल लाल के । छबि निहारि मनमोद सकल रनिवास के ॥ रति रतिनायक देखत चमर दुरावहीं । शोभा सुखमा सागर कवि किमि गावहीं ॥ कर पर कर कहँ धरे बिवश मन ह्वैरहें । कंपितकर शंकित उर जब छोरन चहें ॥ कंकण में अँगुरी अरुझै सुरझै न सो । मानहु व्याल लरत शशि छाहँ मराल सो ॥ करजोरहु तुम लाल कि खोलहु कंकना । धीरज धरि खोलेउ सकुचीं सबअंगना ॥ यहि बिधि सकल कुवँर कंकण खोलतभये । तेहि अवसर सब के उर आनँद अतिछये ॥ पुनि रघुबर कर बांध्यो सियको कंकना । राम को कंकण सियकर बांध्यो अंगना ॥ महरानी मन मोद महासुख को कहै । बर दुलहिनि कहँ देखि जन्मको फललहै ॥ राईलोन उतारहीं मंगल गावहीं । आरतीसबहिं उतारती छबि मनभावहीं ॥

संग्रहक०दोहा ॥ करहिं निछावरि तीयसब मोद न हृदयसमाय । लखि माधुरी सिय रामकी बार बार बलिजाय ॥ चौपाई ॥ जनक राजकी रानि सुनैना । सिद्धासों बोली बरबैना ॥ लै कुवँरन अब बेगि सिधावो । देरीभई अब अशन करावो ॥ सुनि लैकुवँरन चली समाजा । मंगल गान बजत बहुबाजा ॥ कहत हास्यरस की बहु बानी । सुनि मुसक्यात राम गुणखानी ॥ दोहा ॥ सभा भवन दुलहान को सिंहासन बैठाय । लखतमाधुरी तीयगण नेकनचित्तअघाय ॥

रघुराज०छंद ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि नारिसिद्धि आवतभई । करन कलेऊहेत विनय गावतभई ॥ उठेराम लैबंधु कलेऊकरनको । बैठेउ आसनमाहिं महामुदभरनको ॥ व्यंजन बिबिधप्रकार थार भरि ल्याइकै । सूपकार सुखपाय परोसेआइकै ॥ मणि माणिक अरु हेमकटोरे सोहहीं । व्यंजनभरे अनेक मदनमन मोहहीं ॥ चौपाई ॥ मनरंजन विरंज दुखभंजन । अरुचिबिभंजन रसनामंजन ॥ रबरी खुरचनि मिष्टमलाई । महामधुर मोहनी मिठाई ॥ तिमि बतासफेनी बातौंधी ॥ बिबिधबटी बट माडवऔंधी । वि-

विधफलनके मंजुलसीरा। वोदनझलक मनहुं बहुहीरा॥ दधिप्रकार अरु क्षीरप्रकारा। करहिं सराहिं कुमारअहारा॥

श्रीरामचन्द्रजीकी सरहज सिद्धा और निमिबंशकुमारी कुलबधूनका गारीगाना चारोंभाइनको॥

छंद॥ सनमुखबैठीं सिद्धिसहित सखियानके। गारी गावन हेत स्वरूपगुमानके॥ रबिकुल कैसेभयो छत्रकुल जगतहै। कश्यपद्विजको पुत्र भानु जसजगतहै॥ छायाको पुनि भयोसुवन मनुकाकही। बिनारूपकी भानुसंगमहँ क्योंरही॥ मूल अशुद्ध बिचारहोत यह बंसको। महिमाहेतहि कहत बंश यह हंसको॥ मूलपुरुषभय इलानारि पुनि नरभई। आवत सोईरीति चली यह नहिं नई॥ भेयुवनाश्व महीप गर्भ उदरहि धरयो। मान्धाता तेहिभये भूप नहिंसोमरयो॥ मान्धाता महाराज बड़ेदाता भये। सौभरिमुनिको बोलि सकल दुहितादये॥ जुरयो न क्षत्री जगतमाहिं जिनको कहूं। ब्राह्मणको दिय सुता सुकीरति दिशि चहूं॥ भेअसमक महराज सजै संसारहै॥ गुरुबशिष्ठकृत विदित सकल उपकारहै। विप्रनारि दियशाप सुकलमषपादको॥ दमयंतीकोतज्यो जोपाय बिषादको॥ रानीमें गुरुकियो सुगरभाधानको। अजहुँ करत रघुबंश सुबंश गुमान को॥ नदी कहावति सुता जासु कुल भूपकी। जाको पानी लेत कीर्ति अनुरूपकी॥ जो रघुकुल महँ होइ कछू अनरीतिहै। तौ रघुबंशी गनत हमारी रीतिहै॥ बड़े यशी रघुभये कहा कहिये सखी। साठि सहस दिय रानि द्विजै है हयमखी॥ दोहा॥ पुरुष शक्ति ते हीन लखि द्विज कहँ रघुमहराज। लै कुबेर ते युगल फल दियो पुंसता काज॥ छंद॥ भयो मातु पितुते न जन्म अजताहिते। पायो नाम नरेश रहे द्विज चाहिते॥ करनलगे अज ब्याह कोउ नृपबोलिकै। कन्यादानहिं करत समै चित खोलिकै॥ बिश्वाबसु गंधर्व धारि द्विजरूप को। मांगत भयउ कुमारि वचन कहि भूपको॥

संकट धरमहि जानि योगबल अजतहां । निरमी द्वितिय कुमारि सुंदरि सो महां ॥ सो दीन्हों तेहि नृपै जाहि आनत भये। बिश्वाबसुहिं सत्य बिप्र मानत भये ॥ भगिनि सहोदर दियो ताहि गुन धर्मको । कीरति प्रगटपुराण किये जो कर्मको ॥ कोउबोली तहँ सखी सुनी यह कानमें । दशरथभूप चरित्र लखी सुजहान में ॥ दशरथ नृपकी रानि लजोरी हैं सबै । समर सुरासुरमाहिं कन्त त्याग्यो कबै ॥ जिन नारिन के लाज न होत शरीर में। तिनको कौन प्रमाण रहहि जनभीर में ॥ दक्षिण कोशल भूप स्वयम्बर करतभे । सुता कौशला हेत भूपसब जुरतभे ॥ राक्षस रावण नाम कुमारी हरतभे । दशरथ नृप तहँ जाय बड़ो बल करतभे ॥ ताकी हरी कुमारि कौशला लायकै । घरमें कियो पटरानि बड़ो सुख छायकै ॥ गाय उठी कोउ सखी सुमित्रा जस सुनो । कीन्हो सुन्दर मीतनाम ताते भनो ॥ भरत मातु केकयी कहावत सुनु सखी । नामलेतहैं प्रश्न लाज अतिशय लखी॥रघुपति भगिनी नाम जौन शांताकहीं । श्यामा सुन्दर अंग भुवन जेहि सम नहीं ॥ बिषय बिलास बिलोकि न राख्यो निज घरै । अंग भूपके भौन पठै दिय अवसरै ॥ तहँ यकमुनि पै मोहिगई मनभामिनी । मुनिको भयो बिवाह भई बड़िकामिनी ॥ भरत रामहैंश्याम लषण रिपुशालहू । गौरबदन नहिंजानिपरै कछुहालहू ॥ जो एकहि पितुहोत बरणयुग किमिभये । बर्षसहस्त्रहिसाठि बीति नृपकेगये ॥ तबबोली कोउसखी न शंकाकीजिये । दशरथ रानी युवाहेत गुनिलीजिये ॥कौशल्या केकयी सुमित्रा सामरी। किय अपनीकरतूति नामकी भामरी ॥ लाल भगिनि निज देहु ब्याहि लक्ष्मीनिधै । लेहु जगतयश लूटि कौनचाहीबिधै ॥ जस सुंदर तुमलाल भगिनितस होयगी । सरहज सिधिकी सवति महामुद मोयगी ॥ रघुबंशिनकीहोइँ औरजे कन्यका । निमिबंशिनको ब्याहि करौतिनधन्यका ॥ दोहा॥ यहिबिधि मिथिलापुर युवति गारी गावतजाहिं । मंदमंद भोजनकरत सकलबंधु मुस-

क्याहिं ॥ चौपाई ॥ मंजु सुरनभरि रागसहाना । लेती तरलतान बिधिनाना ॥ मान्यो महामनोहर शोरा । मोहींसखि लखिराजकिशोरा ॥ तहँमेवनके बिबिधप्रकारा । औरहुअन्न प्रकारअपारा । तिक्त अम्ल कटु लवण कषाये । मिष्ट मिष्ट बहुस्वाद बनाये ॥ भक्ष्य भोज्य अरु लेह्य चोख्यवर । पानपियूष समानस्वादकर ॥ सुरपुर नरपुर नागपियारे । जेदुर्लभ महि अहहिंअहारे ॥ दोहा ॥ ते बिदेहके सूदबर बिरचे बिबिधउछाहि । सकलबंधु भोजनकरत स्वादसराहि सराहि ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि भोजनकरि अभिरामा । कियआचमन बंधुयुत रामा ॥ उठि चामीकर चौकिन जाई । बैठि धोयकरपद सबभाई ॥ मुकुटन शिरनसुधारतमाहीं । आय सुनैना कह्यो तहांहीं ॥ कोशलमुकुट उतारहुलाला । मिथिलामुकुट देहु यहिकाला ॥ असकहि मणिमंडित धरिथारनमुकुटचारिवरप्रभापसारन ॥ पहिरायउ चारिहु बरमाथे । पद्मराग मरकतमणि गाथे । अति अमोल लालनकीमाला । लाल नगल पहिराय बिशाला ॥ पुनि लेवायलाईमहरानी । बैठायउ आसन छबिखानी ॥ बदीबिदेह बाम बरबानी । नेगकलेवा कर सुखदानी ॥ मांगहुजौनरहें अभिलाषे । तब प्रभु जोरिकञ्जकर भाषे ॥ यहनेिग जननी अबदीजै । लक्ष्मीनिधिसम मोहिं करिलीजै ॥ मैं सुत सेवक तू महतारी । देहु देवि रुचि यही हमारी ॥ दोहा ॥ शीलविनय रसके भर मधुर रामके बैन । सुनत जनक रानी युगल भरि आये जल नैन ॥ चौपाई ॥ पुनि पुनि लेती करन बलैया । भर्‍यो कंठकहि सकत न मैया ॥ जस तसकै पुनि बचन उचारा । पूरेहु मोर मनोरथ सारा ॥ कर्म बिवश पावहुँ कहुं योनी । बिधिगति होइ होनि अनहोनी ॥ लालन नात हमार तुम्हारा । यही रहै सर्बदा बिचारा । एवमस्तु बोले रघुनन्दन । सदा प्रणत जन पन अभिनन्दन ॥ सरबस पाय सुनैना रानी । गई अनत सिधि आगम जानी ॥ सखिन सहित तहँ सिद्धि सिधारी । बिहँसत मृदु बीरी

करधारी ॥ दीन्हेउ चारिहुबन्धुन बीरा । कही रामसों पुनि निज पीरा ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ थकिथकि रहति सुजकि छबि भारी । हँसि हँसि कहति सुरुचि अनुसारी ॥ लालन दीजै नेग हमारो । जो सरहज को नात बिचारो ॥ देहौ नहिं तो सिय न पठैहौं । तुमहिं स्ववश करि इतहि बसैहौं ॥ प्रभु कहहैं अदेय कछु नाहीं । तुम सम कौन पात्र जगमाहीं ॥ नर्म गिरा तब सिद्धि उचारी । लाल अनोखी प्रीति पसारी ॥ लली लेवाय अवधपुर जाई । देहौमोरि सुरति बिसराई ॥ दोहा ॥ तुम्हैं कौन बिधि देखिहैं ह्वैहैं बिनजल मीन । देहु नेगबर मोहिं यह जो जिय चहहु प्रवीन ॥ चौपाई ॥ ताते ननँदि और ननदोई । इन नैननते बिलग न होई ॥ प्रीति-प्रतीति पेखि रघुराई । बोले मन्द मन्द मुसक्याई । सदाभावना मैं हम दोऊ । प्रगट होब जानी नहिं कोऊ ॥ सिद्धि सिद्धि होई अभिलाषा । मृषा बचन मैं कबहुं न भाषा ॥ जानी सिद्धिसिद्धि निजकरनी । धन्यभाग बरनी बरबरनी ॥ पुनि निमिबंशिनसुता सुहाई । दूलह देखन हित जुरि आई ॥

संग्रह० ॥ लखतहि मुदित भई सब बामा । राजकुमार महाछबि धामा ॥ व्रीड़ा कुल मरयाद बिसारी । बोली नागरि सखिहि निहारी ॥

श्रीतुलसी०बरवा ॥ कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुण्डल लोल । काक पक्ष मिलि सखिकस लसत कपोल ॥ भाल तिलक शर सोहत भौंह कमान । मुख अनुहरिया केवल चंद समान ॥ तुलसी बंक बिलोकनि मृदु मुसकानि । कस प्रभु नैन कमल अस कहौ बखानि ॥

पं०हरिहरप्रसाद०दोहा ॥ बिन बिछुआ छूराछुरी बिनबरछी बंदूक । नैन बाण रघुचन्दकर करत करेजाटूक ॥ सीखि साखि आये गरुड़ हरिहूते अति गाजि । खायो कारो अलक को बिप न गयो

गे लाजि ॥ राजकुवँरकी निठुरता कहिय कहारी हाय । बेधे सारी मैथिलिन नैनन बाण चलाय ॥ भीति लाज दोऊ भजीं लखि रघुबरको रूप । मिथिलापुरकी नागरी भईं बाप अनुरूप ॥ कानन श्रीरघुनाथके कुंडल अति सुखदान । मिथिलापुर नारिन भयो मनहुँ सोहागा पान ॥

रामसखे० पद ॥ राघौजू के नैना उरझोहैं । तन मन बिवश करत सुन सजनी चितवत तब तिरछोहैं ॥ मनहु मैनके जाल किधौं शर सोहत ललित ललोहैं । रामसखे मदछके भरे छबि तीषे अति गुमरोहैं ॥ चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगी सोइ जानै । सुनु दशरथके कुँवर लाड़िले कासों कहौं कोमानै ॥ चितवतही घायल करिडारत राखत नहिं तन प्रानै । रामलला यह पीर अलौकिक रामसखे पहिंचानै ॥

बैजनाथ० पद ॥ अद्भुतगति रघुनन्दन केरीरी । सखिसमाज तजि लाज अवश ह्वै अवलोकत नहिं पलक परीरी ॥ मृदु मुसकानि कृपान म्यान मुख द्विजप्रकाश खरशान धरीरी । घायल गात दिखात घावनहिं काटि हियो दुइटूक करीरी । नेह नवाइ कुटिल भृकुटी धनु सजि कटाक्ष बिष प्रेम भरीरी ॥ नैन बाण उर लाग सखी जेहि तरफरातबिनहोश परीरी ॥ शील रसील प्रकाश निशित अति तारि सहित गहि चाह करीरी । लागत बचन कटार सखी उर बिरह पीर बुधि ज्ञान हरीरी ॥ बिन अपराध व्याध कोशलसुत सखिसमाज कुलि कतल करीरी । बैजनाथ परि क्यों उबरैं तिय प्रेम गांठि गरफांसि परीरी ॥

कृपानि० दोहा ॥ व्याही अनव्याही नई गौनेआईं बाल । ललचाईं परबश मनो टोनाईं हँसि लाल ॥

रघुनाथ० चौपाई ॥ रघुपति छबि अबलोकि जुड़ानी । बोली बिहँसि हासकीबानी ॥

रघुराजसिंह० ॥ जिनसारी सरहजसनबंधू । गारीदेन बांधि पर बंधू ॥ फटिकपूतरी धरि हरिआगे । बचन रचनकरि कहअनुरा-

गे ॥ यह कोशलपुरकेरि कुमारी । मिथिलामहँ आईसुकुमारी ॥ तुमहिंदेखि बशलाज नबोलति । नहिंआशय उरकीकछु खोलति ॥ भगिनिमनाय लेवायजाहुघर । करहुसमोष चूक सांवर बर । बिहँसिबचन बोले रघुराजू । हमजानी मिथिला नहिंलाजू ॥ दोहा ॥ रघुकुलमें नहिं रीति यह बरहिं जोबरन कुमारि । देवदारके तुल्यतुम यहछबि तुवअनुहारि ॥ चौपाई ॥ व्यंगबचन, सुनि सबमनभाई । चितै परसपर दिय मुसक्याई ॥ होय जो देवन पति जगमाहीं । सो देवन गति चलैसदाहीं ॥ हममानव मानवगति जानैं । देवी देव देवगति ठानैं ॥ लाल एक अति शोच हमारे । सुधरत राउर कृपासुधारे ॥ दियो मोद मिथिला पुर आई ॥ जो अलभ्य अमरन श्रुति गाई ॥

रघुनाथदास० ॥ जेहिते नेह करैं अनुरागी । सर्बस जाहु सकैं नहिं त्यागी ॥ तिमि तुमते ठानो हम प्रीती । करहुनिबाह समुझि निजरीती ॥ रहहु सदा नगरी यहि प्यारे । जीवनरहिहैं तुमहिं निहारे ॥ पद ॥ लला तुम होउ न आंखिन ओट । एक पलक बिन दरश कल्पसम लगत कुलिशसी चोट ॥ पीर पराई जानतहो नहिं यहस्वभाव है खोट । श्रीरघुराज बिदेह लली पिय तजहु निठुरता कोट ॥

रामसखे०पद ॥ प्यारेतेरी छबिपर वारियां । छूटी बदन कुवँरदशरथ के मारत जुलफैं कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजनयुत लागत आंखेंप्यारियां । रामसखेदृगओटनहमकोकरोनक्षणभरन्यारियां ॥

बैजनाथ०पद ॥ तेरीछबिने हमारो मनलीन्हो सुनियेजीराजकुमार । सहजलाज कुलवंतीबाला गुरुजनलाज अपार ॥ निरखत तवमुख चन्द्रमाधुरी तनगति रहिनसंभार । चन्द्रचकोर मोरघन चातक स्वातीबूंदअधार ॥ यहिगतिमें नरनारि जनकपुर मनकरिलेव बिचार । परतनचैन रैनदिन हमरे नयनबहतजलधार । बैजनाथ रघुनंदनतुमहीं जीवनप्राण अधार ॥

रघुराजसिं०चौपाई ॥ तुम बिछोह रहिहैं किमि प्राना । देहु बताय

उपाय सुजाना॥ सखि उर आलबाल अति भारी। प्रेम बीज को बोय सुखारी॥ दल अनुराग शाख सुखकेरी। फूल उछाह दरश फल ढेरी॥ अस तरु मिथिला पुरहि लगाई। उचित न अवध पयान जनाई॥ नेह पाश मन बिहँग फँसाई। दरश अशन बिन दुख न देखाई॥ दोहा॥ सुनत सखिन के बचन प्रभु कह्यो मंजु मुसक्याय। जो जाको जानत यथा सो तेहि तस दरशाय॥ चौपाई॥ अवधहु ते मिथिलापुर प्यारी। सदा बिलास निवास हमारी॥ जबहिं सुरति करिहौ मनभाई। तबहिं मिलब तुमको हम आई॥ मिथिला अवध दूरनहिं प्यारी। जो जेहिंजिय सो निकटबिचारी॥ दूररहे जसबाढ़त प्रीती। तसनहिं निकट रहे अस रीती॥यहि बिधि करत परस्परबात॥राम बचन सुनि सुख न समाता॥ कही सिद्धि सों पुनि प्रभु बानी। होती बड़ि बिलंब जिय जानी॥ सांझ समय पितु दरशन हेतू। जैहैं मिथिलाधिप मति सेतू॥ ताते हमको देहु रजाई। पेखहिं पितु जनवासे जाई॥ सिद्धिकही मुखते निकसै किमि। मीन दीन जलहीन होव तिमि॥प्रभुकहहम आउब पुनि काली। ह्वैहैं सकल भांति खुशि आली॥ रामहिंजात जानि तेहिजूना। सुन्योसुनैना भोदुखदूना॥ जनकपट्टमहिषी तहँआई। भ्रातनसहित राम शिरनाई॥ दो०॥ जनवासेकहँ जानको मांगीबिदा बिनीत। रामबचनसुनि सासु तहँ भैअनन्दतेरीत॥ चौपाई॥ कहिनसकति कछुबचन बिचारी। रहहु लालकी जाहु सिधारी॥ दुविधजानि जानकिजननीको। प्रभुकह कालिहिमिलन अतिनीको॥ हमरे पितुके देखनकाजू। जैहैं सांझ जनकमहराजू॥ ताते मातु बिदा अब दीजै। बालक जानि छोहअति कीजै॥ भरेसुनैना नीरसुनैना। गद्गदकंठ कढ़त नहिं बैना॥ जस तस कै बोली महरानी। करहु लाल भल जो मनमानी॥ चारिहु बंधु बन्दि पद ताके। बाहेर आये अति सुख छाके॥ लक्ष्मीनिधि तहँ सहित बिदेहू। राम गवन लखि भये बिदेहू॥ रघुनन्दन बंदन करि भूपै। चढ़ि तुरंग महँ

चले अनूपै ॥ राम सखासब आय जोहारे । हास बिलासहि करत सिधारे ॥ निज निज बास आय रघुराई । आनँदहू के आनँद दाई ॥ पितुहि प्रणाम कीन शिरनाई । दै आशिष बोलेउ नृपराई ॥ दोहा ॥ सुनहुराम अभिराम अब करहुजाय आराम । सांझ समय मिथिला नृपति एहैं हमरे धाम ॥ सुनि पितुशासन बंधुयुत करि पुनि पितुहि प्रणाम । गये राम आराम हित जहँ अभिराम अरांम ॥

इतिरामप्रतापचित्रकाराबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलसोलहवांप्रकरणसमाप्तः १६ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

———o———

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

सत्रहवांप्रकरण ॥

जिउनार का आनंद और चौथीचार आदि नियोगका होना ॥

संग्रह०दोहा ॥ दिवसयाम बाकी रह्यो सुंदर समय निहारि। गौतम सुत निजधामते गवने काज बिचारि ॥

रघुराजसिंह०चौपाई ॥ सतानंद उत जनक समीपा। जायकह्यो सुनिये कुलदीपा ॥ शिष्टाचार हेत जनवासे। चलहु अवधपति पहँ सजि खासे ॥ भली कही असकहि मिथिलेशा। बोलि सुधा बन दियो निदेशा ॥ मंत्री सुहृद सुभट सरदारा। गज रथ पैदर अनुग सवारा ॥ सपदि सयुग सजिआवहिं द्वारा। जनवासे को गवन हमारा ॥ सुनत सचिव शासन सुखपाई। लीन्हों बोलि सैन समुदाई ॥ लक्ष्मीनिधि संयुत मिथिलेशा। बंधुबर्गसब और सुबेशा ॥ बिप्र बेद बिद मुनि सँग लीन्हे। चले रामदरशन मन दीन्हे ॥ द्वैधावन तहँआशुहि धाये। अवधनाथपहँ खबरिजनाये ॥ दरशहेत मिथिलापति आवत। सुनि दशरथ अतिशय सुखपावत ॥ कियउ सकल दरबार तयारी। लिये बंधु सरदार हँकारी ॥ राम बंधुयुत लिये बोलाई। नर भूपण आये सुखदाई ॥ दोहा ॥ महाराज नवखंडपति बैठेउ सहित समाज। राजमंडली नखत सम चन्द सरिस रघुराज ॥ छंद ॥ उत जनक राज समाजसंयुत लसत

बीरन मंडली। आयेमिलन अवधेशको नवखंड कीर्ति अखंडली॥ प्रतिहार जय जय करत आगे शोर सरस सुहावनो । हल्ला पर्यो दशरत्थके ज्योंही सुबीर हटावनो ॥ मिथिलेश आवत जानि कोशलनाथ चारि कुमारलै। कछुलेन आगे चलेउ सकल उदार भट सरदारलै ॥ चलिद्वार देशहि मिलेउ मुदित महीपसों मंडित महां। मिथिलाधिराज प्रणामकीन्हो भुजन भरि मोदित तहां ॥ सुर मुनि समान बिलोकि समधी हर्षि फूलन बर्षहीं। नभपथ बिमानन ठट्ट सोहहिं लखन अति उत कर्षहीं ॥ तहँ राम चारिहु बंधु कीनप्रणाम जनक महीशको । मिलि मुदित मिथिला नाथ हाथ पसारि दीन अशीशको ॥ अवधेशको अभिबन्दि कुश ध्वज मिलेउ कुँवरन जायकै।तेहि राजकुँवर प्रणामकीन सलाज शीश नवायकै ॥ पुनि आय लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कौशलेश न-रेश को । अभिमतहि आशिषपाय मिलेउ दिनेश बंश दिनेशको॥ यहि बिधि परस्पर मिलि सकल पुनि पूँछि कुशल अनंद सो। अवधेश चले लेवाइ जनकहि पकरि कर अरविन्द सो ॥ दोउ राज बैठे एकआसन दहिन दिशि मिथिलेश हैं। बायें सु कौशल राज राजत और बीर अशेष हैं ॥ आगे बिराजत राम चारिहुबंधु लक्ष्मीनिधि युतै । दहिने कुशध्वज और निमिकुल बीर यक एकन उतै ॥ यहिभांति युगल समाज सोहति मनहुँ स्वर्ग सुरा-वली । रघुकुल सु निमिकुल बीर बैठे बदहिं कवि बिरदावली ॥ बहुभांति शिष्टाचार बचन उचारि अवधभुवार को। करजोरि बोलेउ जनक आपुसमान यह संसार को ॥ निमिबंश पावन कियो दीन्हो सुयश मोहिं दराजहै। किमि करों प्रति उपकार गुनि उपकार आवति लाजहै॥ अवधेश बोलेउ सुनहु तुम मिथि-लेश राज ऋषीश हौ। बर योग ज्ञान बिराग भक्ति बिबेक धर्म धुरीशहौ ॥ तुम्हरे दरश हम भये कुशल पुनीत सकलप्रकारसों। महिमा तिहारी भूरि महिमा कौन करै उचार सों ॥ हम दियउ तुमको सौंपि चारिहु कुँवर तजि छल छन्दको। लालन करन

पालन करन तुम पिता देन अनंद को ॥ कौशल नगर मिथिला नगरके आप एक अधीश हौ । यामें न दूसरिबातकछु तुम बिषय कर्म अनीशहौ ॥ दशरथ बचन सुनि सब सभासद साधु साधु उचारहीं । दशरथ सनेह बिदेह लखि दृग बारि धारहि ढारहीं ॥ बोलेउ बहुरि निमिबंश भूषण काल्हि महल पधारिये । करिकै कृपा निजकुवँरयुत ममभवन जूठनडारिये ॥ कहि एवमस्तु भुआल आशुहि अतरपान मँगायकै । निजपाणि पंकजसों मुदित मिथिलेश अंगलगायकै ॥ बीरीदियउ निजहाथ सों एलालवंग समेतही । तैसेहिकियो सतकार अवधभुवार पुनि कुशकेतही ॥ पुनि राम निजकरकियो लक्ष्मीनिधि परम सतकार है । मांगी बिदा निजभवन गवन विदेहलहि सुखसारहै ॥ पहुंचाय द्वारहिदेशलौं अवधेशचलि मिथिलेशको । करिसबिधि बन्दन सहितनन्दन पायमोद अशेशको ॥ दोहा ॥ सिंहासन बैठेउबहुरि संयुत चारिकुमार । बरणतनेह विदेहको देहनरह्यो संभार ॥ उतबरणत दशरथसुयश गमनतगेहविदेह । रामशील शोभानिरखि भयेविदेह विदेह ॥ पुनि रामहि बंधुनसहित बोलेउ कोशलराय । करिब्यारी कीजे शयन रैन बहुत नहिंजाय ॥ कोशलपति नन्दनहरषि अभिबंदन पितुकीन । सानंदन उठि अशनकरि नयननींद रसभीन ॥ सामंतन करिकै बिदा तज्यो राउदरबार । शयनकिये निजऐनमें आनि अनंदअपार ॥ चौपाई ॥ रोज रैन दिन सबजनवासा । माच्यो हास विलास हुलासा ॥ नृत्य गीत बादन सबठोरा । माचिरह्यो मंडित चहुंओरा ॥ जात राति दिन जानिनपरहीं । महामोद मंगल जनभरहीं ॥ निशा सिरानि भयो भिनुसारा । पूरब दिनकर किरणिपसारा ॥ बंदी जनगण द्वारहिआई । गावनलगे विरदसुरलाई ॥ नौबतिभरनलगी सबठोरा । भये दुन्दुभी के कलशोरा ॥ उठेउ चक्रवरती महराजा । सुमिरि गरुडगामी छबिछाजा ॥ प्रातकृत्यसब भूप निबाहीं । दन्हिोदान समानउछाहीं ॥ रघुकुलतिलक उठे युत

भाई । पूजन मज्जनकरि सुखछाई ॥ सहितबंधु पितुकेदरबारा । आये चारिहु राजकुमारा ॥ लक्ष्मीनिधि उत जनकपठाये । देन निमंत्रणके हितआये ॥ दशरथ निजगोदहि बैठाये । कह्यो लाल केहिकाज सिधाये ॥ दोहा ॥ जनककुवँर बोलेउ बिहँसि पितुपठयो मुदमोय । भूपतिभोजन रावरो आजु महलमहँहोय ॥चौ०॥ प्रेममगन नृप गिराउचारी । कहियो पितहि प्रणाम हमारी ॥ पुनि कहियो अस सोइ सुखदाई । जोमोहिं राउर होयरजाई ॥

संग्र० ॥ इमि दशरथनृप कहि सुखमानी । बहुरि जनकसुत कह मृदुबानी ॥ पठवहु कुवँरन करनकलेऊ । अवधनरेन्द्र रजायसु देऊ ॥ उठे कुवँर पितु आयसु पाई । लक्ष्मीनिधि युत पदशिरनाई ॥

विश्वनाथसिंहजूकृतपद ॥ भोरहिं सजिसजि कुवँर कलेऊकरन चले । लक्ष्मीनिधिके संग हँसत कहि बचनभले ॥ भूपहि करि परणामगयेपुनिभीतरको।विश्वनाथ बहुछकीकुमारीतकिबरको॥

संग्र०दोहा॥ लक्ष्मीनिधि पितुसोंकही जैसेकहि अवधेश । सुनिकै मनआनंदअति पायउ जनकनरेश ॥

रघुरा०चौ० ॥ सुघर सूपकारन तेहिबारा । कीन्होजनक तुरत हंकारा ॥ सिगरे सूपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्योंनार हुलासन ॥

संग्रह०दोहा ॥ इत अंतहपुरमाहिंसब नवयोबन सुकुमारि । निरखि राम अभिरामछबि भईप्रेम मतवारि ॥

विश्व०पद ॥ रघुनंदन सुंदरतकत कुमारी मोहिगई । कोउ ब्यजन पवन अंचलनिडारि उरमूंदलई ॥कोउ करिकटाक्ष हरि बदनताकि पुनि लजतभई । कोउ नीलकमलले उरलगाय तन मोदछई ॥ कोउलगी आरसलिखन रामादिशि पीठिदई । प्रतिबिंब कुवँरकोदेखि कहैं कछु सैननई ॥ कोउ बिरिनदेत हरिअंगुलिमीडि मुदबेलिबई । कोउ जायधाम धरिध्यान लागि अंग दिन बितई ॥ सुनि कुवँरको आगमन सिद्धिआई तहँई १ जो

ऐसे गुणनभरे हैं यहतन मोहिंलेत तकतै । गुनियतु बचीन ह्वैहै मुनितिय बन यकंतबसतै ॥ मुनिनमाहँ असशक्ति रूपजोइ चहहि लेहिधारी । विश्वनाथते भये होहिंगे इनहिंतकतै नारी ॥ कह्योपुनि लषण मंदमुसक्याय । येतिय सब हैं अहल्याके सम जानति अहैंसुभाय ॥ कोउ तियकह्यो बचन बढ़िबोलहु मनिहौ भलेकपोल । लषणकही कत कछुलुभायकै बोलतिहौ येबोल॥ जौन मनोरथ करियतुरानी सोजान्यों मैं बाम । हैंहरि तुव-हिय मंगलकलसनि सजि समारिहैकाम ॥ सखिनकह्यो तुम जीत्यो बातनएक बतावहुबात । झूंठकह्यो तो व्याहो भगिनी करहु तातकोनात ॥ तुमतो कबतेरहे अवधहिमें की कानन गुरु संग । कामिनिकौनि सिखायदईहै तुमको ऐसेढंग ॥ रामकह्यो सति कहहुन हांसीकरि भाषैयेबैन । तुम सुवासिनि सेवतिमम संग बसति हमारेऐन ॥ मोहिंसुनि छैलगई कब इतते कहौसो तुमहीं जानि । विश्वनाथसुनि सिद्धि छकितभै मनहींमन मुस क्यानि । दोहा ॥ कोउकह इनमहँचातुरी कहांलही यहलाल । हरिहँसिकहिकछु लषणतन बोलेबचनरसाल॥बिल्वपत्रतूरतयक दिव्य सिरीफलपाइ । छुवतचढ़ी चितचतुरई पैह्यांकहाबसाइ॥

संग्रह० ॥ रामबचन रसभरि मृदु सुनि तियगण मुसक्याय । राजकुमारनसों पुनि बोलीं युक्तिबनाय ॥ पद ॥ कोउसखि कह येकुवँर बालते बनबासी संगठाने । हमकहँलखिय चकितरहेहैं जगतरीति नहिंजाने ॥ कानलागि मैं इन्हैंसिखाऊं असकहिकै नियरानी । कोउकहै यहतुम भगिनिबसी इत मुनिकहँ नीरस जानी ॥ हँसि हरिकहे हैं सांच असांची बाततुम्हारि जलासी । ममभगिनीतो झूठअहै यह क्रियाविदग्धा खासी॥ ऋधि सिधि प्रद मुनि सुबरणसंपुट द्वैचोरायलैआई । छातीलाय छपायेहैं ते दैहोंछोरि पठाई ॥ सुधासरिस बाणीसुनि बिहँसतभौंह कमान हितानी। तीछे तकत कामशरबरषत सो उलटी सकुचानी ॥ कोउ हँसिकह नारिनके लक्षण अबलों येनहिंजानैं । धौंभगिनी

इनकीहै जैसी तिमि सबहीअनुमानैं ॥ अंगहीन द्वैउनकेलखिकै शृंगीके द्वैअधिकै । विश्वनाथ निजमनहिं बिचारिकै दियसंयोग यहबिधिकै ॥

विश्व०पद ॥ कही कोउ कुवँर जान नहिं पावैं । अपनोदूत पठाय उतैते भगिनी इतै बुलावैं ॥ ते इतआय सभामधि सब को अपने अंग दिखावैं । अधिक अंग जो होय हिये तौ भगिनी हारि ये जावैं ॥ कोउ कह सुनहु बात बिसराई कहा कहसि ये ठावैं । शृंगीव्याह ऋषिसंग कुलहु कि गईते अब किमि आवैं ॥ ये बालक निज बात न जानत हँसि हमसों कहवावैं । मृदुमुसक्याय लषण सुनिबोले ये बहुबात बनावैं ॥ असकहुं सुनी न देखी ये जस बचन बिदग्धाभावैं । विश्वनाथ कहि बाल परीक्षा बिनहु उछाह बढ़ावैं १ कोउ कहे राम सुमित्रा मित्रहि तुम तो जानत ह्वैहो । बिना बताये लाल इतैते अबतो जान न पैहो॥ रिपुहन हँसिबोले कलभनके कुंभचोरि हियलाये । जात कबै बिन अब इनमहँ हरि तीक्षण नखन लगाये ॥ भरत भन्यो इनकी अछूट अति भुजनपासहै भाई । करिय कहां जो फाँसि ताहि मैं राखहिं उरहिं लगाई ॥ अपनैगो नहिं धाय मिली संग लगिहैं गवन जो कीनै । हेरि हँसी कह विश्वनाथ मनमोहन मंत्रैदीनै२॥

श्रीतुलसी०बरवै ॥ गरबकरहु रघुनन्दन जनि मनमाँह । देखहु आपनि मूरति सियकै छाँह ॥

प्रियाशरणकृतछप्पै ॥ चली हासकी बयन लाल तुमकाकेजाये। कौशल्याहैं गौर राय पुनि गौर सुहाये ॥ तुमको देखत श्याम ताहिते शंका आई । लक्ष्मण काहे गौर श्याम तुम देहु बुझाई॥ मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहातहै । मातु पिता तव गौर हैं यह परपंच देखातहै ॥ यहां उरमिला श्याम राम कहि मृदुमुसकाने । सुनहु कुवँरि अब श्याम हेतु हमसत्य बखाने ॥ है शृंगारको श्याम रंग शिंगाररूप हम । ताते मेरो अंग श्याम छबिधाम काम सम॥निध्या तबबोलतभई है परत्व पुनि गौरको

श्याम जहां मोहिरहे तुम आये इत दौरको ॥ दोहा ॥ सुनहु सुमन मकरंद हित मधुपहि कौन बोलाई। भ्रमर आपुते आवहिं जहँ सुगंधरसछाई ॥ सुनि सरहज हँसि मर्मको हियमें भयो अनंद। सबके मन अति मोद भइ ताकति मुख रघुनंद ॥

बिश्व०पद॥ पुनि सब कुवँर कलेऊ कीन्हे। स्वाद सराहि बिबिध पकवानन अचय अचय मुख बीरिन दीन्हे ॥ पाय सासुको भूरिभाँतिधन तुरंग नचावत डेरहि आये। बिश्वनाथ बैठे भूपति ढिग बनरा सकल गायकन गाये ॥ जीवें चारयो राजदुलारे बनरा राज। सदारहत बकशत बकशिशन पुरवत गुनियन काज ॥ पीत पोशाक करकंकण शोभित शोभ समाज। बिश्वनाथ सबके मनमोहत मदनहुके शिरताज ॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ पुनि जेंवनार भयउ बहुभांती। पठये जनक बुलाय बराती ॥

संग्रह० ॥ रहेउ दिवस बाकी यकयामा। सुंदर समय परम अभिरामा ॥

रघुराज० ॥ इतैकरी अवधेश तयारी। महल पधारन हेतु सुखारी ॥ सजे सकल सुंदररघुबंसी। जे त्रिभुवन महँ बिदितप्रशंसी ॥ चारि कुमारन भूप बोलाये। चारि उतंग मतंग चढ़ाये ॥ नाम जासु शत्रुंजय नागा। जेहि बिलोकि दिग्गज मदभागा ॥ तापर भयउ भुआल सवारा। जिमि ऐरावत शक्र उदारा ॥ दोहा ॥ राम लषण दक्षिण दिशा बाम भरत रिपुशाल। चारि चारु चामर चलत सोहत छत्र बिशाल ॥ चौपाई ॥ सजी सैन सब बजे नगारे। फहरन लगे निशान अपारे ॥ प्रतीहार बोलहिं यकओरा। मंजुल करहिं जांगरे शोरा ॥ धूरि पूरि नभ भूरि उड़ानी। चली सैन नहिं जाय बखानी ॥ पुरबासी देखन सब धाये। देखि देखि धनि धनि मुख गाये ॥ मनहुँ आज आवत मुखचारी। सहित चारि लोकप सुखकारी ॥ देव समाज बिनिंदक सैना। जोहत जन जाकि कढ़त न बैना। जहँ तहँ कहहिं

जनकपुरबासी । धन्य धन्य नृप अवध मवासी ॥ भई खबर महलन महँ जाई । आवत अवधनाथ नृपराई ॥ राज समाज साजि सब साजा । बैठ रहेउ बिदेह महराजा ॥ समधी आगम मनहिं बिचारी । आगूलेन चलेउ पगुधारी ॥ द्वार देश अवधेश निहारी । करगहि गजते लियेउ उतारी ॥ किये प्रणाम परस्पर दोऊ । बंदे यथा योग सब कोऊ ॥ दोहा ॥ दीनबंधु बंदे जनक सहित बंधु युत बंधु । शीलसिंधु को राम सम नागर नेह प्रबंधु ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन समेत गवन किय भूपा ॥

तथा श्री रीवांमहाराज श्रीरघुराजसिंहजी कृत रामस्वयंबर ॥

चौपाई ॥ सभा सदन दशरथ पगु धारे । सिंहासन यक अमल निहारे ॥ बैठेतापर भूपति दोई । दहिनेदिशि दशरथ मुदमोई ॥ कनकासन बिस्तर यक आगे । लघु राजासन ते नग लागे । तापर राम बैठ लैभाई । लक्ष्मीनिधिहि लियो बैठाई ॥ दहिने दिशि रघुबंश बिराजा । बायें दिशि निमिकुल छबि छाजा ॥ लाग्योहोन तहां नटसारा । नचनलगीं अप्सरा अपारा ॥ लागे गानकरन गंधर्वा । बाजबजाय प्रमोदित सर्वा ॥ मिथिलापुर के नरतक नाना । नवें डगैं नहिं तालबँधाना ॥ यद्यपि किन्नर अरु गंधर्वा । परमप्रबीण अप्सरा सर्वा ॥ लेहिं तीनिग्रामनकीताना । नाच गानमहँ परमसुजाना ॥ तदपि विदेह गुणीजनदेखी । लेहिं आपनेते बरलेखी ॥ तिनहिं सराहैं बारहिंबारा । अस नहिं शक्रसदन नटसारा ॥ दोहा ॥ रामदरश हित स्वर्ग तजि चारण सिध गंधर्व । विद्याधर अरु अप्सरा आये मिथिला सर्व ॥ चौ० ॥ जनक गुणीजन कला निहारी । तजि गुणगर्ब रहे हियहारी ॥ अवधनरेशहु करी प्रशंसा । दियो भूरिधन नृपअवतंसा ॥ पै ने विदेह गुणीजन लीन्हे । अनुचितजानि विनयबढ़ि कीन्हे ॥ पुनि मिथिलापति परम सुजाना । आन्योअतरदान अरु पाना ॥ नि-

जकर कंजन अतरलगायो। पुनि तांबूल सप्रेमखवायो॥ पुनि उठि रामसमीप सिधारी। अतरलगायो बदननिहारी॥ कियो रामकर जस सतकारा। तैसहि भ्रातन कियो उदारा॥ निज करपंकज पानखवायो। मरकतमणि माला पहिरायो॥ पद्मरागमणि माल बिशालै। दियो जनकनृप कोशलपालै॥ पितु रुखजानि विदेहकुमारा। किय सब रघुबंशिनव्यवहारा॥ अतर पान भूषण पटनाना। यथायोग सबही सनमाना॥ दशरथसरिस बरातिनपूजे। सबके सकलमनोरथपूजे॥ दोहा॥ शतशत गज स्यन्दन सहस दशदशसहस तुरंग। दियो चारिहूं कुवँरको तदपिन पूरि उमंग॥ अयुत अश्व यकसहसगज कनक सवाँरे साज। रतनजालकी पालकी दियदशरथ निमिराज॥ चौ०॥ तेहि अवसर आयो कुशकेतू। उठीसभा युगभूप समेतू॥ करि बंदन भूपतिशिरताजै। कह्योवचन पुनि भोजनकाजै॥ रघुकुल तिलक बिनयसुनिलीजै। भोजनहेत गवन अब कीजै॥ सुनि कुशकेतुवचन अवधेशा। चल्यो कुवँरयुत लै मिथिलेशा॥ चले संगसब रघुकुलबारे। भोजनकरन भवन ज्यौंनारे॥ चारि चारु चामीकर चौकी। बैठेकुवँर सुहाथ समौकी॥

श्रीतुलसीदास०॥ सादर सबके पांवपखारे। यथायोग्य पीढ़न बैठारे॥ धोये जनक अवधपति चरना। शील सनेह जाय नहिं बरना॥

रघुराज०॥ सो जल सींचि शीश महराजा। मान्यो अपनेको कृतकाजा॥ प्रभु समीप पुनि गयउ बिदेहू। सजल नयन रोमांचित देहू॥ भरि जल भाजन सुरभित नीरा। कनकथार आगे धरि धीरा॥

श्रीतुलसी०॥ बहुरि राम पद पंकज धोये। जे हर हृदय कमल महँ गोये॥

रघुराजसिंह० दोहा॥ जे पदपद्म पखारि बिधि भरयो कमंडलु

नीर । सोइशंकर निज शिरधरयो मेटेउ भवभयपीर ॥ चौपाई ॥ जोजलपरश करत यकबारा । तरे सगरसुत साठिहजारा ॥ कलिकल्मष बनबिटपदवारी । दुरितदवानल सावनबारी ॥ अधमउधारण कारणसोई । जेहिप्रभावलखि कलिदिय रोई ॥ सो पदकञ्ज सलिल मिथिलेशू । धरेउ शीशमहँ मिटेउकलेशू ॥ यहिबिधि प्रभुपदकंज पखारी । भरत लषण रिपुहनहुं हँकारी ॥

श्रीतुलसी० ॥ तीनोंभाइ रामसमजानी । धोये चरणजनक निजपानी ॥

रघुराजसिंह० ॥ धोयेचरण चारु सबहीके । सींच्यो सलिलसदनसब नीके ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि अरु कुशकेतू । रघुबंशिन पद धोवनहेतू ॥ लै चामीकरभाजन पानी । रामसमान बरातिनजानी ॥ दोहा ॥ धोये रघुबंशिनचरण प्रेमप्रभावपसारि । पुनि कोशलपतिसोंकह्यो चलहुनाथ पगुधारि ॥ चौपाई ॥ अवधनाथकहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा ॥ भोजनमंदिर गयेलेवाई । यथायोग सबकहँ बैठाई ॥ मृदुलपटे पन्नकेप्यारे । बैठाये तिनराजकुमारे ॥ जड़ितचंद्रमणि चौकीचारू । बैठायउ कोशलभरतारू ॥ तेहिबिधि रतनासनयकरूरो । बैठ बिदेहप्रेम परिपूरो ॥ लक्ष्मीनिधि बैठेउ ढिगरामा । कुशध्वज बैठ जनक के बामा ॥ एकओर सब बैठबराती । एकओर सब लसैं घराती ॥

श्रीतुलसी० ॥ आसन उचित सबहि नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥

रघुराज० ॥ रहे जिते तहँ रघुकुल बारे । दीन्हे भाजन कनक अपारे ॥ थार कटोरे कनककरोले । चिमचा प्याले परमअमोले ॥ बिबिध रतन भाजन छबिजाले । आगेधरे सुकोशलपाले ॥ तिमि मणिभाजन परम अनूपा । चारिहु बरन दिये अनुरूपा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मणि परण सवाँरे ॥

रघुराज० ॥ परुस्यो ओदन बिबिध प्रकारा। मोती भात सु नाम उचारा ॥ केसरि भात नाम शशिभातू। कनकभात पुनि बिमल बिभातू ॥ रजत भात पुनि ओदन कुंदा। सुघर भात प्रद अमित अनंदा ॥ अरुण पीत अरु हरितहु वरणै। ओदन बिबिध कौन कवि बरणै ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत। क्षणमहँ सबके परुसिगे चतुरसुआर बिनीत ॥ चौपाई ॥ पंच कवल करि जेंवन लागे। गारिगान सुनि अति अनुरागे ॥

रघुराज० ॥ राम बंधु युत अति अनुरागे। भोजन करन लगे सुखपागे ॥ दधि चिउरा बिदेह करलीन्हे। कोशलपति आगे धरि दीन्हे ॥ कह्यो जोरिकर तिरहुत माहीं। यातें और पदारथनाहीं ॥ और सकल रावरी बिभूती। हमरे तो यतनी करतूती ॥ हम नहिं तुमहिं जेंवावन लायक। लेहु कृपा करि रविकुल नायक ॥ कह्यो अवधपति सुनिय बिदेहू। जो करि कृपा आज तुम देहू ॥ सो सादर हम शिर धरि लेहीं। अस दाता पैहैं पुनि केहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ भांति अनेक परे पकवाना। सुधासरिस नहिं जायँ बखाना ॥ परुसन लगे सुआर सुजाना। ब्यंजन बिबिध नाम को जाना ॥

रघुराज० ॥ मधुर तिक्त कटु अम्लकषाई। लवण सहित बहु बस्तु बनाई ॥ जे ब्यंजन सुरपुर में होवैं। नाग नगर जे ब्यंजन जोवैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ चारिभांति भोजन बिधि गाई। एकएक बिधि बरणि न जाई ॥ छरस रुचिर ब्यंजन बहुजाती। एक एक रस अगणित भांती ॥

रघुराजसिंह० ॥ जगस्वामिनि सिय जेहिघर राजै। बैठे जगपति

भोजन काजै ॥ तहँ व्यंजन के बिबिध बिधाना । को अस कवि जो करै बखाना ॥ जेहि बिधि परुसे दशरथ काहीं । तेहिते न्यून बरातिन नाहीं ॥ सूपकार मिथिलापति केरे । परुसि पदारथ आसुध मेरे ॥ रामरूप अवलोकन लागे । कोटिन जन्म दुरितदुख भागे ॥ इतै राम संयुत सबभाई । लक्ष्मीनिधि सों करतहँसाई ॥ कहि न सकत गुरुजनके आगे । सैनहिं हँसी करत रसपागे ॥ लक्ष्मीनिधि सों सैन चलाई । कहहिं देहु मोदक युग ल्याई ॥ देत रमानिधि उत्तरहेरे । ये मोदक कोशलपुर केरे ॥ यहि बिधि रचत अनेकन हांसी । भोजन करत कुँवर सुखरासी ॥

कृपानिवास० ॥ ॥ अनु समधी सज्जन सबसंगा । भोजन करत होत बहुरंगा ॥ कपट पाक रानी बहु करिये । दशरथ सहित सबनिको धरिये ॥ ऊपरि सुभग माहिं चतुराई । पावत कला सकल उघराई ॥ हँसत सतानँद कहि रुचिपइये । समधिनिकी मिजमानी लहिये ॥ दोहा ॥ मगन उघारत हरषबश करन परख मुख डारि । गृहयुवतिन की सीख बिन आये कहि हँसि नारि ॥

रघुराज० ॥ तहँ गारी गावनलगीं मिथिलापुरकी नारि । बाजन बिबिध बजायकै सातहु सुरन सुधारि (श्रीदशरथ महाराजको मिथिलापुर नारिन का गारीगाना) सुनिये कोशलपति भूपा । तिहरो यश जगत अनूपा ॥ धरनी महँ रही सुधन्या । अजभूपति की यककन्या ॥ तेहि भूप स्वयंबर कीन्हा । यकमुनिकहँ सो बरि लीन्हा ॥ मुनि भवन गई चलि प्यारी । जननी पितु लाज बिसारी ॥ कोउकही गाय पुनि गारी । तुव भाम होत तपधारी ॥ रघुकुल चलिआई रीती । तियलेहिं पुरुषकहँ जीती ॥ हम सुने कान बहुबारा । तुव महिषिन मीत अपारा ॥ मिशिचरकी हरी कुमारी । तुमव्याहे काह बिचारी ॥ केकयी तुम्हाररिानी । तेहि नाम तासुगति जानी ॥ तुमबूढे अवधभुआला । किमि जनमे चारिहुलाला ॥ हम तुमघरकी गतिजानी । नहिं कौनहुलोकलुकानी ॥ तिय खीरखाय सुतजनतीं । अपनोकरतब सब करतीं ॥

दुइलाल श्याम दुइ गोरे । यह होत महाभ्रम मोरे ॥ ऐसी हम सुनी कहानी । जब पुरुषशक्ति भैहानी ॥ तब मुनितेराखतबंशा। यह रघुकुलकेरि प्रशंशा ॥ अब सुनहुविनय अवधेशा । अतिलजत कहत मिथिलेशा ॥ जोहोइभगिनि घरमाहीं । तौदेहुविदेह बिवाहीं ॥ हमसुनियत दशरथराऊ । तुम्हरेकुल परम प्रभाऊ॥ करिपान यज्ञको नीरा । सुतजनै पुरुष मतिधीरा ॥ यहिबिधि बहुगारीगामैं । मिथिलापुरबाम ललामैं ॥ तहँकहैं नारिसमुदाई । यहदीजे नेगमँगाई ॥ निमिकुलके कुवँर कुवांरे ॥ सब किये भरोस तिहारे ॥ यकयककन्या नृपदीजे । यहअनुपम यश जग लीजै॥ असमुनत मृदुल नृपगारी । मुसक्यात लहत सुखभारी॥

रघुनाथ०चौपाई ॥ सुनियत अजके सुत दशस्यंदन । दशस्यंदनके भे अजनन्दन ॥ यह अवरेव परी केहिभांती । समुझिपरत अस सकल बराती ॥

श्रीतुलसी० ॥ जेंवत देहिं मधुरधुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥ समय सुहावनि गारिबिराजा । हँसत राउसुनि सहित समाजा ॥

रघुराज०दोहा ॥ मंद मंद भोजनकरत सुनि सुनि गारीराय । कुवँर उतर कछु देतनहिं दोउ नृपनिकट लजाय ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ इहिबिधि सबही भोजन कीन्हा । आदरसहित आचमन लीन्हा ॥

रघुराज० ॥ उठे सकल निमि रघुकुलबारे । उठि कुमारकर चरणपखारे ॥ निजकर बीरी नृपहिंखवाये । लक्ष्मीनिधि रामहि पुनि ल्याये॥अतरलगाय खवाये बीरा । यथायोग पाये सब बीरा॥

संग्रह० ॥ पुनि मंडपतरगे दोउराजा । निमिकुल रघुकुल जुरी समाजा ॥ सतानंद जनकहि कहि बानी । पलिकाचार करहु सुखखानी ॥ कह्योजनक मंत्रिनसों जावो । दायजसाज बेगि इतलावो ॥ गये सपदि लाये स लिवाई । पृथक् पृथक् सब

धरी बनाई ॥ मिथिलापुरकी नारि हजारन । आईं सीताराम निहारन ॥ अटनि झरोखनि खिरकिन नारी । बैठी बहुगावहिं मृदुगारी ॥ मुनि रानीपहँ खबरि जनाई । कुवँरिनयुत आईंहरषाई ॥ संग सकल अंतहपुरबाला । गावति मंगलगीत रसाला ॥ दोहा ॥ गुरुवशिष्ठ आज्ञादई पलिका बैठेउराम । तीनिबंधुबैठत भये अपने अपने ठाम ॥ सखीलाय सिय रामढिग बैठारी गँठजोरि । ऐसेहिं त्रयभ्रातानके कियो चतुरबर गोरि ॥

केशवबिजयाछंद ॥ बैठेजरायजरे पलिकापर राम सिया सबको मनमोहैं । ज्योति समूहरहे मिलिकै सुरभूलिरहे बपुरा नरको हैं ॥ केशवतीनहू लोकनकी अवलोकिवृथा उपमा कबिटोहैं । शोभन सूरज मंडलमांझ मनौ कमला कमलापति सोहैं ॥

संग्रह०दोहा ॥ जनक कीन्हब्यवहार सब जस आयसु मुनि दीन । दायजदीन्ह्यो अमितबिधि विनय जोरिकर कीन ॥

रघुराज०चौपाई ॥ मांगीबिदा जान जनवासे । कह्यो बचन तब जनक हुलासे ॥ केहिबिधिकहौं जानअवधेशा । जानकहत जिय होत कलेशा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ देइपान पूजेजनक दशरथसहित समाज । जनवासे गवने मुदित सकल भूप शिरताज ॥

कबिराधाबल्लभ ॥ जनवासेमहँ आयऊ भूपति सकलबरात । बरणत दोऊनृपनकी प्रीति न लोग अघात ॥ चौपाई ॥ उततै रानी साज सजाई । जनवासेकहँ सियै पठाई ॥ महाडोलमहँ बैठि कुमारी । चढ़ि अलियां आनन छबिभारी ॥ गान निशान बजत सुखदाई । यहिबिधि सिय जनवासे आई ॥ दोहा ॥ सखियांआईं अवधकी सियालेन अगवान । करि आरति लैबधुन को लाईं निजअस्थान ॥ चौपाई ॥ मंगल गानकरैं बरनारी । बजत मृदंग बीन मनहारी ॥ सोये बराती सब सुखसाने । जागे प्रमुदित होतबिहाने ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नितनूतन मंगल पुरमाहीं । निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं ॥ बड़ेभोर भूपतिमणि जागे । याचक गुणगण गावनलागे ॥ देखि कुवँरबर बधुन समेता । किमि कहिजात मोदमन जेता ॥

संग्रह० ॥ वहां सकारे जनक नरेशा । लक्ष्मीनिधिको दीन निदेशा ॥ लाल अबै जनवास सिधावो । चारिहु कुवँरिनको लै आवो ॥ चले कुवँर दशरथपहँ आये । भगिनिनलै पुनि सदन सिधाये ॥ कुवँरिनदेखि रानि हरषाई । बलीहारिलै हृदय लगाई ॥ रानीकरती बहुतपियारा । इतैअवधपतिमनहिबिचारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रातक्रियाकरिगे गुरुपाहीं । महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं ॥ करिप्रणाम पूजाकरजोरी । बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥ तुम्हरीकृपा सुनिय मुनिराजा । भयउ आजु मम पूरणकाजा ॥ अब सबविप्र बुलाइ गुसांई । देहुधेनु सबभांति बनाई ॥ सुनि गुरुकरि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥ दोहा ॥ बामदेव अरु देवऋषि बालमीकि जाबालि । आये मुनिवर निकर तब कौशिकादि तपशालि ॥ चौपाई ॥ दण्ड प्रणाम सबहि नृप कीन्हा । पूजिसप्रेम बरासनदीन्हा ॥ चारि लक्ष बर धेनु मँगाई । काम सुरभिसम शील सुहाई ॥ सबविधि सकल अलंकृत कीन्ही । मुदित महीप ऋषिनकहँ दीन्ही ॥ करत विनय बहुबिधि नरनाहू । लहेउ आजु जगजीवनलाहू ॥ पाइअशीश महीश अनन्दा । लियेबोलि पुनि याचक वृन्दा ॥ कनक बसनमणि हय गय स्यंदन । दियेबूझिरुचि रबिकुलनंदन ॥ चले

पढ़त गावत गुणगाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥ इहिविधि रामबिवाह उछाहू । सकैंनवरणि सहस मुख जाहू ॥ दोहा ॥ बारबार कौशिक चरण शीशनाइ कह राउ । यहसबसुख मुनिराजतव कृपाकटाक्षप्रभाउ ॥

संग्रहक०चौपाई ॥ जनकराज गुरु सचिव बुलाये । आयउ तब नृप हुकुम सुनाये ॥

रघुराज० ॥ आजु चतुर्थी कर्मविधाना । ताकर सब साजहु सामाना ॥ सतानंद कहँ जनक हुलासे । बर आनन पठयहु जनवासे ॥ गौतमसुत चलि अवध भुवाले । कहेउ चतुर्थीकर्महि हाले ॥ राउकह्यो ममगुरुपहँ जाहू । तिनयुत कुँवरनकहँ लैजाहू ॥ गौतमसुत बशिष्ठपहँ गयऊ । विश्वामित्राहि आनत भयऊ ॥ समाचार सब दिये सुनाई । सम्मतकीन्ह्यो दोउ मुनिराई ॥ दोहा ॥ तहँ बशिष्ठ चारिहु कुवँर लीन्हेउ आशु बोलाय । रतन जालकी पालकी दूलह लिये चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ गाधिसुवन अरु आपहु आसु । चढ़े एकरथ सहित हुलासु ॥ पंचसहससँगराजकुमारा । छटे छबीले तुरंग सवारा ॥ अगणित परिकर विविध नकीवा । चलेसंग बोलत जयजीवा ॥ चारि चारि चामर अति चारू । करैं कुवँर शीशन संचारू ॥ राकाचन्द्र छत्र छबिछाजे । मुरछल विविध विशाल बिराजे ॥ यहिविधि चारिहु कुवँर सोहाये । जनकभूप रनिवासहि आये ॥ दूलह आवनि सुनत सुनैना । कलश साजि कामिनी सुनैना ॥ पठई मंगलहित अगुवानी । गावत चलीं सुमंगल बानी ॥ द्वारदेशमहँ दूलहलीनी । देखि महाछबि आनँदभीनी ॥ मुकुट जड़ाउ रतनके खासे । मुकत झालरैं झलक बिलासे ॥ छहरतिसुछबि छोरछ्वैछोनी । मुकतामणि माणिक ततिलोनी ॥ दोहा ॥ परे परतले कंध में जगति जवाहिर ज्योति । हीरनकी हारावली हिमकर किरणि उदोति ॥ चौपाई ॥ लसतकंठ पन्ननके कंठे । मनुबुध बहुतरूप

धरि बैठे ॥ युगल युगल श्रुति जलज सोहाहीं । मनु उडु श्वेत श्याम घनमाहीं ॥ भुज अंगदकरकड़े बिराजैं । मणिमंजीर कमल पद भ्राजैं ॥ चारिहुबरण अनूपम शोभा । देखि सकल नारिन मनलोभा ॥ लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तृणका तोरहिं पलक नेवारी ॥ तहँ बशिष्ठ कौशिकमुनि आये । सतानन्दहू संग सिधाये ॥ औरहु बिप्रवृन्द जुरिआये । पढ़नलगे स्वस्तैन सोहाये ॥ उतरि पालकीते बर चारी । अन्तहपुरकहँ चले सिधारी ॥ तिहि अवसर लक्ष्मीनिधिआये । मिलि कुवँरन तिनसंग सिधाये ॥ मंगलगान करत कल कामिनि । अर्घदेत गवनी गजगामिनि ॥ कौशिक सतानन्द गुरुतीने । मंगलपढ़त प्रवेशहि कीने ॥ मंडपतर दूलहसब आये । मिलि सिद्धासखि मंडल भाये ॥ दोहा ॥ चारि चारु आसन अमल बैठे दूलह चार । सतानन्द कौशिकहु गुरु लगे करावन चार ॥ चौपाई ॥ गौरि गणप पूजनकरवाये । पुनि चारिहुबर बधुन बोलाये ॥ बरन बधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ॥ पुनि बैठाये आसन माहीं । सविधि कराये होम तहांहीं ॥ सकलचार चौथीकर कीन्हे । अन्तहपुरबासिन सुखदीन्हे ॥ तेहिअवसर आई महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ॥ कह्यो मुनिनसों बचन त्वराई । भयउ अशन अति काल महाई ॥ चौथीकृत्य शीघ्रकरवाई । भोजन करैं अवशि इतआई ॥ सूखिगये कुवँरनमुख कैसे । शरदा तप लहि सरसिज जैसे ॥ मुनिकह कृत्यभई विधिलाई । अशनकरावहु कुवँरन जाई ॥ लैरानी सब कुवँरनकाहीं । अशन करायो भौनहिमाहीं ॥ करि भोजन रघुकुलकर चंदा । बैठेउआय सभा सानंदा ॥ तहां सिद्धिलै सखिन सिधारी । दीन्हेउ अतर पान सतकारी ॥ दोहा ॥ जोरि कह्योकर रामसों सुनहु प्राणपतिलाल । हमरेकुलकी रीतियह चलिआई सबकाल ॥ चौपाई ॥ चौथी छूटिजाति जेहिबारा । तेहिदिन आनँदहोत अपारा ॥ दुलहिन दूलह सरहज सारी । होरीखेलहिं रंगनडारी ॥

रामप्रियाशरण० ॥ रसमें सब लज्जा मिटिजाई । विरहहिमम संग तुमहिं दिखाई ॥

रघुराज० ॥ ताते सजहु आपहितहोरी । यह सुखदेखनकी रुचि मोरी ॥ सिद्धिबचन सुनिकै सुखदाई । बोले मंजुबचन रघुराई ॥ अब जो जो तुम्हरे मनभावै । सो सो करिय न कछु रहिजावै ॥ हमहिं कहौतो बाहरजाई । होरी बसन पहिरि सबभाई ॥ नर्म सखनलै अपने संगा । आवैं करन फागुरसरंगा ॥ कही सिद्धि यह भली बिचारी । सजिआवहु करि फागुतयारी ॥ हम देखब बल सकल तिहारे । जैहौ जनवासे हठिहारे ॥ उठे राम सबबंधु समेतू । बाहरआयउ रघुकुलकेतू ॥ भवनजाय सबसखनबोलाये । होरिहोनहाल सबगाये ॥ नर्मसखासुनि भरे उमंगा । सजेश्वेत अंबर सबअंगा ॥ दोहा ॥ जनक पठाये बिबिधबिधि भूषण बसन सपेत । यथायोग बकसतभये सबकहँ रघुकुलकेत ॥ सवैया ॥ मंडित हीरनतेबरक्रीट झलाझल झालरैं मोतिनकेरी । त्योंझलकैं हलकैं हियहीरन हार हिमाचलकी छबिफेरी ॥ राजतके जरतारीबने बरबागे चमाचम चारुता ढेरी । श्रीरघुराजकी माधुरी मूरति काकोहियो हरिजातन हेरी ॥ फेंटैंकसे कटि में चटकीले मजीले महीपललाहैं अनोखे । चौलडेत्यों मुक्ताहल माल सुतारावली छबिछीने अदोखे ॥ खेलनफागु सजे रघुराज सुराजकुमार महा चितचोखे । अंगनअंग उमंगभरे जिनजोहत होत अनंगकेधोखे ॥ दोहा ॥ होरी मंदिरमेंउतै सिद्धिसजाई साज । लै सीता संगगवनाकिय संयुत सखिनसमाज ॥

रामप्रियाश० ॥ पुरनारीसब महलकी चढ़ीअटारिन जाय । चतुरदिशा बैठतिभई खिरकीदई खोलाय ॥

रघुराजसिंह०सवैया ॥ परिचारिनी चारि कही चलिकै सबखेलनहोरी तयारीभई । पगधारिये फागु निवास लला दरशाइये तौ निपुणाई नई ॥ सुनती नटनागरी रावरेकी नटनागरीठाढ़ी उछाहछई । रघुराजजू ठाढ़ेइतै चकितै बिनहारही हारक्यों मानि

लई ॥ सो सहचारिनीकी सुनि बानिदियो हरिहेरि हरेमुसक्या-
ई । कोई सुजान सखाकह्यो नर्म कहूं रघुबंशिन हारनपाई ॥ तूं
कहैकैसे वृथा अरीबैन इतै पिचकारिनकी झरिलाई । हैंरघुराज
सखाबिजयी विजयपायकै जैहैंनिशानबजाई ॥ दोहा ॥ सोसुनिकै
सियसहचरी चली चतुर मुसक्याय । खबरि जनाई सिद्धि को
आवतराम सभाय ॥ सवैया ॥ नर्मसखान समाजसमेत चलेरघु-
नन्दन बंधुनलीने । फागुकोमंदिर चंदिरचारु चितै अतिचौंड़ोसो
चौकप्रवीने ॥ ठाढ़ेभये यकओर सखानलै श्रीरघुराज महामुदभी-
ने ।शारद बारिदमंडलमें मनुद्वैरवि द्वैशशि भासहिकीने ॥ देखी
सखीसब राजकिशोरन चित्तकेचोरनसों अनुरागी। बाजबजावन
लागी अनेकन गावनलागीं धमारि सुरागी ॥ आये लला अब
आयलला अब जाननपावैं सखानलैभागी । श्रीरघुराजको धाय
धरौ झुँकिझारिकै झोरिन संगहिलागी ॥ तहँ गोरीकही कढ़िकै
नरुकौंगी जबैलगि आपको पाइहौंना । मोहिंआनि किशोरी की
कै बरजोरी बनाइहौंछोरी बचाइहौंना ॥ तुम चोरीकरी चितकी
रघुराज ललाजो कहूं भगिजाइहौना । झिलिझारिकै झोरी जु-
मोरीमुखै तोसियासखी फेरि कहाइहौंना ॥ श्रीरघुराज सखानि
समाजते कोई सखा कढ़ि बैनउचारो । देख्यो नहीं रघुबंशिनके
अबै होरीकेहल्ले नगल्लेपसारो ॥ कोशलनाथकी सौंहकिये कहौं
कोअस जो हमसे नहिंहारो । गाय बजायकै आईबजाय मचाय
कै फागुन पाइहौ पारो ॥ यतनो सुनिकै सिगरी सखियां भरेकं-
चनकी पिचकारिनको । सुगुलालनकी उठी मूठि चहूंकित गाय
धमारिन गारिनको ॥ धनधाई धरोधरो भाषत यों रघुराज पै दै
करतारिनको।हरदीकीकरी जरदी ललकारि लख्यो मिथिलापुर
नारिनको ॥ घनाक्षरी ॥ आई सजि सीता सेत भूषण बसन सेत
संगकी सहेली सेत सेत सुखमाछई । श्वेत पागे श्वेतबागे सेत
कटिफेंटे लागे रघुराजप्यारे आये फागुकेउमंगई ॥ होरीहोरीकरि
ललकारि हल्लाकियो हेरि चलीपिचकारी त्यों अबिरकी अंध्यार

ई। लाललाल ललीलाल सखालाल सखीलाल अंगलाल रंग लाल लालमयी ह्वैगई ॥

बिश्वनाथ० पद होरी ॥ कोउ सखी कही हास मृदु कीन्हे । कोउ नहिं जीतिहैं इनतैं यहतौ लाजहि तीहि तिलांजुलि कीन्हे ॥ राम कह्यो जिन संग चतुरई मूलहि कहि कहि कविगण गावैं । पुनि हौं सहन शील अति कामिनि हम बालक जयकिमि करि पावैं ॥ इमि करि हास विलास परसपर लालन लली गुलालन मेलैं । अरुण अकाश भयो तेहि अवसर प्रगटि मनहु अनुरागहि खेलैं ॥ परम सुछबिछाई चहुंओरन बरषत सुमन सहस मुख दरसैं । रसनायक बिशुनाथ कहैं किमि रसनायक जैसोहत हरसैं ॥

रघुराज० कवित्तरूप घनाक्षरी ॥ मणि अंगनाई मध्य मंडितमढ़ी है फागु राजती रंगीली रही लीला रस लूटि लूटि । कुंकुमानि कुंकुम गुलाल घनसार मेले कंचन कलशनवामैं रंगजूटि जूटि ॥ रघुराज माणिक प्रवाल हीर मोती मंजु छहरैं छमामें छायछोरनसे छूटि छूटि । सुंदरी सुकिन्नरीसी उर्वसी परीसी हेमबल्लरी सी व्योमते परी हैं मनो टूटि टूटि ॥ मुरज मृदंग ढोल बांसुरी सुरीली बाजैं गाय रहीं गानवारी तानके तरेरी में । ह्वैगई झिलाझिली मिला मिली सखी सखान चमक चहूंघाभई बादलेकी ढेरी में ॥ सहजा सहज सहजोरी करि रघुराज देख्यो जोन बनत बनावत चितेरी में । धोखे धोखे धसि धसि धायकै सुरोरी धुरि धरे रघुबीरको अबीरकी अँधेरी में ॥ वारिकै अनेकन अनंग छबि रघुराज आनँद उमंगनसों अंगन जमकिगै । एक करकंज सों करषि कटिफेंटो चट दूजे करकंज कर करिकै तमकिगै ॥ कौशलेश कुँवर कहूं न जानपैहौ भागि भागमानि बानि बोलि दर्पसों दमकिगै । छायकै छटाको श्याम घनकी घटामें मनो वरचि चरित्र चारु चपला चमकिगै ॥ दोहा ॥ सहजा सहजोरी करी होरी में ललकारि । बरजोरी रोरीमलत राम छुटे झिझ-

कारि ॥ चलत अनंत अस मुख भनत एहो राजकिशोर । करसों छूटे का भयो छुटे न चित चितचोर ॥ कवित्त ॥ छूटे सहजासे राम देखिकै सिधारी सिद्धि सियते सहित लैकै सखिन समाज है । इतै धाये चारौं बंधु सखनके वृन्द लीन्हे छायगो गुलाल नभ मंडल दराज है ॥ बादलेकी ह्वैगई बसुंधरा बिराजमान आसमान भरी गान बाजन अवाज है । सखा गहिलेवैं सखी सखी गहिलेवैं सखा भ्रातन समेत फूले फिरैं रघुराज है ॥ राच्यो महा फागुरंग केसरिको कीच माच्यो अगर तगर धूरि पूरी चहुंओरी है । छहरैं सुछोनी सुम मल्लिका धमल्लिनते चमकैं सुचामीकर बल्लरीसी गोरी है ॥ चलैं पिचकारी त्यों सुगंधभरी बारी बैस सखन सखीन बराबर बरजोरी है । फटिक फरश खेलैं फागु अनुराग भरे कोशल किशोर मिथिलेशकी किशोरी है ॥ सहित गुलाल रोरी बादलेकी मूठि मारि लालकै सखनमुख कहूं भिलि आवैंहैं । काशमीर रंगन चलाय पिचकारी चारुराजदुलहेटे कसिफेंटे वै हटावैं हैं ॥ चातुरी चमकि चपलासी करि चातुरीको आतुरीसों पकरि तवान लैजावैंहैं । नारीको बनायवेष बेंदीदैकै छोरिकेश रघुराज कौशलेश कुँवरै देखावैं हैं ॥

रसरंगसखी० पद ॥ रसरंग उमंग रँगी सिगरी अगरी गुण रूप उजागरियां । झपटैं लपटैं पियको डपटैं मिथिलाकी बांकी नागरियां ॥ दृगबान चले पियमान दले न हलें छबि प्यासी सागरियां । मुख चूमि भगे सिय संग लगे टपकै रँग चूनरि चादरियां ॥ प्यारी दृग सैनदई हँसिकै दौरी लैलै रंग गागरियां । ज्ञानाअलि अंसन बांह धरे रँगबोरि दिये पिय पागरियां ॥

बिश्वनाथसिंह० पदहोरी ॥ नव किशोर औ नवलकिशोरी ॥ खेलत झुरमुट करि तेहि अवसर । छीनि एक पिचकार राम चहुं ओर चलाय चंदन धारबर ॥ पट लपटाने कुचदरशाने मनहुं फटिक मंदिरन बिपुल हर । कह्यो लषण बिनपट सीव बिचरहिं निजहि ढिठाई किय अपलतर ॥ कोउ कह परम चतुर

ये ढोटा नृप कुवँरनके सार मंजुतर । हरि कह सरहज तुमकहँ पावहु वात बनावहु लगन हेतगर ॥ कोउ कह तुमते बातको जितिहै अवध बामबश किये यों सुघर । बिश्वनाथ कह लषण चतुर तुम हरहु चित्त परपुरुषहुकर १ खेलहिं कुवँरन सँग सुकुमारी । गाय गाय गारी नारी सब रंग भरी छोडैं पिचकारी ॥ लालनकी गुलालकी मूठिन ओढ़ि ओढ़ि मुखसारी । बिश्वनाथ हरि लपटि लगावत मुखगुलाल पावहि मुदभारी २ ॥

रघुराजसिंह० कवित्त ॥ अवध किशोर चितचोर चारों ओर धाय रोरी झोरी झोर मोरि सखिन समाजको । घेरि घेरि गोरिनको गेरि गेरि कुंडनमें बोरि बोरि रंगन बजाय बेस बाजको ॥ हँसि हँसि हुलसि हुलसि होरी होरी कहि हेलिन हराय हेरि हरषि दराजको । मसलि गुलाल करि लाल सुखमाल छीनि बालन को छोडते देखाय रघुराजको ॥ सियते समेतसिद्धि हेरि हार हेलिनकी होरी होरी कहि कियो हल्ल चहुंओरते । मारि पिचकारिन उड़ायकै गुलाललाल घेरि लीन्हें चारों लाल बालमाल जोरते ॥ सिद्धिजू सहर्षकरि बर्ष कुसुमावलिको अतिउतकर्षकह्यो कौशलकिशोरते । रघुराज लाल आज बालको बनाय वेष हाहाको खवाय छोडिहौंजू यहि ठोरते ॥ सिद्धि पाणिपंकज पकरि कर रघुराज लषण ललाको गह्योसीय बरजोरीसों । मांडवी त्यों उर्मिलागहे हैं शत्रुशालजूको खड़ी श्रुतिकीरति बिचारि नहिं जोरीसों ॥ सहजा बिशाखा चन्द्रकला चटकीली चट भरतभुजान गहिलीन्हें नहिं चोरीसों । चमकिचलीं ते चारिकुवँर लेवायगाय वानक बनाइहैं बिषेबिबर गोरीसों ॥ एक एकसखनको द्वैद्वैसखी गहैंधाय लैचलीं सुचाय भरी गारीसुख गायगाय । राम चारोंभाइनको सखन सहाइनको करन लोगाइनको वेष मनमाहँल्याय ॥ चामीकर चौकिनमेंचारयो चितचोरनको सिद्धिबैठाइ नैनकज्जल दियेलगाय । फवित प्रफुल्लित सुशारद सरोजनमें बैठी रघुराज मनो अलिअवलीहैं

आय ॥ रघुलाल भालमें दियेहैं टिकुली बिशाल मानो किये अं-कमें मयंकलै अवनिजात । घेरदार घांघरो नवीन जरतारी सारी रची रुचि कंचुकीदेखाय मुखमुसक्यात ॥ दामिनीसी दामिनी सुभामिनी सवांरिशीश कहतीं कुवँरहोत कामिनीके क्योंलजात। तबलोंन छूटौगे छबलिछैल रघुराज जबलों गहौगेनहिं सीयपद जलजात ॥ सोरठा ॥ प्रभुबोले मुसकाय जानिपरी यहरीतिइत। सुताब्याहि सुखछाय बहुरि पुरुषको तियरचहु ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि फागुसरस सुखभयऊ । हास बिलास हुलासहि छयऊ ॥ मांगि बिदा प्रभु सिविर सिधाये । लखन बंधुयुत राम नहाये ॥ बदलिबसन पितुसभा सिधारे । सुखीभये नृपकुवँर निहारे ॥ पि-तुहिबंदि बैठे सबभाई । अस्ताचलहि गये दिनराई ॥ कह्यो भूप तब अतिसुखछाई । संध्याकरहुजाय सबभाई ॥ परयो परिश्रम खेलतहरदी । मुखपर देखिपरतहै जरदी ॥ करहुअशन करि शैन सकारे । बहुतनिशा बीतैनहिंप्यारे ॥ पितुशासनसुनि उठेकुमारे। संध्याकर्म सकल निरधारे ॥ लखन बंधुलै किये बियारी । किये शयन निजअयन सिधारी ॥ जानिसमय तजिसभा नरेशा । किये शयन शुचि सुमिरिरमेशा ॥ कियेशयन सब सुखीबराती । बरणि जनककीरति न सिराती ॥ नहिं बिसंचकर खोजहु खोजे । मते महामोदहि जनमोजे ॥ दोहा ॥ रघुपति ब्याहउछाहमें बीते बहु दिनरैन । जानिपरे क्षणएकसम पाय महा चितचैन ॥ चौपाई ॥ नितप्रति कुवँरजाहिं रनिवासा । होत महासुख हास बिलासा ॥ नितप्रति मिथिलानगर भुआरा । करहिं नवीन राजसतकारा ॥ भूलेउअवध बरातिनकाहीं । कहहिं जाब मिथिलातेनाहीं ॥ यहि बिधि बीतिगये बहुकाला । नितनित नवनव मोदबिशाला ॥

कृपानिवास० ॥ दशरथ दानपुण्य नितकरई । राम सिया सुख हित आचरई ॥ भोजन अनु नृप धेनुदानकर । पूजि महामुनि पाय मानबर ॥ हय गय स्यंदन साजसमेता । नट भाटनको देत सहेता ॥ गणिका गुणी रीझ नितपावें । सुरपति धनपति देखि

लजावैं ॥ तथा जनक नित दान मानकरि । राम जानकी हेत हृदयभरि ॥

रघुराज० ॥ कोकहिसकै समग्र उछाहू । इतैजनक उत कोशल नाहू ॥ जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ । दुलहिनि रमा महा सुखछयऊ ॥

संग्रहकार०दोहा ॥ सीतारामबिवाहको मंगल मोदअपार । गिरा गणप नहिंकहिसकैं कोकविपावैपार ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारविरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलसत्रहवांप्रकरणसमाप्तः १७ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

---o---

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

अठारहवांप्रकरण ॥

श्रीजनक महाराज का श्रीजानकीजूको तीनों भगिनिन सहित बिदाकरना जनकपुरसे अवधको ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ बर्णत नेकहु करुणरस मोहिंन होत उछाह । पै प्रसंगबश कहत कछु सीय बिदा दुखमाह ॥

संग्रहक०चौपाई ॥ बिश्वामित्र अवधपुर आये । राम लषण को गये लिवाये ॥ तबते रामकि अतिअवसेरी । करति राति दिन तीय घनेरी ॥

कृपानिवास० ॥ अवध नारिका प्रीति बिशाला । कछु मिथिलाते अधिक रसाला ॥ यत्र अधिक प्रभु प्रीति बिचारैं । तत्रखिंचैं मन शीघ्र पधारैं ॥ जबते राम पधारे मिथिला । तबते अवध सखी चित शिथिला ॥ निशिबासर प्रभु बिरह बढ़ावैं । अनल ताप तनतूल जरावैं ॥ श्वासानल बल हाय लपटउठ । लोचन द्रवत सुभीग सलिलपट ॥ सुधकें निपट जरन नहिं पावैं । हाहा करि दिन रैन बिहावैं ॥ बदति परस्पर बचन रसाला । राम प्रेममूरति सबबाला ॥ भो सखिनो मन प्राण चुराये । रसिक चोर सत फेरनआये ॥ मिथिलाबासि त्रिया बर नारी । चतुरी टोना परबशकारी ॥ भोरे लाल भुराये बाला । परे पिंजरे करे

मराला ॥ पुत्र प्रेम बश अटके राजा । जहां राम तहँ सकल समाजा ॥ हमैं न्यारी कीन्ही अधुनारी । को जानै किहि दोष बिसारी ॥ अपरा बदति दोष नहिं राई । लघुमी लाग लाज अधिकाई ॥ संग चली नहिं ब्रीड़ामानी । ताते क्रीड़ा रस बिलगानी ॥ दुतिया कहति चलो अब प्यारी । जहां लाल लीला अधिकारी ॥ सियाराम मूरति मनधरहीं । सहज बिघन भय भ्रम सबटरहीं ॥ यदपि दोषकरि रोष निकारैं । तदपि दूरते बदननिहारैं ॥ क्षुधा पियासा बसन न चाहैं । लगी लालसों लगनि निबाहैं ॥ धीरा बदति धरो भटुधीरा । सब जानत प्रभु मनकी पीरा ॥ अवध धाम तजि कुत्रगते सुख । सिया राम बिश्राम अत्र सुख ॥ कमलाश्रय जिमि भ्रमर मिलाई । धाम भजत धामी कहँ जाई ॥ अवधपुरी सरयू भजु प्यारी । मिलहिं जानकी रंग बिहारी ॥

संग्रहकर०दोहा ॥ पहिंचानत हैं प्रीतिको नीके राम सुजान । सुनि सजनी के बचन बर सकल सखी हरषान ॥ चौपाई ॥ इत मिथिला महँ कौशल राजा । परम प्रमोदित सकल समाजा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जनक सनेह शील करतूती । नृप सब भांति सराहि बिभूती ॥ दिन उठि बिदा अवधपति मांगा । राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥ नित नूतन आदर अधिकाई । दिनप्रति सहसभांति पहुनाई ॥ नित नव नगर अनन्द उछाहू । दशरथ गवन सुहाइ न काहू ॥

कृपानिवास० ॥ चलन करे मन चलन न पावैं । प्रेम सुमन जनु भ्रमर लुभावैं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बहुत दिवस बीते इहिभांती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥

रघुराज० ॥ एकसमय बशिष्ठ निजधामा। बैठेरहे सुमिरि हिय रामा ॥ बिश्वामित्र तहां चलि आये। उठि बशिष्ठ आसन बैठाये ॥ गाधिसुवन कह मंजुलबानी। सुनहु ब्रह्मनंदन मतिखानी ॥ बहुत दिवस मिथिलामहँ बीते। उभयराज नहिं सुखसोंरीते ॥ दोहा ॥ उभय महीपति मोदरस मगन भये यहिकाल। जानत नहिं बासर बितत नित नवहर्ष बिशाल ॥ चौपाई ॥ सुनत गाधिसुतकी बरबानी। बोले ब्रह्मतनय बिज्ञानी ॥ सत्यकह्यो कौशिक अवदाता। चलब अवध अब उचित बराता ॥ कौशल्यादिक जे महरानी। लिखहिं पत्रिका मोहिं हुलसानी ॥ आशु बरात अवधपुर आवै। दुलहिन दरश चित्त ललचावै ॥ ताते सतानंद बोलवाई। हम अब यतन करब मुनिराई ॥ असकहि युगल शिष्य पठवाये। सतानंदकहँ आशु बोलाये ॥ छंद चौबोला ॥ आयउ सतानंद तेहिअवसर मुनि बशिष्ठ ढिगमाहीं। अतिसतकार सहित दै आसन कुशलपूछि तिनकाहीं। गौतम सुतसों कह्यो बचन पुनि सतानंदतुम ज्ञाता। बीत्यो बहुतकाल मिथिलापुर निवसे बिशद बराता ॥ दशरथनेह बिदेहनेह अति दीन्हे गेह भुलाई। जनक बिदेह देहकी सुधिनहिं नितआनँद अधिकाई ॥ मिथिलाबासी अवधनिवासी आनँद मगन अघाता। करै बिदा को होय बिदाको कहै कौन यहबाता ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा जे दशरथ महरानी। बारबार लिखतीं पाती मोहिं दुलहिनि लखन लोभानी ॥ सकल भूमिमंडलको कारज करै कौन यहि काला। दशरथ बसत नगर मिथिलामहँ होते प्रजा बिहाला ॥ ताते जाय जनक समुझावहु करैंकुमारि बिदाई। उचित न अब राखब बरातको चलैं अवध नृपराई ॥ हम समुझैहहिं कौशल भूपै तुम बिदेह समुझाओ। अब चारिहु नवबधू बिदाकर सुंदर सुदिन बनाओ ॥ सुनि बशिष्ठके बचन यथोचित सतानंद मुनि भाख्यो। कहत सुनत यह बचन दुसह पै उचित बिचारहि राख्यो ॥ अब हम जाय बुझाय जनकको करिहैं बिदा तयारी।

तुम समुझावहु अवधनाथको होहिं न जात दुखारी ॥ तबमुनि गौतमसुवन बिदाकरि दशरथ निकट सिधारे । बैठिएकांत शांत रस संयुत बैन अचैन उचारे ॥ अवधतजे बीते अनेक दिन मिथिला बसत तुम्हारे । सुवनबिवाहभये मंगलयुत श्रीपति बिघन निवारे ॥ भूमिखंड नवको अखंड कारज नरेश तुवहाथा । ताते अब पगुधारि अवधको कीजै प्रजा सनाथा ॥ पुत्रबधू अरु पुत्रन को लै चलहु अवध नरनाहू । सहित पट्टरानी परिछनकरि लेहु अब पूरबलाहू ॥सुनि बशिष्ठकेबचन चक्रवरतीनरेश मुखगाये । सकल सत्य जो नाथ कह्यो तुम हमरेहु मन यहआये ॥ पैबिदेह के नेह बिवश नहिं मांगतबनत बिदाई । प्रीतिरीति करि जीति लियो मोहिं बिछुरन अति दुखदाई ॥ कहा करौं केहि भांति कहौं मुख बिदाहोन किमि जाऊं । कैसे सरस सनेह बिवशकरि अति अनरस उपजाऊं ॥ जो बिदेह करिकै मन साहस सुता बिदा करिदेवैं । तौ हम पुत्रबधू पुत्रन लै अवध नगर चलिदेवैं ॥ यतना कहत भूपकेआंखिन आंसुनबहे पनारे । मुनिबर कह्यो बिदेह योग यहि तुम जेहिभांति उचारे ॥ पै न बिदेह सनेह रावरो कबहुँ भंगपथपैहै ॥ तुम ऐहौ मिथिला बहुबारहि सो कौशलपुर जैहै । रीतिसनातन ब्याहअंतमें होती सुताबिदाई । मर यादाते अधिकरहे इत लहिसतकार महाई ॥ महरानी कौशल्यादिकतु वलिखतीं बारहिंबारा । दुलहिन दूलहदेखन केहिंदिनलागीललकअपारा ॥ ताते चलहु अवधपुरभूपति अब परिछन सुखलूटौ ॥ पुत्रबधू अरु पुत्राखिघर औरकाजमहँ जूटौ ॥ दोहा ॥ सुनि गुरु की बाणीबिमल कह्योभूप करजोरि । जौनहोय रुचिरावरी सोइ अभिलाषा मोरि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कौशिक सतानन्द तब जाई । कहीबिदेह नृपहिं समुझाई ॥ अब दशरथकहँ आयसुदेहू । यद्यपि छांड़ि न सकहुसनेहू ॥

रघुराज०छं०चोबोला ॥ मंगलमय सबभये बिघन बिनव्याह उछा-हअपारा । बसतबरातहिं बिते बहुतदिन नितनित नवसतकारा॥ यदपि विदेह सनेहरावरो कौशलपतिसों भारी । नितनितदेखत नहिंअघात दृग रामरूप मनहारी॥ अधिकप्रमाणहुते बरात अब राख्यो इत मिथिलेशू । चलनचहत अब अवध अवधपति सकु-चत कहतकलेशू ॥ ताते सुदिवसपूछि कुमारिन बिदाकरी महरा-जा । अबयतनै बशिष्ठ आपको सकल सजावहुसाजा ॥ पुनि दुहितन को आनि लेव इत कुँवर लेवावनऐहैं । पूरण शशिमुख लखि रघुपतिको हमसब अतिसुख पैहैं ॥ अब नहिं राखब उ-चित बहुत दिन मिथिला नगर बराता । करहुबिदा शुभ पूछि मुहूरत तुमत्रिकालकेज्ञाता॥सतानन्दके बचनसुततनृपरामबियो गबिचारी । रह्यो दंडद्वै कछु न कह्यो मुख नैनबहावत बारी ॥जस तसकै धरि धीरज नृपउर ह्वै अनन्दसों छूंछो । कहेउवचन सुनि करहुयथामन मोहिं कहा अब पूंछो ॥ अनुचित कछु न बिवाह अन्तमें होती सुता बिदाई । नहिं नवबधू बसत नैहरमें रीति सदा चलिआई ॥ रामरूप दरशनकी बिछुरन दुसहदुखद मोहिं होई । मैं बिदेह दशरथ सनेह महँ लियेदेह सुखजोई ॥ केहि बिधि मुख कहिजाय महामुनि राम इतै ते जाहीं । सुता बिदा करिदेहु भले तुम रघुपति गमनै नाहीं ॥ प्रेमबिवश मिथिलेश जानि मुनि पुनि पुनि बहुसमुझाये । देवयानि अरु देवहुती मनु कहि इतिहास सुनाये ॥

संग्रहक०चोपाई ॥ यहि बिधि सुनी मुनिनकी बानी । तब नृप उरमहँ धीरजआनी ॥

श्रीतुलसी०चोपाई ॥ भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये । कहि जय जीव शीश तिन नाये ॥

संग्रह० ॥ जो जिहिकारज मुनिहिं बतावैं । सोद्रुतकरैं बिलंब न लावैं ॥ कुलगुरु सों नृप बचनउचारे । सबप्रकार तुम ज्ञाता

हारे॥करहु यथामन जो रुचि होई । सतानन्द अबकरिये सोई ॥ सचिवन सँग लैकै मुनिराई । बैठे अपर भवन महँ जाई ॥ कह्यो मंत्रिनसों मुनि मतिवाना । काल्हि बरात सहोहि पयाना

रघुराज० छंद ॥ चारि नालकी रतनजालकी दासीदास अनेका। बसन अमोल बिबिध बिधि भूषण आनहुँ सहित बिवेका ॥ सजे गयंद कनकस्यंदनबहु बाजिन बृंद मँगाये । शिविर सु शारद बारिदके सम बाहेर खड़े कराये ॥ और सकल बहुमोल बस्तु रचि शकटन सपदि लदाये । न्यून कौनहूं बस्तुहोयनहिं गणकन बेगि बोलाये ॥ गौतमसुवन कह्यो गणकन सों शोधिय सुदिन बिदाको । रचहुलगन अनुकूल सकल ग्रह हरैं बधूनि बिथाको ॥ कहे सकल दैवज्ञ शोधि शुभ घरी काल्हि सुखदाई । युग युग जियें युगल जोरी मुनि ऐसी लगन बनाई ॥

संग्रह० दोहा ॥ सतानन्द उठिकै तबै मिथिलापति पहँ आय । हय गय स्यंदन साजि सब मुहुरत दियो सुनाय ॥ सीताराम बियोग गुनि जियमें होत न चैन । सतानन्दको जनकजू कहे बचन भरि नैन ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव । भये प्रेम बश सचिव सुनि बिप्र सभासद राव ॥

रघुराजसिंह० छंद चौबोला ॥ अन्तः पुरहिजाय गौतमसुत बिदा खबरि खुलिगाई । हहरि उठेउ रनिवास सकल सुनि जनुसुख दियो गमाई ॥ रानि सुनैना बिलखि कह्यो तब अबै न जाय बराता । सुख समुद्र कुंभज कस होवहु समय सुखद उतपाता ॥

संग्रह० दोहा ॥ कुलगुरुसों महरानिजू बोलीं सहित सनेह । काल्हि बिदा बरातकी रुची न हमको येह ॥ दोहा ॥ फैलत फैलत फैलिगै खबरि नगर चहुं ओर । करत काल्हि भूपति बिदा चलन चहत चितचोर ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ पुरबासिन सुनि चलीबराता । पूछत बिकल परस्पर बाता ॥ सत्य गवन सुनि सब बिलखाने। मनहुँ सांझ सरसिज सकुचाने ॥ जहँ जहँ आवत बसे बराती। तहँ तहँ सीध चला बहुभांती ॥ बिबिध भांति मेवा पकवाना । भोजन साजन जाय बखाना ॥ भरि भरि बसहअपार कहारा। पठये जनक अनेक सुआरा॥ तुरँग लाख रथ सहस पचीशा। सकल सँवारे नख अरु शीशा ॥ मत्त सहस दश सिंधुर साजे। जिनहिं देखि दिशि कुंजर लाजे ॥ कनक बसन मणि भरि भरि याना॥ महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना ॥ दोहा ॥ दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह बिदेह बहोरि। जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा थोरि ॥ चौपाई ॥ सब समाज इहि भांति बनाई। जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥

संग्रह० ॥ कहहिं परस्पर लोग लुगाई । काल्हि करहिं नृप राम बिदाई ॥

रघुराज० छंद चौबोला ॥ सीयसुभाव शील गुण सुधिकरि बिलखहिं पुर नर नारी। रामरूपबरणत अघातनहिं बहतबिलोचन बारी ॥ नहिं सियसम धन्या कन्या जग बर नहिं रामसमाना। पूरबपुण्य लहे लोचनफल सो सुख सकल पराना ॥ हाय बहुरि कब लखब रामछबि कब मिथिलेश कुमारी । कब कोशलपति सकल साहिबी जो इननैन निहारी ॥ बसीबरात यदपि बहुबासर पाये मुद मनमाने। पै अभिराम रामअवलोकत नैन अबै न अघाने ॥ हेबिधि बसै बरात बहुतदिन सीय बिदा नहिं होई । भयो सकल सपने कैसो सुख बसब कौनसुख जोई ॥ रेबिधि परमानन्द देखाय चहत बिलगावन काहे । नाहिंदाया आवति तेरेउर का पैहै जियदाहे॥ यहिबिधि कहहिं बिकल पुर

जन सबकोउ तिनमहँ समुझावैं । आनहिंआशु सीय मिथिला-पुर राम लेवावनआवैं ॥ युग युगजीवैं सुखमासीवैं रामजानकी जोरी । नाहिंहमार कसभाग आनकर नित नवप्रीति न थोरी ॥ राम सदा मिथिलापुर ऐहैं जनक अवधपुरजैहैं । दिन दिन दून दून सुख देखब सुर समता नहिं पैहैं ॥ असकहि बिबिध सभ्य समुझावहिं पै न धरहिं कोउधीरा । मिलहिं बरातिनसों चलि पुरजन नैन बहावत नीरा ॥ यथा जनकपुर बासिन को दुख अवधनिवासिन तैसो । दोउदिशिके भे बिकल नेहबश को समुझावै कैसो ॥ मिलि मिलि कहत अवधपुरकेजन तजेहु न सुरति हमारी । तैसहि कहत जनकपुरबासी बिछुरन दुसह तिहारी ॥ जाहिं यथा संपति संपतघर सो पट भूषण नाना । सीय देनहित जाय राजगृह देत बनाय बिधाना ॥ कोउ असरह्यो न मिथिलापुरमहँजोनहिं दायज दीन्हा । कोउअसरह्यो न जौनबरातिनजाय भेंट नहिं कीन्हा ॥ सिगरेनगर सनकसीगइपरि सिया बिदादुखभारी । बरणतसीयसुभाव चुकतनहिं जुरिसमाज नरनारी॥सुताब्याह पुनिबिदाहोहिं हठिजानहिं जगकीरीती । तदपिराम सिय लषणलखब कब असकहि बरणहिंप्रीती ॥ इनआंखिन दरशाय महासुख हरहुबिरंचिबहोरी । देखनकोतुम चतुरचारिमुख चूकबड़ी यह तोरी ॥ हाटहाट अरु बाटबाटबहु घाटघाट पुरबासी । कहत एकसों एक बातयह सीय बिदा दुखरासी ॥ अंचल ओढ़ि बिरंचिमनावहिं रंचकदिन नहिंबीतै । होय ब्रह्मरजनी सी रजनी पठवैजनक नसीतै ॥ खानपान असनान भान नहिंध्यान ठानि असबैठे । जनकपुरीपुरजन जनुबरबश शोकसिंधुमहँपैठे॥ औरकछुकदिन रहैं अवधपति होय अनंदबधाऊ । अथवा छोड़ि रामकहँ कछुदिन जाहिं अवधकहँराऊ ॥ तहँ कोउसज्जन कहहिंजनककहँ राम प्राणतेप्यारे । अवध प्रजाकिमि धरहिंधरिउर बिनरघुराज निहारे ॥ दोहा ॥ जसतुमको लागतइतै राम अवध नहिंजाहिं । तैसहि अवधप्रजासकल बिनदेखे बिलखाहिं ॥

संग्रह०चौपाई ॥ यहिबिधि करत परस्परबाता । निशा सिरानी भयोप्रभाता ॥ जनकबोलिगुरु बचनप्रकासे । कहिये जाय अबै रनिवासे ॥ कह्योरानिसों मुनिमतिवाना । चढ़े यामदिन कुवँरि पयाना॥असकहिमुनीजनकपहँआये।सीयवियोगहृदयसरसाये ॥

महारानी सुनैनाजीका। जानकीजूआदि कुवँरिनको
पतिव्रतधर्मका उपदेशकरना ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ चलिहि बरात सुनत सब रानी । बिकल मीनगण जनु लघुपानी ॥

कृपानिवास० ॥ बिकल सकल दृग सलिल बिमोवैं । बित बियोग जनु लोभी शोचैं ॥ सजति साज रानी मनमारे । संकट समय सु पुण्य सुधारे ॥

संग्रह० ॥ सीयमातु कुशकेतु सुकामिनि । सिद्धि समेत और सबभामिनि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनिपुनिसीय गोदकरिलेहीं । देइअशीश सिखावन देहीं ॥ होइहहु संततपियहि पियारी । चिरअहिवात अशीश हमारी ॥ सासु ससुर गुरुसेवा करेहू । पतिरुखलखि आयसु अनुसरेहू ॥ अतिसनेह सब सखी सयानी । नारिधर्मसिखवहिंमृदुबानी ॥

रघुराज०छंदचौबोला ॥ इष्टदेव गुरुदेव कन्तकहँ मानेहु धर्मबिचारी । दोउकुलकी मरयाद कन्यका हाथेबसति कुमारी ॥ रीति सनातनते चलिआई कन्या पतिघरजाहीं । गौरि गिरा इंदिरा शची निजनिज पियपास सोहाहीं ॥ नहिंबेटी बिलखहु चित में कछुपठै तिहारोभाई । परिछनहाके पाछेआछे लैहैंभूप बोलाई॥ दशरथसरिस ससुर जगमेंनहिं जनक जनकसमपाई । कंतभानु-

कुल कमलदिवाकर तोसम दुतियनजाई ॥ रहेउसदा पतिको रुखराखत परिहरि सबसुखप्यारी । पतिशासन अनुसार काज सब कीन्ह्यो धर्म बिचारी ॥ वेदकहत अस सुनहु कुमारी नारी धर्मप्रधाना । संतनके मुखसुने सकलहम तैसोकरहिं बखाना ॥ दासीसरिस करैपतिसेवा सुखी सखासम करई । पतनी सरिस पतिव्रतधर्मनिवाहै जगजसभरई ॥ सोपतकरै भगिनिसम सिगरो बातसल्य जननीसो । सोनारी नरलोकशिखामणि हैपतिव्रत करनीसो ॥ सासु ससुरको पूजनकरियो जनक जननिसम मानी । नाताजाको जौनहोयकुल सोमानेहु जियजानी ॥ चारिहुभगिनि मिलीरहियो नित कबहुंनहोय बिरोधू । सबसासुन को मानराखियो किह्योन कबहूंक्रोधू ॥ प्रीतिरीति उरराखिदेवरन मान्यो बालकभाऊ । कुलवंतिनी नारि रघुकुलकी साध्यो शीलसुभाऊ ॥ परदुखदुखी सुखी परसुखसों सबसों हँसिमुख भाख्यो । यथायोग सतकार सबनको करिसनेह सुठिराख्यो ॥ गृहकारज आरजकेकारज सबदिनरह्यो सम्हारे । रघुकुलकीनिमिकुलहूंकी अबहै करलाजतुम्हारे ॥ हैहौलली सोहागिलपियकी आगिलते हमकहहीं । भागवंतिनी तिय श्रीमन्तिनि दोउ कुल दुखी नरहहीं ॥ पुनि उरमिला मांडवी अरु श्रुतिकीरति लियउ बोलाई । जननि सिखापनदेइ बिबिधबिधि अंबकअंबु बहाई ॥ रहियोसबै रियाकेसंमत करियो सियसेवकाई । दोउ कुल पतिव्रत धर्मउजागर रहैसुयश जगछाई ॥ गुरुजनकी गुरुता सखिजनको नेह देहभरिचाही । सरबसप्रीतम प्रेम नेमकरि क्षेमलहै जगमाही ॥ तनधन धाम काम बामनको पियआराम जेहिहोई । प्रीति प्रतीति नीति सोईकरि गहैरीति हठि सोई ॥ मानवतीन गुमानवती नहिंसानवती हैकबहूं । पियपरिचर्याकिह्योकुमारी कुमनहोय पतितबहूं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सादर सकलकुँवँरि समुझाई । रानि-

न बारबार उरलाई ॥ बहुरिबहुरि भेटहिं महतारी । कहहिं विरंचि रची कतनारी ॥

संग्रह० ॥ अस कहि रानि हियो भरि आयो । पुनि मुख ते कछु बचन न आयो ॥

रघुराज०दोहा ॥ आंखिनमें अँसुवा भरे सुनि जननीकी सीख । कहति न सिय कछु सकुच बश लही नीतिकी भीख ॥ चौपाई ॥ इतै राउ सुदिवस जिय जानी । बोलि बशिष्ठहि बोले बानी ॥ बिदा करावन कुँवर पठाओ । अवध गवन दुन्दुभी बजाओ ॥ तहँ बशिष्ठ मुनि अति सुख पाये । राम सहित सबबंधुबुलाये ॥ कह्यो बिदेह निवास पधारो । बधू बिदा करि सुदिन न टारो ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ तेहि अवसर भाइनसहित राम भानु कुल केतु । चलेजनकमंदिर मुदित बिदाकरावनहेतु ॥

रघुराज०चौपाई ॥ पंच सहस्र सखा अनियारे । चढ़ेतुरंगन राजकुमारे ॥ उदासीन पुरदेखतजाहीं । तेहिऔसर उछाहकहुँनाहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ चारिउ भाइ सुभाय सुहाये । नगर नारि नर देखन धाये ॥ कोउ कह चलन चहतहैं आजू । कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू ॥

रघुराज०॥पृथकपृथकप्रभुप्रजाजोहारैं।रामचन्द्रमुखचंद्रनिहारैं ॥

कृपानिवास० ॥ परी पुरीमेंधूम पुकारैं । राम रसिक सिय अवध पधारैं ॥ प्राणपियारे आजु पाहुने । चलो देखिये दृगनि भावने ॥ कोइ प्रक्षालति अंग सुहाई । सुनि सुर मगन नगन उठि धाई ॥ कोइ भाजति जल अचवानि बिसरी । कोइ शृंगार करति तिय निसरी ॥ काजरकरति कपोल अधीरा । उलटपलट भूषण धरि चीरा ॥ कोइ पति सेवा त्यागि पराई । सदा प्राण प्रिय रूपलुभाई ॥ कोइ पयप्यावति शिशुतजि दौरी । रामरूप मद सुनिकृतबौरी ॥ शूरे असि घायलथिर राजैं । प्रीति चुटैतलजैं घर

भाजैं ॥ नागडसे चढ़ि सहजसुभावैं। लाग डसेकी लहरि भगावैं॥ लाज काज तजि भाज परीं सब। बीर तीरवत लक्षलगे थुब ॥ आईंरामरूपरस प्यासी। मनहुँचकोरीचंदउपासी ॥ लखेरामप्रभु छके सनेही। पगे नैन मन ठगेबिदेही॥ भई भीर रघुबीर घिराये। बैद सुघर जनु रोगिन पाये ॥ एक सखी की अस गति भयऊ। छबि निरखति सुधि बुधि सब गयऊ ॥ धीरज धरि मृदु बयन उचारे। खड़े रहो प्रिय प्राण हमारे ॥ देखनदो छबि नयन पियासी। हेसुखसिंधु महाछबिरासी ॥ मोमनहोत अधीरबिशेखी। नख शिख नवल माधुरीदेखी॥ रसिक शिरोमणि मृदु मुसकाई। पीछे चितै चले अगुआई ॥ राजसुवन मुखचंद देखाई ॥ नयन ओट भे बिरह सो छाई ॥ मूर्च्छित भई देह सुधि नाहीं। नयन सजल मुख द्युति कुम्हिलाहीं ॥ धीर धरे नहिं आवत धीरा। राम बिरह की भइ अति पीरा ॥ एक बावरी है मग लोटैं। अपरा खड़ी करैं दृग चोटैं ॥ कोइ कहैं लरैं करैं मग घेरो। कहि हँसि प्रिय बसि न्याव निवेरो ॥ छरीदार मृदुकहि समुझाये। निज निज थल नर नारि बसाये ॥

रघुराज०दोहा ॥ पग पग महँ घेरहिं प्रजा चारिहु राजकिशोर। अनिमिष निरखहिं मुखन को जैसे चंद चकोर ॥ चौपाई ॥ कहहिं परस्पर दुखभरि बानी। हाय होति अब दरशन हानी ॥

श्रीतुलसी० ॥ लेहु नयनभरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥ को जाने केहि सुकृत सयानी । नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी ॥ मरण शील जिमिपाव पियूषा। सुरतरु लहै जन्मकर भूषा ॥ पाव नारकी हरिपद जैसे। इनकर दरशन हम कहँ तैसे ॥ निरखि रामशोभा उरधरहू। निज मन फणि मूरतिमणि करहू ॥

कृपानिवास० ॥एकएकते कहैं बिशेखी। आजु लेहु भरि दृगछबि देखी॥ भूरिभाग बिधिदरशनदीन्हे। सो अबजात तयारीकीन्हे ॥

रघुराज० ॥ यदपि जनक सिय बहुरि बोलैहैं। पुनि पुनि राम लेवावन ऐहैं॥ पै अस लगत आज मनमाहीं। याते अधिक हानि कछुनाहीं॥ दशरथपाहिं कहौ कोउ जाई। यदपि करी मिथिलेश बिदाई॥ तदपि सकल मिथिलापुर बासी। राखहिं एकदिवस सुख आसी॥ कोउ कह जायकहौ मिथिलेसै। आजु सुदिन नहिं गवन भदेसै॥ कोउ ज्योतिषिन जाय धन देहीं। बरजहु बिप्र बिदा बैदेही॥ देवी देवन बदैं पुजाई। रहैं चारि दिन चारिहु भाई॥ नारी जुरि जुरि देखिउचारैं। बिदाकरावन कुँवर पधारैं॥ दोहा॥ बोलि पुत्र पति बंधु कहँ बहुबिधि कहैं बुझाय। जायकहो मिथिलेश पहँ बिदा बंद ह्वैजाय॥ चौपाई॥ पूजि कोऊ पुरजन्य मनावैं। बरसहुआजु राम रहिजावैं॥ कहैं नारि कोउ बिगत उछाहू। लेहु आजु लगि लोचन लाहू॥ हत दूषण नर भूषण प्यारे। जात अवध चित चोरि हमारे॥ कहौ कुमारन को चलि कोऊ। रहिहैं आजु दयाबश ओऊ॥ कोउ सखि प्रेम बिवश पुनि भाखैं। बरबश पकरि राम कहँ राखैं॥ जाहिं अवधपुर राउ भलाई। रहै मौन मिथिलापुर साईं॥ हमहींराखब दूलहचारी। जबलगि पूजिन आशहमारी॥ कोउसखि कहहिं नकरहु खभारा। सुदिवस आजहोतभिनसारा॥ तबलगि जाय बुझाय सुनैना। राखब कुँवरन भूपति ऐना॥ कोउकह असतुख अबकब होई। लखीराम सिय पुनि धनिसोई॥ लखत पलक जिन कलपसमाना। तिनबिछुरे रहिहैं किमि प्राना॥ कोउकह सखि सांवरो सलोना। तेहि बिन लखे हमहिं का होना॥ दोहा॥ अलक पाश पसराय मन लिये बिहंग फँसाय। हाय दई यह निरदई का करिहैं घरजाय॥

सियासखी०पद॥ सहेल्यो मेतो बाईजी के लाराजास्या। अवध नगर के डगर बगरमें दायज बालक ह्यास्या॥ श्री महाराज मिथिलेश कुँवरि ने बाईजी कह बतलास्या। सियासखीकी यही बीनती नित प्रति लाड़ लड़ास्या॥

प्रियाशरण०पद ॥ जनि तुम जाहु अवधपुर प्यारे यहां रहो सुखदाई । तुवबिन लगत सकल फीको मोहिं घर आंगन न सुहाई ॥ अधरअरुण मुसक्यानिमनोहर दशनावलि छबिभारी । लखि लखि अति अनुराग मगनमन इतै सकल पुरनारी ॥ गौनेकी भई मौन देखि छबि ब्याही लेति उसासा । अनब्याही मोहित मुख शशि लखि शरणागतकी आसा ॥ राजकुँवर तुम सहज सलोने हमरेमनधन हारे । प्रियाशरण बहुमार बिमोहन नयन कंज रतनारे ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ बल्लभ हित तजि बल्लभी कबहुं न पर हित पाल । कमल जहां भ्रमरी तहां मुक्ता जहां मराल ॥ पद ॥ बनाजीम्हे चल स्यांजी थांरी लारं । रसियनमन उरझो रसिया लखि झखमारै परिवार ॥ दिन नाहिं चैन रैन नहिं निद्रा घर लागत मोहिंभार । कृपानिवासअरजबंदीदा सुनियेराजकुमार ॥

रामसखे०दोहा ॥ नैननते नहिं होहुतुम न्यारे क्षणपल लाल । रामसखे यह बीनती करहिं सकल मृदुबाल ॥ पद ॥ मोहिं लै चलुरे तू बनरे । सुनु पिय राम ब्याह रँगभीने जहां प्रमोद बिपिनरे ॥ हौं तो मगन भई तुव छबि पर देखत चंद बदनरे । रामसखे पिय अवधि चंद्रमा तुव छबि सावन घनरे १ तोपै वारियां श्यामा परदेशी नेह लगाइ कित चला । कै लैचलु सिय संग मैं मोजिय अतिहि छला ॥ नैन चकोर भये लखि निशि दिन लगति न नेक पला । रामसखे पिय अवधि चंद्रमा तुव छबि अनत कला २ ॥

मधुरअली०पद ॥ बनरे फांसी प्रीतिकी डारे । तेहिपर भौंहकमान खैंचिकै नैनसाजि शरमारे ॥ ऐसो हाल हाय हंसिकरिकै अबतो अवधसिधारे । मधुरअली अब जियब कठिनहै तुमबिनु प्राणपियारे ॥

ज्ञानाअली०पद ॥ सियबरमानो हमारी बतियां । रहिदिनचारि और मिथिलापुर देहौंसुख दिनरतियां ॥ नयननसयन बयनमृदु

कहिकहि बचिहौ गुननकी पतिया । खानपान मृदुगानन तानन हाव भाव रसघतिया ॥ नापतियाहु लिखायलहु किन छांड़ि कपट छल मतिया । ज्ञानाअलि पिय चरण शरण बिनु और नहीं तियगतिया ॥

देवस्वामी०पद० ॥ बैरनिलगलि लगनियां मोसे तजलि न जाय । बिरहसे जियराकचोटै बूड़ै उतराय ॥ नख शिख वरत अगिनियां तनद्युतिमुरझाय ॥ बिन रामरूपनिहारे मोको कछु न सुहाय । बिगरो कि संवरोदेवा शोचे मोरबलाय ॥

मधुरअली०पद० ॥ सखीरी सिय बनरेसँग जावै । जबते लखी श्याम तवसूरति तबते कछुनसुहावै ॥ मृदुमुसकाय छकाय छयलमोहिं सयनकीसांग चलावै । मधुरअली भइ रूपआशिकी कुलकीकानि नभावै ॥

प्रेमअली०पद० ॥ लगनलगीजब कौनकरेडर । गृहकारज मिटजाय अलीरी बदनबिलोक मित्र अपने कर ॥ लोकलाज कुल कानि तबहिंलग जबलग प्रेमरसी नकसीबर । बूंद स्वातिजल चातकचाहत यदपिभरे हैं अमित सरितासर ॥ करुणाभरे खड़े घरवारे रोवतसती चढ़िनाकभिसर । प्रेमअली बलभ्रूगड़ो कौन हैं जिवतनबेच्योहै अवधछयलकर ॥

रामदास०पद० ॥ प्रीतिके कोई फंदपरैना । जोकोइ प्रीतिके फंद परैगो कोटियतनकीन्हे उबरैना ॥ सुखजीवन जो चाहै जगमें भूलि कोई परतीतिकरैना । मीन नीरसों प्रीतिकियो अबबिछुरत यकपल धीरधरैना ॥ रामदास यह चालअटपटी ह्वै पतंग कोई धायजरैना ॥

मधुरअली०पद० ॥ तेरेनजरोंदी सैंफकीधार । सुनियेछैल अवध दशरथके घायलभये हजार ॥ लोटपोटभये लगे चोटके मिथिलापुरबाजार । मधुरअली पिय सांचीकहदो कबमिलिहो दिलदार १ डारि प्रीतिकीफँसिया तुम्हैंबिन कैसेरहबै राम । जबते लखी रूपअलबेलो नहिंसुहात धनधाम ॥ अतिमनहरण छैल

रघुनंदन कोटानेछावरि काम । मधुरअली कुलकानिछांड़ि संग चलेबनतहै काम ॥

रघुराज०चौपाई० ॥ यहिबिधिसुनत नारि नरबानी । चलेजात रघुपति छबिखानी ॥ अति विमनस कछु कहत न बानी । प्रीति रीति नाहिं जाय बखानी ॥

श्रीतुलसी० ॥ यहिबिधि सबहि नयनफल देता । गये कुवँरसब राजनिकेता ॥

रघुराज० ॥ दौरिदूत तेहिअवसर आये । मिथिलापतिकहँख-बरिजनाये ॥ आवत राजकुवँर मनभाये । सोहत सखासंग छबि छाये ॥ उठेउभूप आयेचलि आगे । रामदरशकहँ अतिअनुरागे ॥ आवतदेखि बिदेहकुमारा । उतरि तुरंगनते यकबारा ॥ कियेप्र-णाम नाम निजलीन्हे । भूपयथोचित आशिषदीन्हे ॥ सभाभवन महँ गयेलेवाई । सिंहासन आसीनकराई ॥ यथायोग सबसखन महीपा । बैठाये रघुनाथसमीपा ॥ तेहिअवसर लक्ष्मीनिधिआये । चारिहुबंधुनको शिरनाये ॥ उठे राम संयुत सबभाई । चलि मिलि निजसमीप बैठाई ॥ कुशलप्रश्नपूछयो सबभांती । राम देखिभै शीतलछाती ॥ दोहा ॥ सुरभिएल तांबूललै नृपकीन्ह्यो व्यवहार । यथा राम तिमि सबसखन मानि किये सतकार ॥ छंदहरिगीतिका ॥ तेहिकाल श्रीरघुलाल बचनरसालकह कर-जोरिकै । नैननवाय सुछायजल मानहुसबन चितचोरिकै ॥ तुम अवधपतिसम ममपिताहम अहैं बालक रावरे । जो भये कछु अपराध तौप्रभु क्षमियगुनि निजडावरे ॥ प्रभु छोह मोह सदैव रखियो आपनोशिशु जानिकै । हमअहैं लक्ष्मी-निधि सरिस अस सुरति रखियो मानिकै ॥ अब चलन चाहत अवधको अवधेश संयुत साहनी । मोहिं बिदा मांगन हित पठाये बातहै दिलदाहनी ॥ आवनचहत आपहु इतै मांगनबिदा अब आपसों । हमरो सकल सिधकाजह्वैहै आप कृपा प्रतापसों ॥

जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण बंदनकरौं । अब जाय अं-तःपुर सपदि निमिकुल निरखि आनँदभरौं ॥ सुनि प्राणप्यारेके बचन बिलखेउ बिदेह महीपहै । गद्गदगरो कछु कहि न आवत बचन परम प्रतीपहै ॥ अँशुवानिढारत जोरिकर बोलेउ बचन मिथिलेशहै । तुमजाहु अस किमि कढै मुख हग ओटहोत कलेश है ॥ यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरो । तुम आइहौ मिथिला अवध हमजाब नित नित शामरो ॥ यद्यपि सकल थल रावरेकोरूप मोहिं लखातहै । तद्यपिलला तुमजाहु असनहिं बदनसों कहिजातहै ॥ जसहोइ राउर मनप्रसन्न निदेश जस अवधेशको । सो करहुसुरति न छांड़ियो निज जानि यहमिथिले शको ॥ अब आशु चलि रनिवासमहँ कीजै नयन शीतललला । तुम अहौ सबके प्राणधन जानत न कोउ तिहरी कला ॥ सुनि कै विदेह निदेशसहित सनेह तिन शिर नाइकै । संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुवँर लिवाइकै ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ रूपसिंधु सब बन्धु लखि हरषिउ-ठेउ रनिवासु । करहिं निछावरि आरती महा मुदितमन सासु ॥ चौपाइ ॥ देखि रामछबि अति अनुरागी । प्रेम बिवश पुनि पुनि पदलागी ॥ रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेह बरणि नहिं जाई ॥

कृपानिवास० ॥ उचित तजैं अनुचितलै दौरैं । चवँर बिसार बसन शिर ढोरैं ॥ गंधभूलि जलसींचन लागीं । चंदनतजि घृत ले अनुरागीं ॥ पीठ समय पर्यंक बिछाये । लाल दशालखि मृदु मुसक्याये ॥

रघुराज०छंदगीतिका ॥ रनिवासमें फैलीखबरि आये करावन बर बिदा । सब नारिधाईं दरशहित जेहिदेखि मनसिज शरमिदा ॥ कुशकेतुकी महिषी तहां चलि रतन निउछावरिकरी । पुनि सिद्धि आई सखिन संयुत रतिलजावति रतिभरी ॥ प्रभुउठि सबंधु प्र-

णाम कीन्हेउ दर्भकेतु प्रियापदै । मिथिलेश महिषी निकट बैठायउ दियो आनँदहदै ॥

संग्रह० ॥ बोलेउ सुनैना रानिसों बिनती अबै सुनिलीजिये । लागीक्षुधा भोजन कराइय नेक बिलँब न कीजिये ॥ चौपाई ॥ शील सनेह रामकी बानी । सुनिकै तुरत उठी महरानी ॥

श्रीतुलसी० ॥ भाइनसहित उबटि अन्हवाये । छरसअशन अतिहेतु जेंवाये ॥

रघुराज० ॥ इमिकराय भोजनमहतारी । सुरभितजलकरचरण पखारी ॥ बैठायेपुनि आसनमाहीं । जुरीसकलरनिवासतहांहीं ॥

कृपानिवास० ॥ धूपदीपकरि अर्घआरती । भूषणबसन सुधनहि वारती ॥ नारिवृन्द जिमि शशिहि चकोरी । निरखहिं प्रभुछबि पलकन मोरी ॥

रघुराज०दोहा ॥ लैअपनेकर कमलसों बीरी बिमल बनाय । चारोंभाइनकोहुलसि दीन्ही सिद्धिखवाय ॥ चौपाई ॥ उतै अवध पुर करनपयाने । भूपचक्रवर्त्ती अतुराने ॥ सहित बशिष्ठ सुवृद्ध समाजा । गवनेउ बिदाहोनहित राजा ॥ अवधनाथकी जानि अवाई । लियउद्वारते निमिकुलराई ॥ ल्यायसभा मंदिरबैठाये। करिसतकार बहुरि असगाये ॥ तनधनधाम सकल परिवारा । मोर अवधपति सकलतुम्हारा ॥ जोकछु भयउहोय अपराधा । क्षमहु क्षमाके उदधिअगाधा ॥

रघुनाथदास० ॥ निजसम सबबिधि मोहिं करिलीन्हे । उभय लोक अनवधियश दीन्हे ॥ यामें अचरज अहैनकोई । मलयसमीप कुतरु हरिहोई ॥

रघुराज० ॥ जो शासन करु कोशलराऊ । करौं शीशधरि बिन छल छाऊ ॥ तब बशिष्ठ बोले मृदुबानी । सुनहु जनक भूपति बिज्ञानी ॥ राउ सकोच सनेह तिहारे । बिदा न मांगि सकत दुख भारे ॥ करन चहत अब अवध पयाना । बिते बहुत दिन

जात न जाना ॥ कुँवरि बिदाकरु सुदिवस आजू । देहु रजायस-जाय समाजू ॥ अस को करी प्रीतिकी रीती । जस तुम नेह निवाही नीती ॥ दोहा ॥ सुनि बशिष्ठमुनि के बचन जानि अवध पति जात । नृप बिदेहके नेहवश दुख नहिं देहसमात ॥ चौपाई ॥ सजल नैन गर गद गद भयऊ । नृपतिहुलास बीति सबगयऊ ॥ बदनबचन कछुबोलि न आयो । मानहुं सरबस जनकगवाँयो ॥ पुनि धरि धीरज भूप बिज्ञानी । बोलेउ बचन जोरि युगपानी ॥ शील सिंधु प्रभु कोशलराई । किमि तिनको बिछुरन सहिजाई ॥ दीन जानि मोहिं दीन बड़ाई । किमि निकसै मुख तासु बिदाई ॥ तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई । मोरेशिरपर आपरजाई ॥ जानेहु मिथिलापुरी हमारी । मोहिं भल पग पामरी तिहारी ॥ जासु राम अस पुत्र प्रधाना । सकै कौन करि बिरद बखाना ॥ अनुग जानि अब कृपाकरीजै । करौं सकल शासन अब दीजै ॥ सौंपहुँ नाथ कुमारी चारी । पालव लघुसेवकी बिचारी ॥ दोहा ॥ धोखे अनधोखे कछुक जौन चूक परिजाय । क्षमा करब निज बाल गुनि मोरमान सुधिल्याय ॥ चौपाई ॥ परिचारिका दारिकाचारी । सौंपों तुमहिं अबै अति बारी ॥ नहिं जानहिं कछु लोक सुभाऊ । सिखयहु रीति न किहेहु दुराऊ ॥ इनपर कोउनहिं कीन्होंकोपा । रहीं काजतजि खेलन चोपा ॥ कटुक बचन इन परे न काना । सकल कुटुंब परमप्रिय माना ॥ रहीं मातु पितु प्राण पियारी । बंधु कुटुंबन दून दुलारी ॥ करौं बिनय तुवपद शिर धरिकै । राखेउ मान मोरि सुधि करिकै ॥ भरी सनेह बिदेह सुबानी । सुनि कह राउ नयन भरि पानी ॥ पुत्रबधू पुत्रन ते प्यारी । तापर पुनि मिथिलेश दुलारी ॥ धन्यभाग हमरे घर जाती । अधिक न इनते कोउ दरशाती ॥ दोहा ॥ अपनो जानि सनेह करि राखेहु सुरति हमारि । कौन अधम जो रावरी देहै सुरति बिसारि ॥ चौपाई ॥ सतानंद तेहि अवसर आये । तेहि बशिष्ठ कहि बच बुझाये ॥ आयो बिदा मुहूरत अबहीं । परिछन होइ जना

सबहीं ॥ बर दुलहिनि-पालकी चढ़ाई । द्वारदेशमहँ ठाढ़कराई ॥ परिछनकरै जनक महरानी । दै दधिबिंदु उतारहि पानी ॥ बर ह्वै बिदा बाहिरे आई । करहिंगमन आगे सबभाई ॥ पाछे चलहिं पालकी चारी । अस अनुमति मुनि अहै हमारी ॥ सुनत बशिष्ठ बचन सहुलासू । गौतम सुवन जाय रनिवासू ॥ बोलि सुनैनहिं दियउ बुझाई । रानि चारिपालकी मँगाई ॥ दूलह दुलहिनि सपदि चढ़ाई । मंगल गान मनोहरगाई ॥ कनकथार आरती उतारी । पढ़िशुभमंत्र उतारयो वारी ॥ कीन्ह्यो सबबिधि परिछनचारा । लियउ बहोरि उतारि कुमारा ॥ कनकपीठमहँ बर बैठाई । विविधबसन भूषणपहिराई ॥ दोहा ॥ मणिमाणिक मुकतामुकुट बरहीरनकेहार । नखशिखके भूषणसकल दियेअमोल अपार ॥ अतिअनुपमपट बिबिधबिधि ग्रंथितरतनअनेक । दीन्हेउ चारिहुबरनको समगुनि बिगतबिवेक ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बोलेराम सुअवसरजानी । शीलसनेह सकुचमयबानी ॥ राउ अवधपुर चहतसिधाये । बिदाहोनहित हमहिं पठाये ॥

रघुराज०दोहा ॥ सुनतसुनैना रामके बैन नैनजलढारि । बोली आनँदअयनसों कोटिमैन छबिवारि ॥ अब न जाहु प्यारे कतहुं इतहीकरहु निवास । दरशओटकी चोटलागि करिहैं प्राण प्रवास ॥ दरशदहुनितहीहमैं करहुकलेऊआय । चारिहुबंधु बिशेषते अंगनखेलहुधाय ॥ इतमृगया खेलहुबिपिन राजकुमारबोलाय । तुमहो जीवनप्राणमम किमिबियोग सहिजाय ॥ धन्यभाग मेरी भई तुमसमपाये पूत । सकल सुकृतफल दरशतुव होत अनन्द अकूत ॥ बसि विदेहपुर कछुकदिन कीजे अवधपयान । अवध नगर मिथिलानगर लालन तुम्हैंसमान ॥ कौशल्या केकयसुता और सुमित्रामात । सोपातिनिहि मोसेअधिक करिहैसांचीबात ॥ कबित्त ॥ यतनसों राखेधरि रतन अनेकजाति रोजरोज भूषण

अदूषण गढ़ैहौंमैं। कारीगर निपुण बोलायदेशदेशनते बसन अनेक रंग अंगपहिरैहौंमैं ॥ रघुराज कौनहूं बिसंचमन होनपैहै खासे खासे खुशखेल खूब खेलवैहौंमैं । केवाजनिकीजेमोरि सेवासब भांति लीजे मीठमांठ मेवा लैकलेवाकरवैहौं मैं ॥ दोहा ॥ लाल तुम्हैंदेखेबिना किमिरैहैं तनप्रान । बारबारबिनतीकरौं अबजानि करहुपयान ॥ चौपाई ॥ प्रभु जननी सनेहबशजानी । भरिआयो नैननमहँपानी ॥ धरिधीरज पुनि दोउकरजोरी । कहेउ बचन बिनती असमोरी ॥ मातुरजाय शिशमहँमोरे । नहिंबिसंचमोहिं सन्निधि तोरे ॥ तोरसनेह बिलोकि अघाता । नहिंउत्तर आवत कछु माता ॥ जोकछु उचित करौ अबसोई । करिहौं मैं जोआ-यसुहोई ॥ कबहुं न तोहिं वियोग हमारा । तैं जननी हम तोर कुमारा ॥ छोह मोहराखेउ सबभांती । तैंनबिसरिहै मोहिं दिन राती ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा । यदपिमातु ममप्रीतिपवित्रा ॥ सबतेअधिक मातु तैंमोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौं तसतोरे ॥ जब करिहै सुमिरण मोहिंमाता । तबहिंआइहौं मृषानबाता ॥

श्रीतुलसी० ॥ मातुमुदितमन आयसुदेहू । बालकजानि करब नितनेहू ॥

रघुराज० ॥ यदपिप्रबोधेउ बहुबिधि रामा । राम बिछोह भई तनछामा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सुनतबचन बिलखेउ रनिवासू । बोलिनसकहिं प्रेमबशसासू ॥ हृदयलगाय कुवँरिसबलीन्ही । पतिनसौंपि बिनती अतिकीन्ही ॥ छंदहरिगीतिका ॥ करिबिनय सियरामहिंसमर्पी जोरिकरपुनिपुनिकहै । बलिजाउँ तातसुजान तुमकहँ विदितगतिसबकीअहै ॥ परिवार पुरजन मोहिंराजहिं प्राणसियप्रियजानवी । तुलसीसुशीलसनेहलखि निजकिंकरीकरमानवी ॥

रघुराज०चौपाई ॥ सुनिये जीवनप्राणअधारा । बिनती यहमम बारहिबारा ॥ सचिव राउ हमसब चरदासी । जातिबंधुजहँतक पुरबासी ॥ सबहि प्राणप्रिय सुताहमारी । कबहूं लागिन ताति बयारी ॥ दृगपुतरीइव सबदिनपाली । निरखतरहिउँ यथामन व्याली ॥ रही मातुपितु प्राणपियारी । बंधुकुटुंबन दूनदुलारी॥ तुम्हरेकर निबाहु इनकेरा । करहुसो मोदलहै मनमेरा ॥ करौं विनय तुवपदशिरधरिकै । राखेहुमान मोरिसुधिकरिकै ॥

श्रीतुलसी०सोरठा ॥ तुम परिपूरणकाम जानि शिरोमणि भायप्रिय । जनगुणगाहकराम दोषदलन करुणायतन॥ चौपाई ॥ असकहि रही चरणगहि रानी । प्रेम पंक जनु गिरासमानी ॥

रघुराज० ॥ मुखसों नहिं कहिआवतबानी । निकरतनैन निरन्तरपानी ॥ करजोरे कांपतसबगाता । निरखति राम बदनजल जाता ॥ प्रभुजानेउ मोहिं करतपयाना । तजिहै अवशि जननि प्रियप्राना ॥ दीनेउ भक्तिज्ञान अवदाता । पोंछिनयन बोली तब माता ॥ तुमसर्वज्ञ सकलगुणआगर । प्रेमनेम जानहुनयनागर॥ दोहा ॥ रहौंन देखनकी दुखी दरशनदीजे आय । हाहुओट इन नयनके असकसकै कहिजाय ॥

ज्ञानाअलि०पद० ॥ ललन ससुरारि छांडि कहँजैहौ । यह सुख कतहुंनपैहौ ॥ सासु श्वशुर सारी सरहज सब मिथिला बिरह सतैहौ । मानि ननँदनाते ननदोई फिरि बिधुबदन देखैहौ ॥ प्रमदाबन भूलेहु जानिरघुबर निजकरपातिपठैहौ ॥ जोतुमसांच अवधनृपनन्दन सांचीकहो कबऐहौ । ज्ञानाअलि तब सफल मनोरथ जब हँसि कंठलगैहौ ॥

श्री तुलसी०चौपाई ॥ सुनि सनेहसानी बरबानी । बहुबिधि राम सासुसनमानी ॥ राम बिदामांगत करजोरी । कीन्हप्रणाम बहोरिबहोरी ॥ पाइअशीश बहुरि शिरनाई ।

भाइनसहित चलेरघुराई ॥ मंजु मधुरमूरति उरआनी। भई सनेहशिथिल सबरानी ॥

संग्रह० ॥ परम सुजान शील गुण धामा । गये आतुर सिद्धी ढिग रामा ॥

रघुराज० ॥ उठी जनक सुतबधू सयानी । करगहि कही प्रीति बश बानी ॥ नेहलगाय नरेश किशोरा । अबमतिजाहु अवधकी वोरा ॥ दरश बिना किमि रहे शरीरा । बिछुरत होत दुसह तन पीरा ॥ लाल प्रीतिकी रीति न जानौं । सहजहि प्रेम पंथ मन मानौं॥अब नहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥ प्रभुमुसक्याय कही मृदुबानी। यदपि न गमनत बनत सयानी॥ पितु शासन शिरपर सबभांती। कहाकरौं अब मति अकुलाती॥ देहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जनि शोचकरहु मन भाई ॥ जनम जनम नातो यह होई । तुम सरहज हम हैं ननदोई ॥ तुमहिं कबहुँ नहिं बिछुरनि मोरी । अयहौं अवशि प्रीति लखि तोरी ॥ यह सनबंध सनातन केरा । तुमहुँ अवधपुर करहुबसेरा ॥ दोहा ॥ सिद्धि सुनत प्रभुके बचन पुनिबोली कर जोरि । पालव सब अपराध छमि ननदि चारिहूं मोरि ॥ चौपाई ॥ इनकबहूं अ-पिमान न जाना । रहीं दुलारभवन बिधि नाना ॥ कबहुं न फूल छड़ी कोउ मारी । कटुक गिरा नहिं जननि उचारी ॥ मान सकोच दुलार बड़ाई । लगी रावरे कर रघुराई ॥ पालव सकल अनुचरी जानी । यतना कहत ढरयो दृग पानी ॥ सिद्धि प्रीति नहिंजाय बखानी । बोले राम मनोहर बानी ॥ अवध जनकपुर भेद न काऊ । उभय अमान समान प्रभाऊ ॥ सो पति सुख सकोच सब दूना । सिद्धि कबहुँ ह्वैहै नहिं ऊना ॥ लियो बोलाय-जबै मनभावै । आवैं फेरिहम बिदाकरावै ॥ दरशपरश ह्वैहै यहिव्याजू । ह्वैहै सिद्धि सिद्धि तव काजू ॥ राम बुझावहिं बारहिबारा । रुकति न सिद्धि नैन जलधारा ॥ जस तसकै कछु धीरज दैकै ।

गवने राम बिदा तेहि ह्वैकै ॥ गे कुशकेतुनारि ढिग नाथा । बोलेउ बचन नाय तेहि माथा ॥ दोहा ॥ चारिहु बंधुनकी अहौं जननी युगल समान । कौशल्यादिक मातु महँ मोहिं न भेद देखान ॥ चौपाई ॥ राखेहु सुरति मातु सबकाला । चारिहु बंधु तुम्हारेबाला ॥ सुनिकुशकेतुदार प्रभुबानी । प्रीतिबिवश अति मति अकुलानी ॥ बोली कंज करन युग जोरी । राखेउ सुरति लाल छमि खोरी ॥ यदपि सनातनते चलिआई । ह्वै बिवाह बरबधू बिदाई ॥ तदपि न बुद्धि फुरत कछु मेरी । भै गति भुजँग छछूंदरि केरी ॥ प्रीति बिवश प्रभु बंदन कीन्हे । बाहेर चलन हेतु मनदीन्हे ॥ यथायोग करि सबको बंदन । लै आशिष सबसों रघुनन्दन ॥ दै धीरज पुनि आउब आशू । प्रीति बिवश दृगढारत आंशू ॥ चले बाहिरे बंधु समेतू । मनहुँ चोराय सबनकर चेतू ॥ मणि भूषण सुंदर पट नाना । दिये सिद्धि नहिं चित्त अघाना ॥ सुंदरि मणिमुंदरि यक ल्याई । दियउ राम अंगुलि पहिराई ॥दोहा॥ सो मुँदरी मणि में लिखे अस आखर रसभीन । कबहुँ न सिधि सुधि छोड़ियो लाल प्रबीन प्रबीन ॥ चौपाई ॥ पुनि कुशकेतु भूपकी रानी । रतन बिभूषण पट बहु आनी ॥ चारिहु बंधुन दिये समाना । भेद भाउ मनमें नहिं जाना ॥ नगरनारि रनिवास नेवासिनि । जेआईं दरशनकी आसिनि ॥ जिनकेजौन बस्तु घर नीकी । दीन्ही बरन जानि जिय फीकी ॥ कहहिं नारिसब बचनउचारी । काह देन गति अहै हमारी ॥ राखेउ मन हमरो सँग अपने । छोड़ेहु कबहुँ न सुंदर सपने ॥ बारबार मिथिलापुर आई । दीजै दर्श चूक बिसराई ॥ तब सबको करिकै सनमाना । जानि सुनैना सिद्धि समाना ॥ बैठ सभा जहां दोउ राजा । भ्रातनसहित गये रघुराजा ॥ राम बिरह तिय नैननि नीरा । बहि बहि भयो उदधि गंभीरा ॥ कहहिं परस्पर नारि दुखारी । सीय बिदाते यह दुख भारी ॥ भयो शोक सागर रनिवासा । लागी बहुरि दशर की आसा ॥ दोहा ॥ आवत लखि रघुराजको सिगरी उठी

समाज। श्वशुर पिता पद बंदि प्रभु बैठे शील दराज ॥ चौपाई ॥ तहां जनक सब सचिव बोलाये। ल्यावहु दाइज बचनसुनाये ॥ सचिव आशु लै आवन लागे। जिनलखि शक्र धनद मद भागे ॥ गलहैकल शिर सुबरण शृंगा। पीठ पाटवी झूल अभंगा ॥ दियो सुरभि शतसहस अनेका। कामधेनु ते लघु नहिं एका ॥ बरण अनेकन बिमल दुशाले। झूलत झब्बे मुकुत बिशाले ॥ देश देशके निरमित पागे। मणि शिरपेंच कलंगी लागे ॥ ग्रंथित रतन अनेकन बागे। कटि फेंटे मणिज्योतिन जागे ॥ चरण बसन बहु बरण अमोले। मानहुँ मदन पाणिके तोले ॥

रघुनाथदास० ॥ भूषण सुभग एकते एका। भरे मजूषा चित्र अनेका ॥ बसन रूमपट पाटअपारे। परमरम्य अतिशयगुणभारे ॥

रघुराजसिंह० ॥ कोटि कोटि यक यक बरकाहीं। देत पोशाकन जनक अघाहीं ॥ दियो लक्षदश मत्तमतंगा। कनकसाज सज्जित बहुरंगा ॥ जिनहिं देखि ऐरावत लाजा। भये गर्वगत दिशि गजराजा ॥ कोटि एक पुनि दियो तुरंगा। जिन लखि उच्चश्रवा मदभंगा ॥ दोहा ॥ कनक साज साजे सकल मारुतबेग प्रमान। देश देशके बरण बहु जल थल चलहिं समान ॥ छंद ॥ तनक बनक नहिं न्यून कनकके स्यंदन झनक अपारे। वृन्दन वृन्दन युगल बीसबर लक्ष मनोज समारे ॥ दीन्ह्यो स्यंदन रघुनन्दन को आनन्दन मिथिलेशा। नहे तुरंग अनंग सभाजित जीते जंग हमेशा ॥ राजत जातरूपके भाजन रतन अनूप जड़े हैं। निज अनरूप भूप दीन्ह्यो बहु देखन देव अड़े हैं ॥ पन्ना पदिक लालमाणिक के पुष्पराज गोमेदू। नीलक लसुन प्रबाल पिरोजन भूषण सहित बिभेदू ॥ इंद्र नील मणि पद्मराग के मरकत मणि आभरणा। नख शिखके त्रयशत युग त्रिंशत पृथक पृथक जिन बरणा ॥ दीन्हे चारि कुमारन को नृप औरहु मणि बहुताई। पंचसहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बोलाई ॥

नृप समान दीन्हे पट भूषण हय गय रथन मँगाई । पुनि यक यक गजमुक्तन माला पृथक पृथक पहिराई । एकएक चिंतामणि नामक दीन्हा मणि सुखदाई ॥ चिंतामणि नामक मणिके पुनि यक यक हार मँगाई । जनक पाणि पंकज निज चारिहु कुँवरन दिय पहिराई ॥ गजमुक्तन को महाहार यक जेहि बिचबिच छबि छाई ॥ चंद्रकांति औ सूर्यकांति मणि लगी तेजसमुदाई । सो कर हार धारि मिथिलापति दशरथ को पहिराई ॥ जोरि पाणि पुनि बिनयकियो अस सुनहु भानुकुल भानू । हम नहिं देन तुम्हारेलायक कहँ महि कहँ परिमानू ॥ अक्षोहिणी एक मिथिलाकी जाति कुमारिन संगा । लाषन अभिलाषन गमनत सँग दासी दास सुभंगा ॥ तिनकर पोषन पालन लालन राउर हाथ महीपा । हमसेवक रावरेसदाके आप भानु हमदीपा ॥ फेरि सुधावन सचिव बोलि नृप शासन दियो सुनाई । रहै नबाचि बराती कोउ अस बिन भूषण पटपाई ॥ सकल सुधावन आदि सचिव तहँ पट भूषण बहु ल्याई । जनक चौक महँ बिविध चौतरन दीन्हे शैल बनाई ॥ दिहे बरातिन लघु बड़ मनुजन जाहि जौन जस भायो । कोउ नहिं रह्यो तहां अस जन जो पट भूषण नहिं पायो ॥ जनक नगर के सभ्य महाजन धनी धनद के जोरी । पृथक पृथक दाइज ते दीन्हे करि कीरति चहुँ ओरी ॥ इन्द्र बरुण यम धनद आदि सुर देखि बिदेह बिभूती । लाज्जित भये वृथा माने मन निज निज कर करतूती ॥ अवध नेवासी सकल सराहत जनक उदार स्वभाऊ । ज्ञानी कहत अचर्य करो जनि यह सिय रूपा प्रभाऊ ॥ दाइज दियो बिदेह जौन सो दशरथ भूप उदारा । सो सब भाटन भिक्षुक दीनन दीन्ह्यो बिनहिं बिचारा ॥ अधिक अधिक सो बढ़्यो घट्यो नहिं सिय महिमा अधिकानी । जहां प्रत्यक्ष रमा तहँ केहि बिधि संपति जाय बखानी ॥ कनक रतन पट हय गय स्यंदन भाजन बस्तु अनेका । दियो बिदेह जाहि जसभायो बिसरयो बुद्धि बिवेका ॥ यहि बिधि

दै दाइज मिथिलापति कौशलपति सों भाख्यो। हमरे काह देन को प्रभु जो रह्यो सो आगे राख्यो॥

रघुनाथदास०चौपाई॥ हे अवधेश बिमल यशकेतू। सकल काम परि पूरण सेतू॥ मैं निलज्ज यह सौज देखाई। जिमि को इस्वर्ण सुमेरहि लाई॥ पर प्रभु ईश बड़े जे अहई। तिनकी रीति वेद इमि कहई॥ दास फूल फल जल जो देहीं। प्रभु ते अधिक प्रीति ते लेहीं॥ दोहा॥ तेहि अवसर गौतम सुवन बोलेउ बचन विचारि। गमन मुहूरत आइगो कन्या चलैं सिधारि॥ गमन करैं बर चारहू यही मुहूरत माहिं। पुर बाहेर परखहिं पितै नृप अन्तहपुर जाहिं॥ करि बिधि मंडफ मोचनी समधिनि सों रचि फागु। पुत्र बधू लै संगमें गमन करैं बड़ भागु॥ एवमस्तु दशरथ कह्यो राम चारिहू भाय। चले तुरंगन में चढ़े पिता इवशुर शिरनाय ॥ चौबोलाछंद ॥ लक्ष्मीनिधि को पाणि पकरिकै उठे अवधपति आसू। बिधि मंडफ मोचनी करन को चले हरषि रनिवासू॥ परिचारिका सुनैना की तहँ डेउढ़ी ते चलि लीन्हेउ। अवध चक्रवर्ती को मंडफके तर आसन दीन्हेउ॥ सुरभित तैल अनेक मसाले तांबूल युत ल्याई। वृद्ध वृद्ध कुल नारि पाणि निज दियो लगाय खवाई॥ फेरि कह्यो करजोरि भूपसों मंडफ बंधन छोरौ। नेगनमें निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुख मोरौ॥ नृप उठि मंडफ को बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू। कह्यो बहुरि मुसक्याय सुनहु मम बचन बिचारि बिवेकू॥ हम लेने कोशलते आये नहिं देबेके हेतू। जो जो देहौ सो लैकै हम जैहैं बहुरि निकेतू॥ दीन्हेउ पुत्र बधू अति सुंदरि सो पुत्रनको भागा। हम न अवधपुर जाब छूंछकर कछु हाथे नहिं लागा॥ जो मिथिलेश भगिनि होवैं कहुँ तौ नेगन तर दीजै। नातौ चलै सुनैना रानी यही निबाह करीजै॥ सुनि कुल-बधू वृद्ध नृपबाणी कही सुनैनै जाई। अवसर जानि चार करिबे हित सो बाहेर कढ़ि आई॥ कनक थार लै पाणि रंग भरि धरि

काजर टिकुली को । करि प्रणाम समधीको सुन्दरि दियेउ भाल महँ टीको ॥ अंगनि अंग सुरंग रंग लै डारयो सहित उमंगा। नैननि में काजर पुनि दीन्हो करि कछु कूट प्रसंगा ॥ उठि कोशलपति तब समधिनिको करि प्रणाम सुख छाये । चिन्तामणि हारपाणि लै समधिनि को पहिराये ॥ पद्मराग मणिमाल सुनैना समधीके गर दीन्हीं । जोरि पाणि पंकज भूपतिसों सनै विनय अस कीन्हीं ॥ ये चारिहु दारिका हमारी परिचारि का तिहारी । लालन पालन अब इनको सब कीजो बाल बिचारी ॥ तुम्हरे कर सौंपहुं नर नायक ई चारिहू कुमारी । ये नादान जानती नाहीं कछु पालेहु भूप बिसारी ॥ अपनी अरु सिगरी सासुनकी सेवा सब करवायो । काहुसों कबहुँ बिरोध होइ नहिं निज कुल रीति सिखायो ॥ सुनत सुनैना बैन अवधपति जोरि पाणि कह बानी । प्राणहुँ ते प्रिय पुत्र बधू मम सपनेहुँ दुख नहिं रानी ॥ शासन देहु जाहुँ कोशलपुर पुनि ऐहौं बहुबारा । मिथिलापति को अहै अवधपुर मिथिला नगर हमारा॥अस कहि करि जुहार समधिनिको भूपति बाहेर आये।चलन हेत मिथिलाधिपति सों जोरिपाणि असगाये ॥ शासनदेहु बिलंबहोति बड़ि तुम अवलंब हमारे । मोदकदंब मिलनि राउरि मोहिं बिसरी नाहिं बिसारे ॥ कह्यो बिदेह सनेह बिवश ह्वै पहुँचैहौं कछु दूरी । यह कुलरीति नाथ बरजौ जनि तुव बिछुरनि दुखमूरी ॥ नृप प्रणामकरि चलेउ चढ़े रथ बाजे बिविध नगारे । मिथिलापति सों कह बशिष्ठ तब सुदिवस सुभग बिचारे ॥ यही मुहूरत महँ कन्या सब चलैं भवनते राजा । द्वितिय मुहूरत नहिं शुभदायक करहु आशुही काजा ॥ दोहा ॥ सुनि बशिष्ठके बचन बर कुशध्वज सहित बिदेह । लक्ष्मीनिधिको संगलै गेअंतहपुर गेह ॥

संग्रह०चौपाई ॥ इत अंतहपुरमें महरानी । सखिनबुलाय कही अस बानी ॥ सखसियानि बिलंब न लावो । पुनि कुवँरिन शृंगार करावो ॥

प्रियाशरण॰ ॥ सियकहँ,लै सबभगिनि समेता। गईंसहचरी शृँगार निकेता ॥ सियकी सकलसखी परबीनी। करनलगीं शृंगार नबीनी ॥ बसन नबीन महाछबि राशी। पहिराये अति अमल प्रकाशी ॥

रघुराज॰ ॥ तीनिहुं भगिनि सहित सियलाई। बारबार दृग बारि बहाई ॥

श्रीतुलसी॰चौपाई ॥पुनि धीरजधरि कुवँरि हँकारी।बारबार भेंटहि महतारी ॥ पहुँचावहिं फिरमिलहिं बहोरी। बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥ पुनि पुनि मिलत सखिन बिलगाई। बाल बत्स जनु धेनु लवाई ॥

रघुराज॰ होतबिदा सिय धीरजभागा। प्रगट्यो प्रजा परम अनुरागा ॥ पुरबासिनी नारिसब आईं। सियहि देन पट भूषण ल्याईं ॥ औरहु निमिकुलकी सबनारी। दीन्हे पट भूषण मनहारी ॥ असकोउ तहँ नहिंहोत बिचारी। सियहि देहिं घर बस्तु न सारी ॥ आयमिलें सियकहँ पुरनारी। रोदन करहिं नेह बश भारी ॥ सियमहिमा तेहिक्षण प्रगटाई। मिलीं सकलपुरनारिन जाई ॥ यहचरित्रजान्यो कोउनाहीं। जानीसबैमिलीं हमकाहीं ॥

श्रीतुलसी॰दोहा ॥ प्रेमबिवश नर नारिसब सखिनसहित रनिवास। मानहुँ कीन्हबिदेहपुर करुणाबिरह निवास ॥
चौपाई ॥ शुकशारिका जानकी जिआये। कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥ ब्याकुलकहहिं कहां बैदेही। सुनिधीरज परिहरै न केही ॥ भये बिकल खग मृग इहिभांती। मनुजदशा कैसे कहिजाती ॥ बन्धु समेत जनक तब आये। प्रेम उमगि लोचन जल छाये ॥

रघुराज॰ ॥ बोलेबचन बोलाय सुनैना। अब बिलंबकर कारज

हैना ॥ बीतत बिदा मुहूरत अबहीं । उचित सनेह करब नहिं सबहीं ॥ चढ़ैं पालकी सकल कुमारी । साजहु साज बिलंब बिसारी ॥

संग्रह० ॥ कह्योसुनैना भूपतिकाहीं । इतै न काज देरिकछुनाहीं ॥

रघुराज० ॥ सीय पितापदलखि लपटानी । सो दुख अबकिमि जाय बखानी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सीयबिलोकि धीरताभागी । रहे कहावत परम बिरागी ॥ लीन्हराउ उरलाइ जानकी । मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥

रघुराज० ॥ बढ्यो बिलोचन बारि प्रबाहा । लहत न नृप दुख सागर थाहा ॥ कहि न सकत मुखते कछु बानी । तेहि औसर धीरता परानी ॥ भाषत सीय बहोरि बहोरी । छांड़ेहु पिता सुरति नहिं मोरी ॥ मच्यो कोलाहल सब रनिवासू । तेहि क्षण भयो सकल सुख ह्रासू ॥ दोहा ॥ लीन लायउर जनक सिय तनक न रह्यो सम्हार । डूबी धीर जहाजजनु प्रेमहि पारावार ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्ह बिचार अनअवसर जाने ॥ बारहिबार सुता उर लाई । सजि सुंदर पालकी मँगाई ॥

रघुराज० ॥ यतनाकहत गरो भरिआये । जनक निकरि तब बाहरैं आये ॥ मिलीसीय कुशकेतुहि जाई । तनते धीरज गयो पराई ॥ लीन्हीलाय सीय उरमाहीं । रह्यो धीरता लेशहुनाहीं ॥ हायसुता मम प्राणपियारी । लहब बहुरिकब मोद निहारी ॥ दोहा ॥ जस तसकै धरिधीर कछु चलेउ बिकल कुशकेतु । लक्ष्मीनिधिके चरणमहँ गिरी सीय बिनचेतु ॥ चौपाई ॥ कहिभैया सिय रोवनलागी । को अस जेहि न धीरता भागी ॥ सखीसीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई ॥ कढ़तिनमुख लक्ष्मीनिधि बाता । सीयसनेह शिथिल सब गाता ॥ जस त-

स कै धरि धीर सुनैना । अवसर उचित कही अस बैना ॥ कन्या काहुके घर नहिं होई । सुता सनेह करै जनि कोई ॥ सुता होइ तौ होइ न नेहू । नेह होइ विधि राखै गेहू ॥ यहि विधि करत अनेक प्रलापा । बाल वृद्ध सुनि करहिं बिलापा ॥ नहिं सिय तजति भ्रातके चरणा । सो दुख जाय कौन विधि बरणा ॥ भगिनि सनेह विवश सिय भ्राता । रोदन करत कहत नहिं बाता ॥ करगहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गमनी बाहेर दुखजानी ॥ मातु अंक महँ सिय लपटानी । मनहुँ करुण रस सरि उमगानी ॥ लिई सुनैना गोद उठाई । धरि धीरज बहुबात बुझाई ॥ दोहा ॥ रोवहिं सबनारी विकल भरी सीय अनुराग । मानहुँ सिगरे भवन में छायो राग बिहाग ॥ चौपाई ॥ तहँ कुशकेतु भूप की रानी । कहत बुझाय परम प्रिय बानी ॥ जनि मानहुँ दुख मनहिं कुमारी । लेहु सनातन रीति बिचारी ॥ कन्या अवशि सासुरे जाती । पुनि माइके अवशि सब आती ॥ हिम गिरि मैना गौरि कुमारी । शंभु ब्याह कैलास सिधारी ॥ देवहुती मनु भूप दुलारी । करदम भवन बसी तपधारी ॥ नृप सरयाती सुता सुकन्या । बसी च्यवन मुनि घर भै धन्या ॥ देवयानि पुनि शुक्र कुमारी । भूप ययाति भवन पगुधारी ॥ सांता दशरथ सुता सोहाई । शृंगीऋषि राखेउ घरल्याई ॥ देव दैत्य सुर नर मुनि नाना । दिये सुता करि ब्याह विधाना ॥ जैहैं संगैमहँ अनवैया । लैहैं आशु आनि तव भैया ॥ यहि बिधि कहत प्रबोधहिं बानी । बहत जात नैननसों पानी ॥ सिय दुसहदुख देखि बिदाई । भये बिकल रुकिगे दिनराई ॥ दोहा ॥ गृहतारन संयुत रुक्यो महा चक्र शिशुमार । देखत बिबुध बिमान चढ़ि बहतनैन जलधार ॥ चौ० चारिहु भगिनि मिलति यहि भांती । दुखित चढ़नि शिविका कहँ जाती ॥ नारि बृन्द सब बिकल सिधारैं । रहैं न कोहुके अंग सम्हारैं ॥ मिलत परस्पर यहि बिधि सीता । द्वारदेश लौं गई पुनीता ॥ धरि धीरज तहँ परमसयानी । आई आशु सुनैना

रानी॥शिविकाआनिरतनमयचारी । दियचढ़ायचारिहूकुमारी ॥ श्रीतुलसी०दोहा ॥ प्रेम बिबश परिवारसब जानि सुलगन नरेश।कुँवरिचढ़ाई पालकिन सुमिरे सिद्धिगणेश ॥

रघुराज० ॥ दधिटीके दै भाल में सगुन सकल धरवाय । करि परिछन की रीतिसब दिय पालकीचलाय ॥ चौपाई ॥ जस तसकै धरि धीरज राजा । बोलेउ बिलषत मंद अवाजा ॥ निमिकुल की सिगरी मरयादा । रक्षन किहेहु बिहाय बिषादा ॥ अमल ससुर कुल सुता सिधारी । जस इत तस उत पितु महतारी ॥ कीजेउ सासु ससुर सेवकाई । पतिब्रत धर्म कबहुँ नहिं जाई ॥ राखेउ सबसों शील सनेहू । क्रोध लोभ कीन्हेउ नहिं केहू ॥ ल्याउब हम इत बारहिबारा ॥ किहेहुन नेसुक मनहिं खभारा ॥ करिहैं मोसे अधिक दुलारा । ज्ञानि शिरोमणि ससुर तिहारा ॥ पति रुख राखि किहेउ सबकाजा । सदाप्रसन्न रहै रघुराजा ॥ श्रीतुलसी०चौ० ॥ बहुबिधि भूपसुता समुझाई । नारिधर्म कुलरीति सिखाई ॥

रघुराज० ॥त्रैलखनृपजाहितसेवकाई।यथायोग्ययाननबैठाई ॥ श्रीतुलसी०चौ० ॥ दासी दास दिये बहुतेरे । शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥

रघुराज० ॥ चलत पालकी नगर मँझारी । कीन्हेउ प्रजा कोलाहल भारी ॥ पशु बिहंग मिथिलापुर केरे । रोदन करत जानकी हेरे ॥ चढ़े बिमान देवयुत दारा । सिय बिलोकि बह आंशुन धारा ॥ तेहि क्षण को अस त्रिभुवन माहीं । भयो जाहि सिय लखि दुख नाहीं ॥ पाले सीय बिहंग कुरंगा । रोवत चले पालकी संगा ॥ सतानंदतहँ आशुहि आये । लाखन स्यंदन शकट मँगाये ॥ भरि भरि शकटन साजु अपारा । दिये चलाय संग यकबारा ॥ अक्षौहिणी साहनी साजी । चली संग महँ हय गय राजी ॥ चले संग नानानरयाना । चढ़ी सखी सजि बिबिध

बिधाना ॥ चले सकल पुरजन पहुँचावन । बालवृद्धकरि मारग धावन ॥ बारबारसब ईशमनावैं । जल्दजनक जानकीबोलावैं ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ सीय चलत व्याकुल पुरबासी । होहिं सगुन शुभ मंगल रासी ॥

रघुराज० ॥यहिबिधिसिय बरातमहँआई ।बजेमुरजदुंदुभिसहनाई॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ भूसुर सचिव समेत समाजा । चले संग पहुँचावन राजा ॥ रथ गज बाजि बरातिन साजे । सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥ दशरथ बिप्र बोलि सबलीन्हे । दान मान परिपूरणकीन्हे ॥ चरण सरोज धूरि धरि शीशा । मुदित महीपति पाइअशीशा ॥ सुमिरिगजानन कीन्ह पयाना । मंगल मूल सगुन भये नाना ॥ दोहा ॥ सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अप्सरागान ॥ चले अवध पति अवधपुर मुदित बजाइ निशान ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ दशरथके तहँ मिलन हित ससुत सबंधु बिदेह । मुनिन सहित आवत भये भरे अछेह सनेह ॥ चौपाई ॥ आवत जानि बिदेह महीपा । रुके अवधपति नगर समीपा ॥

संग्रह० ॥ करिदौयानबरोबर राजा । गवनेमंदहिमंदसमाजा ॥

श्रीतुलसी०चौ०॥नृपकरि बिनयमहाजनफेरे । सादरसकल मांगनेटेरे ॥ भूषण बसन बाजि गज दीन्हे । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥ बारबार बिरदावलि भाखी । फिरे सकल रामहिं उरराखी ॥ बहुरिबहुरि कोशलपति कहहीं । जनक प्रेमबश फिरा न चहहीं ॥ पुनिकह भूपति बचन सुहाये । फिरिय महीप दूरिबड़ि आये ॥ राउ बहोरि उतरि भयठाढ़े । प्रेमप्रबाह बिलोचन बाढ़े ॥ तब बिदेह बोले करजोरी । बचन सनेहसुधा जनु बोरी ॥ करौं

कवनबिधि बिनय सुहाई । महाराज मोहिं दीन्हबड़ाई ॥

रघुराज० ॥ यहि मिथिलापुरकी ठकुराई । आपनिजानब गुनि सेवकाई । नहिं कछु मोर रावरो सिगरो । करबमाफ जो हमसे बिगरो ॥ दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारा । यह हमरे शिरमहँ बड़ भारा ॥ कोशल मिथिला उभय तुम्हारा । सेवक सिगरे मोर कुमारा ॥ समधी समधी नेह समाने । भरेकंठ नहिं बचनबखाने ॥ जस तसकै विदेह धरिधीरा । बोलेउ प्रेमगिरा गंभीरा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ कोशलपति समधी सजन सनमाने सब भांति । मिलन परस्पर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति ॥ चौपाई ॥ मुनिमंडली जनकशिरनावा । आशिरबाद सबहिसन पावा ॥ सादर पुनि भेटेउ जामाता । रूप शील गुणनिधि सबभ्राता ॥

रघुराज० ॥ कह्यो जनकसों प्रभु करजोरी । राखेहु बालमानि सुधि मोरी ॥ प्रेमबिवश नहिं बदत बिदेहू । मूर्त्तिमान जनु राम सनेहू ॥

संग्रह० ॥ घुटिगे कंठ भरेउ दृग बारी । जनक हृदय बड़ धीरज धारी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥जोरि पंकरुह पाणि सुहाये । बोले बचन प्रेम जनु जाये ॥ राम करों केहि भांति प्रशंसा । मुनि महेश मानस मन हंसा ॥ कराहिं योग योगी जेहि लागी । कोह मोह ममता मद त्यागी ॥ ब्यापक ब्रह्म अलख अबिनाशी । चिदानंद निर्गुण गुणराशी ॥ मन समेत जेहि जानन बानी । तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥ महिमा निगम नेति करि कहहीं । जोतिहुं काल एक रस रहहीं॥ दोहा ॥ नयन बिषय मो कहँ भयउ

सो समस्त सुखमूल । सबहि लाभ जगजीव कहँ भये ईश अनुकूल ॥ चौपाई ॥ सबहि भांति मोहिं दीन्ह बड़ाई । निज जनजानि लीन्ह अपनाई ॥ होइ सहस दश शारद शेषा । करहिं कल्प कोटिन भरि लेषा ॥ मोर भाग्य राउर गुण गाथा । कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा ॥ मैं कछु कहौं एक बल मोरे । तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥

रघुराज० ॥ आपन जानि न देव बिसारी । करब चूक सब माफ हमारी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ बार बार मांगों करजोरे । मन परिहरै चरण जनि भोरे ॥ सुनि बरबचन प्रेम जनुपोषे । पूरण काम राम परितोषे ॥

रघुराज० ॥ प्रभु कह भूप हमार तुम्हारो । होई नहिं बियोग युग चारो ॥ जानहु सकल भांति ममरीती । काहे करहु बियोग बिभीती ॥ जनक कह्यो हम सरबस पायो । लोक शिरोमणि मोहिं बनायो ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौशिक बशिष्ठ समजाने ॥ बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीन्ही ॥ दोहा ॥ मिले लषण रिपुसूदनहिं दीन्ह अशीश महीश । भये परस्पर प्रेमबश फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ चौपाई ॥ बारबार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चलेसंग सबभाई ॥ जनक गहे कौशिक पद जाई । चरणरेणु शिर नयन लगाई ॥ सुनु मुनीश बर दरशन तोरे । अगम न कछु प्रतीतिमन मोरे ॥ जो सुख सुयश लोकपति चहहीं ।

करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥ सो सुख सुयशसुलभ मोहिं स्वामी । सब विधि तवदरशन अनुगामी ॥ कीन्ह बिनय पुनि पुनि शिरनाई । फिरेमहीपति आशिषपाई ॥

रघुराज० ॥ मिथिलापुर पुरजन सुखरासी । मिले सकल कोशलपुर बासी ॥ नहिं बहुरत कोउ भवन बहोरे । सिगरे बँधेप्रेम के डोरे ॥ जस तसकै सब किये पयाना । करत अवधपति कीरति गाना ॥ दोहा ॥ रामबंधुयुत अवधपति सकल बरातीलोग । जनक सुयश बरणतचले ह्वैगो दुसह बियोग ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चलीबरात निशान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥

संग्रह० ॥ पृथक पृथक सब सुभग शृँगारा । हय गय रथ पैदलन कतारा ॥ करि दशयान यान असवारी । जयजय करै नकीब अगारी॥नृपके दुहुंदिशि द्वौ रथराजे । बिश्वामित्र बशिष्ठबिराजे॥

रघुराज०समुच्चयछंद ॥ नरनाहपाछे बनकआछे सजत गजन सवार । रघुबीर भरतहु लषण रिपुहन सहित सब सरदार ॥ मंडित अतिहि मातंगमंडल चलेरघुकुलबीर । पुनिचलीं चारिहु पालकी मिथिलानगरकी भीर ॥ पुनि सभ्य सुहृद महाजनौ बहु वणिक बलित बजार । रथ शकट बँड़वा बैलतलादे साजु अमित हजार । यहि भांति मिथिलानगरते कोशलनगरकी ओर । गवनी बरात । बतात सुख मिथिलेश यश चहुंओर ॥ यहि भांति दशरथ चक्रवर्ती कियो अवध पयान । याचक अयाचक करत थल थल देत बहु बिधि दान ॥ करतै पतोहन छोह क्षण क्षण लेत सुधि क्षितिनाह । नहिं तृषित होहिं न क्षुधित होहिं न श्रमित कोउ मग माह ॥ मिथिलेश के बहु सचिव तहँ सब सैन आगे जात । जे वासके थल रचे प्रथमहिं तिन बतावत जात ॥ जहँ होइ नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन निवास । भरि पान भोजन बस्तु अगणित बने बिबिध अवास ॥ यहि भांति

मिथिला नगरते जब चली अवध बरात । मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उरन मोदसमात ॥ अब चारि चार तुरंग दीजै अवधपुर पठवाय । बर अवधपुर सब भांति ते उतदेहिं सुभग सजाय ॥ कोशल नगरके प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय । आवत बरात बिदेहपुर ते बर बधून लेवाय ॥ तेहि भांति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आसु । परिछन तयारी करहिं भारी सहित बिबिध हुलासु ॥ तुम पूंछि लेहु बशिष्ठ से परिछन सदिन जेहि द्योस । सोइ पत्र माहँ लिखाय भेजो सहित आनंद होस ॥ सुनि स्वामि शासन सचिव कीन्हो सपदि सकल बिधान । चढ़ि कै तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान ॥ कोशल नगर घर घर सुचर बरजाय तिमि रनिवास । दीनेउ जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास ॥

संग्रह० ॥ जे मारग के निकट निवासी । सुनि धाये सब परम हुलासी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ रामहिं निरखि ग्रामनर नारी । पाय नयन फल होहिं सुखारी ॥

रघुराज० ॥ कियेउ पंथ दिन चारि बसेरा । लहेउ जनक सतकार घनेरा ॥ जनक सचिव कीन्ह सेवकाई । कोउ न बिदेह निवास जनाई ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ बीच बीच वर बासकरि मग लोगन सुख देत । अवध समीप पुनीत दिन पहुँचीआय जनेत ॥ चौपाई ॥ हनेनिशान पणवबर बाजे । भेरि शंखध्वनि हय गय गाजे ॥ झांझ बीन डिंडिमी सुहाई । सरसराग बाजहिं सहनाई ॥

रघुराज० ॥ योजन भरिमहँ परिगे डेरा । जानि काल्हि दिन परिछनकेरा ॥ जनक सचिव सबजे सँग आये । मांगेबिदा नृपहिं शिरनाये ॥ देनलगे नृप संपति नाना । लिये न मन अनुचित

अनुमाना ॥ करि नृपकी सिगरी सेवकाई । गये जनकपहँ मांगि बिदाई ॥ कह्यो तुरंत सुमंतहि भूपा । परिछन सुदिवस कालि्ह अनूपा ॥ दोहा ॥ धेनुधूरिबेलाबिमल होईनगरप्रवेश । दूतभेजि जनवाइयो सब रनिवासि निवेश ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलउन्नीसवांप्रकरणसमाप्तः १६ ॥

श्रीसीतारामोजयति ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

बीसवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराज श्रीरामचंद्रजी का बंधुनयुत बिवाहकरके बरात सहित अयोध्यापुरी में आगमन पश्चात् बिबिध नियोगाचार होकर षट्ऋतु बिहार बर्णन ॥

संग्रह०दोहा ॥ पौषसुदी चौदशि दिवस बाहर रहीबरात । कालही अवध प्रवेशहै कहत लोग हरषात ॥

रघुराज०चौपाई॥तुरतसुमंतदूतपठवाये।खबरिनगररनिवासजनाये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुरजन आवत अकनि बराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥ निज निज सुंदर सदन सवाँरे । हाटबाट चौहट पुरद्वारे ॥ गलीसकल अरगजा सिचाई । जहँ तहँ चौकैं चारु पुराई ॥ बना बजारु न जाय बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥ सफल पुंगिफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥ लगे सुभग तरु परसत धरणी । मणिमय आल बाल कल करणी ॥ दोहा ॥ बिबिध भांति मंगल कलश गृह गृह रचे सवाँरि । सुरब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥ चौपाई ॥ भूपभवन तेहिअवसर सोहा । रचना देखि मदन मन मोहा ॥ मंगल सगुन मनोहरताई । ऋधि सिधि सुख संपदासुहाई ॥ जनु उछाहसब सहज सुहाये॥ तनु धरिधरि दशरथगृह आये॥ देखनहेतु राम बैदेही। कहहु लालसा होइ न केही ॥

रघुराज० ॥ सजत बरातिन सुखित अपारा । निशा सिरानि भयो भिनसारा ॥ प्रात कर्मकरि भोजनकीन्हे । अवध प्रवेशकरन मन दीन्हे ॥

संग्रह० ॥ पौषपूर्णमासीदिन आजू।बेगिसुमंत सजाउसमाजू॥ सुनि नृपबचन सचिव हरषाई । सब बरात महँ खबरि कराई ॥

रघुराज० ॥ दुपहर भीतर भई तयारी । त्वरा अवधपुर देखन भारी ॥ होत प्रभात कुमारन काहीं । कह्यो भूप बेलमो अब नाहीं ॥ करि मज्जन भोजन अति आसू । सजे कुँवरसब सहित हुलासू ॥ सुभग अंगना रंग पोशाका । जेहि लखि सुर नर मुनि मन छाका ॥ लसै मणीन मौर शुभ शीसे । रतन बिभूषण अग-

णित दीसे ॥ कटि कृपाण धनु कंध सोहाई । युग तूणीर महा छबि छाई ॥ काम बिनिन्दक सकल कुमारा । बरणि कौन कवि पावत पारा ॥ तेहि दिन नृपहु पीत पट धारे । गवन हेत गज भये सवारे ॥ करि बहु बिनय बशिष्ठहु काहीं । भूप चढ़ाये सिंदुर माहीं ॥ दोहा ॥ भये अनंग समान सब कुवँर तुरंग सवार । बजे नगारे निकर तहँ बार बार तेहि बार ॥

कृपानिवास० चौपाई ॥ छत्र चवँर रविमुखी बिराजैं । मुक्ता पुष्प बरषि छबि छाजैं ॥ तिन पाछे आछे बनि आये । राज कुवँर बहु रूप सोहाये ॥

रघुराज० ॥ सजी सैन सुन्दर चतुरंगा । चले बराती भूपति संगा ॥ आगे शुतर सवार अपारा । सोहि रहे गन्धर्व अकारा ॥ तिनके पाछे पैदर जाती । निज निज युत्थ बरन बहु भांती ॥ लसहिं गजन पर बिबिध पताका । मनु तिन महँ अरुझत रवि चाका ॥ बहुनागनपर नौबत बाजे । तिनके गुरु गैयर गनगाजे ॥ तिमि बाजहिं बिशाल करनाला । तूरज भेरी शोर रसाला ॥ पीछेचले पैदरनकेरे । तिनपीछे असवार निबेरे ॥ चढ़ि तुरंग जांगरे अलापै । मनहुं सात सुर सुरपुर थापै ॥ छाय रही ध्वनि बाजन केरी । अंबर अवनि दिशानन घेरी ॥ तहँपरिकर अगणित गति सीछे । चले सवारन के पुनि पीछे ॥ कनकछरी बल्लम बहु सोटे । गवने सुंदर जोटे जोटे ॥ परिचर बृन्दहि मध्य सिधारे । पंचसहस बर राजकुमारे ॥ दोहा ॥ राजकुमारन मध्यमें सोहत चारिकुमार । तिनके पीछे गजचढ़ेउ गवनेउ अवध भुआर ॥ चौपाई ॥ तहँ बशिष्ठ आदिक मुनिराई । चढ़े बितुंडन आनँद छाई ॥ रघुबंशी सरदार अपारा । सजे मतंगन भये सवारा ॥ तिनकेपीछे चली पालकी । चारिबधुनकी रतनजालकी ॥ चली जनकपुर सैन अपारा । दासी दास अनेक उदारा ॥ बहलशकट पालकी महाफा । परे जरीके जिनपरसाफा ॥ तिनकेपीछे चली बजारा । धनिक बणिक बनि बनक अपारा । कहहिं परस्पर सक-

ल बराती। देखौं कोशलपुरी देखाती ॥ हल्लापरयो अवधपुर जाई। अब बरात पुरनेरे आई ॥ आतुर सजे अवधपुर बासी। दूलह दुलहिनि देखन आसी ॥ चले लेन आशुहि अगवानी। सकल पुण्यफल आपनजानी ॥ खरभर परयो नगर महँ भारी। कोउ गवने कोउ करत तयारी ॥ जानि अर्ध योजन रजधानी। नृप सुमंत सों गिरा बखानी ॥ दोहा ॥ चलैं यहांते अब सचिव दुलहिनि दूलहसंग। बाजी पीछे पालकी बजत बाज बहु रंग ॥ चौपाई ॥ इततें कौशल्यादिकरानी। बोलिसुआसिनिअतिहरपानी॥

कृपानिवास० ॥ प्रमदा मुदा बरात आगमन। सजहिं सुमंगल साज प्रेम सन ॥

रघुराज० ॥ पृथक पृथक सिगरी महरानी। पठईं कलश चलीं अगवानी ॥ कलश शीश धरि गावत नारी। भूषण बसन सुरंग सवाँरी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ यूथ यूथ मिलि चलीं सुआसिनि। निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि ॥ सकलसुमंगल सजी आरती। गावहिं जनु बहुभेष भारती ॥

रघुराज ०॥हरददूबदधि तन्दुल थारा। शिरधरि चलीचारुश्रृंगारा॥ करहिं भामिनी मंगल गाना। बाजा बजहिं अनेक बिधाना ॥ राजत रजत कनककलशावलि। तिनमहँ दिपाति दिव्य दीपावलि ॥ प्रमुदित पुरजन वृन्दन वृन्दा। आगूलेन चले सानन्दा ॥ कोउ मतंग कोउ चढ़े तुरंगा। चले धनिक कोउ चढ़े सतंगा ॥ वृहत वृषभ बहलन महँ नांधे। चढ़े सुखासन कोउ जन कांधे ॥ कोउ पैदर आये नर नारी। बाल बृद्ध उमहे सुखभारी ॥ अवध प्रजा निरखन अभिलाषन। आये अगवानी कहँ लाखन ॥ इत बरात उत पुरजन रेला। मानहुं तजे सिंधु युगबेला ॥ आवत मिले अवधपुर बासी। दूलह दुलहिनि देखन आसी ॥ दोहा ॥ यद्पि रह्यो मैदान बहु कसमस परयो अघात। चली अवधपुर

पंथ तब मंदहि मंद बरात ॥ मिलहिं बरातिन पौरजन प्रथमहिं यही बताय । दुलहिनि दूलह दुहुँनको दीजै द्रुतहि देखाय ॥ चौपाई ॥ कहहिं कहां सुंदरि सुकुमारी । मिथिलापुर की राजकुमारी ॥ कहँ रघुनायक रूपसलोना । कौन समय परछन अब होना ॥ भरत लषण रिपुहन कहँप्यारे । धौं तुरंग धौं नाग सवाँरे ॥ कहँ नरेश कौशलाधिराजा । जाहि न तुलत आज सुरराजा ॥ महा डोल दुलहिनिके चारी । देहु बताय होउउपकारी ॥ हरषि बराती हाथ उठाई । दुलहिनि दूलह देत बताई ॥ पाछे धाइ मिलैं जे आई । ते पूंछहिं देखे रघुराई ॥ नगरनारि नर नागर नीके । अभिलाषी देखन सियपीके ॥ भुकहिं भिलहिं भभकहिं भपि भाकहिं । तरल तमकतिरछे तुकिताकहिं ॥ लुकहिं लजहिं ललकहिं लरखाहीं । चितवहिं चकित चुभे चहुँ घाहीं ॥ जिनहिं प्रान प्रिय जानकि जानी । पौर दशा किमि जायबखानी ॥ भयो अवध आनन्द अपारा । कसमस परत करत संचारा ॥ दोहा ॥ नारिवृंद कलशावली कौशल्या की आय । खरी भई तहँ रामके आगे अतिहिसोहाय ॥ चौपाई ॥ पुनि कैकेयीकेरि पठाई । कलशावली सोहावनि आई ॥ भेजी सुभग सुमित्रा केरी । आईकलशावली घनेरी ॥ औरहु रानिन केरि पठाई । कलशावली समीपहि आई ॥ कामिनि कनककुंभ धरिकेती । गावतमंगलगीत सचेती ॥ पुरबासिनी अनेकन आई । संग मंगला मुखी सुहाई ॥ गावहिं ब्याह गीत सुरलाई । महा मनोहर धुनि रहि छाई ॥ बाजन बजहिं अनेकन भांती । नाचहिं बारबधू सुखमाती ॥ नचहिं परिचरी पट पहराई । अधिक अधिक आनँद उमगाई ॥ कौशल्यादि तीन महरानी । तिनकी पठई सखी सयानी ॥ सुंदर दधि अक्षत को टीको । दीन्ह्यो राम भालमहँ नीको ॥ मनु असुरनतें आशुरिसाई । बसेउशुक्र शशिमंडल आई ॥ लषण भरत रिपुहनके भाला । दधिटीको दीन्हो सब बाला ॥ दोहा ॥ पुनि दुलहिनि पालकि पटन नेसुक नारि उघारि । दधिटिकुली देती

भई मंजुल पाणि पसारि ॥ चोपाई ॥ दैटिकुली गावत गजगामिनि । आगे चलीं भरी सुख भामिनि ॥ आई अगणित पुरजन नारी । करहिं निछावरि मणि गण वारी ॥ दुलहिनि दूलहको नजिकाई । लेतीं दोउकर रोग बलाई ॥ प्रविशे पुरजन दलमहँ जाई । राम चरण परसहिं सुख छाई ॥ इतरजाति सब करहिं प्रणामा । आशिषदेहिं बिप्र तप धामा ॥ तहँ कौतुक कीन्हो भगवंता । मिलेउ प्रजन करिरूप अनंता ॥ जान्योसबैमिलेहमकाहीं । पर्यो जनाय भेदकोहुनाहीं ॥

कृपानिवास० ॥ मोदकुलाहल नगर अपारा । चढ़ीअटा देखैं नृपदारा ॥ आगम जनु अरुणोदय सुखसे । जननी मन पंकजवत बिकसे ॥ सकल मनोरथ भ्रमर जगेजनु । परमानंद सुगंध पगे मनु ॥ मंगलगीत उचारति नारी । मानहु प्रात शकुन ध्वनि प्यारी ॥ बिगत बिरहतम सज्जनसुचहीं । जगेभाग्य दुखआलस मुचहीं ॥ सुकृत जनु बंदीजन गावैं । भोर नौबतें नेह बजावैं ॥

संग्रह० ॥ रामदिवाकर आगमजाने । चक्रवाक जनु मनहुलसाने ॥ देखि बरात परम हरषानी । उतरीं अटाते कारजजानी ॥

श्रीतुलसी० चोपाई ॥ भूपति भवन कुलाहलहोई । जाइनबरणि समयसुख सोई ॥ कौशल्यादि राम महतारी । प्रेम बिवश तनदशा बिसारी ॥ दोहा ॥ दियेदान बिप्रन बिपुल पूजि गणेश पुरारि । प्रमुदित परमदरिद्र जनु पाइपदारथ चारि ॥ चोपाई ॥ प्रेम प्रमोद बिवश सबमाता । चलहिं न चरण शिथिल सब गाता ॥ रामदरशहित सब अनुरागीं । परिछनसाज सजन सब लागीं ॥ बिबिध बिधान बाजने बाजे । मंगलमुदित सुमित्रासाजे ॥ हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पुंगिफल मंगल मूला ॥ अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि

तुलसि बिराजा ॥ छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुन जनु नीड़ बनाये ॥ शकुनसुगन्ध न जाहिं बखानी । मंगल कलश सजहिं सब रानी ॥ रची आरती बिबिध बिधाना । मुदितकरहिं कल मंगलगाना ॥ दोहा ॥ कनकथार भरि मंगलन्ह करकमलनलियेमातु ॥ चलीं मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गातु ॥ चौपाई ॥ धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घनघमंड जनुछयऊ ॥ सुरतरु सुमनमाल सुरबरषहिं । मनहुँ बलाक अवलिमन करषहिं ॥ मंजुलमणिमय बन्दनवारे । मनहुं पाकरिपु चापसवाँरे ॥ प्रगटहिं दुरहिं अटनपर भामिनि । चारुचपल जनुदमकहिं दामिनि ॥ दुन्दुभि ध्वनिघनगरजहिं घोरा ।याचक चातक दादुरमोरा ॥ सुर सुगंध बहु बरषहिं बारी । सुखीसकल शशिपुर नरनारी ॥

रघुराज० ॥ मंद मंद तब चली बराता । पुरजन करत परस्पर बाता ॥ हमहिंमिले रघुनन्दनआई । पूंछीबिबिधभांति कुशलाई ॥ को जग राम समान सनेही । कहहु प्राणप्रिय आज न केही ॥ पुनि पुरजन नरनाथ जोहारे । कृपादृष्टि नृप सबन निहारे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ समयजानि गुरु आयसु दीन्हा । पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा ॥ सुमिरि शंभु गिरिजागण राजा । मुदित महीपति सहित समाजा ॥ दोहा ॥ होंहिं शकुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुभी बजाइ ॥बिबुधबधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ चौपाई ॥ मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिंयश तिहुंलोक उजागर ॥ जय ध्वनि बिमल बेद बरबानी । दशदिशि सुनिय सुमंगल

सानी ॥ विपुल बाजने बाजनलागे। नभसुर नगरलोग अनुरागे ॥ बने बराती बरणि न जाहीं। महामुदित मन सुख न समाहीं ॥

कृपानिवास० ॥ सुर बिमान संकुल नभछाये। जयध्वनिकरि पुष्पनि झरिलाये ॥

रघुराज० ॥ मच्यो कोलाहल नगरमँझारी। देखन झुके झुंड नर नारी ॥ झर झर बेत्रपाणि प्रतिहारा। भरभररोंकत मनुज अपारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुरबासिन तब राउ जोहारे। देखत रामहि भये सुखारे ॥ करहिं निछावरि मणिगण चीरा। बारि बिलोचन पुलक शरीरा ॥

कविकेशवदास०सुंदरीछंद ॥ पुरतिय मंदिरऊपर सोहति। शंकर शैलचढ़ी मनमोहति ॥ पद्मिनिऊपर पद्मिनि मानहुं। रूपनि ऊपर दीपति जानहुं ॥ कीरतिसीयौ संयुत सोहति। श्रीपतिकी जनु मूरति मोहति ॥ ऊपर मेर मनौमनरोचन। स्वर्णलता जनु लोचति लोचन ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ आरति करहिं मुदित पुरनारी। हरषहिं निरखि कुँवर बरचारी ॥

रघुराज० ॥गावहिंमंगलमंजुलगीता।रामसीय लैनामपुनीता ॥

कविकेशवदास० तोटकछंद ॥ बरषैं कुसुमावलि एक घनी। शुभ शोभित कामलतासी बनी ॥ बरषैं फल फूलन लायककी। जनु है तरुणी रतिनायक की ॥

संग्रह०चौपाई ॥ दुलहिनिन देखन चित चाई। परम प्रमोदित निकट सिधाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ शिविका सुभग वहार उघारी। देखि दुलहिनिन होहिं सुखारी ॥

कृपानिवास० ॥ निरखि जानकी छबि चमकाई । कुँवर रूप अ-
भिमान सकाई ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ इहि बिधि सबहिन देत सुख आये
राज दुवार । मुदित मातु परिछन करहिं बधुन समे-
त कुमार ॥

संग्रह०चौपाई ॥ साधु सुसज्जन सुनो सुजाना । परिछन सुंदर
सहित बिधाना ॥ समयजानि परिछन नृपराई । कह्यो सुमंतहि
निकट बुलाई ॥ वृहद बिमान आशु इत लावो । दूलह दुलही-
निन बैठावो ॥

रघुराज० ॥ तहां तुरंत सुमंत सिधारा । बिमल बिमान बिशद
बिस्तारा ॥ बाहक दशषट ताहि उठाये । आशु सुमंत संग
महँ लाये ॥ मंडप कनकजटित रतनाली । बनी चहूंकित
हीरन जाली ॥ चातक कीर कपोतहु मोरा । निर्मित रतन
करत कलशोरा ॥ रतन वृक्ष बहुरंग सोहाये । माणिक फल मु-
कुता सुमभाये ॥ मुक्तन झालरि झूलतझापी । रतन कलश रवि
सरिस प्रतापी ॥ भिन्न भिन्न सुन्दर अस्थाना । मनहुं मदन निज
कर निरमाना ॥ तहँ सुमन्त रामहिं युतभाई । ल्याय बिमानहिं
दिये चढ़ाई ॥ पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दई बिमानहिं
निकट धराई ॥ वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरषनको निज
हाथ हटाई ॥ पुनि दुलहिनि पालकी उतारी । दई चढ़ाय बि-
मानहिं भारी ॥ सुन्दर दुलहिनि दूलहचारी । सखी सुथल नि-
ज निज बैठारी ॥ दोहा ॥ रतन खचित झालर मुकुत दीन्हें पर-
दन डारि । बोले बिबिध नकीब तब को सुख कहै उचारि ॥
चौपाई ॥ नृप शासन लहि उठ्यो बिमाना । बाजनबजत बिबिध
बिधिनाना ॥ तेहि बिमान के चारिहुं ओरा । सखि मण्डल सो-
हत नहिं थोरा ॥ चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक मा-
च्यो मग शोरा ॥ तेहि बिमान पाछे छबिछाजा । सिंधुर चढ़े

लसत महराजा ॥ आगेकरि सियराम बिमाना। परिछन लखन भूप हुलसाना॥रामसरिससुत सियपतोहू। कहैको दशरथसुख संदोहू ॥ दोहा ॥आईसुरभीरज समय कियोबशिष्ठ उचार।पहुंच्यो बिमलबिमान तब अंतहपुरकेद्वार ॥ चौपाई॥ द्वारचौक अंतहपुरके- री। अति बिस्तार अनूप निवेरी॥दियो चौकते पुरुष हटाई।नारि वृंद सोहत तहँआई ॥ मध्यचौकमहं धरयो विमानू। उयो सांझ बेला जनु भानू ॥ छरी वेत्र बल्लमकरधारिनि। कौशल्याशासन दिय नारिनि॥ फरककरहु सबनारि उताला। आयो अब परि- छनको काला ॥ प्रतीहारिनी लगीं हटावन। झुकहिं नारि दे- खन मनभावन ॥ पुनि कौशल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल असबानी॥ खबरि जनावहु भूपहिजाई। परिछन हित आवहिं अतुराई ॥ गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिनकाहीं ॥ कौशल्या बिनती अस कीन्ही। यह संपाति अनुपम बिधिदीन्ही ॥ आवहिं सुखलूटहिं तेहिकेरे। कृपानयन नारायणहेरे ॥ सखीबचनसुनि अवधनरेशा। उतरिचलेउ तजि दियो गजेशा ॥ दोहा॥ महिषीमंडल महिपमणि सोहत सुभग निशंक। मनु तारामंडल विमल उयउ नवीनमयंक ॥ चौपाई ॥ त्रिशतसाठि अरु त्रयमहरानी। लावनसखी सजींछबिखानी॥ बजैं मनोहर बाज सोहावन। नाचहिं सखी मोद उपजावन॥ सजीं आरती थारहजारन। झोलीभरी रतन सखिवारन ॥ स- हित पद्दरानिन कुलदीपा। गये बिमानसमीप महीपा॥ पढ़हिं स्वस्त्ययन विप्रननारी। रानिन विधि दरशावहिं सारी ॥ जाय बिमान निकट महराजा। संयुत रानिन रुचिरसमाजा ॥ गुरु बशिष्ठकहँ लिये बुलाई। आगे ठाढकिये शिरनाई॥ गुरुपतिनी अरुंधती आई। मनहुं पतिव्रत मूर्त्ति सोहाई ॥ कौशल्या केकयी उचारी।गुरुपत्नी पटदेहुउघारी ॥ तहँ अरुंधती अतिसुखछाई। निजकरसों पटदियो उठाई ॥ परदीखि अनुपम छबिधामा। दु- लहिनि दूलह सीतारामा॥ परयोचौंध सबके चखमाहीं। मनु

चपला चमकी चहुँघाहीं ॥ दोहा ॥ देखिपरे तब राम सिय सु-छबि छटाक्षितिछाय । मनहुं सूरशशि एकसंग कढ़े जलदबिल गाय ॥ चौपाई ॥ गुरुआइनि पद प्रभु शिरनाये । लाज बिवश पुनि शीशनवाये ॥ पुनि क्रमसों अरुंधती जाई । तीनहुंके पट दिये उठाई ॥ दूलह दुलहिनि देखनहेतू । भुकींनारि करि बहु बिधि नेतू ॥ कौशल्यादि तीनि पटरानी । चढ़ीं बिमान लखन हुलसानी ॥ कौशलेशकहँ लिये बोलाई । परिछनकरहु कही मुसकाई ॥ गुरुआगेकरि गयेमहीपा । ठाढ़े पूत पतोहसमीपा ॥ गुरु पितुमातहि लखि रघुराई । नायशीश पुनि रहे लजाई ॥ गांठिजोरि तीनिहुं पटरानी । खड़ेउ भूप गुरु आयसु मानी ॥ मणिन जटित बरकंचनथारी । कौशल्या अपनेकर धारी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करहिं आरती बारहिंबारा । प्रेम प्र-मोद कहै को पारा ॥ भूषण मणि पट नानाजाती । क-रहिं निछावरि अगणित भांती ॥ बधुनसमेत देखिसुत चारी । परमानंदमगन महतारी ॥ पुनि पुनि सियरामहिं छबि देखी । मुदित सकल जगजीवन लेखी ॥ सखीसीय मुख पुनि पुनि चाहीं । गानकरहिं निज सुकृतसराहीं ॥

रघुराज० ॥ खड़ी भूपयुत तहँ कौशिल्या । जनु गौतम युत लसति अहिल्या ॥ दशरथ कौशिल्याकी आजू । बरणिसकै को भागदराजू ॥

श्रीतुलसी० ॥ बरषहिं सुमन क्षणहिंक्षण देवा । नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥ देखिमनोहर चारिउ जोरी । शा-रद उपमा सकल ढँढोरी ॥ देतनबनै निपटलघु लागी । यकटक रहीं रूप अनुरागी ॥ दोहा ॥ करहिं निछावरि आरती उमँगि उमँगि अनुराग । बर दुलहिनि अनु-रूप लखि सखी सराहहिं भाग ॥

रघुराज॰ ॥ सखी सयानी निकट लखि राम सीय छबिदेखि। बोली कौशल्या हुलसि बिभ्रम भयो बिशेखि।।पद।। देखोतोसखीरी मेरो बारो मिथिलाते आयो। धौं मोहींको होतमहाभ्रम धौंसबको अस रूप जनायो ॥ जनक कुमारी लागतकारी मोरकिशोर गोर छबिछायो। मिथिलाकी नटखटी नागरी जादूपढ़ि टोना डरवायो ॥ हँसिबोली सजनी रानी सों स्वामिनि मोहिं सत्य अस भायो। राम सुछबि सियश्यामा लागत सियछबि रामगोर दरशायो ॥ करौ भागवंतिन परिछन अब अससुख त्रिभुवन कोउ नहिं पायो। दीन सुछबि सबगुण समेटिकै बिधि रघुराज कुवँर जनमायो ॥ दोहा ॥ कह्यो बशिष्ठहि कौशिला लै अरुंधतीसंग। प्रथम करहु परिछन तुमहिं करि बिधान श्रुतिसंग ॥ पद ॥ गुरु अभिमतसुनि अति हुलसान्यो। लै अरुंधती गांठिजोरिकै धनि धनि भाग आपनी मान्यो ॥ रतनखचित लै कनकथार करदधि अक्षत हरदी द्रुत सान्यो। दुलहिनि दूलह भाल बिशालहिं दै टिकुली उरआनँद आन्यो ॥ लगेउतारन आरती दंपतियकटक निरखि जन्म धनि जान्यो। श्रीरघुराज काजकरि मुनिवर आजु सुकृत फल मन अनुमान्यो ॥ दोहा ॥ कह्योभूपसों गुरु बचन गांठिजोरि अब आय। परिछनकरहु भुआलमणि बेद बिधान बनाय ॥ पद ॥ होन लग्यो परिछन तेहिकाला। करि कर थार भुआल रानियुत लगेउ उतारन आरति हाला ॥ छकि छकि पूत पतोह बदन लखि बार बार नृप भयेउ निहाला। कौशिल्या केकयी सुमित्रा लैलीन्हीं आरती उताला ॥ लगी आरती उमँगि उतारन दुलहिनि दूलहको दैमाला। पूत पतोहुनको मुखदेखत जननी आनँद लह्यो बिशाला ॥ श्रीरघुराज की लेत बलैयाजन्म जन्म को मिटयो कसाला। लई लुड़ाय आरती निजकर लगे उतारन पुनि महिपाला ॥ पद ॥ पुनि रानी आरती उतारी। कौशल्या केकयी सुमित्रा बार बार छबि छकैं निहारी ॥ बहुरि उतारति मुशल मथानी दीप उतारि फोरि पुनि डारी।

बार बार पुनि सलिल उतारैं लोक मंत्र बहुभांति उचारी ॥ देखहिं पूत पतोहुनको मुख क्षण क्षण मणिगण निजकर वारी। यहि बिधि चारिहु कुवँरन को करि परिछन रानी लहि सुख भारी ॥ चारिहु दुलहिनि दूलह को तब लिय बिमानते आशु उतारी । होन लगी निउछावर तेहिक्षण मणि गण पट भूषण जरतारी ॥ राईलोन उतारि सखीजन पढ़ि मंगल मनु पावक-डारी । गावहिंमंगल शोरमनोहर श्रीरघुराजजाहिंबलिहारी ॥

श्रीतुलसी०पद ॥ मुदित मन आरतीकरैं माता । कनक बसन मणि वारिवारि बर पुलकि प्रफुल्लित गाता ॥ पालागनि दुलहिनिहिं सिखावति सरिस सासु सत साता । देहिं अशीश ते बरिस कोटि लगि अचलहोउ अहिवाता ॥ रामसीय छबि देखि युवति जन करहिं परस्पर बाता । अब जान्यो सांचेहु सुनहुसखि कोबिद बड़ो बिधाता ॥ मंगल गान निशान नगर नभ आनँद कह्यो न जाता । चिरजीवहु अवधेश सुवन सब तुलसिदास सुखदाता ॥ दोहा ॥ निगम नीति कुलरीति करि अर्घ पांवड़े देत । बधुन सहित सुत परछि सब चलीं लेवाय निकेत ॥

रघुराज०पद ॥ दुलहिन दूलह चलीं लेवाई । सकुचति सिय सासुनको निरखति चलति मंद पद पद्म उठाई ॥ पग आगे सखि धरहिं ठीक री सिय पग गहि तेहि देहिं छुआई । कहहिं रामको लाल उठावहु प्रभुजननी लखि रहै लजाई ॥ पुनि प्रभु को करकमल पकरि अलिलेहिं ठीकरी हठिउठवाई । यहिबिधि हास विलास विविध विधि करहिं सखी कौतुकदरशाई ॥ गावत बाज बजावत बहुबिधि नाचहिं भाउ बताय बताई । बैठाई रघु-राज बधूबर रंगनाथके मंदिर ल्याई १ करवावतीं बर बधुन कर

श्रीरंग पूजन बिधि सहित। सिय रामको सिखवहिं सखी इनकी कृपा मेटति अहित॥ करिछोह पूत पतोहुको बहुदान करवावहिं सुखित। सब रंगनाथ मनावतीं निज ओढ़ि अंचल चितचहित॥ सिय राम पूतपतोहु मिलहिं अनेक जन मन जनैजित। युग युग जियैं जोरी सु चारिहु लखैं हम यहि भांति नित॥ यहि विधि मनावैं पुनि खेलावैं द्यूत दोहुन मोदमित। कोउ कहैं मोर पतोह जीती कहैं कोउ मम लाल जित॥ रनिवास हास बिलास यहि बिधि होत सखिगण अति हँसित। शिरनीचकरि दूलह दुलहिनी बैठि गुरुजनको लजित॥ यहिभांति लोकाचार करि सब बरबधुन लैगईं तित। जहँ सभा मंदिर बन्यो सुंदर बिशद मणिगण ते जटित॥ तहँमातु कौशल्या सुमित्रा केकयी कछु है श्रमित। बैठाय पूत पतोह आगे सुछबि लखि सबभइ चकित॥ कुलनारि सब रघुबंशकी देखहिं दुलहिनी आइ इत। रघुराज अंगनमें बिराजत देव जय जय आलपित॥

संग्रह०चौपाई॥ दो मुनि सँगलैके महराजा। आये जहँरहि रानि समाजा॥ भूप ऋषिन लखि उठि सबरानी। बैठाये सिंहासन आनी॥ कह्यो बशिष्ठ रानि सुनि लीजै। बर दुलहिनि को पूजनकीजै॥ सुनि गुरुबचन रानि सुख पाई। कनकासन नवीन मँगवाई॥

श्रीतुलसी०॥ चारिसिंहासन सहज सुहाये। जनुमनोज निज हाथ बनाये॥ तिनपर कुँवर कुँवरि बैठारे। सादर पायँ पुनीत पखारे॥ धूप दीप नैवेद्य वेदबिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि॥बारहिं बार आरतीकरहीं। ब्यजन चारु चामर शिर ढरहीं॥ बस्तुअनेक निछावरिहोहीं। भरीप्रमोद मातु सबसोहीं॥ पावा परमतत्त्व जनुयोगी। अमृत लही जनुसंतत रोगी॥ जन्म रंक जनु पारस

पावा । अंधहि लोचन लाभ सुहावा ॥ मूक बदन जनु-शारद छाई । मानहुँ समर शूर जयपाई ॥ दोहा ॥ यहि सुखते शतकोटिगुण पावहिं मातु अनंद । भाइनसहित ब्याहि घर आये रघुकुलचंद ॥ लोकरीति जननी कराहिं बर दुलहिनि सकु चाहिं । मोद विनोद बिलोकिबड़ राम मनहिं मुसुकाहिं ॥ चौपाई॥ देवपितरपूजेबिधिनीके । पूजे सकलबासनाजीके ॥ सबहिंबंदि मांगहिं बरदाना । भाइनसहित रामकल्याना ॥ अंतरहित सुर आशिष देहीं । मुदित मातु अंचलभरि लेहीं ॥

रघुराज० ॥ तेहिअवसर अवास आनंदा । केहिबिधि बरणौं मैं मतिमंदा ॥ रत्नदीप फैली उजियारी । नाचिरहीं सनमुखसुर नारी ॥ गुरूबशिष्ठ सहितमहराजा । गेबाहेर जहँ भूपसमाजा ॥ चढ़िसिंधुर मंदिर तहँ गवने । हिमगिरिसम उतंग जे भवने ॥ पुरशोभा निरखहिं महिपाला । नहिंअमरावति कौनेहुकाला ॥ लसहिं कनकके तुंगपताके । मनहु भवन त्रिभुवनताराके ॥ कदली क्रमुक खंभ प्रतिद्वारा । कनकपत्र फल फूलअपारा ॥ हेम कुंभ दीपावलि सोही । खड़ेनारिनर सुखसंदोही ॥ वृन्दवृन्दबर बन्दनवारा । चामीकरके चारु केंवारा ॥ धवलधाम हिमवान समाना । अटाअनेकन छटाअमाना ॥ दीपावलि सिगरेपुरमाहीं । खैरभैर थलथल चहुंघाहीं ॥ पुरजन अति आनंदरससाने । बित्तलुटावत नाहिं अघाने ॥ आयआय नरनाथ जोहारैं । देहिं नजरि बहु मणिगणवारैं ॥ बरणैकौन अवधपुरशोभा । सुर नर मुनि मानसलखि लोभा ॥ दोहा ॥ यहिबिधि निरखत नगर छबि सहितसमाज नरेश । कियो राजमंदिरसुखद समयबिचारि प्रवेश ॥ चौपाई ॥ बैठेउ सभाभवनमहँ जाई । राज समाज सहित छबिछाई ॥

संग्रह०॥अवधनरेन्द्र सुमंत हँकारे।परममनोहरबचनउचारे ॥

रघुराज० ॥ कह्योजो मिथिला ते जनआये । दुहितन के सँग जनक पठाये ॥ सहित सकल सोपत सतकारा । बास करावहु बिशद अगारा ॥ जाय सुमंत किये तेहि भांती । मिथिलापुरबासिन सोइ राती ॥ बसे सकल सुख सहित अगारा । वरणत दशरथ कृत व्यवहारा ॥

श्रीतुलसी० ॥ भूपति बोलि बरातिनलीन्हे । यान बसन मणि भूषण दीन्हे ॥ आयसु पाइ राखि उर रामहिं । मुदित गयेसब निजनिज धामहिं ॥ पुरनरनारि सकल पहिराये । घरघर बाजनलाग बधाये ॥ याचक जन याचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥ सेवकसकल बजनियांनाना । पूरण कीन्ह दान सनमाना ॥ दोहा ॥ देहिं अशीष जोहारिसब गावहिं गुणगण गाथ । तब गुरु भूसुर सहितगृह गवनकीन्ह नरनाथ ॥ चौपाई ॥ जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्हा । लोक वेदबिधि सादरकीन्हा ॥ भूसुर भीर देखि सबरानी । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥ पायँ पखारि सबहि अन्हवाये । पूजि भली बिधि भूप ज्येंवाये ॥ आदर दान प्रेम परिपोषे । देत अशीष चले मनतोषे ॥ बहुबिधि कीन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा ॥ कीन्हि प्रशंसा भूपति भूरी । रानिनसहित लीन्ह पगधूरी ॥

अग्रदासपद० ॥ ऋषिकी लेत बलैया रानी । जिनके संग सद्य फलपाये अद्भुत दुलहिनि आनी ॥ सूरजबंश बिषे हम सुनसखी ऐसी सुनी न देखी । रूप शील शोभा गुणसागर सबहि सब बर बधू बिशेखी ॥ मुनिकी कृपा जनकसे समधी अलभलाभ मैं पा-

यो । कर पुट जोरि कहत कौशल्या भयो मनोरथ भायो ॥ विद्या निपुण किये सुत मेरे वरणौं केतिक बाता । कौशिक मुनिपर मन धनवारत अग्रदास बलिजाता ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भीतर भवन दीन्ह बरबासू । मन जोगवत सब नृप रनिवासू ॥ पूजे गुरुपद कमल बहोरी । कीन्ह विनय उर प्रीति न थोरी ॥ दोहा ॥ बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश । पुनि पुनि बंदत गुरुचरण देत अशीश मुनीश ॥ चौपाई ॥ विनय कीन्ह उर अतिअनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे ॥ नेगमांगि मुनिनायक लीन्हा । आशिर्बाद बहुत विधि दीन्हा ॥ उरधरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता ॥ बिप्रबधू सब भूप बोलाये । चीर चारु भूषण पहिराये ॥ बहुरि बुलाय सुआसिनि लीन्हीं । रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्ही ॥ नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥ प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भांति सनमाने ॥ देव देखि रघुबीर बिवाहू । बर्षि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥ दोहा ॥ चले निशान बजाय सुर निज निज पुर सुखपाय । कहत परस्पर राम यश प्रेम न हृदय समाय ॥ चौपाई ॥ सब विधि सबहि समादि नरनाहू । रहा हृदय भरिपूरि उछाहू ॥ जहँ रनिवास तहां पगुधारे । सहित बधूटिन कुवँर निहारे ॥ लिये गोदकरि मोद समेता । को कहिसकै भयो सुखजेता ॥ बधू सप्रेम गोद बैठारी । बारबार हियहर्षि दुलारी ॥ देखि समाज मुदित रनि-

वासू। सबके उर आनँद किय बासू॥ कह्यउ भूप जिमि भयउ बिवाहू। सुनि सुनि हर्ष होहिं सब काहू॥

रघुराज० ॥ कोउ नहिं जनक सरिस सतकारी। मैं लीन्हेउँ सब भुवन निहारी॥ गये बरात मनुज बहु लाषा। को अस जेहि न पूरि अभिलाषा॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जनकराज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई॥ बहुविधि भूपभाट जिमि बरणी। रानी सब प्रमुदित सुनि करणी॥

रघुराज० ॥ सुनि सुनि अति हरषहिं सबरानी। कौशल्या बोली तबबानी॥ सुनहु भूप ममति अकुलानी। जियसंदेह न जाय बखानी॥ डरतरहे गवनत अँधियारे। कुँवर कौन विधि निशिचर मारे॥ कथत उठावत भाजन हाथा। हरधनु किमि टोरयो रघुनाथा॥ बिहँसि भूप बोलेउ तब बानी। औरहु अचरज सुनुमहारानी॥ गौतमको आश्रम रहसूना। कौशिकगे लेवाय दोउ सूना॥ प्रविशत आश्रम गौतमनारी। नाम अहिल्या जासु उचारी॥ रही पाप बश अंतरध्याना। प्रगट भई पूजेउ विधिनाना॥ यह बशिष्ठ कौशिक प्रभुताई। और हेत नहिं परै जनाई॥

संग्रह० ॥ असकहि उठे प्रेम उरभारा। भई बिलंब करनि ज्यो नारा॥ कुवँरनको भूपति सँगलीने। भोजन भवनगये सुखभीने॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सुतन समेत नहाइनृप बोलि बिप्र गुरु ज्ञाति। भोजनकीन्ह अनेक बिधि घरी पांच गइ राति॥

रघुराज०चौपाई ॥ रानी पुत्र बधू लै आई। निज निजसंग सकल बैठाई॥ गावहिं रसिया उर सब नारी। बजै मृदंग बीन मनहारी॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मंगलगान करहिं बरभामिनि । भइ सुखमूल मनोहर यामिनि ॥

रघुराज० ॥ सिय करसों भूपहिं परुसावैं । श्वशुर हाथ पुनि नेग देवावैं ॥ सकुचहिं दुलहिन दूलह देखी । भोजन करैं न अशन बिशेखी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ अचै पान सब काहुन पाये । स्रग सुगंध भूषित छबिछाये ॥ रामहिंदेखि रजायसु पाई । निज निज भवनचले शिरनाई ॥

संग्रह० ॥ चले मुदित दशरथ महराजा । मुख देखनि जहँ रची समाजा ॥

रघुराज० ॥ बैठे पुरट पीढ़ महँ जाई । तीनिहुं रानिन लिये बोलाई ॥ कह्यो बदनदेखनकोचारा । करवावो लागै नहिंबारा ॥

दोहा ॥ राजकुमारिन चारिहू रानी आशु लेवाय । बैठाईं भूपति निकट कुल तिय वृद्ध बोलाय ॥

कविदुर्गादत्त०तिवारी कवित्त ॥ सासुकीलेवाईं सियआईं अँगनाई बीच ताक्षण मृगाक्षिणि के हेरे हियो हरिगो । उलही दुकूलन ते दुलहीके अंगओप चंचला चमंक चौंध लोचनमें भरिगो ॥ घूंघट उघारि मुखदेखत दशा बिसारि फैलत प्रकाश पुंज चंद मंद परिगो । गिरिजा गिरा गुमान सिंधुजा शचीकी शान कामं बाम रूपको गुमान कूच करिगो ॥

रघुराज० ॥ रतिरंभा मेनका तिलोत्तमाहू पूर्वचित्ति उर्वशी घृताची आदि अप्सरा अपारहैं । रघुराज अवध अधीशजू के अंगनमें गावैं नाचि रंगनमें अंग सुकुमारहैं ॥ शक्ररानी ब्रह्मरानी शंभुरानी बिधुरानी देवरानी जेतीआईं अवध अगारहैं । मिथिला नरेन्द्रकी कुमारीको बदन चंद देखि मंदपरीं जैसे इन्दु आगे तार हैं ॥

अन्यकवि० ॥ आनँदको कंद मिथिलेश जाको चंदमुख ली-

लाही सों राघवके मानसकोचोरे है। दूजो ऐसो रचिबेको जोहत बिरंचि अजों शशिको बनावे नेकु मनको न मोरेहै॥फेरतहै सान आसमान पै चढ़ाय फेर पानिब चढ़ाइबेको बारिधिमेंबोरेहै। जानकी के आनन समान ना बिलोके बिधु टूक टूक तोरे फेर टूक टूक जोरे है॥

पंडित हरिहरप्रसाद०दोहा॥ जनक लड़ैती छबिछटा राजतमेरु समान। रति ताके ढिग रतीसम लक्ष्मीपल परमान॥ नख शिख सिय छबि लखि रमा वारहिं तन मन प्रान। हरिहर रघुबर भाग को करहिं सदा गुणगान॥

रघुराज०कवित्त॥ कौशला हुलासि हँसि छोहसों पतोह मुख घूंघटको टारयो प्रभा पुंज दिशि छायगो। परयो सबहीके चख चौंधा सों चहूंघा चितै चकित चितौनलागी भानु तो भुलायगो॥ रघुराज पलक नेवारिकै निहारिछके रति रुचिराईको गुमानहूं हेरायगो। फैलत प्रकाशको पसारा अभिमानसारा तारनसमेत तारापति को परायगो॥

देवस्वामी०पद॥ सियजूको मुख जनु पूरण चंद। जहँबरसि रहा आनंद॥ झलकत दंतकला तेइ सोरह अवर अमिय को कंद। हँसनि लसनि चंद्रिका हरति सो ध्यानि जननकीदंद॥अंबर में तारा मोतिनकी झल झल झलक अमंद। एकैअंक अचल ब्रत पालन अंकन और पसंद॥करत निशासेनिशा शरदकी जाको सुयश बिलंद। श्याम ललित चोटी बंधन मिस परो राहु जनु बंद॥ परम सुखद उल्लू जनहूंको जो बिहरत निजछंद। राम चकोर देव बंदीजन हरत मोह तम फंद॥

श्रीतुलसी०बरवा॥ का घूंघट मुख मूंदहु नवलानारि। चांद सरगपर सोहत यहि अनुहारि॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा॥ सिय नख शिख बरणन करत पुर नारी सुखपाय। निजरचनाते अधिकगुनि शारद मनसकुचाय॥

रघुराज० ॥ कह्योतुरत केकयसुता बदन देखाई नेग । जनक दुलारीको अबहिं देहु महीपति बेग ॥ कवित्त ॥ बोलेरघुराजराज राज शिरताज सुनौ कैसेकरौं पूरोकाज लाजकरि हारौंगो। करतो बिचार बारबार मैं खभारहो सों होतहै लचार जिय कैसे निरधारौंगो ॥ भूषण बसन गेह गाउँकी चलावै कौन संपति सकल ढूंढ़ि ढूंढ़ि मुख वारौंगो । अवधकी साहिबी अमरपति साहिबीहू तुलिहै न नेक जो अनेकदेयडारौंगो॥१ ॥ लोकनकीलाज लैकै शीलको बनाय सांचो चित्रको रचाय चित्रकारकै मदनको । शैलजाते शारदा ते तैसही पुलोमजाते शोभालिये छीनि रति मदके कदनको ॥ भाषौं सत्य रघुराज आजु सुनौ प्यारी करि सुन्न सुंदराई ते त्रिलोक के सदनको । सुधा लै सुधाकरकी लूटि बसुधाकी द्युति हद्दकै बनायो बिधि जानकीबदनको ॥ २ ॥ सोरठा ॥ रहिहौं ऋणीसदाहिं कहादेहुं कछु जचतनहिं । दीबेको कछु नाहिं बदन देखाई नेगको ॥ चौपाई ॥ असकहि पाय परम अहलादा । दियोमहीपति आशिरबादा । पूत पतोह जियैं युग चारी । अवध प्रजा नितकरहिं सुखारी ॥

प्रियाशरण० ॥ नेगथार रानिन्नकी आई । अगणित मुक्ता रतन भराई ॥ भूषण बहु अमोल सोहाई । एक एक छबि बरणि न जाई ॥ सब रानी दइ मुख देखलाई । तेहिबिधि परिजन नारी लाई ॥ भूषण मणिगण अगणित जाती । लियेमहामणि ठाढ़ि सोहाती ॥ कबदेखब हम राजदुलारी । महाभीर कब आवहि पारी ॥ सखियन बधू बिकल जबदेखी । गइलेवाइ लखि प्रीति बिशेखी ॥ कौशल्या सबही दिखलाई । प्राणबधू मुखचंद सोहाई ॥ लेइभेंट सबकी महरानी । बैठीढिग सुख शोभा खानी ॥ दोहा ॥ नाउनि बारिनि भाटनी बधुनिनिछावरि पाइ । सकल अशीशत मोदमन जयध्वनि अतिहि सोहाइ ॥ चौपाई ॥ गावहिं मंगल सकल सहेली । रूपराशि छबिधाम नवेली ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय

समाज मनोहरताई ॥ कहि न सकहिं शत शारद शेशू । बेद बिरंचि महेश गणेशू ॥ सो मैं कहौं कवन बिधि बरणी । भूमि नागशिर धरै कि धरणी ॥ नृप सब भांति सबहिं सनमानी । कहि मृदुबचन बोलाई रानी ॥

रघुराज० ॥ सौंपति किह्यो पतोहुँन केरो । रंचक नहिं बिसंच जेहि हेरो ॥ ये नवबधू बिदेह दुलारी । नयन पलक सम करि रखवारी ॥ रंच बिसंच होन नहिं पावैं । नेक बिषम तिनके नहिं आवैं ॥ जनक राज अरु रानि सुनैना । चलत समय मोसे कहे बैना ॥ सौंपौं तुमहिं कुमारी चारी । तुमहिं मातु पितु परहु निहारी ॥ दून होयँ सुख नैहर केरे । तब मम बचन सत्य जे टेरे ॥ केकय सुता कही करजोरी । होई यहै गिरा सति मोरी ॥ याम याम महँ सुधि सब लैकै । कीजै सोपत सब सुख दैकै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बधू लरिकनी पर घरआईं । राखेहु पलक नयनकी नाईं ॥ दोहा ॥ लरिका श्रमित उनींद बश शयन करावहु जाइ । अस कहिगे बिश्राम गृह राम चरण चित लाइ ॥ चौपाई ॥ भूप बचन सुनि सहज सोहाये । जटित कनक मणि पलँग डसाये ॥ सुभग सुरभि पय फेनु समाना । कोमल ललित सुपेदी नाना ॥ उपवर्हण बर बरणि न जाहीं । स्रग सुगंध मणि मंदिर माहीं ॥ रतन दीप सुठिचारु चँदोवा । कहत न बनै जानु जिन जोवा ॥ सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये ॥ आज्ञा पुनि भाइन कहँ दीन्हे । निज निज सेज शयन सब कीन्हे ॥ देखि श्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥ मारग जात भयानक भारी । केहि बिधि तात ताडुका मारी ॥

दोहा ॥ घोर निशाचर बिकट भट समर गनै नहिं काहु । मारे सहित सहाय किमि खलमारीच सुबाहु ॥ चौपाई ॥ मुनि प्रसाद बलि ताततुम्हारी ।ईशअनेक करि वरैंटारी॥ मख रखवारिकरी द्वौभाई । गुरुप्रसाद सब बिद्यापाई ॥ मुनि तियतरी लगत पगधूरी । कीरतिरही भुवन भरि पूरी ॥ कमठ पीठ पबि कठिन कठोरा । नृप समाजमहँ शिवधनुतोरा ॥ बिश्वं विजय यश जानकि पाई । आये भवन ब्याहि सबभाई ॥ सकलअमानुष कर्म तुम्हारे । केवल कौशिक कृपा सुधारे ॥ आजु सुफल जग जन्म हमारा । देखितात बिधुबदन तुम्हारा ॥ जो दिन गये तुमहिं बिनुदेखे । ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे ॥ दोहा ॥ राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बरबैन । सुमिरि शम्भु गुरु बिप्रपद किये नींदबश नैन ॥ चौपाई ॥ उनिंदे बदन सोह सुठि लोना । मनहुँ सांझ सरसीरुह सोना ॥ घर घर करहिं जागरन नारी । देहिं परस्पर मंगलगारी ॥ पुरी बिराजति राजतिरजनी । रानीकहहिं बिलोकहु सजनी ॥ सुंदरि बधुन सासु लै सोई । फणिपति शिर मणि उर जनु गोई ॥

कृपानिवास० ॥ अवध बिनोद प्रमोदअपारे । गावत श्रुतिशारद फणि हारे ॥

रघुराज० ॥ भई महा सुख छावनि रजनी । गायबजाय बिताई सजनी ॥ बंदीजन गण औसर जानी । मागध सूत महा मुद मानी ॥ पृथक पृथक महलनके आगे । द्वारद्वार यशगावनलागे ॥ भूपति बिरद बिरति सबिबेका । करणी जो सुरपतिहु न छेका ॥ लैइक्ष्वाकु बंशते आजू । गायउ यश जस दशरथ राजू ॥ उठेउ

भूप सुमिरत भगवाना। रघुपति दरशन को ललचाना॥ प्रात कृत्य करि बाहेर आई। सबिधि कियो मज्जन मनलाई॥ दीन्हे दान बित्त बहुगाई। लहे राम मंगल युतभाई॥ सजिपट भूषण सचिव बोलाई। बैठ सभामहँ दशरथराई॥

संग्रह० दोहा॥ बेद भेषधरि बंदि ह्वै मुदित करत सेवकाइ। गुण प्रभाव श्रीरामके गान करत मनलाइ॥

देवस्वामी० पद राग भैरव॥ बंदीजन बेद महाराजको जगावैं। ललित मधुर सुर सवाँरि बिमल सुयश गावैं॥ योग ज्ञान धर्म चरत कोटि जन्म जावैं। रावरो स्वरूप बिना जाने फिरि आवैं॥ छवो शास्त्र उलटि पढ़ि जीभ मन थकावैं। राउर लीला पि-यूष अँचइ ठौर पावैं॥ नाम ब्रह्मको नजानि बादको बढ़ावैं। नाममें अनामता बिलास देव भावैं॥

केशवदास०छंद हरिप्रिया॥ जागिये त्रैलोक देव देव देव राम देव भोर भयो भूमि देव भक्ति दरशपावै। ब्रह्म मन मंत्र बरन बिष्णु चित्त चातृक घन हृदय कमल नित्त ज्योति जगत गीत गावै॥ गगन उदित रवि अनंत शुक्रादिक ज्योतिवंत छिन छिन छबि छीन होति लीन पीनतारे। मानहुं परदेश देश ब्रह्म दोष के प्रवेश ठौर ठौरते बिलाइजात भूप भारे॥ अमल कमल तजि अमोल मधुप लोल टोल टोल बैठे उड़ि करि कपोल दानमान कारी। मानहुं मुनि ज्ञान वृद्ध छोड़ि छोड़ि गृह समृद्ध सेवत गिरि गण प्रसिद्धि सिद्धि धाम धारी॥ तरनि किरन उदित भई दीप ज्योति मलिन भई सदै हृदय बोध उदय ज्यों कुबुद्धि नासै। चक्रबाक निकटगई चकई मन मुदित भई जैसे निज ज्योति पाइ जीव ज्योति भासै॥ अरुण तरुण के बिलास सहस किरण के प्रकास सातदीप आस पास दीपति दिशि नाषै। दीसत आनंद कंद निशि बिन द्युति मंद चंद ज्यों प्रवीण पुरुष युवतिहीन दीन भाषै॥ निशिचर चरके बिलास हास होतहैं निरास सूरके प्रकास

त्रास नाशत तमभारे । फूलत शुभ सकल गात अशुभ शैलसे बिलात आवतज्यों सुखद राम नाम मुख तिहारे ॥

श्रीतुलसी०पद ॥ बंदौं रघुपति करुणानिधान । जातेछूटै भवभेद ज्ञान ॥ रघुबंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पदपंकज अज महेश ॥ निजभक्तहृदय पाथोज भृंग । लावण्य बपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोहतम मारतंड । अज्ञान गहन पावकप्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुम्भज उदार । सुर रंजन भंजन भूमि भार ॥ रागादि सर्पगण पन्नगारि । कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणारबिंद । जानकीरमण आनन्द कंद ॥ हनुमन्त प्रेम बापी मराल । निष्काम काम धुक गो दयाल ॥ त्रैलोक्य तिलक गुण गहन राम । कहतुल-सिदास बिश्राम धाम ॥ पदभैरव ॥ देव दीनको दयाल दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहौं हौं दीनदेखौं सोई ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहब तो घनेरे । पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुं-काल बिदित बदत बेदचारी । आदिअंत मध्यराम साहबी तिहारी ॥ तोहिं मांगि मांगनो न मांगनो कहायो । सुनि स्वभाव शील सुयश याचन जन आयो ॥ पाहन पशु बिटप बिहंग अपने करि लीन्हे । महाराज दशरथके रङ्कराव कीन्हे ॥ तू गरीबको नेवाज हौंगरीब तेरो । बारक कहिये कृपाल तुलसिदास मेरो ॥ छप्पै ॥ जय ताड़ुका सुबाहु मथन मारीच मानहर । मुनि मख रक्षण दक्ष शिला तारण करुणाकर ॥ नृपगण बल मद सहित शंभुकोदंड बिहंडन । जय कुठार धर दर्प दलन

दिनकर कुल मंडन ॥ जय जनक नगर आनंद प्रद सुखसागर सुखमा भवन। कहै तुलसिदास सुर मुकुट मणि जय जय जय जानकि रमन ॥ कनक कुधर केदार बीज सुंदर सुर मुनिवर। सींचि कामधुक धेनु सुधाय पय बिशुद्धतर ॥ तीरथपति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्ष तेहि। मरकतमय शाखा सुपत्र मंजरी सुलक्ष जेहि ॥ कैवल्य सकल फल कल्पतरु शुभसुभाउ सब सुख बरिस। कहै तुलसिदास रघुबंश मणि सोकि होहिं तुव कर सरिस ॥

देवस्वामी०पदरागभैरव ॥ बाजतबीणा मृदंगताल बांसुरी उपंग बढ़त तानकोतरंगनाद ब्रह्मजगिरह्यो। नाचत ततथेयथेय करन ताल देयदेय उपज बिबिध लेयलेय सुनि मुनिमन डगिरह्यो॥ साज मनहुं कमलपुंज तहां उठत भँवरगुंज यहीमें राग कुंज समुझत मन पगिरह्यो। होत लाग डाटडपट बीचबीच झांक झपट धैवतालिये परत त्रिपठ गुनिजन मनठगिरह्यो ॥ झमकि धमकि घूमि झूमि आइजाइ ताकि डाकि नूपुर झनकार झरत तिनमें जियलगिरह्यो। साजनाच दूनौ मिलि गीतहीको पुरन करत तीनिहुंमें एकरूप रागताग तगिरह्यो॥ जहँ न जाइइंद्रिय मन शब्दतहां करैगमन जगेदेव रमारमन पाप दोष भगिरह्यो। उघरेतब सुभगद्वार होत आरतीप्रकार भक्तनको मानस श्रीराम रंग रंगिरह्यो ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रात पुनीतकाल प्रभुजागे। अरुण चूड़बर बोलनलागे ॥ बंदी मागध गुणगणगाये। पुरजन द्वारजोहारनआये॥ बंदि विप्र सुर गुरुपितुमाता। पाइअशीष मुदित सब भ्राता ॥ जननी सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वारपगुधारे॥

रघुनाथदास० ॥ मित्र सुसेवक प्रभु पद बन्दे । पाइ दरश सब भये अनन्दे ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ कीन्हशौच सब सहजशुचि सरितपुनीत नहाइ । प्रातक्रिया करि तातपहँ आये चारिउ भाइ ॥ चौपाई ॥ भूप विलोकि लिये उरलाई । बैठे हर्षि रजायसुपाई ॥

संग्रह० ॥ रामसखा सबराजकुमारा । भूपबंदिबैठेसुकुमारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ देखिराम सबसभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥ पुनि वशिष्ठ कौशिक मुनि आये । आसन सुभग मुनिनबैठाये ॥ सुतनसमेतपूजि पदलागे । निरखिराम दोउ गुरुअनुरागे ॥ कहहिं बशिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥ मुनि मन अगम गाधिसुतकरणी । मुदित वशिष्ठ विपुलबिधि बरणी ॥ बोले बामदेव सबसांची । कीरतिकलित लोक तिहुं माची ॥ सुनि आनंदभये सबकाहू । रामलषणउर अधिक उछाहू ॥

अथश्रीअन्तःपुर विहारबर्णनं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ मंगलमोद उछाहनित जाहिंदिवस यहि भांति । उमँगि अवध आनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥

प्रियाशरण०छप्पै ॥ रंगनाथके महल तहां बहुबाजन बाजे । बंदनवार पताक ध्वजा कलशा शुभ भ्राजे । दूलह दुलहिनि सहित सकल रानी हरषाई । गानकरत श्रीरंगनाथके मंदिर आई ॥ सबिधिपूजि कंकणखुले मौर मौरि पधराइकै । तेहिक्षण पुरनारी सकल बहुबिधि मंगलगाइकै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुदिनसाधि कर कंकणछोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ॥

संग्रह० ॥ रामसखा रघुबंशकुमारे । सबकेमन आनंदअपारे॥ सरित बाग वनमें सबजावै । भोजन नाच गान करवावै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नितनवसुख सुर देखि सिहाहीं । अवधजन्म याचहिं बिधिपाहीं ॥

रघुराजसिंह० ॥ भूप युधाजित दशरथस्याला । आयउ बिदा होन तेहिकाला ॥ करिसतकार अवधपति बोले । बनतन अबै आपके डोले ॥ नेउतहरी भूपति सबआये । यथायोग्य सबकहँ बैठाये ॥ भूपतिकिये सबनि सतकारा । विनयकियेते जानअगारा ॥ देनलगे नृप तिनहिं बिदाई । रथ तुरंग मातंग मँगाई ॥ रतन आभरण अम्बर नाना । जो जन जौनलेत ललचाना ॥ सकल कहहिं नृप आजु कुबेरा । देतलगत लघु जाहिंसुमेरा ॥ प्रीति रीति बर विनय बडाई । कोअस जाहि तुष्टि नहिं पाई ॥ बरणत दशरथसुयश नृपाला । निजनिजदेशन चलेउउताला ॥

संग्रह० ॥ बरबस नृपसों बिदाकराई । चलेयुधाजित पदशिरनाई ॥ कह्यो सुमंतहि अवधभुवाला । बनवावन चहुं भवन बिशाला ॥ राम सिया तहँ करहिं निवासू । होयधाम सबभांति सुपासू ॥ सुनि दशरथके बचन सुहाये । सपदि सूत्रधारन बुलवाये ॥ छंद॥ आयउ तहां चलि विश्वकर्माधरि सूत्रधार स्वरूप । शासन सुन्यो अवधेश को लगे रचन धाम अनूप ॥ अशोकबाग निकट तहां शोभित कलित आवास । षटऋतुनके सुख भवन बर सियराम करहिं निवास ॥

कविकेशव०नाराचछंद ॥ सुदेशराजलोक आसपास कोटदेखियो । रची बिचार चारिपौरि पूरबादिलेखियो ॥ सुवेपएक सिंहपौरि एकदंतिराजहै । सुएक बाजिराज एक नंदिवेष साजहै ॥ दोहा ॥ पांच चौक मध्यहरच्यो सात लोक तरहारि । पट ऊपर तिनके

तहां चित्रे चित्रबिचारि ॥ दोधकछंद ॥ मंदिर कंचनको यकसोहै । श्वेत तहां छतुरी मनमोहै ॥ सोहत शिषर मेरुहमानो । सुन्दर देवदिवान बखानो ॥ मंदिर लालनको यकसोहै । श्याम तहां छतुरी मनमोहै ॥ ताहि यहै उपमा सबसाजै । सूरजअंक मनों शनिराजै ॥ मंदिर नीलनको यकसोहै । श्वेत तहां छतुरी मन मोहै ॥ मानहुं हंसनकी अवलीसी । प्राबिटकाल उडायचलीसी ॥ मन्दिर श्वेत लसे अति भारी । सोहतिहै छतुरी अतिकारी ॥ मानहुं ईश्वरके शिरसोहै । मूरति राघवकी मनमोहै ॥ तोटकछंद ॥ सब धामनमें यक धाम बन्यो । अतिसुंदर श्वेत स्वरूपसन्यो ॥ शनि सूर वृहस्पति मण्डलमें । परिपूरण चन्द्र मनो बलमें ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ सिय रघुनन्दनके रहिबेको महिप महल यक अमल बनायो । सियको भोर राति रघुबरको प्रवेशको शुभदिन बनवायो ॥ सिय तहँ जाय निरखि गृह हरषी जैसे तैसे दिवस बितायो । बिश्वनाथ पिय मिलन जो मनमुद कोई कवि सों जात न गायो ॥ पद ॥ अति हरि हिय सिय मिलन अकुलई ललकत कलपहि सम दिन बितयो । सखन संग बैठे सरयू तट कौनिहुँमिस हिमकर दिशि चितयो ॥ हरिहि हरषलखि कहेउ सखा कोउ रघुनन्दन यहि दिशि छबि छाई । रबि आगम गुनि युत कलकुंकुम लाक्षारस धालित इव भाई ॥ नारिन मन बिहारउतकंठित भयसराग समय यहिलेखी । मानहुँ यहि प्रतिबिंब परेते स्वच्छ हिये रहिगये बिशेखी ॥ कोउ कह जैसे अरुणहि आगे करि प्राची रवि ऊगत भावै । तैसे रस शृँगार फैलावत काम राग आगू करि आवै ॥ कोउकह रजनि राज आवत गुनि अपने कहँ हत तेज बिचारी । लौसंन्यास चहत रबि बूडन पटकाखाय बारिधरबारी ॥ अथये पति पूरब दिशि सोकित मुकुतन हारनि तोरिपवारे । सकल भुवन महँ परितेहिं मुकुता तकियत जहँ तहँ है नहिंतारे ॥ कोउकह कामपाइ निज औसर सुर सुरतिय मनहरन बिचारी । बिश्वनाथ मल्लिका कुसुमनकी सुखअवली

जनु गगनपसारी ॥ पद ॥ कोउ कह प्राची दिशि रघुनंदन जो यह लखियुत ललित ललाई। कैधौं सुर सिंधुर शिरसेंदुर करत प्रणाम कढ़त बिधु भाई ॥ कै विद्रुम वितानरथ ऊपर सोई पहिले देत देखाई। बिश्वनाथ कै आवत पति गुणि प्राची प्रेम रच्यो सरसाई ॥

सखनकी रसभरि युक्ति सुनकर श्रीरघुनंदन बोले ॥

पद ॥ अरुण इंदु यह उदै भयोहै लखहु सखहु बोले रघुनंदन। कैधौं आनंद कुंभ रँगि रागहि पूजति मदन हेतु मन फंदन ॥ कैधौं निज निज मुखनि मित्रगुणि सुरनारिन किय याको चुंबन। बिश्वनाथ लगिगई ललाई युत तमोलतिन अधरन बिंबन ॥ पद ॥ परस्पर बरणत चारिउ भाई ॥ संध्या समय अरुण शशि ऊग्यो काहे भै पियराई ॥ रिपुहन कहत कि प्राची दिशि हुतकाल पियपाई। गाढे मिलि निज कुचको कुंकुम याके अंग लगाई ॥ लषण कह्यो कमलनि कर परस्यो यह रबि भेषबनाई। हिम गुनि मुँदी सो कुमुदिनि बिहँसी पियरो पर्‍यो लजाई ॥ भरत भन्यो शशिपीत कमलनसों केमित करी लराई। रजसर छीनि लगायो निज तन तेहि मुख दियो नवाई ॥ कह रघुनंद कुपित यह ऊग्यो चहि कोऊ मुख समताई। बिश्वनाथ भो असम करत तप तनरज पीत चढ़ाई ॥ पद ॥ कह्यो हरि बंधुन चंद कलंकी काहेते मधिभोहै। रिपुहन कहजग वृथहि कहतहैं मधि कलंक यामो है ॥ बेद पुराण परम पुरुषहि की आंखी रबि शशिलेखी। रबिखर तेज न तकी जाति यहि प्रकटि पूतरी पेखी ॥ लषण कह्यो औषधि निशिपति ढिग रहहिं सदा हरियानी। तिनको चरत पियूष पियत मृग बसत सदा सुखमानी ॥ कह्यो भरत शशि मदन चक्रके द्युति सो मधि बिनु न लखाई। याके मध्यश्यामता नाहीं मदन मूर्त्ति दरशाई ॥ कह बिसुनाथ नाथ यहशशिनहिं मनु संध्यातन छाजै। मध्यश्याम नहिं जानौं तनधरि बैठि रह्यो रसराजै ॥ पद ॥ पुत्रपुरोहितको तेहि अवसर

रामचन्द्रढिग आइगये। कलश गणेश पुजाइ सुदिन शुभलगन सदन लैजातभये॥ ड्योढ़ी लों पहुँचाय सखासब अपने अपने धामगये। बिश्वनाथ प्रभुगे भीतरको बैठत अनुपम पलँगभये॥

केशवदास० सुंदरीछंद॥ सुंदर मंदिरमैं मनमोहत। स्वर्णसिंहासन ऊपर सोहत॥ पंकज के करहाटक मानो। है कमला बिमला यह जानौ॥ फूलनको सुबितान बन्योबर। कंचन को पलिका इकतातर॥ ज्योति जराय जरयो अतिसोभनु। सूरज मंडलतैं निकस्यो जनु॥ कुसुमबिचित्राछंद॥ दरशतहीं नैनानि रुचिबने। बसन बिछाये सब सुख सने॥ अति रुचि सोहैं कबहुं न सुने। जनुतनुलै कर शशिबुने॥ चंपकदल द्युतिकेगें डूबे। मनोरूपके रूपकऊबे॥ कुसुम गुलालनकी गलसुई। बरणी जाइ ननैननछुई॥

संग्रह० दोहा॥ करहु ब्यारु प्रीतम प्रिया कह्यो सखी हरषाय। जैंई दो बीरी लई बैठे पलिका आय॥ चतुष्पदी॥ द्युति रंगसदन की सहसबदनकी बरणै मति न बिचारी। अध ऊरध राती रंग सँघाती रुचिबहुधा सुखकारी॥ चित्री वहचित्रिनि परमबिचित्रि-नि रघुकुल चरित सुहाये। सबदेव अदेवनि अरु नरदेवनि निर-खि निरखि शिरनाये॥ आई बनि बाला गुण गण शाला बुधि बल रूपनिबाढ़ी। शुभजाति बिचित्रिनि चित्रग्रेहते निकस भई जनुठाढ़ी॥ मानो गुण संगिन यों प्रतिअंगन रूपन रूरबिराजैं। बीणानि बजावैं अदभुत गावैं गिरा रागिनी लाजै॥ दंडक॥ अपघन धाई न बिलोकियतु धाइलनि घनों सुख केशौदास प्रगट प्रमान है। मोहै मन लोभै तन नैननि रुदनहोइ सूखै शोच मोच दुखमारन निधानहै॥ अगम अगम तंत्र शोधिसबयंत्रमंत्र निगर निवारिबेको केवल अपानहै। बालननिकी तनतान अमित प्रकार सब राखि रामदेव कामदेव कैसे बान है॥ पंकजवाटिका छंद॥ शुभनाद ग्राम नृत्यतसुताल। सुख वर्ग बिबिध अलप काल॥ वह कलाजाति मूरछना जाति। वह लाग गुमकगुन चलीजाति॥ बहु बिधि चलन आकाश चालि। मुख चालि

चालि अरु शब्द चालि ॥ बहु उरप तिरपती बटि अडाल। अरु राग राड़रा रंगलाल ॥ उलथालेकी अलिगम सुड़ेड़। पद पलटी उरमनि संकरेड़ ॥ सुतिनकी प्रभा देखि मतिधीर । भ्रमशोषत है बहुधासमीर ॥ तोटक ॥ नाचैं रसवेष अशेष तबै । बरषै बिरसै बहु भांति सबै ॥ नोऊं रस मिश्रित भावनचैं। कौनौ नहिं हसत भेद बचैं ॥ दोहा ॥ पाइ पखावज तालसों प्रति धुनि सुनियतु गीत । मानो चित्र बिचित्र मति पढ़त सकल संगीत ॥ अमल अमल कर अंगुली सकल गुणनकी मूरि । लागत मूढ़ मृदंगमुख शब्दरहत भरि पूरि ॥

श्रीतुलसी०बरवै ॥ उठीसखी हँसि मिसकरि कहिमृदुबैन। सियरघुबरके भये उनींदे नैन ॥

संग्रह०दोहा ॥ अलसाने प्रीतम प्रिया सखिकरि बिदा समाज। परम प्रेम आनंदभरि पौढ़े द्वौ सुखसाज ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ सोय दोऊ अमित सनेह सुखरंग । व्यजन करहिं कोउ सखिपद दाबहिं छकहिं तकत यक संग ॥ हरिभुज ऊपर सियमुख शोभित पैरि यमुन जनुचंद । बिश्वनाथ थिर भयो थकितह्वै लहि अधार आनंद ॥

कृपानिवास०पद ॥ सेज सुख सोये सांवल गोर । प्राण बपुष मन लगन गोद मुख सिमिटि भये यकठौर ॥ लपटि भुजातन सोहति मानों नेह लतासुख द्रुमनिसकोर । पलकलगे धरबदन मनोहर मीन सुधारस बोर ॥ शितल मंद सुगंध शुचीमय समय समुभ्क गुणकौर । कृपानिवास सिया पद पंकज सेवनि नैन निहोर ॥

संग्रह०दोहा ॥ द्वार भरोखनके सखिन दीन्हे परदे डारि । ठांव ठांवपर पाहरू बैठि चतुर बरनारि ॥ प्रातहोत बंदीजनन अंतःपुरके द्वार । गावन लागे मधुर सुर बाजन ललित सुधार ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ जागो रघुपति कुमार प्राणप्रियहि प्राणप्यार

खोलु नैन कंजमार प्रात भयो पेखो । भूपति उठि मंजन करत सुकवि सुभग पदनिधरत सुमिरत हरिभक्त कोकशोकअंतलेखो॥ प्राचीपति साथ करन होम हेतु लिये हाथ लाजातारनिके गाथ बेदी नभमाहीं । थापित किय अमल अनल लपट ज्वलित ल-लहिं भल सोई लखि परति प्रथित पूरबादिशि पाहीं ॥ निज बियोग दुखित दहत दहन नखत देखि चंद मुद्रितकरि द्युतिहि देह बारिधि चहुं बोरै । कमल कोष कढ़त अलिन अवलि लै कृपानिपानि हनत रैनि अरुण फटयो हियो नहिं कठोरै ॥ यही दाह मध्य स्याह बृथहिं कहिय महिय छांह नाह बिकल जोहि रैन प्रथमहि तन छान्यो । बिश्वनाथ नाथ बिजय देखत अरबिंद बंद मोचत मकरंदआशु महामोद मान्यो ॥

संग्रह०दोहा ॥ इतभीतरको सहचरिन जानी समय रसाल । आय खड़ी बाहर तहां जहँ सोवत सिय लाल ॥

कृपानिवासकृतजगावनपद ॥ प्रात अलीपुंज मिलि श्रीरंग भवन गावैं । तीनिग्राम सप्तसुर सुरागमधुर भावैं ॥ ललितबीन झीन गति नबीन बीन ल्यावैं । मंद मंद कोउ मृदंग संग रंग छावैं ॥ नूपुर धुनि झनकि झनकि रमकि रमकि आवैं । स्वल्पतान मान भनत अनँगसो जमावैं ॥ बिबिध रहसि गहसि गहसि बिहँसि बिहँसि यावैं । चन्दबदनि रमनि चपल चातुरी चलावैं ॥ युगल नेह देह भोय लोयनललचावैं । माधुरी सुहाग रहसिलाग लागि सुनावैं ॥ केलि सरस रेलि भाम कामरति लजावैं । कृपानिवास आशु ललि लालको जगावैं ॥

अग्र०पद ॥ भोरहिं चंद्रकला अलबेली बीणबजाई प्यारियां । बिमलादिक सखि कुंज कुंजते मिलि जुरि आईं सारियां ॥ कनक भवनमें भँवर पलँगपर जागे युगल बिहारियां । मृदु मुसुकात जम्हात रंगभर अँखियां सुरत खुमारियां ॥ अमित बाल सेवायुत राजत करकंचनकी थारियां । अग्रभाग श्रीअग्र सहचरी युगल प्रिया बलिहारियां ॥

कृपानिवास० प० रा० नटमूलताल ॥ रँगीली सखि रंगमहल रँग छाये। रंग रसीले रंगरस बस रहे रंग भरि सेज सुहाये॥ रंग अनंग अंग सरसाये रंग उमँग दरशाये। रंगबरकी सब सखियां रंगीली रंग अमल रंग गाये॥ रंग सरोवर सुधि नहिं तनमन रंग सलहर लहराये। रंग रहसकी थाह न पावत मन धाये नहिं आये॥ बिमल रंग सिय राम धामको सुकृति उपासिन पाये। कृपानिवास चढ़ै न और रँग जे यहिरंग रँगाये॥ ख्याल॥ रंग रँगीले दोउ सोयजगेरी। बिथुरी अलकैं अलसी पलकैं रंग सनेह सुरंग मगेरी॥ मद रस छके बिराजत लालन ललनाके रसरंग ठगेरी। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ सखियनके दृग निरखि पगेरी॥ देशमूलतालपद॥ रामरसिकसों रसकरि प्यारी लसिरहे नैन खुमारी। झुकि झुकि आवैं अलकैं पलकैं मुखपर बिना सँवारी॥ कृपानिवास बिलासिनि सिय जू पियमादक मतिवारी १ उरझ रहे बार शिर पेचन रामरसिक सिय प्यारी के। नहीं सँवारत रति मतवारो बशमें परयो मतवारीके॥ नासा चढ़नि बिलोकनि तीषी भीज गये रसवारीके। कृपानिवासी मान मनोरथ उघरत प्राण बिसारी के २॥

बिश्वनाथ०कृतपद॥ अलसानी अँखियनपर सखियन अनिमिष अँखियन दीठिलगी। किंचित बिकसितकमलनपरजनु अलिअवली उड़ि प्रीतिपगी॥ अरुणैकोरैं तिमिहैं डोरैं अँखियों जनु उर राग रँगी। बिश्वनाथ तेहि अवसर थिरजनु निरखि परस्पर सुछबि ठगी १ नैननिभरि छबि लेहु निहारी। पलँग ललित अलसाने राजत राजदुलारो राजदुलारी॥ बिथुरे बार बदन बर बिलसहिं मैं उपमा यक मनहिं बिचारी। बिरल मलिन मालती कुसुम गण लपटिरहे अलकन सुखकारी॥ छबि तरंगिनि तरंग चलाये फेन खंड लघु लगे सिवारी। ओसनसों मूंदे कलकुंडल राजि रहेहैं थिरताधारी॥ दुहुँदिशि मनसिज धुज झष शोभित सुखित रहे जनु यमुन दहारी॥ खुलत मुदत दोउ दृग तकि सुखमा

कहत सुकवि अस हेतु सँवारी ॥ बिकसत मुँदत कोक नदतकि जनु शीशफूल रवि कच निशिकारी। अमल कपोलन पीकलीक बर उपमा तिनकी ललित उचारी ॥ मानहुँ श्रुतिभूषण के माणिकमुकुर कपोलनि किरणि पसारी। सदरद छदबर लसत अधर जनु दरकित बिंब सुफल छबि भारी ॥ थिर बुलाक मोती अधरनपर बरणहुं मैं आभा अनुहारी। मानहुँ रदछद पीरहरण हित धरि दिय बिधुमुख बिंदु सुखारी ॥ बिश्वनाथ ये छबि सुख सीवां कहि न जाय शोभा बलिहारी २ ॥

कृपानिवास०पद ॥ आरती जानकीलालकी कीजिये । आनंद कंद चंद कोटिन छबि नैन रसिक रसपीजिये ॥ प्रेम थार कर सकल सौज भरि समय समय सुखलीजिये । कृपानिवास बिलास भवनमें युगल रमण रसभीजिये ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ द्वै गलबांह परस्पर दोऊ पुहुमीपर पगदीन्हे। मानहुं शिवाहोन चाहत उर बिलग होवभै भीन्हे॥ आलसबश पुनि पलँगहिंपर बैठे जात झुकि झुकि हैं । बिश्वनाथ ज्यों त्यों करि गवने चरणधरत रुकि रुकि हैं १ प्रीति पग दंपति चलत पग पग थकत। बिलग ह्वै गवन दुख दुसह मनमें गुनत ॥ जिमि जुराफा बिहंग बिछुरन नहिं उडिसकत । मिले पुनि पुनि परम प्रीतिसों अंक भरि धरत ॥ पद ठटुकि दोउ चले मुरि मुरि तकत। गेहकी देहरी मेरुसी ह्वैगई बनत बिसुनाथ तन रामसों नहिं न कत २ ललितपलँग लालिमा लहरि दरशातिहै। चलत गजगतिधरें दोऊ अति रतिभरे पुहुमिहुं प्रीति जनु प्रकट सरसातिहै ॥ लपकि पटुका पीत परत अवनी उपर धरत पगदंपति कछुक रुकिजाति है। चलत डगमग डगनिजात जमुहात गुनि प्रात पछितात अंगिरात अलसातहै ॥ झरत सिररूह सुमन मलिन पूषणढरन जगनतें भजि चली मनहुं तारावली। छुटि पगरी अरुण छोर कंधनिछजत छलकि अनुराग की धार जनु बहिचली ॥ पलकपे पीक निजराग रसबोरि जनु

असम शरछापाकिय परम असमै गनी । लसत बिसुनाथ अंजन अधर मोद कर मनहुं बिद्रुम तखत बैठेहैं रसधनी ३ सखन आनंद रघुनंद चलिदेतभे । मंदबिहँसत बदनचंद करिलेत तर सकुचि अरबिंदचख मूंदि कछुलेतभे ॥ पाणि परणामकरि सखा अभिराम यक कह्यो सुखधाम अबहमहुंको सकुचिये । जगेनहिं रैनि जो अरुणहैं नैन यह सखनपर राग अति जो हिये हेरिये ॥ आजु अँगिरात अलसात जमुहात ज्यों रंगोतकिगात हमजानि चिन्है सबै । भोरके भोरतें बहुत बाकीयहे रैनहिन्हाय अंधियारहीं तिलककीन्हे तबै ॥ सुरति इमि उक्तियुत युक्ति सब सखन की बिहँसि चलि राम सुन्हातभे । सखिनके साथ सियन्हाय पियपांयको ध्यान बिश्वनाथकिये रोम हरषातभे ४ सरयूलसत राम नहात । सखन तनकर देतछींटे कहि न परत लजात ॥ जल बिहार अनेक बिधिकरि पहिरिलिय पटगात । जनचोवति बजितपट बिछुरत मनहुं बिलखात ॥ ध्यान हरिमिसिध्याय सिय मनमोद सिंधुसमात । तिलकतन करि धारि भूषण बसन अंग सोहात ॥ पहिरि पद पदत्राण गवने सखन सँग बतरात । कहहिं तिय कुसुमनि बरसि बिसुनाथ बलि बलि जात ५ आजु अलि अमित आनंदकी खानिरी । हेरि हरषितहिये सखा चौंरन लिये छांहकोउ किये रविमुखी सुखदानिरी ॥ छजहि मंडल जनन छकित छबि सज्जनन रवनकी बनगनन होत सुरसानिरी । मध्य अनुजन सहित लसत उपमा रहित बदत कछुबैन युतमंद मुसक्यानिरी ॥ पीतपगरी कलित मणिन कलँगी ललित भूषणन तनहोति द्युति आनिरी । कंधपटुकापीत छजतयुत तिलक बहु रीति तकिप्रीति अधिकानिरी ॥ चलतयुत मांन छुटिजात गजमान यकपाणि धनु बाण चल कमल यकपानिरी । तकत बिसुनाथ रतिनाथ छपिसाथ रघुनाथ छबि छलक चहि निजहिं लघुमानिरी ६ राजकिशोर ओर यहि आवत । लैकर कमल सुगंधलेत जनु बरसियबदन सुवास मिलावत ॥ फिरिफिरि ताहि

फिरावत भावत भये न सम जनु उर समुझावत । बिश्वनाथ यह छबि सिय पियकी सखि लखिकोन नैन फल पावत ७॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबीसवांप्रकरणसमाप्तः २०॥

श्री जानकी बल्लभाय नमः ॥

अथ मृगया का बर्णान ॥

इक्कीसवां प्रकरण प्रारंभः ॥

दोहा ॥ करि सरयू मज्जन सदन आये रघुकुल चन्द । यज्ञ शाल भ्राजतभये जहां बिप्र मुनिवृन्द ॥

रघुराजसिंह० कवित्त ॥ दीन्हे तिल धेनु दश धेनु हेम धेनु पुनि तेरह सहस्र धेनु दीनि हेम शृंगी हैं । अवनि अभूषणदै अन्नदीन्हे अम्बर दै शय्यादान दीन्हे गज बाजि बहु रंगी हैं ॥ अग णित आयद्विज वृंदन अनंदनसों पूरे मन काम रघुनंदन उमंगी हैं । रघुराज रामदान धाराके प्रवाह भेदरिद्रीके दरिद्री बिप्र आनंदके दंगीहैं १ तर्पण हवन आदि प्रातकर्म कैकैपुनि दीन्हो माथे मुकुट अनन्त भानु भासी है । जामा जरकसी वारो फेंटा मुक्त छोर वारो हीरनको हारो धारो अंगद बिभासी है ॥ करमें कटक अं- गुली न मुंदरी न रचिकटि करवाल पीठि तूणशर रासीहै । धारे धनु एक हाथ एक हाथ सखा हाथ आये रघुराज सभा अवध

बिलासी है २ औसर बिचारि पौर प्रकृती अमात्यगण सखा सरदारेते सिधारे दरबारेहैं। पुरकाज भृत्यकाज गृहकाज राज काज अरज सहित निज गरज उचारे हैं॥ समुझि निदेश दै दै कीन्हे कृत काज तिन्है रघुराज धर्मयुत हुकुम निकारे हैं। सुख को पसारे दीन दुखन निवारे न्याउ नीके निरुवारे प्रजा कीन्हे जे जे कारे हैं ३ बासर बिचारि डेढ़ पहर बितीतो राम बिदा करि मंत्रिनको सखा बैठारे हैं। लषण भरत शत्रुसूदन पठाइ दूत तुरत बोलायेकै शिकारके बिचारे हैं॥ गावै लागे गानवारे नाचै लगे नृत्यवारे बाजन बजावैं बाद्यवारे सुर धारे हैं। राज शिरताज महाराजके दुलारे राम जन रघुराज पीछे चारु चौंर ढारे हैं ४ बांकी पागे पेंचै बांकी कसे शिर पेंचै बांकी भृकुटी न ऐंचै बांकी कलंगी सँवारे हैं। बांकी करवालैं बांकी कसी कटि ढालैं बांकी पीठि ढपी ढालैं बांके नैन अरुणारे हैं॥ रघुराज योबन ललाई मुख बांकी फबै बांकी गति बांके सखा संग अनि-यारे हैं। आये श्रीलषण प्यारे केकयी कुमारे तिमि सभापगुधारे शत्रु दमन दुलारे हैं ५ रामको सलाम करि बैठे बंधु आसपास हाँस इतिहासन अनेक परकासेहैं। भुवन विभूषणते भासेभास भासवान सज्जन सुशील शीतभानु से बिलासे हैं॥ रघुराज लोकपाल उपमा सेखासे बैठे आमखासे काम धामको निरासे हैं। राम मुख बचन सुधासे सुनिबे के प्यासे हियके हुलासे मृगयाके गौन आसेहैं ६ जानि रुखबंधुनकी खेलिये शिकारआजु बिपिनमझार राम गिरा यों उचारी है। भाई सखा बोले यक बार सबै मोद भरे आछी कही आप अभिलापऊ हमारी है॥ बेगिप्रतीहारको बोलाइकै निदेश दीन्हो सैनको सजाइये शिकार की तयारीहै। दूत दौरि द्रुतही देवाइ दियो दुंदुभीको रघुराज आई सैन सुनत शिकारीहै ७॥

बिश्वनाथसिंह कृत कवित्त ॥ बाजि रथसारे गज शुतर कतारे केते प्यादे ऐंड़वारे जेसवीह सरदारके। कुवँर छबीले जेरसीले

राजबंशवारे शूर अनियारे अति प्यारे सरकारके ॥ केते जाति-वारे केते केते देशवारे जीवसिंह श्वान आदि शैलवारेजे शिका-रके । डंकाकी धुकारह्वै तयार सब एकैबार राजे वारपार द्वार कौशल कुमारके ॥

ईश्वरीप्रसाद छप्पै ॥ प्रतापाग्नि सवलाश्व बीरभद्रादिकआये । नीलरत्न हरिदश्व श्रोणनख सहित गनाये ॥ चन्द्रचारु बल-वान चन्द्रभालहु रिपुवारन । शत्रुंजयसे अपर महाबल साथ हजारन ॥ भद्राश्व महामति जय बिजय अरु जयंतसेबहुलखा । शस्त्रास्त्र साजि गज बाजि चढ़ि राजद्वार लाखन लखा ॥

संग्रह०दोहा ॥ चारिहुबन्धु सखानलै कौशल्या गृहजाय । करि कलेउ मांगी बिदा गवने आशिषपाय ॥

विश्वनाथसिंह०कवित्त ॥ पागजरकसी कसी कलँगी त्यों बसी बांकी लंकद्वाल मसी लसी कसी पटछोरसों । भीजी मुख शशी मसी हांसी खासी कौमुदीसी फँसी अहिरसी शोभा जुलुफ मरोर सों ॥ प्रियसख सोहैं बातेंकरत रसोहैं कछु बिश्वनाथ सोऊसोहैं जोहेहैं चकोरसों । दूनोओर चौंर चलेभाय पौर आये रामसेवक-सलाम दामकीन्हे चहुंओरसो १ पगरीसुरंगीअरबंगी बंधी छैलन की भुकी है कलंगी त्योंत्रिभंगीमनिसारकी । कसीकटिद्वालैयुग परी करवालैं बंधी लालैं उरमालैं ढकी ढालैं पीठि ढारकी ॥ बाजिन उछालैं करिख्यालैं सांगघालैं बीर जगीजीन जालैं बि-श्वनाथ हेमतारकी । कहैं रघुबीर बैनदेखु तौ प्रतापी नैन आई या शिकारी सैन भरत कुमारकी २ श्याम समलापैं शिरपेचैं त्यों कलंगी बसी बेसरि रुमालैं कसी केसरिके बोरकी । भरउतलाहैं गरे हीरन हराहैं धरें सिफर सलाहैं सैफ वाहैं जंग जोरकी ॥ घू-मत निशानसांन सजी सरदारकी त्योंही छरीदारन की बोलनि मरोरकी । हँसि हँसि भाखैं राम सखन समाज बीच कढ़ी असवारी प्यारे लषण किशोरकी ३ मंडित मंदीरे चीरे हीरेवारे गोसवारे मोतिन कतारे तुर्रा जीते ज्योति तारेकी । कसि कसि

फेंटे पेशकबज लपेटे सबै शत्रु भटभेटे राज बेटे रुचिरारे की ॥ करनि बैठारे बेगवारे बांसे बिश्वनाथ कुलहीं सँवारे शीशसजनि शिकारे की । मोरि मोरि बदन बखानैं राम रीझि रीझि चाहि चमू बांकी शत्रुदमन दुलारे की ४ एकओर भली तरा बंधी परा बाजिनकी एकओर ऊंट जूट कोगनै अनंतको । बीचमें बिराजै गोल गर्बित गयंदनकी आगे पीछे प्यादे व्यूह बांधेतके कंतको ॥ बिश्वनाथ कौतुक बिलोकैं राजबंशी सबै आयो डंका नाद ते पूरतदिगंतको । स्यंदन सवार सरदार बीर वृंदनको सैनीरघुनंदनको नंदन सुमंतको ५ देखि सब त्यारभय अश्व असवार राम डंकाकी धुकारैं यकबारैं परी आनिकै । जांगरे अलापैं चोपदार भटथापैं दास सूरमुखी ढापैं राम शीश सुखमानिकै ॥ गैयर गराजे बाजी हींसिराजे बिश्वनाथ बाजे बहु बाजे बीर गाजे हैं कलानिकै । एकओर छरेछैल लोने निमिबंशिनके एकओरगोने रघुबंशी मंडलानिकै ६ पाय राम अंग संग बाढ़ो मोदको उमंग कौतुकी तुरंग कोटि कौतुक में मातोहै । मोरही सो मोरि मोरि मोरि नचै मोरही सो हाथके उठाये कईहाथ ठहरातोहै ॥ करत इशारो नाक नाकन बिचारो करै टापन उचाय बेगवारो अग्रता तो है । बामन कहाय एक पाय नभनाके याते महिमा बचाइ पछिताय रही जातो है७चटकीली चोटी जीन जटितजवाहिरसों छिटिकी छबीली छटा पेटी पटा तंगकी । बाग जरबीली छाजै ज्योतिजाल जेवर त्यों झमकीली गति न उठावै अंग अंगकी॥ लौट पौट चंचलौत चौगुनी चलाकी चाहिचाकी मति मारुत औ माधव बिहंग की । रीझि रीझि सखनि समाजछाकी बिश्व नाथ कलनि बिलोकि बांकी राम के तुरंग की ८ घोरेरथ जोरेबहु कोतल अथोरे दोरे पाइ मद घोरे घोरे कुंभिनकी भीरहैं । भूषण सँवारे धनुधारे अनियारे प्यारे काम काय वारे घेरे नेरेबंधु बीर हैं ॥ शोभित शशी तें मुख मंद मुसकातें श्रोण सुनत शिकार बातें सबुज सुबीरहैं । नौबत कलापै सुनि सुनत सतापैदैत्य कांपै

कहैं कापै चढ़े राम रणधीर हैं ९ श्वान स्याह गोश औ महान चीते सिविकान चले चढ़ि त्योहींभीम केहरी सुकेसरा। कुही औ कुहेला बहरी हूं बच्चा बहरी औ बांसाबांसी नलगर लगरेट बेसरा॥ धुतवा औ टोनवा सचान ज्वरी बाज वेस मूसा न्योरी जर्कटी चरष चितेसरा। फंद बहु बैलन फंदैतहै कुरंग संग फंदी है बिहंग पिंजरानमें सुदेसरा १०॥

रमणबिहारी०चौपाई॥ सेना अग्र चले ध्वजधारी। नाना बिधि बाहन असवारी॥ तिनपाछे दुंदुभि वाद्यनकर। चलहिं बजावत मन उत्सव कर॥ अवधनगरकी नारि रमासी। रामस्वरूप पियूष पियासी॥ जहँ तहँ चढ़ि महलनपर देखहिं। लखि निज नयन सुफल करि लेखहिं॥ कोउ लखिनयन मूंदि धरिध्यानहिं। रामरूप निज हियमहँ आनहिं॥ कोउलखि कोटि मदन छबि रामहिं। बिसरी देह नेह निज धामहिं॥ पुष्पांजली करहिं सब नारी। बिधिहिं कहहिं अंचलहि पसारी॥ नारी सकल स्वरूप निहारहिं। यकटक लोचन पलकन डारहिं॥ कहहिं परस्पर सकल बखानी। दशरथ धन्य धन्य सहरानी॥ जो कछु सुकृत हमारे अहहीं। तो निजभाव इनहिंमहँ रहहीं॥ इमि नारिनके मंजुल बयना। सुनहिं राम पंकजदल नयना॥

संग्रह०॥ सकल सैनयुत श्रीरघुराई। बिपिन निकट तब पहुँचे जाई॥

रमणबिहारीचौ०॥ जिहि बन थल बनचर बहु रहहीं। ताहि देखि गुह रामहिं कहहीं॥ राजकुमार बिकटबन येहू। व्याल शिवा घूकन कर गेहू॥

बिश्वनाथसिंह०कवित्त॥ बकुल तमालकृत माल ताल औ रसाल शाल कचनाल औ प्रियाल जाल सोहरो। रंग रंगके बिहंगकूजैं गुजैं भृंगपुंज गैंडा गज गवय अनेक मृगसो भरो॥ झरनानि सोरा कैसे झीले जल झरैं कन झीने झीने उडि कीन्हे नाकहू को सीयरो। देववृंद देखैंछबि राघवेंद्र नंदतहां खेलत शिकारहैं

बिहार के मनोहरा १ ॥ सवैया ॥ दूरिते देखि द्विरदनको दलपालक सिंहन छोरिप्रचारै । धाइधरै अतिक्रोधको धारिकै कौतुककुम्भ कदम्बबिदारै ॥ छीटेदै अम्बुके चेते तहां कहिबेटेहौ बेटे तिन्हैं पुचकारै । रीझिकै राम इनामदै मोदित दारिद दासनके दलि डारै २ हार में हेरिघने हरिना हरिहाथ लै टोपी हेरायकै छोरै । चूपाचले चटकीले चिते चखचाहिकै नेरे कुलांचलै दोरै ॥ मारि मृगानको कोपित होत ते पालकजे पुचकारि निहोरै । देखि कै रीझि सराहि सखानको देत हैं राम इनाम करोरै ३ हांकतभाजत जोहि शशानको छोरिकै श्वाननको ललकारै । रामहू लीन्हे हैं लीन्हे कहैं सब त्योंहीं सुखी ह्वै सखाहू पुकारै ॥ लोटहिं कोई उठावत आशुहि धाइधरैं पुनि झारिकै मारै । कोई कहै निज नाथपै ल्यावहिं पालक पावैं इनाम अपारै ४ ॥

रघुराज कबित्त ॥ जुर्रा बाज बांसे कुही बहरी लगर लोने टोने जरकटी त्यों शचान सान वारेहैं । लैलै सखा हाथनमें चारोबंधु साथन में छोड्यो पग गाथनमें कूकदै पुकारेहैं ॥ गगन गगनचर गगनचरनधारे धाये बीर बेगते गगनचर हारेहैं । रघुराज राम के निहारेते अपारे पक्षी बसे अभिराम रामधामके अखारेहैं ॥

रघुराजसिंहकबित्त ॥ चित्रमृग सूमर गवैगन बिलोकि बनटीले चटकीले ग्रामसिंह चले धाइकै । पीछे राजकुवँर धवायेहैं तुरंगनको धायेहैं मतंग पीछे बेगनबढ़ाइकै ॥ रघुराजसिंहके समान सहसान गहे बिबिध मृगान कोपि कुत्ते अतुराइकै । रामजू के श्वान इतै खींचैं बनजीव उतै गोपुरकी ललना लेजाती हैं छोड़ाइकै ॥

विश्वनाथसवैया ॥ तीतर भाजिलुको यकझौंड़में हौदा तेहूंतकै बासालियो हरि । हांके छरीनके भाजे बिलंदसो मूठिचली तेहि बीच लियो हरि ॥ बीजुरी सो तेहिबेग बखानिकै संग सखानिकै आनँदमों भरि । पालक को पहिराइ पोशाक त्यों भूषण भूषिकै दीन्हे कितेकरि ॥

रामसखेसवैया ॥ आजु शिकारमें चारौ कुमार नचावत बाजि परी कलनाहै । शूकर जो करसों दिखराइ करी बहुभांतिनसों छलना है ॥ रामसखे मिल्यो आनँद ओक मिटे सब शोक गई पलनाहै । ऐंचैं इतै रघुबीरके श्वान उतै गहे गोपुरकी ललनाहै १ बाज भरत्तको देखि शशा शशि गोदते भागि महाडरपाक्यो। जुर्रा जुरावर लक्ष्मणको लखि मोर सेनापतिको बल थाक्यो॥ बहरी रिपुसूदन की दुर्गा मुरगा तिहिहेरि हृदय अति साक्यो। रामसखे हरि हाथते छूटी कुही कलहंस बिरंचिको ताक्यो २ ॥

बिश्वनाथकबित्त ॥ राज के कुमार को शिकार कलकौतुक बिलोकिबेको आये देव बाहननि लसि । श्वान चिते जुर्रा बेस देखत भदेस गये छूटि तेहिकाल पाल कान किने बसि बसि ॥ भाग्यो मोर औ मराल शशा मूसा शिखालाल रुकत न हारे देव केते बाग कसि कसि । तकन तमासो आये आपुही तमासो भये भाखैं सुरनारी मुखसारी मूंदि हँसि हँसि १ भांति अनेक भूरिपक्षी जे अहारी मांस पक्षिनके लक्षि लीन्हें तिनसों धराइकै । हांके भीति भागे बन मृगजे अनेक जाति मारे बंदूक बाण बर्छिन चलाइकै ॥ भय सब परमप्रकाशी रूप ब्रह्महीके कौतुक अनूप देखैं ध्यानी ध्यानलाइकै । करत उचार जो अपार शोक साने जानि जीवन उधारत शिकार राम आइकै २ ॥

रघुराजकबित्त ॥ जानि दुपहर बेला सखा सब हेलाकरि करि सरयू में रेला बाजिन जल प्यायेहैं । पुलिन निकुंजनमें भौंर भीर गुंजनमें तजिकै तुरंग बिशराम हित ठायेहैं ॥ जानिकै श्रमित सैन चैनभरि चारोबंधु ऐन ऐसे कुंजन में बैठे मनभायेहैं । जुरिगे समाज रघुराज राजबंशिनकी हँसत हँसावत शिकार सुखगायेहैं १ मातुनके भेजे मेवा करनकलेवा हेत ल्याये सूपकार सेवा आपनी देखायेहैं । व्यंजन अनेक मनोरंजन सुधारे मंजु भरि भरि चामीकर थारन धरायेहैं ॥ चारोबंधु बांटत सखानसरदारनको हीरा हेम भाजनमें भोजन उराये हैं । रघुराज रामको

सलामकरैं राजबंशी अतिसतकार सरकारनते पायेहैं २ खेलत शिकार चहुंओर बन ठौरठौर जानि दिन थोर बाणी सहित निहोरकी । भाखी सखाजाइ राम ढिग खरो जोरिकरऐसीहै रजाइ पिता भूप शिरमोरकी ॥ रघुराज आइयो अजोरही में भौन ओर चलो चितचोर कीन्हीं क्रीड़ा सुखओरकी । सुनिकै प्रतापी बैन चमू चतुरंग फेरयो अवधकी ओर चली अवध किशोरकी ३ ॥

संग्रहकर्त्ता॰दोहा ॥ इत पियको करि ध्यान सिय दीने बहुविधि दान । पुनि पट भूषण लाइ सखि उरमहँ अतिहरषान ॥

बिश्वनाथ ॥ पहिराये नूतन बसन अँग अँगरागन कीन । भूषितकरि अँग भूषणनि शुभपद जावक दीन ॥ चौपाई ॥ तिलकनि रचि पुनि दिय शिर बंदन । किय दीरघ दृग रेखा अंजन ॥ दंतरागदै अधरराग किये । केशबास बेनी सु गूंदिये ॥ अंगनधुरि सुगंध चूरन बर । प्रहिराई फूलन मालागर ॥ कोऊलैकर अतर लगावै । कोऊ चमर करै सुख छावै ॥ कोउ बनाइ बीरी अलि देहीं । सिय सेवाकरि सखि सुखलेहीं ॥ पुनि सिय सब सासुन गृहगई । सबनि यथोचित पूजित भई ॥ सबसों आशिष बहु बिधिपाई । फिरि कौशिल्या भवनहिं आई ॥ दोहा ॥ शीशनाइ आशिषलई बहु सेवकाई कीन । शासनलय बैठतभई मन रघुबर महँ लीन ॥ चौपाई ॥ सुनतै सुखद राम असनामै । होत रोमांच अंग अभिरामै ॥ नयनन उमड़ि अंबु जब आवै । माइक सुधिकहि सीय छिपावै ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ सिय उदासमन लखि महरानी । कथा कही सुंदर मृदुबानी ॥ सुनि बर बचन सीय सुखपाई । लागि सासु पद सदन सिधाई ॥ क्षण क्षण प्राणपती सुधि आवै । खान पान मंदिर न सुहावै ॥ वहां राम प्रिय सखन समेता । मृगया करि पुनि चले निकेता ॥

रमणबिहारी॰दोहा ॥ जे मारे बन जंतु बहु शकटन तिनहिं लदाइ । राम चले सेना सहित बर दुंदुभी बजाइ ॥

बिश्वनाथसिंह० कवित्त॥ उलटे अखेट खेल छटी सेना उदभटी सखा अटपटी बातैं हास लपटानी है। तरल तुरंगनके टापनसों कटी धूली हटी नहिं नाकध्रुव धामोंना पटानी है ॥ रामै देखि नाकनटो कामै करकटी पाग लटपटी अलकालो धूरि धुरि टानी है। नारी पीतपट पेखिबेको हिय अटपटी चख चटपटी नाहिं अँटन अँटानी है १ धाम धाम धूमधाम रामकी अवाई धाम पाउँड़े बिछाये सौध ध्वजन बँधाये हैं। बाजन बजाये जुरि मंगलन गाये दधि दूबन बिछाये फरि कुसुम लगायेहैं ॥ रंकनिधि पाये सब मोद उरछाये अति नेह सरसाये पुरबासी उठिधायेहैं। बचन सुहाये एक एकसों सुनाये मनभायेलै शिकार रघुनंदआये आये हैं २ प्यादे सेना भारी पीछे बाजिन सवारी कसी कनक अँमारी नीके गजन गरट्ट हैं। चाके घहरात हैं पताके फहरात व्योम बिलसि बिमान ब्राततार्के देवठट्ट हैं॥ कोई बगमेलैं कोई भालनको खेलैं कोई शक्तिनको मेलैं सुख संयुत सुभट्टहैं। मध्य दल गैल मैल करत सु ऐल फैल चढ़े चारो छैल बाजि सिखे· कला नट्टहैं ३ तन सुकुमार मारहूंते छबिसार कलमुकुट किरीट बार जरतार बागे हैं। सोहैं गले हार हैं तुरंगन सवार करे सेना के शृंगार उर रामराग रागे हैं। दीरघ हँकार कोकिलाहूंते बचन प्यार कैयकहजार संग संघर्यो न भागे हैं ॥ ऐसे चोपदार खासे खासे बरदान सोन सोंटे बरदार सरदारनके आगे हैं ४ जांगरन गान ढोल नौबाति निशान भेरी तान जान चोपदार शब्दकान मोदयो। करि अनुमान प्राणप्यारेकी अवाई थान भूल्यो तनभान प्रेम पान मोदभोनयो। बिरह कृशान सुख आशु न बुतान सुधि पाइकै अपान चित्तचाहिबेको ह्वै गयो ॥ संग लै समान सखि जानकी पयान कीन्हो सदन सो पान महान शैल सोभायो ५ सवैया ॥ लै भरतादि बधून अनूप पगी पिय पेखनकी अतुराई। संग सखीनके सीय उमंगसों आई उतंग अटा अँगनाई ॥ जोहि जिन्हैं दिविदारनकी दिन दीपति दीपति देती देखाई। ऐसी

अनेक मलीन जमाति समाति न सोधनकी समुदाई ६ कोई कह्यो ताके नाके उड़त पताके पुंज बिमल बलाके पांति जाति याभुमंडी हैं। तरल तुरंगनको गोनसाई झंझा पौन चौंर चारु धुरवारी सरस उमंडी हैं ॥ दुंदुभी अवाज पूरो गगन गराजचाय पीठि चपलानकी चमंक चारु मंडीहैं। सिंधुरानि सिंधुरानि रेख सुरचाप वेषबरषे अनंद सेना धनसी घमंडीहैं७भालेको भवावैपाग छोर छूटिभावै हास छटाछहरावै छनछटासी बिछावैरी। बाजीको नचावै कहूं मंडल फिरावै कहूं व्योमको उड़ावै देव दारन लो-भावैरी ॥ कलानि लखावै रामै मोद उपजावै बैन सखन सुनावै श्रुति कीर्ति मन भावैरी। बिश्वनाथ गावै देखि फूल बरसावैदेव लषणको लघुभैया शत्रुहन आवैरी ८ पाग जरकसी कसी ललित कलंगी गसी भासी कांति शीश पेंच अति द्विति रासीकी। भाल अधशशी तिलकाली काम वांगुरीसी भौंहैं असनिनैन छबि खंजन हुलासीकी ॥ नासा तिलक फूल लसी अलिकाली धूलि धसी लहर सुधासी खासी सरसीभ हांसीकी। भावै उरबसी उरबसी ह्वैके फँसी उरबीस बिसेबसी मूर्त्ति उर्मिला बिलासीकी ९ तुरंग उमंगी में सवार है निषंगीकर धनुष त्रिभंगी महाबीर समजंगी है। भृंगीपांति अलकै अनंगीचाय भौंहैं चारु अमृत तरंगी हांसी तिलक सुढंगी है ॥ ललित कलंगी पचरंगी पाग शिरसोहै पहिरे सखा संगी पोशाक बहुरंगी है। छबि सरबंगी बैन जाके बरव्यंगी मांडवीको रसरंगी देखि देवदार दंगी है १० अति चंचल बाजि नचावतहै अति नैनन चैन मचावत है। तनकी छबिसों क्षिति छावत है नभ देवतियानि चकावत है ॥ युग व्यंगकी बातन सों सब सैनहि आनँदसों बरसावतहै। रस उज्ज्वल जावत श्रीनिधि आवत राम हिये भल भावतहै ११ कल कुंडललोल कपोल डुलैं ललना अलिको ललकावत है। अलकैं हलकैं छलकैं छबि त्यों मुसक्याइ सखानि छकावत है ॥ मन भावन बाजि नचावत भावत छैल कलानि लखावत है। यह जानकी दूलह देखिभटू

दृग दूसरो ओर न आवतहै १२दुहुंओरनि चारु चलैं चखहैं चमकाहट व्योम मचावत है । करि खेल कोई प्रिय संग सखा कहि बात हँसी उपजावत है ॥ चख चारु नचाय छबीलो लला मुसकानि छटाछिति छावतहै । मनभावन सीय सुहावन देह दयामन मैन बनावतहै १३मंडित रेणुसो कुंचित कुंतल कानन कुंदकली कलकानहै । मंजुगरे गजरानिमें गुंजत आवत पुंज अलीनलुभान है ॥ सोहत स्वेदकेबिंदु कपोल लसी चखकोर त्यों ओरसखानहै। पेखिकै पीय सुनै सुखसीय जो बाहिर सों बिश्वनाथबखानहै १४ छाकी सबै रघुनंदन बेष समाजते त्योंहीं सिया अलगाई । झीने झरोखन में दृगदै दुरि देखतही सुखमा सुखछाई ॥ राजकुमारनि मध्य लसै पुरनारि निहारिकै चारिहु भाई । आनँदआंशुन की झरिलाइकै फेरि सुफूलनकी झरिलाई १५सोहीपोशाक हरी सिगरी त्यों बिभूषणहूंकी रही छबि छैहै । आननइंदु अमी लहरै शशिसी मुसकानि बसी कर नेहै ॥ श्रौणलोंसोन सरोजसे नैन बनै न बखानत बैन रसेहै । रामैंनिहारि यों धामैं बिसारि छकी जनु जाल भो चित्र लिखेहै १५ ॥

रामसखे०दोहा ॥ मुरके युवती दृगकमल बिरहचंददिन लेखि। रामसखे फूले उदित सांझ अवधि रविपेखि ॥ यहां रूपकी चोट को करैं नहीं दृग कोट । रामसखे प्रभुरूपकी सो कहजानेचोट ॥

रघुराज०कवित्त ॥ शरदघटासी ऊंची अमलअटामें चढ़ी बिज्जु की छट्टासी छटा छावैं पुरनारी हैं । चितै चतुरंग चमू भरि कै उमंग उर साजे आरती को लीन्हे चामी कर थारीहैं ॥ रुचिरुचि रंग रंग विविध प्रसूनलाजा हर्ष उतकर्ष कीन्हे बर्ष तयारी हैं । रघुराज सहित समाज राजबंशिन की आवैं कोशलेशजू के कुँवर शिकारीहैं १ बिज्जुछटा सी अटानि चढ़ी अति मोदमढ़ी दृग नारि निहारैं । मोतिन तंदुल लावनकी फल फूलनकी बरषा बिसतारैं ॥ भांति अनेकन अंबर भूषण श्रीरघुनंदन ऊपर वारैं । थार सँवारि कै बारहिबार छकी छबि आरती अंबुउतारैं २अवध

बजारबीच आईहै सवारी जब देखि पुरनारी तन मन धन वारी है। चामीकर थारनमें आरती उतारी आशु बरषैं प्रसून लाजा मोद भार भारी है ॥ लेतीं बलिहारी मनहारी मंजु मूरति की राजमाधुरी निहारी पलकनेवारीहै। रघुराज कोटिन अनंग छबि वारी छबि वारी बैसवारी देखि छैलन शिकारी है ३ ॥

बिश्वनाथ० ॥ लैफलसैं हुलसैं बनिता बिलसैं बहुमैनका मानहु आनै। त्योंही बिराजतीं बारबधू लियमंगलद्रव्य किये कल गानै ॥ बाजत बाजने वृंद गयंदनि मंजु पताकनि पुंज बितानै। बोलत जांगरे टेरैंनकीब त्यों बंदिहु बंशके बाने बखानै १ बांके कसे बिलसे बरबीरन हीरनके शिर पेंच दिपैहैं ॥ मंजुमहा मुकुता कलँगीन त्यों माल मणीन प्रभापसरैहैं। हास बिलास औ कुंडल लोलकी गोलकपोल छटाछलकैहैं। भ्राजतयों भरतादिक छैलनि छाके बधून के वृंद लखैहैं २ बरबाजि चढ्यो उमड्यो छबि छैल मड़ावत बीथिन माहँ अरो। निज छाहँ छबीली लखै छकिकै अलि जात शिकार शृँगारभरो ॥ झुकि मैं जु झरोखनि सों निरखी इन नैननिमें रसखानि परो। तबतें दरशावतही अबलों नहिं जानिपरै मोहिं काहकरो ३ अलकैं ललितलोल हलकैं कपोल गोल झलकैं निचोल मोती जाल जगमाथ हैं। चलैं चौंर दोनोओर भूपति किशोर आछे और सब आगे पाछे सोहैं सखा साथहैं ॥ आवत शिकारसों शृँगार बन फूलन के गजरे अनूपगूंधे बेलागूंमी गाथहैं। राममुख मंडित अखंडित मयंकदेखि दिल देवदारन के रहत न हाथहैं ४ ॥

रघुराजसिंह० ॥ मंद मुसक्याइ लेत जियरो लोभाइ नैनपथह्वै हियमें आइ फेरि टारे ना टरैं। कोटिन अनंगनकी सुछवि तरंग अंग अंग प्रति होति बदरंग सम क्योंधरैं ॥ डहरडहर परी कहर शहरबीच चहर पहर माचि रह्यो तेहि पहरैं। रघुराज कौन कामिनी जोकरै कुलकानि कोशलेश कुँवर कटाक्षनकटाकरैं १। सोहैं सबै चलि चौक चमूयुत बादक बाजनवृंद बजाये। यानन

किंकिणि बारनघंटनि बाजिन पैंजनियां रवभाये ॥ त्योंहीं रहेलसि सूरमुखीन पताकनके गण अंबर छाये । मागध सूत बखानत राम रिझावत ढाढ़ी ख्वालै गाये २ रानी महामुदमय अवधेशहु जेहैं अटानि चढ़ेअतुराने । धावनधाय सुनाइकै आवनि बारन बाजि लहे मनमाने । चारु मणीनके चौकरचाय तहां मणि· मंडित मंजुलठाने । गावत गायन चायन चायन राजत राम शिकारबखाने ३ धाइनि चारिहु भाइन चाहिकै चूमिमुखै सुख आंशु नहाये । रामै निहारि निमेष निवारिकै मोदित भूपशरीर भुलाये ॥ जातते गाये न आनन एकई पेखि प्रमोद जो मातन पाये । दै द्विजदेवन दान महान नरेशकुमारन बेगि बोलाये ४ संग सखान समेत अनंदसों जाइ पिता पद बंदित भाये । सूंघिकै शीश सबैके शिकारके कौतुक राउ क्रमै कहवाये ॥ फेरि दिये पल बांटि प्रशंसि लै भीतर सानुजराम सिधाये । बारि उतारिकै बारि मनी मुख चूमि महामुद मातन पाये ५ कौशिला आपने पाणि सों आनि कलेऊ दियो सो बखानिकै खाये । राम सखान समेत अँचै करि बीरी मुखै कढ़ि बाहिर आये ॥ हास बिलासकै लेत हुलास दुवारलों खास सखा पहुंचाये । नाथ निहारि लियो सिय मोदसों पावत पार न शेशहु गाये ६ उतरी सियनारी सखीनके संग हिये अति मोद उमंग भरी । उतरे रघुनंदन द्वारमें देखि करी कल आरती हीय हरी ॥ उर अंचलके चलते पिय चंचल डीठि चली तरसी सकरी । रसना रददाबि उतारि दरें लैगई घरै पीय करें पकरी ७ ॥

संग्रह० दोहा ॥ बैठेजाय सिंहासन राम सिया सुखछाय । बोली सखियां जोरिकर उरमें अति हुलसाय ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ सुठिसुंदर यह सिय पिय अँखियां लागि रूप रहैं । सकल सुकृतकर फल यहपावैं बिधिसों बाल कहैं ॥ जनम जनम जनमाहिं अवधहिमें पैनहिं पलकगहैं । बिश्वनाथ छबि लखि लखि अनिमिष लोयनलाहु लहैं १ अँखियन बिधि

तुव कहाबिगारयो। येते बड़े जानि इनऊपर नाहक निमिष सवांरयो ॥ यकतो सांझ सकारे निकसैं छैल छबीले बागैं। बिश्वनाथ ताईपर ताकत पलक निगोड़ी लागैं २ ॥

रामसखे०रागश्रीबडोतार ॥ अहोपिय आरति जिय लगी तिहारी। सुंदर अवधबिहारी ॥ बिनुदेखेयह सांवलि मूरति एकहु पल न सुहाई। बदन चंद मुसुक्यान माधुरी चितबित लियो चुराई ॥ भौंहन अरु आंखिन जुलफन बिचभुरकीसी शिरडारी ॥ जैसिय मुकुट कि लटक बसतिउर निशिदिन टरति न टारी । जबलगि रहत शिकारकेलिमें तबलगि मन अकुलाई। झांकहिं जाइ झरोखन क्षणक्षण सांझ समय अति चाई ॥ सुनहु सुजान प्रेम रस सानी बिनती ललित हमारी। नैननतें न होउ अब न्यारे रामसखे बलिहारी ॥

संग्रह०दोहा ॥ हेमथार भोजन बिबिध परुसिधरे नवबाल। पुनि बोली करजोरिके ब्यारुकरहु ललि लाल ॥

कृपानिवास० पद ॥ दोउ जेंवत हास बिनोद करि रसरंग उमंग अंग अंग बरसै। परसि परस्पर स्वातिक मातिक ग्रास उठै मुख ना परसै ॥ सुकर सुधार सकौर सियाको राम जिमावताहितदरसै। दृगछोर सिहाय सुभागभरे कर चूमिमहा मनमें हरसै ॥ गति बाद्य नवतार तरंगनि संग सुहागिनि सुखं सरसै। कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहिं जाको महामुनि मनतरसै १ ब्यंजन समय बिनोद नवल नवनेहनयेकर पैकररी। मानो पंकजकोशभरे कलकेसरकौर कमलटररी ॥ कंजविलोचनि उरभ बिमोचनि बारि सुधा रससों झररी। कृपानिवासी सबकर बैनन परस बदन सियजू बररी २ भोजन करत प्रभंजन नंदन प्रेमाकर सुंदर जगबंदन । शेष मैथिली रमण थारके सने कमलकर मुख अरबिंदन ॥ बिबिध प्रकार स्वादहित मूरति कृपा चारुशीला अधिकारी। नेह बिवश बर सुघर राम सिय स्वकर जिमावत कर ककनारी ॥ सखी सकल रुचिकारि प्यारसों देत बदन हँसिकौरे । यह बलिशेश

अवेश समयको मादक तर कर जोरि निहोरे ॥ पूरबरोचक पाक बताये पाये हनुमत सुखद खवाये । सरजू पय शीतल जल झारी रूप लता ललचाव पिवाये ॥ षोडश कोटि सखी सब धामहिं लेत प्रसाद प्रसादी संगहिं । देखत लाल बिलास हास रस खास खवासिनिके रंग रंगहिं ॥ समय समय सुख भक्त भोगिया अचवन करि फिरि मोहिं बुलावैं । कृपानिवासी टरि प्रणाम करि गुरु पनवारो हरषि उठावैं ३ ॥

संग्रह० दोहा ॥ चौपर खेलत राम सिय मुदित लखाति सब बाल । कोइ कहैं जीतहि लाड़िली कोइकहे जीतहिंलाल ॥

कृपानिवास० राग सोरट जैजैवंती ॥ लाल तिहारी चौपरि ने चित चोरि लियो है । पांसे में फँसिरही किशोरी नवनेरी ललकार पार यह सार मार मै मार मरोरी ॥ द्राव घातमें भावभई है हार जीतकी प्रीति निचोरी । कृपानिवास श्रीरामरसिक पिय बाजी में राजी करिगोरी १ राम रसिककी चौपरि में चतुराई भरिपाई । ज्यों खेलै मनलाई ॥ दंपति जीते रसिक सुजीते हारि कहत सब सार बचाई । युग जीते फूटे जुरबेकी चाह चौगुनी चेत चिताई ॥ कृपानिवास गुरुकृपा पठाई । काचीकरि पाकी घर आई २ ॥

संग्रह० दोहा ॥ नींद बिवश होय रामसिय उठि तब कीन्हेउ शैन । सहचरि परदे छोड़ि सबआई बाहिर ऐन ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागललित ॥ भोर जानकीजीवन जागे । सूत मागध प्रबीण बेणु बीणा धुनि द्वारे गायक सरस राग रागे ॥ टेक ॥ श्यामल सलोने गात आलस बश जँभात प्रिया प्रेम रसपागे । उनींदे लोचन चारु मुख सुखमा शृंगारु हेरि हेरि हारे मार भूरि भागे ॥ सहज सुहाई छबि उपमा न लहै कबि मुदित बिलोकन लागे तुलसीदास निशिबासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे॥

कवि केशव० दोहा॥ जागत श्रीरघुनाथके बाजे एकहिबार। निगर नगारेनगरके केशव आठहु द्वार॥

संग्रह० दोहा॥ प्रात कृत्य निरवाहिके दीन्हे बिप्रनदान। नीति प्रीति पालक सदा सिय पिय परमसुजान॥

रघुराजसिंहछंदचौबोला॥ सोहत अवध तखतपर दशरथ बिभव शक्र संकाशा। फेरत शासन नवौखंडमहँ मित्रहरष अरिनाशा॥ नित नवआनँद होत अवधपुर सुखरासी पुरबासी। रघुपतिशील सनेह सुभाउ कथत नित दरशन आसी॥ चढ़िमतंग कहुँ चढ़ि तुरंग कहुँ चढ़िसतांपुर माहीं। बिहरत सखनसहित सुखदायक प्रातहुसांझ सदाहीं॥ प्राणहु ते प्रिय राम जाहिं नहिं असकोउ त्रिभुवन नाहीं। काकहिये प्रभु अवध प्रजनको बसहिं जे प्रभुभुज छाहीं॥ पुलकित प्रजा प्रमोदित भे सब कीन्हे जयजय कारा। युग युग जियें जानकी रघुपति हमरे प्राणअधारा॥ उठिप्रभात करि प्रात कृत्यसब करहिं सो मातन काजू। पुनिगुरु बिप्र काज निरधारत गुरुगृहचलि रघुराजू। याम दिवस बाकी रघुनंदन निकसहिं सहित सवारी। अथवा मृगयाहेत जातकहुँ सुंदररूप शिकारी॥ सांझसमय पितु निकट आय पुनि अपने महल सिधारे। लषन सखनयुत लखतनृत्यनित सुनतगान सुखसारे॥ बीतत याम निशा जननीगृह करहिं सबंधु बियारी। करहिं शैन पुनि कनकभवनमहँ मोदित अवधबिहारी॥ अतिप्रसन्न पितुकारजलखि करहिं बखान सदाहीं। सज्जनसाधु बिप्रपुरबासिन काहिं प्राणप्रिय नाहीं॥ पुरजन परिजन सभ्य देशजन सज्जन भूसुर साधू। राम सनेह शील गुण बांधे लहे न सपनेहुबाधू॥ कियेबिमल यशधवल दिगंतन बिक्रमबिश्वबडाई। रमारमण सम सकल गुणाकर को पावै समताई॥ दोहा॥ ऋतुपति ग्रीषम पावसहु शरद शिशिर हेमंत। जनकसुता युत सुखलहत अवधनगर निवसंत॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रहपरमानंदत्रैलोक्यमंगलमृगयाइक्कीसवांप्रकरणसमाप्तः २१॥

अथ हेमंतऋतु बिहार ॥

संग्रह

अनेक सद ग्रंथोंसे

बाईसवां प्रकरण ॥

रघुराज०कवित्त ॥ हेरिये हवेलिनमें हेलिनके हेलामचे हरबर होत हुब्ब हौंसहू शहरमें । हृदिमें हुलास हिलिके हँसनहेत हंसहौंसलाते हीन हंससे डहर में ॥ है गयो हेमंत हद्द हायन में हानि हनि हाउको हटाउनहिं अहनि पहरमें । रैहैंक्योंहूं बास हिय हियके हटाये हठि हार हेरवायदेहु हिमकी हहरमें १ सरमें सरितमें सरोवरमें सघन सहेटनमें सदन सिविर है । सैनमें सु-सैननमें सब सजनीनहूंमें सज्जन समाजमें दिशाननके शिरहै ॥ सौखमें सरोषहूमें शीलमें स्वभावहूमें सांकरे सहजहूमें शीतकी सफरहै । रघुराज सीते सुनैसिखिको सोहागसांचो सरस्यो सरस सनसारमें शिशिरहै २ सौखभे सदनमें समीर ना सोहात श्याम शैल सरितानकी न सैर सुखदाई है । सिरिफ सोहात सिखी सलिल सरोजसुम सदल उसीरहूं सजाई शत्रुताईहै ॥ रघुराज शशि की सहाई ते शिशिर शान सरसै सरस सूर शोभा सरमाई है । सुख सरसावनी नसावनी की सीत शेखी सांची सजनीन ही की संगति सोहाई है ३ ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ सियसँग बैठेश्रीरघुनंदन कहेउ लखहु हेमंतै । परम सुखद यह शीत भीत तिय लागिजाहिं गरकंतै ॥ बनियन को उपकार करत रजनीको बहुत बढ़ावै । निज प्रताप करि तरणि तेज हत शीतल जगत बनावै॥जेहि जेहि यह प्रिय लगत

न तेहि कोपित हिम ते जारैं। याते निदरि सकल ऋतु निज गुण हास कुंद मिस धारैं ॥ उदय होहिं जगहित निज पूषग लजि भजि आशुहि जाहीं। याहीते प्रगटै यहि लोकहिं छोटे दिवस देखाहीं ॥ रिपुते भीत रिपुहि के रिपुको करियमीत अस नीती । असगुनि अगिनि दिशा में ऊगत करि अगनिहिं सों प्रीती ॥ बिपति परे सब जगत नीति बिद सांची नीतिहि गाई । अनिल अनल को सखा दासको भो अब शीत सहाई ॥ पाला सों पूरणकै पुहुमी पेखहु परम सोहायो । बिश्वनाथ जनु महा सुयश निज जगत सुपेत बनायो १ यह हेमंत महँ अति सुख लेखी । तिय पिय बिनुहुँ कम्पित पुलकित बिहरन उत्कण्ठितहि लेखी ॥ पावन सहित हिमिसर अगाध को लिये निज सरिस बनाई । अचरज यह बियोगिनिन आवत आंसुनि हियरै राग रमाई ॥ जो तिय परम सुकिया काहू को नाहिं बदन देखावै। ताइ के अधरन में क्षद रद यह रसिक हेमन्त बनावै ॥ याकी रजनी जो बियोगिनिन महा काल सी जाती । बिश्वनाथ सोई संयोगिनि क्षण ही इव दरशाती २ ॥

देवस्वामीॱपदरागधनाश्री ॥ राम को हिमऋतु में श्रृंगार गेंद बरण सबभार ॥ गेंद बरण पट भूषग तैसे तुरंगनपर असवार ॥ धनुष बाण दोउ करन बिराजत कमर कसे तरवार ॥ संग लखन सुठि छरे छबीले बहुतक राज कुमार । चँवर ढुरत शिर छत्र लसत अति बरसत सुमन अपार ॥ सैन सहित श्री राम समय में आवत खेलि शिकार । डंका धुनि हय गय रथ गाजत उठि रहि जै जै कार ॥ होत आरती मंगल साजत पुरजन बिबिध प्रकार । नगर देवता हरषि उठी जनु देखि राम छबिदार ॥

बिश्वनाथकृतपद ॥ एक समय बैठ रघुनन्दन सिय सों कह्यो शिशिर नृप आयो । लीन्हों यह कै अमल आपनो धूमकरी सुधुजा फहरायो ॥ क्रमही ते रिपु प्रबल पराजय होति अहै अस नीति बिचारी । क्रम क्रम लागे तेज बढ़ावन पाय सहाय शिशिर

तिमिरारी ॥ लोध पुहुप की उड़ी पराग यह पेखि परति प्रकृति नभ छाई । संग बसंत अनंग अवाई रेणु आगिली सैन पठाई ॥ योगिनिहू मन लीन्हो बश करि मंत्रित मदन बिभक्ति किधौंहै । कै बिशुनाथ बसंत चलायो फैल श्रृंगारहि चूनरि सोहै ॥ यहि ऋतु कामहि बागवान अतिसुघर बनोहै । बिधि बिसकरमौ जाहि निपुण ते निपुण गनोहै ॥ पत्रपुराने झारि श्रृँगारै रसे भिगोये । आलबाल उपबन बन बीच बसंतहि बोये ॥ पुनि पिय बिनहूं तियनि शिशिर कहावै । याही ते सबलोक नाम यहि शिशिरहि गावै ॥ अलभ जानि पुनि तिय कुच गरमी मोद महाई । बिश्व नाथ पिय तियनि पांय परि लेत मनाई ॥ यहै श्रृँगारै बिभव प्रगटि यशदेत बसंतै । बरणहिं सिगरे सुकवि प्रथित गुण अहैं अनंतै ॥ जहँ तहँ मुकुल रसाल मधुप मकरन्द पिये हैं । बिश्व नाथ तजि योगिन मानस मृता जिये हैं ॥ नहिं अति शीत न गरम शिशिर ऋतु सुखद बिराजै । पुनि शीतहूं औ गरम बिर-हिनिन योगहिं छाजै ॥ सित बसंत पंचमीते सेवा करत बसंतौ । शिशिर अधिक ऋतु बिश्वनाथ स्वाधीनहिं कंतौ ॥ सुनि सिय पिय कह फागुन गुनि गुनि कोउ कोउ मुनि अस बरणत अहईं । गुनियतु फागुन चैत ऋतुनपति माधव कविगन हठकरि कहईं ॥ इमि बरणत बिहरन उतकंठित दंपति कछु दिन मुदित बिताये । कह बिश्वनाथ बसंत पंचमी आवतभे पुरकहँ हरषाये ॥

युगलानन्यशरण० पद ॥ आयो बसंत रसवंत आज । सजिसाज सोहावन सुमन साज ॥ सुन्दर मन मोहन सुछबिछाज । गावें गुणपिक मधुकर समाज ॥ पल्लव नूतन मंजरिन ब्याज । निज यश सरसावत कलित काज ॥ ऋतुराज रिझावत महा-राज ॥ रघुराज बंश शिरताज राज । बीणा डफ बेणु मृदंग बाज । अलि युगल अनन्य सुनत सुराज ॥

देवस्वामी० पद राग बसंत ॥ सिरी पंचमीपाय सियाबर को सजिये श्रृंगार गुलालनसों । श्वेतचांदनी तर ऊपर रचि पूजै

चनक रसालनसों ॥ कनक रतन भूषणसे सजिकै औ मोतिन की मालनसों। रामदेव की आरति कीजै बजै साज स्वरतालन सों ॥ मकरअयन से कुंभअयन लौं सियबरको ऐसो शृंगार। सिय नीलांबर राम पीतांबर मनहुं युगलमें युगल बिहार ॥ प्रथम यामके भीतर करिये गरम सुगंधित सबउपचार। इष्टदेव को ध्यान राखिउर बार बार लीजै बलिहार ॥

कृपानिवास०पद ॥ देखौ बसंत कंतबल पायो कैसो बन्यो बलवंत आजरी। प्रमदागनमनजीतन कायो काम पठायो साजरी॥ भई हैं अधीरा धीरा धीरा नागरि शीला शील हरयो ऋतुराजरी। कृपानिवास रहस्य रसमाती बोलति युवति बिगतलाजरी ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ बसंती बस करिये रघुनन्दन। अति अनुपम सिंहासन सोहै चौंर करहिं अलि भरी अनंदन ॥ लै रसाल मंजरिनि पल्लवनि गायक गेंदुवा चले बनाय। करि प्रणाम आगे धरि दियसो बिश्वनाथ हिंडोलहि गाय ॥

कृपानिवास०पद ॥ शुक्ल पंचमी आई सुहागिनि सुघर सुभगतन सजिय शृंगार। आगम फाग बसंत मनावो राम रसिक सँगरस को त्यौहार ॥ बरष दिनन्ह के मनके मनोरथ सुफल फलनकी आई बहार। कृपानिवास सिया स्वामिनि सुख श्याम सखा हित सकल उधार ॥

रसरंगअली०पदसवैया ॥ सब जोरि समाज शृंगार किये लिय मंगल भाजन सौंज भली। निकसी हुलसी नव यौवन में रस रंग उमंग सों गाय चली ॥ मणिमंदिर कुंज निकुंज बनी अली पुंज सुगन्ध लौं फूली कली। रस रंग भरी बहु हास करी सिय लालै बसन्त बँधायो अली ॥

ज्ञानाअली०पदगजल ॥ पहिरे बसन बसंती यौबन उमंग भरा। श्री अवध नृप लाल छबि लखि मार मन मरा ॥ चीरा सुरंगी शीशपर सित पीतरंग हरा। कँल्गी झुकी शिर पेचपरमोती लरैं

परा ॥ ऋतुराज साज साजिकै क्या क्या न रंग करा । ज्ञाना अली जाहिर सदा जुल्मी जबरबरा ॥

कृपानिवास०पद ॥ प्रथम बसंत समाज नवल सुख पवन कुंवर दरबारं । राम रसिक सब नव रस गुण भरि गावत नवल बि- हारं ॥ नवल प्रेम नव रहस्य गान रस बांटत परम उदारं । कृपा निवास शरण सुखदायी श्री हनुमत सिरदारं ॥

अग्रअली०पद ॥ आजु बसंत पंचमी पूजा श्रीरघुबरको बधाई। कनक कलश सजि भरि धरि शिर पर आंब बौर जब ल्याई ॥ चोवा चन्दन और अरगजा मोतियन चौक पुराई । रतन जड़ित पिचकारी कर गहि केशरि रंग भराई ॥ तकि तकि मारत श्री रघुबर को अबिर गुलाल उड़ाई । रघुनन्दन सिंहासन बैठे नि- रखि निरखि सुख पाई ॥ छोरब छिरकब भरत परस्पर ऐसो खेल मचाई । नवलबसंत नवलबन मौरे नवल लाल मनभाई॥ अग्रदास गावहिं श्री रघुबर फगुवा परम पद पाई ॥

कृपानिवास० पद जंगला ॥ रंग रंगीले रंग होरीखेलत।रंगमहल रंगभरि भरि दोऊ रंगउमंग अंगपर रेलत ॥ रंग छके रंग गौरि श्यामापग रंग अनंग उघरि सुख केलत। कृपानिवास रँगीली सखिजन सियबल्लभ रंग नैननिझेलत ॥

युगलानन्यशरण०पदगजल॥ भावे मुझे सखियों सुनो मनमोहनी होरी। मतवारनी जिसमें भई रँग भीजती गोरी ॥ सिय श्याम की प्यारी अदा कमली करीसनी। निज परकी होश कुछनहीं बेहोश सी गोरी ॥ श्यामाके साथ सहचरी सेना नहीं थोरी। सँग सांवरी के सुखसने सहचर सबी सोरी ॥ पिचकारियां कर कंज गुलालोंसे पुरझोरी। किसहीको कोइ माने नहिं करती बरजोरी ॥ इसकेसिवाय सौजकहे तिसकीहै मतिथोरी। जिसमें हमेश जीती जनकराज किशोरी ॥ जी युग्न सखी भावती होरी सुरंग बोरी। गुनगाइये तर तानसरस सानसे भोरी ॥

कृपानिवास०पद ॥ राम रसिकसों खेलिखरी जू जनक लली

अलबेली छबिसों। केसरि बूंद झरै बल अलकैं॥ लाल गुलाल कपोलनि सोहै झीने पट लपटेहैं तनसों। मिलि उघरेअँग महा द्युति झलकैं। पिचकारी करकमल धारति चोंप भरी चित चंचल ललकैं। कृपानिवास सिया स्वामिनि को रूप अनूप बिलोकत प्यारो। खुले नैन कल परत न पलकैं॥ पदकाफी॥ बेसरि सों केसरि की बूंदें ढरि ढरि सुभग कुचनपर आवत। चंद्र कुंडली युगल कोक शिर झर जनु मनमथ झार सिरावत॥ हेरतकर फेरत पुनिप्यारोचाटत फणि मनु गरलगिरावत। कृपानिवास सिया स्वामिनिकी होरी मैं छबि छैल छकावत॥ राग सोरठ॥ प्यारी जीरा सालूड़ासौं रंगझरै। मनु शशि नभचढ़ी अरुण बादरी संगम दरश ढरै॥ हँसत श्याम मुख मोरि लजावति कामण कौतुक करै। कृपानिवास सिया स्वामिनि लखि रामरसिक मनहरै॥

संग्रह०दोहा॥ पिय प्यारी सुखमा निधी अलिन अघावत नैन। रंग बोरी जोरी यहै सदा बसहु उर ऐन॥ खेलि बसंत अनन्द सों चतुर सखिन के संग। करि मज्जन बैठे मुदित सिय पिय सहित उमंग॥ दिवस याम बाकी रह्यो राम सिया हरषाय। अनुज लखन को तुरतही लीन्हें निकट बुलाय॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागबसन्त॥ खेलत बसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुर समाज॥ सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ। झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ॥ बाजहिं मृदङ्ग डफ ताल बेनु। छिरकहिं सुगंध भरें मलय रेनु॥ उत युवति यूथ जानकी संग। पहिरे पट भूषण सरस रंग॥ लिये छरी बेत सौंधे बिभाग। चांचरि झूमक कहिं सरस राग॥ नूपुर किंकिणि धुनि अति सुहाइ। ललना गण जब जेहि धरहिं धाइ॥ लोचन

आंजहिं फगुवा मँगाइ। छांड़हिं नचाइ हा हा कराइ॥ चढ़ि खरनि बिदूषक स्वांग साजि। करैं कूट निपटगई लाज भाजि॥ नर नारि परस्पर गारिदेत। सुनि हँसत राम भाइन्ह समेत॥ बरषत प्रसून बर बिबुध बृन्द। जय जय दिनकर कुल कुमुद चन्द॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुलसिदास १ खेलत बसन्त रघुबंश बीर। सँग भरत लषण रिपुदवनधीर॥ तनु नील कांति मणि लसत श्याम। राजीव नयनछबि कोटि काम॥ पटपीत तड़ित शोभा न थोरि। लियबंधु सखा कर अबिर झोरि॥ केसरि कपूर कुंकुमा घोरि। छिरकहिं यक यक तिय दौरिदौरि॥ डफ ढोल भेरिबाजैं निशान। सुर कौतुक देखैं चढ़ि बिमान॥ खेलन आईं सिय सखिन संग। पट बिबिध भांति पहिरे सुरंग॥ भूषण विचित्र पट अधिक रूप। राजत मयंक मुख छबि अनूप॥ रघुपति चितये जानकी ओर। आनन्द सिंधु बाढ़्यो न थोर॥ को बरणि सकै यह सुखसमाज। सब मगन भये गइ लोक लाज॥ यक चतुरनारि कीन्ह्यो उपाय। छलिकैं पकरे रघुबीर जाय॥ मुकुतामणि भूषण काढ़ि लीन्ह। सखी मन भायो करि छांड़ि दीन्ह॥ यक सुमुखि सखी सिय बोलि लीन्ह। अँचरा पटपीत सों गांठि दीन्ह॥ महिमा अतुलित शोभा अपार। मनु कनक लता ढिग तरु तमार॥ फगुवा मांगन मिसि देहिं गारि। सखी लोचनलाहु लेउ निहारि॥ जोरी अद्भुत युग बिधु प्रकास। यह सदा बसौ उरतुलसिदास २॥

बिश्वनाथपदरागबसन्त ॥ खेलत बसन्त दोउ सजनि साजि। रचि अवध राज ऋतुराज राजि ॥ इत बजहिं बीण नूपुर सुपुंज। उत लसहिं कपोतन मधुप गुंज ॥ इत नचहिं अप्सरा देहिं तोर। उत थरकि रहे बन हरषि मोर ॥ इत कीन अलिन गण गान भूरि। उत कूक कोकिलन रही पूरि ॥ इत उड़ि गुलाल भोडर सोहाय। उत उड़हिं पराग सु पवन पाय ॥ इत भरे गुलालहिं लाल बाल। उत किंशुक फूले हैं बिशाल ॥ इत चपल चलहिं पिचकारिबृन्दु। उत चुवहिंचारु मकरन्द बृन्दु ॥ इत करहिं बिदूषक स्वांग भांति। उत बोड़ बिलसहिं बिबिध पांति ॥ इत बिश्वनाथ मन हरत राम। उत मोहत कामिनि मनहिं काम ॥

चन्द्रअली०दोहा ॥ यहि बिधि उत्सव पंचमी भयो अवध पुर मांह। सब घर अति आनन्दहै अति सुख उर न समांह ॥

श्रीतुलसीदासजी०चौपाई ॥ बिश्वामित्र चलन नितचहहीं। राम सप्रेम बिनय बश रहहीं ॥ दिन दिन सौ गुण भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनि राऊ ॥

संग्रह० ॥ देखत नित नव मोद बधावा। माघ पूर्णमासीदिन आवा ॥ गाधिसुवन कह सुन अवधेशा। चलन चहौं मोहिं देहु निदेशा ॥

रघुराज० ॥ बहुत काल बीत्यो महराजा। पाये मोद सिद्धि सब काजा ॥

संग्रह० ॥ अब तो हिमगिरिको हम जाउब। राम लषणहित पुनि यहँ आउब ॥

रघुराज० ॥ सुनि कौशिकके बचन सुहाये। अवधनाथ अति ही बिलखाये ॥

तुलसी० ॥ मांगत बिदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ भय आगे ॥

रघुराज० ॥ सजल नैन गद गद कहबानी । नाथ देति दुख तव बिलगानी ॥ अस कहि नृप षोडशउपचारा । करि मुनि कर पूजन सतकारा ॥

तुलसी० ॥ नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ॥ करब सदा लरिकन पर छोहू । दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥ असकहि राउसहित सुत नारी । परे चरण भरि लोचनबारी ॥

रघुराज० ॥ मिलेउ महीपति कहँ मुनिराई । पुनि चारिहु बंधुन हिय लाई ॥

तुलसी० ॥ दीन्ह अशीष ऋषय बहुभांती । चले न प्रीतिरीति कहि जाती ॥

कृपानिवास० ॥ प्रेम बिवश लोचन भरि आये । संत बियोग कठिन दरशाये ॥

तुलसी० ॥ राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ॥ दोहा ॥ राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनंद । जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधि कुल चंद ॥ चौपाई ॥ बामदेव अरु कुल गुरु ज्ञानी । बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥ सुनि मुनि सुयश मनहिंमन राऊ । बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥ बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपति गृह गयऊ ॥

संग्रह० ॥ नृप रानिन रघुकुल परिवारा । अवधपुरी बासी नर दारा ॥ परम प्रमोद सबनि मन माहीं । निशा दिवस क्षण सम दरशाहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ जहँ तहँ रामब्याह सब गावा । सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥ आये राम ब्याहि घर

जबतें । बसेअनंद अवधसब तबतें ॥ प्रभु बिवाह जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरणि गिराअहि नाहू ॥ कबि कुल जीवन पावन जानी । राम सीययश मंगलखानी ॥ तेहिते मैं कछु कहा बखानी॥करन पुनीत हेतु निजबानी ॥ हरिगोतिकाछंद ॥ निज गिरा पावन करन कारन रामयश तुलसी कह्यो । रघुबीर चरित अपार बारिधि पारकवि कवने लह्यो ॥ उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं । बैदेहि रामप्रसादते नर सर्बदा सुख पावहीं ॥ सोरठा ॥ सिय रघुबीर बिवाह जेसप्रेम गावहिं सुनहिं । तिनकहँ सदाउछाह मंगलायतन रामयश ॥

इतिश्रीमानसरामायणबालकांडअरुहेमन्तऋतुबिहार संग्रह समाप्तः ॥

अथ शिशिर ऋतु ॥

बिहारसंग्रह बर्णन ॥

संग्रह०दोहा ॥ कनकभवन महँ रामसिय सिंहासन आसीन । चामर मुरछल ढारहीं सुंदरि सकल नवीन ॥ बिबिध बस्तुलीन्हे खड़ीं सेवामें सब बाल । जनक लली रघुलाल मुख निरखति रूप रसाल ॥ सीताराम प्रसन्नमन सकल समाज हुलास । कह्यो

एक सखि आजुतें लाग्यो फागुन मास ॥ जनु अलबेलो रसपती छैलो परम प्रवीन । सुन्दरनर नारीनको बिनालाज करिदीन ॥

युगुलानन्यशरण०पदहोरी ॥ होरी आई प्राण प्रिय प्यारी । रसिक जनन जीवन हित मानो मनमथ साज सँवारी ॥ बरसत घन रसराग चहूंदिशि सरसत हिय सुकुमारी ॥ फागुनगावन भावन मन चितचावन सुखकारी । युगुलअनन्यशरण सुखमासर उमँगायो छबिभारी १ होरीखेलौ लडैती के संग आज । तेरीछबिपर वारी गईहौं राज ॥ मंदमधुर मुसक्याय गाय तरतान सरस रसखान साज । ललित लाड़िली लसन लखो ललचाय लाल सजवाय साज ॥ होय हरष उत्साह हिये हरसायन सुख सरसे समाज । युगुलअनन्यअली प्यारी छबि सुधास्वाद फागुन के ब्याज २ होरी में लाजको कौन काज । हिलि मिलि खेलिये रघुबंश राज ॥ फूली ललना बरबेलि आज । लीजिये मधुर मकरंदराज । पगिप्रीति परम पिचकारिलाज । मुदमानि चलाइय चतुर राज ॥ उमँगायशौक सरसाय नाज । डारो रंगीन रस रँग रिवाज । फागुन मनमोहन मिलि समाज । अलिहेमलता उर मन बिराज ३ ॥

संग्रह०दोहा ॥ अससुनिकै बिहँसे दोऊ बोले राम सुजान । ललना तुम्हरे हृदयकी हमैं परी पहिचान ॥ नयनसयन दीनी सिया चली चतुर बरनारि । फागुअयन में आयकैं लागी करन तयारि ॥

कृपानिवास०पदरागगोरीरेखता ॥ सियाजू सहज हँसि बोली । पियाजू आज है होली ॥ भरोतुम रंगसों झोली । हमोंने केसरै घोली ॥ टेक ॥ मेरा दिल अब नहीं रुक्ता । करोमन आपनो पुख्ता ॥ फिरौं क्या बुत्तपैक लुख्ता । समझलो मजेका नुक्ता ॥ दिखावो सैर बागनकी । मिलावो मौज फागुनकी ॥ सुनावो तान रागनकी । भुलावो बाणि भागनकी ॥ प्यारीकी रसभरी बानी ।

सुनी जब राम दिलजानी ॥ कृपानिवास मनमानी । रमाई रंगसों रानी ॥

विश्वनाथसिंह०पदहोरी ॥ छबि पूरी कस्तूरी धूरी रासिम है । ओढ़र धूरन चंदन चूरन केसरि कुरन कौन कहै ॥ शोभन भरी छरी कुसुमन की धरी हजारन राजिरहीं । भरीअबीर ओरोरिन झोरिन गोरिन केती धारिमहीं॥धरे कुमकुमा कंचन किश्तिन कुंदन मणि पिचकारि सचै । केसरि पवरि अतर अरगजा जावक कुसुमन रंगरचै ॥ हरदी मंजु मँजीठनि पीठनि सखियन कुंडन घोरि दिये । योहीं हरिहु तयारी कीन्ही गौने ओढ़र ढालिये ॥ बीण मृदंग उपंग तमूरे बेणु सितार गितार सजे । जलतरंग मुरचंग झांझडफ अरगन सुरगन सरसबजे ॥ सुखप्रिय उज्ज्वल प्रिय गंधर्ब प्रिय लक्ष्मणहुँ भरतभले । रिपुहन बिश्वनाथ रघुनन्दन सजिकै खेलन फाग चले ॥

प्रेमसखी०दोहा ॥ राम बुलाये सखा गण सबै काम के रूप । आये पिचकारी लिये केलि कलह अनुरूप ॥

रूपसखी०पदहोरीकाफी ॥ कोशलराज लला मिथिलेश किशोरी हो । खेलत हैं दोऊ मोदभरे रंग होरी हो ॥ टेक ॥ लीन्हे सखा संग सोदर श्री रघुबीर है । मैन महीपति साथ मनोभट भीरहै ॥ केसरि पेंच बिराजत हैं जरतारी के । राजत हैं तिन पै शिर पेंच किनारी के ॥ एकन के शिर सोहति पाग मुकेशकी । छाजि रही झुकिकै कलँगी अति बेश की ॥ एकन के शिर चीरन पीत बुताने है । मनौ मनोज महीपति खोले खजाने है ॥ एकन के कुलही शिर कञ्चन की लसैं । एकन के शिर पागें प्रसूनकीबसैं ॥ एकन के झिलमैं सम रेशमजारी हैं । नयन गुलाल बचावनकी हुशियारी हैं ॥ एकन के कल कुण्डल डोलत कानमें । खातबीरी यक ठाढ़े अनंगकी शान में ॥ एकन के जुलफैं हैं कपोलन पै छुटीं । हे हरकै गिरि मैं मनो सम्बुल की बुटीं ॥ एकन के नख शिख बनेअंगद हेमके । बांधेमनो लिखि यंत्र सदा सुख क्षेमके ॥

झीने झगा तन सोहत सौंधनि सों सने । कोर किनारिन मणि गण मोतिन सों बने ॥ केसरि सों दुपटा रंगि रूपैं छपाय है । तारजरी दोउ छोरन छैलन लाय है ॥ कञ्चन के पिचिका कटि फेंट गुलालकी । रंगन की गरमी उर गात है शालकी ॥ को बरनै छबि सुन्दर राजकिशोर की । जाकी कटाक्ष बिशाल प्रिया चित चोरकी ॥ सीय सहेली सबै अलबेली नवेलि हैं । गौरि गिरा कहिये जिन आगे गँवेलिहैं ॥ सारी सबै पहिरे तन रंग रंगीलि है । पीरी हरी कुसुमी सित ऊदी औ नीलि है ॥ एकन के शिर सोहै जराव सरासरी । मोतिन सों भरिमांग कलाब लगी जरी ॥ मालती कि कलिका भरी एककी मांग है । रूपे मढ़ी छुरी ढाल पै मैन की सांगहै ॥ फूलनसों गुहीं बेनी पीठि पै यों लसैं । म-नहुँ दुरंग भुजंग गिरा जल में बसैं ॥ एकन के शिर छूटे राजत बार हैं । श्याम बड़े चिकने घुँघुरे सुकुमार हैं ॥ चन्दन की सित खोरिन रोरि न बेंदा है । गंग के भौंर परे ज्यों गुलाब के गेंदाहै ॥ एक सखी के ललाट जड़ाव की आड़ है । शीश चढ़ी हिय तें सिय जयतिकी चाड़ है ॥ एकन के भृकुटीपर श्याम डिठौना है । डीठि डरावनको मनो रीछ के छौना है ॥ नयन निरञ्जन एकन के छबि यों लहै । गर्भ भरे भट मनहुं न अञ्जन को गहै ॥ एकनके दृग अंजन रंजित लोल हैं । लीन्हे मनौ निशिते तम पंकज ओलहैं ॥ लाल जड़े श्रुति भूषणते न कहे परे । मैन महीप सभा दोऊ दीवटसे बरे ॥ एकनके नकबेसरि मोर सुहावने । है सुरतरु की डारपै मोर लजावने ॥ एकनके लर मोतिनकी बर ग्रीव है । चंद सरोज सुदेश मनौं नदसींव है ॥ रंग रंगी तन तासुकी कंचुकी है बनी । राजतिहै जरि घुंडिन फुंदिनसों तनी ॥ कंचनके भुजबंद पुहे पटनील है । आये मनो शिव पै दिन रैन उकील है ॥ नींबी मढ़ीजरतारि रूमावलि संगिहै । हैअबनूसकी डांड़िन हेमकी बंगिहै ॥ नील रंग लहँगा कटि घूम घुमारे है । नूपुरकी ध्वनि मानहुं होत अखारे है ॥ को बरणै छबि सुंदर

राजकिशोरकी । जाकी कटाक्ष बिलास प्रिया चितचोरकी ॥

प्रेमसखी०दोहा ॥ सखिनं मध्य श्रीजानकी सखन मध्य रघुनंद॥ प्रेम सखी बाढ़त हिये लखि लखि परमानंद ॥ कवित्त ॥ होरी खेलबेको खरी जानकी सखीन मध्य रोकेकौन प्रेम सखी उरके अनंदको । आस पास यूथ यूथ युवती समूह ठाढीं गीत मिस गारिदेत सिगरी गोबिन्दको ॥ अंगनि भुकाय कछु मंद मंद मुसुकात चन्द्रिका भुकी है मत्त मानों जीति चंदको । प्रेमते पगी हैं रसरूप उमँगी हैं अली अंशते लगीहैं करलीन्हे अरबिन्दको ॥ प्रेमसखी जानकीको बदन मयंक देखि उपमा बतावै कैसे चंद्रमा बिचारेको । कंजते अमल मीन खंजनते चंचल है मैनशर सकुचात नैन अनियारेको ॥ नासिका सुहाई शुक नासिकाकी छीनी छबि तरल तरौना युत रौनि उजियारेको । लटकन लटकि छबीलीके अधरपर मानहुं चुनौती देत जुलफनवारेको ॥ सवैया॥ लाल लिये पिचका करमोंभय आपुखरे सियसामुहें आइकै । तैसीबढ़ी मुखकी सुखमा बिधु पूरण शशि निशाजनु पाइकै ॥ पीत दुकूल कसेकटिमें जिनते बिजुरी दबिजात लजाइकै । प्रेमसखी हियमें वह माधुरी राखत ज्यों निधि रंक चोराइकै ॥ कवित्त ॥ प्रेमसखी शीशपै किरीटकी चमक तैसी हलकैं कपोलपै सुगंध भीनी अलकैं । ओठ अरुणारे तैसे कुंदसे दशन प्यारे कुंडल कनक गंड मंडित है गलकैं ॥ लोचन बिशाल लाल कुंकुम तिलक भाल नासिका बुलाक पै अधिक छबि छलकैं । तन घनश्याम कोटि कामहुते अभिराम राम रूप देखि आली परती नपलकैं ॥ दोहा ॥ सियाराम शोभा अवधि बरणि सकै कबिकोइ । प्रेमसखी ठाढ़े दोऊ दृगन फागसी होइ ॥

हरिहरप्रसाद०दोहा ॥ खेलिरहे दोऊनके होरी नैनअनूप । सखा सखी चितवहिं चकित युगलचंदको रूप ॥

प्रेमसखी०कवित्त ॥ कुटिल कटाक्ष पिचकारी सी चलत चारु दुहूंओर नेह को उमंग रंग बोरी हैं । पलकैं परतमनो दुरत

करत चोट मंद मुसकानि गहि पाणि झकझोरीहैं ॥ भावकै बचावैं हाहा हावके खवावती हैं बदन बिलासते करत बरजोरी हैं। देखि देखि आजु छबि प्रेमसखी दंपतिकी नैननते हारिखेलैं कुँवर किशोरीहैं ॥ सवैया ॥ भूषण भूषित संग सखा इतसंग सखी सब कीन्हे शृंगारहैं । कोबरणै तिनकी छबिको बहुरूप धरे बिलसै रतिमारहैं ॥ लीन्हे उतै पिचका करमें इततैं बहुफूलके गेंद अपार हैं । प्रेमसखी सियके पियके ढिग ठाढ़े भये सब खेलनहार हैं ॥

विश्वनाथ०पद ॥ खेलत खेलत यारी यारी तहीं तहींआहोत भई । लोकाचार चारुताई पटु चारु चारु मति चैन छई ॥ चन्दन चन्दन निन्दननिन्दन वृन्दन वृन्दन बदन लसै। छकि छकि बिश्वनाथ नाथहिं नाथ रतिके रतिकेलि हसै ॥ पद ॥ लाल लाल सावँरे सों खेलन खेलन खेलन । बाल बिचक्षन अक्षन अक्षन किय रस मेलन मेलन ॥ हो हो होली होली कहि कहि बन्धु प्रचारे उचारेउ । सुनि बिश्वनाथ नाथ गीतन तन भान बिसारेउ सारेउ ॥

प्रेमसखी० कवित्त ॥ बाजेको बजावैं झूमि झूमि फागुगावैं व्यंग बचन सुनावैं एकएकनिसों करषैं । झूमि झूमि आवैं चावअधिक बढ़ावैं नैन तुरँग नचावैं रसमत्त हिये हरषैं ॥ फागु रंग प्रेमसखी बादरसे छाइरहैं चढ़िके बिमानते सुमन सुर बरषैं । रंग शस्त्रधारी बस्त्र भूषण सिलाहकारी बार बार रामसिया भौंहनिको परषैं ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ कहि जयजय रघुबरबढ़े इत तें सखा प्रवीन । जयविदेह जयकहिबढ़ीं उतते सखी नवीन ॥

प्रेमसखी०कवित्त॥ रामरुखपाइ धाइआइकुंअरोटासब कंचनकलित रंगभरी पिचकारी हैं । प्रेमरसमत्त बेगुमान गुन योबनको करषि करषि चलीं फौजैं न्यारीन्यारी हैं ॥ एककहैं जीति सौज सगरे छिनाइलेहु एककहैं ठाढ़ीहोत अबला बिचारी हैं । प्रेमसखी लोने लोने छैलदेव छौनाऐसे बोलिबोलि चलेजैति अवध बिहारी हैं ॥ दोहा ॥ जयाविदेहजा जनकजा कुजा भूमिजानाम।

जय रघुबरप्रियबल्लभा जयजय बोलतबाम ॥ पियदल आवत देखिकै मंदमंद मुसुकाइ । नैनसैन दीन्हीसिया चलींसखी हरषाइ ॥ कबित्त ॥ शायक से प्रेमसखी चंचल चलत नैन भृकुटि विलास तौ धनुषबनिआईहैं। गोलीगोला हावभाव व्यंगकेबचन बान मंद मुसुकानिजानि सेहथी सुहाई हैं ॥ अलकैं सुगंधभीनी झलकैं कृपाणऐसी तरल तरौनाजू सिफर छबिछाई हैं । नूपुर नगारेभारे होरीजंगजीतिबेको सुभटबधूटिनकीफौजैंउठिधाईहैं॥

रूपसखी०होरीकाफी ॥ कोशलराजलला मिथिलेशकिशोरी हो। खेलतहैंदोउ मोदभरे रँगहोरीहो ॥ टेक ॥ छूटैं दुहुं दिशि ते बर मूठि गुलालकी । हैइतघूंघुटओट उतैपटशालकी ॥ धुंधि कपूर गुलालकी छाई अकासमें । भानुसकोचि दियोपटमानो बिलासमें ॥ लालसखा झटकेउ इकलाडिली टोलमें । प्यारी एक सखी अटकी पियगोलमें ॥ लालउतै नरभूषण बांको बनायोहै। दैतियकीछबि प्यारीजू पासनचायोहै ॥ वाहीसबै रघुनंदन जयति सिखावहीं । जैमिथिलेशकिशोरी जू याहि पढ़ावहीं ॥ पाट बँधी पचरंग प्रसूननकी छरी । आइमिली दोउफौज हरोलन होपरी ॥ पागकेपेचछुटे शिरते पगआयहै । भीरपरे बिधु मानों सरोजमनायहै ॥ मोतीलरैं छुटिशीशतेआइ उरोजहै। संकट मैं शिवपै जलछांड्यो सरोज है ॥ पाइचले पियके दलदेखि सबै अलीं । ढीठैभईं धरि आगेसखागण लैचलीं ॥ ह्वैहैखरो जिनके जिय खेलकोदायोहै । सोनइहांते टरैगो एककोजायो है ॥ कौन सुनैसबकेदृगमूंदे गुलालहै। पीठिछांड़ि उपटीमुखचाटनलालहै॥

संग्रह०दोहा ॥ फिरेलजाय सरोषह्वै रामसखासमुदाय । करिपिचकारिनकी झरी दइनारिन घबराय ॥ पुनि सिमिटीं नवनागरी बाल माल ततकाल । सखन वृन्दपर डारतीं रंग गुलाल उताल ॥

प्रेमसखी०सवैया ॥ चोवनके चरुवा इतते अलिडारैं गुलाल की मूठिअपारहैं । केसरिरंग रँगेसिगरे पिचकानिकी मानौ रहीजुरि

धारहैं ॥ प्रेमपयोधिमें जाइपरे बहिकै सिगरेसुर देखनहार हैं। प्रेमसखी नटरैरसमत्त इतैनृपजा उत राजकुमारहैं ॥

ज्ञानाअलि०पददादरा ॥ ललनालोनी नवल रंगबरसै । भीने पटभीने तनलपटत अटपट गारिनसरसै ॥ उड़तगुलाल कुमकुमा मारत सुमन गेंदकर करसै । पिचकारी भरि पिय सिय ऊपर डारिसकत नहिंडरसै ॥ कोटिन राजकुमारिनके बिच राम श्याम घनदरसै । सियस्वामिनि दामिनि द्युति दमकत अरस परस तनपरसै ॥ जेहिसुखकोचाहत शुकशारद बिधिनारद हरि हरसै । ज्ञानाअलि सोई यशगावत मिलनआश जियतरसै ॥

बिश्वनाथ०पदहोरी ॥ सुघरि सुघरि अलि आली आली कर लैलै पिचकारी। श्रुति कीरति कीरति निधि सँगमिलि गनि गनि गावत गारी ॥ खेलन खेलन नवलालनसों झमकि झमकि भर झोरी । शत्रुशमन हरतर तरसहिं होहो होरी करि दोरी ॥ लाय लाय मुखलाल लालहि तरकरि करि रंगनते । लपटि लपटि उर उरज दरेइन रण जय लिय तन मनते ॥ छकिछकि श्रुतिकीरति कीराति में बिहँसि लषणलघुभाई । झपटि झपटि पट फटकि फटकि गहि कुमकुम रँग अन्हवाई ॥ मिलि मिलि गयउ गातसों सारी सारी नहिं सकुचानी । गहन हनन सुधि रही न थकि थकि पीतमरूप लोभानी ॥ बिश्वनाथ नाथनुज होरी लखिलखि सुरसुरराई ।यानन चढ़ि चढ़ि छाय छाय नभ सुमन सुमन झरिलाई ॥

प्रेमसखी०घनाचरी ॥ लाखनके लाखलाख सखी एकएक बार मारैं कुमकुमा जाइ परैं करकासी हैं। फूलन के गेंदा फेंकि फेंकि फौजैं फारि दीन्ही निकसी कृपाणसी कनकलौं कलासी हैं ॥ चोटन बचाइ चोट करतीं बधूटी सबै प्रेमसखी चमकि चमकि चपलासी हैं। पावत न सासचलै सखागण बावरे है तोपि कै गुलाल कीन्हेसगरे निशासी हैं ॥ दोहा ॥ ललकारे लोने लषण भये प्रबल बल पाइ । शाल ढाल आगे दिये जुरे

सामुहे आइ ॥ सवैया ॥ फूलछरी तरवारि चली उततेंपिचका भरि मारत तीरहैं । भीजिगई रँगते सिगरी बिथुरी अलकैं न सँभारत चीरहैं ॥ शस्त्र प्रहारसहैं सिगरे भट रोषभरे न गनैं तनपीरहैं । प्रेमसखी प्रमदागण मत्त खरे मनौं घायल घूमत बीरहैं ॥

युगलानन्यशरण०पदगजल ॥ भावै मुझे सखियोसुनो मनमोहनी होरी । मतवारनी जिसमें भई रंग भीजती गोरी ॥ सिय श्याम की प्यारी अदा कमली करीसनी । निज परकी होश कुछनहीं बेहोशसी गोरी ॥ श्यामाके साथ सहचरी सेना नहीं थोरी । सँग सांवरी के सुख सने सहचर सबी सोरी ॥ पिचकारियां करकंज गुलालों से पुर झोरी । किसही को कोइ माने नहीं करती हैं बरजोरी ॥ इसके सिवाय सौज कहे तिसकी है मति थोरी । जिसमें हमेश जीती जनकराज किशोरी ॥ जीयुग्म सखी भावती होरी सुरंग बोरी । गुणगाइये तरतान सरस शानसेभोरी ॥

रगहमीरबड़ोतार ॥ आजु रंग होरी खेलत राम सिया रंग रचिकैं । आवत दौरि मारि दुरि भागत केशरि पिचका सचिकैं ॥ कहुँ सोहति मूठिन गुलाल भरि डारत गति नचि नचिकैं । बहु डफ बजत जुझाऊ धुनि सुनि अड़त तकत पल हचिकैं ॥ लिपटत झपटि रहत छबि चुभिमन सुमन छरी तन बचिकैं । राम सखे रस बिवश महल बिच रतिपति मद अति मचिकैं ॥

प्रेमसखी०घनाक्षरी ॥ सौंह सुनि सुभगाकी दामिनीसी दौरिदौरि कामिनी लपटि गईं सबै सुकुमारे सों । गहि गहि ल्याईं जो प्रबल घरहाई सब होरी होरी कहत किशोरी न्यारे न्यारे सों ॥ प्रेमसखी गुलचाइ सिगरे नचाइ दीन्हे युवती बनाइ बहू कहत बिचारे सों । अञ्जन अँजाय हम चूनरिये पैन्हि आये कहियों हजूरि जाइ पीतम हमारे सों ॥ जनकदुलारी की सहेली अलबेली एक लाड़िले लषण सों गुमान भरी झागरी । दूसरी चतुर वेष पुरुष बनाइ आइ जाइ राम पास ठाढ़ी भई छबि आगरी ॥

तीसरी तुरत दौरि बेंदी भाल भरत के लाई रिपुसूदन की लई छीनि पागरी । बात कहिबे के मिस प्यारे को बदन चूमि भागि आई तारी दै हँसन लागी सिगरी ॥ सवैया ॥ और सहाय गई प्रमदा सौमित्र को ल्याई सखी यहि ओर कों । भाग बड़े इनके कहिये तिय की छबि दीजिये राजकिशोरकों ॥ आजु खवासी करौ सियकी युवती तन धारि खवावो तमोर कों । दासी सबै हम है हैं लला इततें भरतार कहो चितचोरकों ॥ बानि है बिश्व के पोषण की तिनको भरतार कहे कछु हानि हैं । हानिहैं प्रेमसखी कबहूं जिनको सिय आपु सखी करि मानि हैं ॥ मानिहैं ताहि बिरञ्चि सदा जिन पै सियकी सियरी दृग जानिहैं । जानि हैं जानकी जीवन तौ जिनके सिय जूकी सिपारसि वानि हैं ॥ लायक दास खवास नहीं अब मानिहैं कीन्हे करोरि उपायहैं । पाय बिना हम देखे नहीं अँग जानकी के कहिदेत सुभायहैं ॥ भावते पूजतप्रेमसखी शिव आदि मुनीशनकी समुदायहैं।दाय उपाय यहै सिगरी सियके पदपंकजमें चितलायहैं ॥दोहा॥ बातन कैसेजीतिहैं जानत हैं हम शेष । देवर जाइ न पाइहौ बिना किये तियबेष ॥ देवर देवर कहतहौ कहाकरौ बर और । बरदराज बरपाइ कै बरदन को शिरमौर ॥ सवैया ॥ कंचनकी गुजरी बिछिया तुमको लहँगो अँगिया पहिराइहौं । कंचुकी साजु खवाइ बिरी पहिराय चुरी अवतंस बनाइहौं ॥ मांग सवांरिकै प्रेमसखी शिरसेंदुर दै फिरि अंग लगाइहौं । दै तिय को छबि सुंदर जू हम लाडिली जू के हजूरि नचाइहौं ॥ दोहा ॥ अंचल ओट हँसीं सबै मंदमंद मुसुकाइ । कमलनयनके दृगनमें अंजन रुचिरबनाइ ॥ कवित्त ॥ जावकलगायो जलजात ऐसे पायनमें बिछिया कलित ह्वै अधिकछबि छाई हैं । घूमिरह्यो घेरवारो लहँगो सबजरंग नील जरतारी सारी कंचुकी सुहाई हैं ॥ प्रेमसखी अंग अंग भूषण बिबिध साजि बहू बहू कहतबधूटी गहि ल्याई हैं । सुभगा सिया जू के तुरत हजूरि कियो नवलबधूटीएक सासुरेते आई हैं॥दोहा॥

जनकलड़ैती हँसिकह्यो फगुआ दीजै लाल। शेष तुम्हैं सब कहतहैं तिहुँपुरमें तिहुँ काल ॥ सखी कह्यो तियरूप ह्वै कीजै इहां बिलास। प्रेमसखी बोले लषण हम सियपियके दास ॥ सवैया ॥ सांसति होति बड़ी तिनकी नित जो रघुनाथको दास कहावत। सेवतहैं पदपंकजको मकरंदपियै अलिह्वैगुणगावत॥ मर्दित हैं कमलाकर सों तिनको यह वेद पुराण बतावत। प्रेम सखी सियके पद सेवतते बसिरामहिये सुखपावत॥ दोहा॥ देखत लक्ष्मणकी दशा हिये बहुतहरषाइ। लालकह्यो रिपुदवन सों मंदमंद मुसकाइ॥ रसिक शिरोमणि हँसिकह्यो जनकसुता ढिग जाय। बाहुआपने दीजिये ल्यावो सखी बुलाय॥ रिपुसूदन तब हँसिकह्यो भली कहतहो नाथ। रहे तुम्हारे निकटही भयउ उघारो माथ॥ आयसु मेटीजात नहिं कीन्हों हृदय बिचार। पुरुषो-त्तम बिनुहै नहीं उहां पुरुष अधिकार॥ बनिता रूपबनाइ कै पहुँचे जाय तुरंत। प्रेमसखी ठाढ़ेजहां युवती बेष अनंत॥ कैप्रणाम बोले बचन सिय अनुशासन पाइ। लालबुलाई अली यक जैये तुरत लेवाइ॥ सवैया॥ हंसबधूसी गुमानभरी गतिमंदचलै मिसकै सुसु-कातहैं। कांपेउरोज हराहलकैं झलकैं मुखभूषणके जलजातहैं॥ भीनीसुगंध लसै अलकैं ललकैं जियदेखि भुजंगलजातहैं। प्रेम सखी सुभगासुथरी सियकेढिगते पियकोढिगजातहैं॥ कबित्त॥ आवतनिकट अवलोकिछबि सांवरेकी जाकेआगे झांवरोसो लागै निशिनाथहैं। कंधटेकि ढाढ़े लघुबंधुके गुलालभरे आसपास काम से बिराजैं सखा साथहैं॥ हँसिकै नवायो माथ पायँनको प्रेमसखी पूँछत कुशल देखि बदन सनाथहैं। तनमन बैन गति रावरी कमल नैन प्रेमरसमाती खरी जोरे युग हाथ हैं॥ दोहा॥ सुधि आई वा बातकी कह्यो लाल मुसुकाइ। छलबल आवत तियन को तासों कहा बसाइ॥ छली कौन सों कहतहैं कहै भरत जू न्याइ। बावन बटु ह्वै बलि छले आपु छलिनके राइ॥ जनक दई तजि ताहि को रमत और सँग बाम। सुन्दर के ढिग जात

हो ताते सुभगा नाम ॥ रमत सबन में राम जू नेकु न हृदय लजात । लोकसार माधवतुम्हैं कहैं जनकजामात॥ सुभग चातुरी केबचन सुनि सुभगाके राम । पानदये आदरकिये कोटि काम अभिराम ॥ पियरुख सुभगा सखिनते डीठिहँसोही कीन्ह । करतदंडवत दंडवत शशिदंडवत दीन्ह ॥ सवैया ॥ सौंहनहेरें तिरीछे तकैं सुभगाकहँ देखतजात गड़ेहैं । कंचुकी चित्रलसै लहँगाप हिरे तियभूषण छोटेबड़ेहैं ॥ केलिकेहेतु कलानिधि रामउतारन देतन तैसेमड़ेहैं । प्रेमसखी प्रमदानके वेषबिराजैं सखापियपास खड़ेहैं ॥ दोहा ॥ सखन दिखावत आरसी सुभगा हँसत अशंक । कहा बनीछबि आजुकी देखौ बदनमयंक॥आई गौनेसी मनौ नव दुलहिनि ततकाल । सखा सुनत सकुचत सबै हँसत छबीले लाल ॥ नहिं तप ब्रत जप योग ते नहिं साधनते कोइ । उज्ज्वल रस अधिकार यह सिया कृपा ते होइ ॥ शिव बिरञ्चि देखे नहीं जोथल सुर समुदाय । सखी वेषधरि सहजहीं सो थल देखौ जाय॥सखा कहत सुभगा सुनहु आजुतुम्हारोदाउँ । जुआंयुद्धजीते जोई शूर चतुर तेहिनाउँ ॥ सकुचभरे पेखे सखा सुभगा पियपहँ जाइ । मंद मंद हँसिकरगह्यो सियढिग चली लवाइ ॥ आवत देखे जानकी प्राणपियारेलाल । आई खेप अनाजकी मानौपरे दुकाल ॥ कवित्त ॥ नूपुरकी ध्वनि मंद गाजत बलाहकसे तड़ित बसन कोटि काम अभिरामसे । पीत उपवीत सोई मघवाशरासनहै मोतिनके माल हिये राजैं बकदामसे ॥ प्रेमसखी सखी मत्त मोर ऐसी नाचउठी बरषैं मुदितह्वै सुमन सुरधाम से । चातकसी पियपिय सिगरी पुकारतहैं तन घनश्याम राम आये घनश्यामसे ॥ सोरठा ॥ पिय ढिग आवत देखि सिया जाय आगे लिये । चक्रवाक जनु पेखि जनु चकई बीते निशा ॥ कवित ॥ हारी को लगाइ आई कुँवरि किशोरी सब मिलामिली चारकै पसारि भुजा भेटतीं । कुंकुम कपूर धूरि अभ्रक गुलाल पूरि युवती करनलै लिलाटमें लपेटतीं । एकै तृण तोरैं एकै हँसिकै

बदन मोरैं एकै मिलपाई बर भुजा बश भेटतीं ॥ एकै हर्ष पाई प्रेमसखी पियढिग आई हियमें लगाइकै बिरह ब्यथा भेटतीं ॥ दोहा ॥ भाल गुलाल लगाइकै सिय पिय हिये लगाइ । सुख आसन बैठे निरखि प्रेमसखी बलिजाइ ॥

रूपसखी० पद होरीरागकाफी ॥ कोशलराज लला मिथलेशकिशोरी हो खेलतहैं दोउ मोद भरे रँग होरी हो ॥ को वरणै छवि राजकिशोर किशोरी की । जोरी अनूपबनी रतिनायक होरी की ॥ नाचनलगीं अलीगण बाजै मृदंगहै । कोइन बचे जितने जग होरीके रंगहै ॥ अंसधरे भुज देखत प्यारो औ प्यारीहै । रूपसखी तेहि औसरकी बलिहारी है ॥

प्रेमसखी० सवैया ॥ गावतराग रसीलि सखी गति भेदते बाजन लागो मृदंगहैं । कोबरणै तेहि औसरको सुख छाइरहे स्वरताल तरंगहैं ॥ राम सिया छबिऊ उरमैं बलिहारि करौंरतिकोटिअनंग हैं । प्रेमसखी छबि दंपतिकी हियमें छहरायरह्यो वहरंगहैं ॥

पंडित हरिहरप्रसाद० दोहा ॥ गाय बजाय रिझाय हौं प्यारी सिय सुकुमारि । लेहौं मन भावत अली सेवामहल प्रचारि ॥

देवस्वामी० पद ॥ नाचनको साज सजावोंगी । श्रीसियजू को रिझावोंगी ॥ पद्के बचन सुवरणके घुंघुरू लालैपाट गथावोंगी। ताल सहित पदहिके गति में लैघरि भाव देखावोंगी ॥ समय बांधिकै रागभरी रंगतिकी गितियां गावोंगी। तीन ग्राममें घूमवामकै झमक समपर आवोंगी ॥ आपुस में मिलिसाज बजैंगे तिनमें फरक न पावोंगी। सिया राम दुइ कहन सुनन में एकै करि ठहरावोंगी ॥ लख चउरासी नाच बनेहैं सबको तारमिलावोंगी । ये सब देव स्वरूप बखानत यहरसमनहिं पियावोंगी ॥

देवस्वामी० होरीकाफी ॥ बिरियामैं ना खाउँगी सखियामें छिपि रह्यो लाल ॥ पान सुपारी खयर रस चूना कूचतही ततकाल । रंग रँगीलो निसरत मेरो चूम अधर औ गाल ॥ पंचतत्त्व मेलनहीं चेतन ऐसो सुगत मतताल । सोई रंगमैं यामें देखौं याको

अजब है ख्याल ॥ सुरक बीर रस ताते बीरा नामकहन की चाल । बिंदु त्रिकोण रूपको वाके बेद कहहिं गनमाल ॥ छोंड़त लेत बनत नहिं अब यह भयरे मेरेजियको जवाल । बचन रँगीले देवरानी जेठानी सुनि सुनिहोत निहाल १ कजरा मैं ना देउंगी यामें श्याम रह्योहै समाय । यापै काहूकी नजरि न लागै याही से बेद लखाय ॥ अँगुरि धरत अँखियन में आइके डारैगो मोहिं बउराय । तिल तिल नेह भराहै यामें मारैगो नेह लगाय ॥ यह जहँ लगत तहांते न छूटै दूजो न रंग रँगाय । सब रंगनको रहत दबाये कारो है बड़ी बलाय ॥ देव निरंजन मोहिं न भावै सिद्धिउ नाहिं सोहाय । अस अटपट बानी बोलतपै नारि रँगीली देखाय २ लालैलाल भयो सखिजित देखहुं तितलाल ॥ मेहँदी में लाल महावरहू में चुँदरी लाल कमाल । अनुरागहु को रूप लालहै लाल सिंदुरवा भाल ॥ लालै तरवा लाल हथोरी अधर ओट सोउ लाल । लालैलाल योबनवादोऊ नैन रतनसोउ लाल ॥ लाल गुलाल सकल बनफूले तागपाटहै लाल । भीतर बाहर लाल भरोहै सब बिनुलाल बिहाल ॥ लाल बिना कबहूंनहिं छूटै जनम मरण जंजाल । लालकी लाली मोहिं बनावे देव बनैतबलाल ३ ॥ रागभैरों ॥ सियाबोलाये सखासहित अनुराग । दै अशीशपट भूषण उचित बिभाग ॥ लक्ष्मण कहि रिपुदवन स्वस्ति सुखमूल । पट भूषण पहिराय जानि समतूल ॥ चले चन्द्र मनमुदित क्षुधित मन नैन । सिया रूप उरधारि रामसुख ऐन ॥ सखिन कह्यो पठइ-करि फागु अब देहु । बिहँसि कह्यो रघुनाथ यथा रुचिलेहु ॥ स्वागत यह करजोरि सिया सियनाहु । प्रेमसखी हिय बसहु दिये गलबाहु ॥

अथ फूलडोल उत्सव ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ राजत हिंडोल त्रयपवन लोल । पटुली अमोल मंडित निचोल । युग हेमरंभके खंभबीर ॥ धरि कुसुम

कारमुक कुसुमतीर । रसपातशाह करि तेहि वजीर ॥ जनु जयत खंभ गाड़े गँभीर। बहु बरण कुसुमके कलितमाल ॥ इमि चारु चारि डांड़ी बिशाल। जनु इन्द्र धनुष ऊगे अकाल॥ नीलकमणि भँवरा युगरसाल । बेलना बिलसत मणि ललित लाल ॥ जनु अतनु बांधि युगरस भुआल । बनितबर अति अनुराग साल॥ रँग बिबिध जननके बँधेगाथ। बहुबाज बजावहिं युवति हाथ ॥ गावहिं हिंडोल सब एकसाथ। सियहरिहिं झुलावहिं बिश्वनाथ ॥

रामशरण० पद ॥ आज झूलत रसीले सुमन हिंडोलहि डोल बसीले ॥ टेक ॥ सँगले जनक लली अलबेली अंग अंग प्रेम गसीले ॥ नितंत कौतुक करत सखीजन सबके भाव लसीले। रामशरण अलि छबिपरवारी देखत नैन फसीले ॥

इति शिशिर ऋतु बिहार संग्रह ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

अथ बसंतऋतु बिहार ॥

संग्रह वर्णन ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ बाग बहार बिलोकत रघुबर बैठे सखन संग इक औसर । सखा एक बोलतभो श्रवणन सुनि रसालरव कोकिलको बर ॥ यह बसंत दरशतै चैनरस सींचत नैनानि अद्भुत आयो । मनथल शिथिल बीज मनसिजको करि पल्लवित ललित छबिछायो ॥ अतिरस सहित बिहार मनोरथ कामिनि मनहिंअनेकबढ़ावैं । यहिसम सुखद न कौनिहुं ऋतुहै याहीते

ऋतुराज कहावैं ॥ जानि समान शीत रसराजहिं नीत बिचारि मीत कर लीनो । अपनी नानाबिधि बिभूतिते बिश्वनाथ पूरित करिदीनो १ यह ऋतुराज अमित छबि सरसै । निरखतहीं नर नारिन नैननि हियरे अति आनँद घन बरसै ॥ बिन जल बन पल्लवित कियो अति फूली बसंतीलतिगन ब्याजै । मानहुं हँसत अहै पावस कहँ मान सहित यहि समय बिराजै ॥ यह ऋतुलहि जड़तरु लतिकहुगण अंकुर मिस रोमांचलखावै । बिश्वनाथ आचरजकहाहै चेतनमन जो मदन बढ़ावै २ गुनियतु मनहिं कामतन जाग्यो यामें चित्त लगाई । ताते पंचतत्त्व मनसिजतन मिले बसंतहि आई ॥ अवनी अंश मिल्यो बनथलको सलिलत शशिभोलीनो । तेज बसंत शरीर समय जोतकियतुतामें भीनो ॥ मलय पवन यहि सांसताहि मिलि अनिल जुगत सुख छायो । बन अवकास निवास बसंतहि बसि अकाश तहँ भायो ॥ याते परम प्रबल ऋतु भूपति किय शिंगारको राजै । मुनिहु न मनते दूरि दियो करि करि रस शांत पराजै ॥ निज छबि ते मानिनि धीरज हरि पतिसों प्रीति करावै । बिन कारण उपकारण करिकै बिश्वनाथ संतत मन भावै ३ ॥

संग्रह०दोहा ॥ राम सखा गण परस्पर करत रसीली बात । पुनि सब आयसु मांगिकै गृह आये हरषात ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी वर्षगांठउत्सव ॥

समय शयन रघुबर किये जागे होत बिहान । सरयू जल मज्जन कियो दिय बिप्रनको दान ॥ सदा सजे दशरथ भवन जनु ग्रह मार बिहार । रंभ खंभ सुंदर कलश द्वार सुबंदनवार ॥ चैत्र शुक्ल तिथि नौमि शुभ रामसाल ग्रहआज । सुनि प्रमुदित नर नारि सब सजे सुमंगलसाज ॥ रामगीती छंद ॥ गणपति नवग्रह आदि पूजन किये श्रीरघुराय । जिनहिं को भजत ब्रह्म हर सोइ भयउ नृपसुत आय ॥ कुल रीतिकरि गृह आयकै तन

सुभग राम सजाय । श्री रंग के मंदिर गमन कीन्हें सुगत-हरषाय ॥ दोहा ॥ धाम ललाम उतंग बर मनहुं रच्यो करतार। दरशन किय कुल इष्टके चारिहु राजकुमार ॥ नरिन्द्रछंद ॥ पिता सभा गमनतभे रघुबर बंधु सखनसँग लीन्हें । जनक चरणमें शीशनवाये भूपति आशिष दीन्हें ॥ रामचन्द्र मुखचंद देखि नृप चितवत मनहुँ चकोरा । अपने ढिग बैठायहु भूपति चारिहु राजकिशोरा ॥ चौबोलाछंद ॥ बर्षगांठ श्रीरामचंद्र की बाजत निकर नगारे । अवध नगर नर नारी प्रमुदित मंगलसाज सवाँरे ॥ बिधुबदनी मृगनयनी नवला पिकबयनी गजगमनी। चलीं मनोहर मंगलगातीं मनहुं काम की रमनी ॥ कौशल्या आदिक महरानी बैठीं कर दरबारा। रघुनंदन दरशन की आशी करति सुमंगलचारा ॥ पुरतिय आईं चरणन लागीं महिषी किय सतकारा । यंत्र बजावति नाचति गावति परम अनंदित दारा ॥ सजि पुरजन बाहन चढ़ि प्रमुदित दशरथ सभा सिधारे । सिंहासनपर लसत भूपमणि ढिग रघुलाल निहारे ॥ भूपति भेंट कीन हरषाने राम निछावरि कीनी । बैठेलखत राम की सुखमा नवयोवन रसभीनी ॥ रचिकर छंद बंदिजन गावत रघुकुल केरि प्रशंसा । राम सरिस सुत पायउ चारी जय भूपति अवतंसा ॥ बीण मृदंग बजत नटि नाचत गावति मंगल गीतें । रामप्रताप अटूट कोशधन भूपदेत नहिं रीतें ॥

कृपानिवास० पद चौताला ॥ राम रसिककी बर्षगांठ आज बाजत गाजत नवल नवल नगारे । युवती मंगल साजबनाये गाये मोद अपारे ॥ चंदन अंगनलेप सुगंधन रंगभरे बहु छुटतफुहारे। कृपा-निवासी वारेमणिगण सारे दशरथवारे धारे ॥

युगलानन्यशरण०पद ॥ बधाई प्यारी बाजै आज । सुनत श्रवण सुख सरस सौगुनो सुमन सुमति तरताज ॥ पुरघन बन बीथी बिच जहँ तहँ हुलसि रह्यो रसराज । रसिक सनेह सुधासाने मनु मधुकर रस सुखसाज । नृप रानिन उत्साह चाह चय अ-

कथ गिरा गणराज । युगलअनन्य बिपुल याचकजन करैं कुतूहल छाज १ रसीलीरंग बधाई बाजती चहुँओर ॥ कौनकह कौतुक कौशलपुर सुन्दर रंगरँगाई । बंदीवेद बिमल बिरुदावलि बदहिं बिभव बरसाई ॥ सुनतशोर घनघोर मनोहर प्रेम प्रभा प्रगटाई । आली लिये कनकथाली कर कंज मंजु मनभाई ॥ सुधि बुधि भूलिगई निजयाकी कौन कहांते आई । युगलानन्य निछावरि तनमनदिन हृगदैवदिखाई २ ॥ गजल ॥ सुनसुन सखी माती फिरै प्यारेकी बधाई । भला दिलबरकी बधाई ॥ हरतरफ नजर आतीहै रँगरंग की खुशियां । किसहीके नहीं होशमें उस जोशमें आई ॥ कुर्बान किया दिल इसी दिलबरके वास्ते । पाया है प्रेमपान दरद दाह दवाई ॥ जो चाह मेरे मनमेंथी बिसयार दिनोंसे । करतारकी करुणाने युगल नैन दिखाई ॥

संग्रह०सोरठा ॥ अंतःपुर गये राम शासनपाय भुआल सों । हर्षित कीन प्रणाम सब जननिनके चरण महँ ॥ रानि प्रफुल्लितगात करतरामकी आरती । लेतिबलैया मात निउछावरि करिकै पुनी ॥ करत सहित सानंद राम आरती पुरतियें । गये धाम रघुचंद लैनिदेश निजमातुसों ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ मणिहेम भवन बिशाल ऊपर संग सखि सियपिय गये । जगमगत हीरन सों सिंहासन ताहि पर बैठत भये ॥ चहुँओर ठाढ़ीं सुन्दरी युग सखी चामर ढारहीं । दंपती रूप अनूप लखि तिय सकल तन मन वारहीं ॥ चौबोला ॥ सारंगी बीणा तंमूरा मंजीरा मिरदंगा । शब्दसुहावन यंत्रनके जनु श्रवण भरत रसरंगा ॥ चन्द्रकला आदिक सखि चतुरी नाचति मनहुलसाये । गतिअनेक अरु हाव भाव बर पूरण सकल बताये ॥ पिकबैनी शुभराग अलाप्यो सप्त स्वरन दरशीले । मनमोहनबर मदन मंत्र जनु गावति सरस रसीले ॥ सुनिकर कीन प्रशंसा सियबर अति प्रसन्न मनहोई । नाच गान अरु दंपति छबि लखि छकींतीय सब कोई ॥ दोहा ॥ अतर पान स्रग सखिनको देत सिया रघुलाल । परम प्रेमयुत

लेतहैं सब अंतःपुर बाल ॥ अति पुनीत मधुमासबर सखिसोंकहे सखि बैन । सियबरकी सेवा करी सुखलीजै भरिनैन ॥

देवस्वामी०पदरागघाटो ॥ सियबरको शृंगार साजिये चैती दिन मो येराम फूलनहीसों । पीतबसन औ केसरअरपै भोग लगावै ये राम घूलनहीसों ॥ फूलनके भूषण रचिये छबि देखि नचिये राम फूलनहीसों । फूलन से हिंडोल बनावै सुख दून जामें ये राम भूलनही सों । इष्टदेव को ऐसे अरचत बचिजाय जियरा ये राम शूलनहीसों ॥

कविकेशवदास०दोहा ॥ प्राची दिशि ताहीसमय प्रगटभयो निशिनाथ । बर्णत ताहि बिलोकिकै सीता सीतानाथ ॥ हरनोछंद ॥ फूलनकी शुभगेंद नई । सूंघि शची जनु डारिदई ॥ दर्पण सो शशि श्रीपतिको । कै आसन काममहीपतिको ॥ आनंद कै पितु सों सुनिये । सोहति तारहि संगलिये ॥ भूपमनो भवछत्रधरेउ । लोक बियोगनि को बिडरेउ ॥ देव नदी जनु रामकह्यो । मानहुँ फूलि सरोज रह्यो ॥ फेन किधौं नभसिंधु लसै । देवनदी जनु हंस बसै ॥ दोहा ॥ चारु चन्द्रिका सिंधुमें शीतल स्वच्छ सतेज। मनो शेषमय शोभिजै हरिणाधिष्ठितसेज ॥ दंडक ॥ केशवदास है उदास कमला करसों कर शोषक प्रदोषताप तमोगुण तारिये । अमृत अशेष के बिशेष भाव बर्षत कोकनद मोद चण्ड खण्डन बिचारिये ॥ परमपुरुषपद बिमुख पुरुष रुख सुमुख सुखद बिदुषन उर धारिये । हरिहैरी हियमें न हरिण हरिणनैनी चन्द्रमा न चन्द्रमुखी नारद निहारिये ॥

ज्ञानाअलि०पद ॥ प्यारी प्रियतम दृग अलसाने । उनिंदे मनहुँ सांझ सरसीरुह रतनारे मदसाने ॥ क्षण मूंदत क्षण खोलत नैना सखियन रुचि पहिंचाने । सुमन सेज मंडप सुमनन रुचि लखि सियपिय मनमाने ॥ अंसन भुज धरि बैठि सेजपर मंद मंद मुसुकाने । ज्ञानाअलि लखि यह दंपति छबि धनि जीवन निज जाने ॥

संग्रह०दोहा ॥ परमअनंदित शयन किय पिय प्यारी रसभीन। गान सखिनके सुनिजगे हरषित मज्जन कीन ॥ कह्यो सिया चलियेपिया देखन बागबहार। सुनि प्यारीके बैनमृदु बोले रामकुमार ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ बोले बचन रघुलाल परम रसाल मृदु मुसकायकै। सुनियो बिदेह कुमारि जाहुसिधारि सखिनसजायकै॥ करि गमन त्यारी सकल नारी उर अति आनंद बढ़ी। सियकी सखी नवनागरी गुणआगरी यानन चढ़ी ॥ महाडोल बनोअनूप बैठी जानकी हरषायकै। गवनी सवारी बजत बाजेबाग पहुंची आय कै ॥ महा डोलते उतरी सिया तियगीत गावत सुखमई। आराम आनँद धामलखिकै नारि सब प्रमुदितभई ॥

पंडितहरिहरप्रसाद० दोहा ॥ नंदन हिय हहरत जरत चैत्ररथहु विलखात। बैकुण्ठहुको बागबर श्रीवन देखिलजात ॥ श्रीबनमें बिहरत सिया लखिहंसी सकुचाहिं। लेशहु सम मम गंध नहिं कहि सब फूल लजाहिं ॥

देवस्वामी०पदजंगला ॥ सियाजू बिहरत श्रीबनमें। जहां छओ ऋतु सदाबसत है नयो सुख क्षण क्षणमें ॥ मंगल दिकन आठ सखियनके आठौ आसनमें। इनकेमध्य बिंदुसों राजत जस शशि तारनमें ॥ बहुत सुगंधित फूलन के द्रुम भँवर गुंज कुंजन में। रंगरंगके पक्षी बोलत लहरि उठत मनमें ॥ सियारूप पै झलकत जाके फूलन पातनमें। जो सुख यामें सो देवन के नाहीं नंदनमें ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ कल्पवृक्ष मंदारयुत नितविनवत हरि पास। श्रीबन सियमन सुखकरन तामें पाऊंबास ॥

देवस्वामी०पद ॥ सियाजूकोरमन श्रीबनमें। बेला गुलाब चमेली कमल जहँ महकतहैं क्षणक्षणमें ॥ छवोऋतुनके सुख नित जैसे इन्द्रिन के सुखमन में। कबहुं हिंडोला झूला कबहूं फूल डोलनमें ॥ शुक पिकआदि मनोहरपक्षी बोलिरहे कुंजनमें। जग मग ज्योति सियाजूकि सोहत सुंदर अलिजन में ॥ पूरण शरद

चंदकी चांदनि झलकति जस तारनमें । बन शोभा सखियनकी झमकनि अति शोभा सियतनमें । ईश्वर देवसुखहु को वारौं जैसे कौड़िरतनमें ॥

पंडित श्यामनाथ० सवैया ॥ बिप्रनको शिरनाय तहां पुनिदान दिये नितके जगवन्दन । बाजन बाजत नौबतहैं कविलोग पढ़ैं बहुभांति न छन्दन ॥ राम सखा सब आये तहां सतकार किये तिनके रघुनन्दन । श्याम कहैं पुरबासी सदा चिरजीव रहौ दशरथके नन्दन ॥

संग्रह० दोहा ॥ करत बात मृदु सखनसों जहां सीयमन राम । चढ़े तुरंगन मुदित सब चले राम छबिधाम॥बागद्वार उतरेसकल कीन्ह प्रणाम प्रवीन । राम गये आराममें सखन गवन गृहकीन॥

देवस्वामी० पद ॥ लाडिली खड़ी हैं कंचन गोरी । अनियारे रतनारे लोचन औ बिछुवासी भौंह मिरोरी ॥ दोउ पायँनमें लसत महावर अंजन लेत चितहि जनुचोरी । कुमकुम तिलक भाल अंगनमें सरस लगायो केशरि घोरी ॥ मेहीं बिमल अम्बरीअम्बर रतनन जनु तारा छबि छोरी । आनन पूरण शरदचंद द्युति चहत श्यामको अंग किशोरी ॥ करसे कदम डार धरि वाको जोहत चंदहि मनहु चकोरी । तेहि क्षण भूषण देव रतनसी मिलि गइ श्याम गौरकीजोरी ॥

केशव० सुंदरीछद ॥ अचानक दृष्टिपरे रघुनायक । जानकि के जियके सुखदायक ॥ ऐसे चले सबके चल लोचन । पंकज बात मनो मनरोचन ॥ रामसों राम प्रिया कह्यो यौंहँसि । बाग देखा वहु लोचन के शशि ॥ राम बिलोकत बाग अनन्तहिं । ज्यों अवलोकत काम बसन्तहिं ॥

संग्रह० दोहा ॥ देखनलागे बागकी सुंदरता सियराम । कहे बचन सखिसों सखी निरखहु जोरि ललाम ॥

पंडित हरिहर० दोहा ॥ इत कलँगी उत चन्द्रिका कुंडल तरिवन कान । सिय सिय बल्लभमो सदा बसौहिये बिचआन ॥

देवस्वामी० रागपदधनाश्री ॥ बसौ यह सियरघुबर को ध्यान । श्यामलगौर किशोर बयस दोउ जे जानहुं की जान ॥ लटकत लट लहरत श्रुति कुंडल गहननकी झमकान । आपुस में हँसि हँसिकै दोऊ खात खिआवत पान ॥ जहँ बसंत नित मह मह महकित लहरत लताबितान । बिहरत दोउ तेहि सुमन बाग में अलि कोकिल करगान ॥ ओहि रहस्य सुखरसको कैसे जानिस केअज्ञान। देवहुंकी जहँ मतिपहुंचति नहिं थकिगे वेद पुरान ॥

पं०हरिहर०दोहा ॥ बिहरत गलबाहीं दिये सियरघुनंदन भोर । चहुँदिशि ते घेरेफिरत केकी भँवर चकोर ॥ नकमुक्ता लहरैंइतै उत नथमोतीहाल । बिहरतगलबाहीं दिये निरखहु झांकीहाल॥

केशव०सुंदरीछंद ॥ बोलत मोर तहां सुखसंयुत । ज्यों बिरदावलि भाटनकेसुत ॥ कोमल कोकिलके कुल बोलत । ज्ञान कपाट कुची जनुखोलत ॥ फूलतजै बहुवृक्षनको गनु । छोड़त आनँद आंशुनको जनु ॥ दाड़िमकी कलिका मनमोहति । हेम कुपी जनु बन्दन सोहति ॥ सवैया ॥ फूले पलास बिलास थली बहु केशवदास प्रकाश न थोरे । शेष अशेष मुखानलकी जनु ज्वाल बिशाल चली दिविओरे ॥ किंशुक श्री शुकतुंडनकी रुचि राचे रसातलमें चित चोरे । चोंचनचापि चहूंदिशि डोलत चारु चकोर अँगारन भोरे ॥

संग्रह०दोहा ॥ लतन पतनकी कुंजमें करत पक्षिगण शोर । नव नागरि बोली बचन सुनियो राजकिशोर ॥

पण्डितप्रवीन कवित्त ॥ बल्लीको बितान मल्ली दलको बिछौना मंजु महलनि कुंजहै प्रमोद बनराज को । भारीदरबार भिरी भौंरनकीभीर बैठी मदन दिवान इतमाम कामकाजको ॥ पंडित प्रवीन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिरहजूर सुनि कोकिला अवाजको । चोपदार चातक बिरद बढ़ि बोलेदर दौलतदराज महाराज ऋतुराज को ॥

प्रेमसखी कवित्त ॥ प्रेमसी कोकिला नकीबसी पुकारतीहै मंद

गति मारुत गयंदनको साजुहै । ठौर ठौर बाजीसे बिराजे वृक्ष किंशुकके प्यादेसे गुलमलता भ्राजत समाजुहै ॥ स्यंदन रसाल जामें रथी रतिनाथ बैठो फूल शर धनु हाथ भट शिरताजुहै । महाराज रघुराज रावरे मिलनहेतु सेनाचतुरंगसंग आयोऋतु-राजुहै ॥ सवैया ॥ बौर झुके चहुँघा अवलोकिये मानौ करै जु बसंत जोहारहै । डारैं रसालकी डोलैं सबै जनु राघवतेज ते कंपित मारहै ॥ सेवती कुंद निवारी गुलाबके फूल धरे सब भेंट अपारहै । प्रेमसखीकरजोरि खरो सबकोहितुहै ऋतुकोसिरदारहै॥

अन्यकवि सवैया ॥ वृक्षन बल्ली चढीकरि चोप भली अलिनी मधुपी मुदकारी । कोकिल शारिका कीर कपोत करैं ध्वनि माधुरी कानन चारी ॥ फूले सबै बन बाग तडाग भरे अनुराग पिया अरुप्यारी । चैतमें चारु बिहार करैं दशरत्थकुमार बिदेह कुमारी ॥

रघुराजसिंह०कवित्त ॥ बिकसत कुसुम बिलास बर बेलिन को बगरी सुबास बन बिबिध बिहारहै । बिधु को बिकास बिश्व बिमल भयो है व्योम बोलत बिहंग वृक्ष बैठे बारबारहै ॥ बसुधाधिराजको सुबेटा बर रघुराज बलित बिदेह बेटी बिरचि बिचार है । बदत सुबैन बाम लोचनी बिलोकै बसुधामें बसुधाधर बसंतकी बहार है ॥ बिकसे सुवारिज बिमल बारिजा करन बिश्व में बिभाकर बिभास बिलसंतहै । बीरुधत्यों बिदलबिलोकि बिरहीन व्यथा बिटप बिशोक करैं नवदल्लवन्तहै ॥ रघुराज बदत सुबैन हे बिदेह बाले बिपुल बिलोकिये बहार बरधन्त है । बालन में बागन में बासनमें बारनमें बनमें बगारनमें बसत बसन्तहै ॥

केशवदास०दोधकछन्द ॥ बेल के फूल लसैं अति फूले । भौंर भवैं तिन के रस भूले ॥ यों कर बीर करी बन राजैं । मन्मथ बाणन की गति साजैं ॥ केतक पुंज प्रफुल्लित सोहैं । भौंर उडैं तिनमें अति मोहैं ॥ श्री रघुनाथहि आवत भागे । जे अपलोकहु ते अनुरागे ॥ दोहा ॥ श्याम शोण द्युति फूलकी फूले बहुत पलास । जरे काम कैला मनों मधुऋतु बात बिलास ॥ तोटक

छन्द ॥ बहु चम्पक की कलिका हुलसी । तिन में अलि श्यामल ज्योति लसी ॥ उपमा शुक शारिक चित्त धरी । जनु हेम कुपी रस सोंध भरी ॥ चौपाई ॥ अलि उड़ि धरत मंजरी जाल। देखि लाज साजति सब बाल ॥ अलि अलिनी के देखत भाई । चुम्बत चतुर मालती जाई ॥ अद्भुत गति सुन्दरी बिलोकि। बिहँसति हैं घूंघट पट रोंकि ॥ गिरतसदा फल श्रीफल ओज । जनु धर धरत देखि बक्षोज ॥ तारकछन्द ॥ उदरे उर दाड़िम दीह बिचारे । सुत तीन के शोभन दन्त निहारे ॥ अति मंजुल बंजुल कुंज बिराजैं । बहु गुंजनिके तन पुंजनि साजैं ॥ नर अंध भये दरशे तरु मोरे । तिनके जनुलोचन हैं यकठौरे ॥ थल शीतल तप्त स्वभावनि साजैं । शशि सूरज के जनुलोक बिराजैं ॥ जल यंत्र बिराजत भांति भलीहै । धरते जलधार अकाश चली है ॥ यमुना जल सूक्षम वेष सँवारेउ । जनु चाहत हैं रविलोक बिहारेउ ॥ चचरीकछन्द ॥ भांति भांति कहौं कहां लगि बाटिका बहुधा भली । ब्रह्म घोष घने तहां जनु है गिरावनकी थली ॥ नील कण्ठ नचैं बने जनु जानिये गिरजाबनी । शोभिजैं बहुधा सुगन्धैं मानों मलयबनकी धनी ॥ चौपाई ॥ करुणामय बहु कामनि फली । जनु कमला की बासस्थली ॥ शोभे रम्भा शोभासनी । मनो शची की आनँद बनी ॥ कमलछन्द ॥ तरु चन्दन उज्ज्वलता तन धरे । लपटी नव नागलता मनहरे ॥ नृप देखि दिगम्बर बन्दन करे । चित चन्द्रकला धर रूपनि भरे ॥ अति उज्ज्वलता सब कालहु बसै । शुककेकि पिकादिक कण्ठहुलसै ॥ रजनी दिन आनँद कन्दनि रहै । मुख चन्दन की जनु चंदनि अहै ॥ तोटकछन्द ॥ सब जीव को बहु सुक्ख जहां । बिरही जन हीं कहँ दुःख तहां ॥ जहँ आगम पौनहिं को सुनिये । नितहानि असौंधहि को गुनिये ॥ तारकछन्द ॥ तिनमें एक कृत्तिम पर्वत राजै । मृग पक्षिन की सब शोभहि साजै ॥ बहु भांति सुगन्ध मलय गिरिमानो । कलधौत स्वरूप सुमेरु बखानो ॥ अति शी-

तल शंकरको गिरिजैसो। शुभ श्वेत लसै उदयाचल ऐसो॥ द्युति सागरमें मैनाकमनोहै। अजलोक मनों अजलोक बनो है॥ तोटकछंद॥ सरिता तिनते शुभ तीनि चली। सिगरी सरितानकी शोभदली॥ यक चंदनके जलउज्ज्वल है। जग जह्नु सुताशुभ शीतल है॥ चौपाई॥ सुरगजकी मारग छबि छायो। जनुदिविते भूतल परआयो॥ जनु धरणी में लसति बिशाला। त्रुटति जुही की है घनमाला॥ दोहा॥ तज्यो न भावै एकपल केशव सुखद समीप। जासों सोहत तिलक सो दीन्हे जंबूदीप॥ दोधकछंद॥ एँड़न के मदकै जनु दूजी। है यमुनाद्युति कै जनु पूजी॥ धार मनों रसराज बिशाला। पंकज जाल मयी जनु माला॥ दोहा॥ दुख खंडन तरवारिसी किधौं श्रृंखलाचारु। क्रीड़ा गिरिमातंग की यहै कहै संसारु॥ क्रीड़ा गिरिते अलिनकी अवली चली प्रकास। किधौं प्रतापा न लनकी पदवी केशवदास॥ दोधकछंद॥ और नदी जल कुंकुम सोहै। शुद्ध गिरामन मानहुं मोहै॥ कंचन के उपबीतहि साजै। ब्राह्मणसों यह खंड बिराजै॥ स्वागताछंद॥ लौंग फूल मय सेवटि लेखी। एक बीज बहुबालक देखी॥ केरि फूल दल नावन माहीं। श्री सुगन्ध तहँ है बहुधाहीं॥ दोहा॥ खेवत मत्तमलाह अलि को बरणै वह ज्योति। तीन्यों सरिता मिलित जहँ तहाँ त्रिबेणी होति॥ सीता श्रीरघुनाथजू देखी श्रमित शरीर। द्रुम अवलोकन छोड़िकै गये जलाशय तीर॥ चौपाई॥ आई कमलबास सुखदेन। मुख बासन आगे ह्वै लेन॥ देख्यो जाइ जलाशय चारु। शीतल सुखद सुगन्ध अपारु॥ नरहट्टाछंद॥ बनश्री को दर्पण चन्द्रातप जनु किंधौं शरदअवास। मुनि जन गण मनसों बिरही जनसों बिशबलयानि बिलास॥ प्रतिबिम्बित थिरचर जीव मनोहर मनुहरि उदरअनन्त। बंधुन युत सोहैं त्रिभुवन मोहैं मानों बलियशवन्त॥ चौपाई॥ विषमय यह सब सुखको धाम। शम्बर रूप बढ़ावै काम॥ कमल न मध्य भ्रमर सुखदेत। सन्त हृदय जनु हरिहि समेत॥ बीच

बीच सोहैं जलजात। तिनते अलिकुल उड़ि उड़िजात॥ सन्त हियनसों मानहुं भाजि। चञ्चल चलीअशुभकी राजि ॥दण्डक॥ एक दमयन्ती ऐसी हेरै हँसि हंस बंस एक हांसिनीसी बिशहार हिये रोहिये। भूषण गिरत एकै लेती बूड़ि बूड़ि बीच मीनगति लीन हीन उपमान टोहिये॥ एक पतिकण्ठ लागि लागि बूड़ि बूड़ि जातिजल देवतासी दृगदेवता बिमोहिये। केशवदास आस पास भवँर भवँतिजल केलिमें जलजमुखी जलजसी सोहिये॥ दोहा॥ क्रीड़ा सरवरमें नृपति कीनी बहुबिधि केलि। निकसे तरुणिसमेत जनु सूरज किरणि सकेलि॥ हाकलिकाछंद॥ नीरतें निकसीं तिय सबै। सोहतिहैं बिन भूषण तबै॥ चन्दन चित्र कपोलन नहीं। पंकज केशर शोभ तहीं॥ मोतिनकी बिथुरी शुभछटैं। हैं उरझीं उर जात न लटैं॥ हास शृंगार लता मनु बनी। भेंटतकल्पलता हित घनी॥ केशनि ओरनि सीकररमैं। ऋक्षनको तमयी जनु बमैं॥ सज्जल अम्बर छोड़तबने। छूटत हैं जलके कणघने॥ भोग भले तिनसों मिलि करे। बिछुरत जानि ते रोवत खरे॥ भूषण जे जलमध्यहि रहे। ते बनपाल बधूटिन लहे॥ भूषण वस्त्र जबै सजिलये। चारिहु द्वारन दुन्दुभिभये॥

संग्रह०दोहा॥ गलबहियां कीन्हेचले लैसखिवृन्द बिशाल। आय कुंजमहँ मुदित मन बैठे सिय रघुलाल॥

कृपानिवास०पद॥ बंदेसरसा सरसबसंते सीतासह श्रीरामं। सरयू पुलिनेमणिगणरमणे बिद्युद्युति घनश्यामं॥ बिपिन निकुंजे प्रफुलित कंजे प्रमदागण अभिरामं। बल्लीद्रुम भवने श्रम सशमने शोभिततन शतकामं॥ करिरिविकरणी नां बिहरंते केलि कला गुणग्रामं। ललना लीला या खलु लुब्धं मम दृगलाभ ललामं॥ करपूरागर केशरि सलिले रमत रतिरस धामं। मनमथ मथने यत्न सुनिपुने कान्ताकृत भुजदामं॥ नवरँग मुकुरे मधुकर निकरे पिकमुखरे बिश्रामं। बिगलित कच कुच सुरति सुधीरा रमणी धरि भुज बामं॥ शीतलमंद सुगंधित पवने काम

कला कमनीयं। मद्मासने रसिकागिरजीतं रमणीरसरमणीयं॥ कोकिल कीर कुरंग बिलासे बालसुखद नवरूपं। परमानंदे सखिजनबंदे नायक गणमणि भूपं॥ ऋतुपतिकाले परमरसाले इत्थं नित्य बिलासं। रूपानिवास बदति मैंहू दिनों कुरुकान्तास उरबासं १ भ्राजत सुछबीलीतन बसंत। एजी प्रणतपाल हित रसिककंत॥ एजीबाल तरुणता संधिपाय। बैसंधिनि बाला बनि सुहाय॥ एजी मदन मनोरथ द्रुमन जाल। दल फूल फरे योवन रसाल॥ किंकिणिनादे भूषण नुनाद। एजी शुक पिक चातक शकुनसाद॥ एजी कुचन कुंभ उर चौक पूरि। पुनिपिय पूजी केशर कपूरि॥ एजी कर कटाक्ष शीतल सुगंद। एजीचिकुर अलीकुल बदन चंद॥ एजी बिगस सुमन रस हँसत मंद। रस राम रँगीले उरझिफंद॥ एजी रंगधाम अभिरामबाम। मन बांछित सुखप्रद सुघर काम॥ एजी जयति रूपा स्वामिनि बिलास। जहँ देखिभुलानी अलि निवास॥

देवस्वामी० पद॥ सिय भइ सुभग मदनकी बाग। सुमन बाटिका परम मनोहर ताको मनहुं सोहाग॥ रूप बसन्त मृदुल कर पल्लव भुज बल्लिनकी लाग। नयन कमल जंघारंभासी महक मनहुं अनुराग॥ देखि राम मन भवँर लोभाना अलख प्रेम रसपाग। नाभि बहुतगंभीर सरोवर जहँ दुइ हंस बिभाग॥ पीत बसन परिखाजनु सोहत भूषण ध्वनि खगबाग। सियाराम को तागजुरतहीं भागदेवके जाग॥

ज्ञानाअलि० पद तिल्लाना॥ सुंदरि सिय श्यामा श्यामरी। बैठे सुमन शृंगार किये दोउ जग जीवन सुखधामरी॥ जनक लली नृप अवध दुलारे छबिगुण रूप अँग अँग भारे संग ललना गण गुण गरबीली दमकैं ज्यों द्युति दामरी॥ सुंदर श्याम गौर मृदु जोरी वारि वारि रति मदन करोरी। तृणतोरी नखशिख लखि गोरी बयथोरी अभिरामरी॥ नवल लाल लाड़िली सलोनी अवध ललन ललना प्रियलालन गुण गण आगर ललित लाल

प्रिय नामरी । भाव भरे भामिनि सिय बल्लभ बड़भागी भावि-क मन भावन ज्ञानाअलि जनु छबि शृंगार दोउ निरखत मन बिश्रामरी ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ सिय ऋतु बसंतमें संग कंत । बहु बिधि बिहरत लहि मुद अनंत ॥ पुनि संग सखिन गृह गौन कीन । बिश्व नाथ छकत मुद नित नवीन ॥

अथ श्री जानकी जू का बर्षगांठ उत्सव ॥

संग्रह०पद ॥ भोर भये जागे सियरामा । शोभा लखि लाजहिं रति कामा ॥ उठि रघुनन्दन बाहिर आये । प्रात कर्म करि सभा सिधाये ॥ इत सियको सखियां अन्हवाई । अति अनुपम शृंगार बनाई ॥ बिप्र बधू गुरुपत्नी आई । बर्ष गांठ पूजन करवाई ॥ स-र्वेश्वरि सिय राम पियारी । सुर पूजति जनु प्राकृतनारी ॥ दान दीन्ह सिय बिबिध प्रकारा । द्वार द्वार बहु बजत नगारा ॥ देव रमणि बनि कपट सु भामिनि । आई देखन सीता स्वामिनि ॥ नागरि करति समाज तयारी । राम प्रताप मुदित सुरनारी ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ बैशाख शुक्ला नौमि सियकी साल गृह उत्सव महा । शृंगार करि चलि जानकी गृह सखिन प्रति यक सखि कहा ॥ पुरनारि चलि रनिवास आई देखि परि सन्मुख सिया । युग अली चामर ढारतीं बहु बस्तु लै ठाढ़ीं तिया ॥ राजत सिं-हासन जानकी चहुँओर भामिनि वृंद है । अलि उडुगणन के मध्यमें जनु सीय पूरण चंद है ॥ पुर नारि सिय पद लागतीं प्रमुदित रतन मणि वारतीं । मधुरे बचन सों तियनको मिथिले शजा सतकारतीं ॥ दोहा ॥ रमा उमा ब्रह्मानि शचि रति आदिक सुरनारि । प्रेम बिवश होय सीयकी सेवा करति सुखारि ॥

पण्डितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ राम बल्लभा जनकजा जासम जग नहिं आन । ध्यावत मनभावत लहत गावत वेद पुरान ॥

देवस्वामी०पद ॥ यहजनकलली को ध्यानहै । रामउपासक शुचि संतनको सर्बसुजीवनप्रानहै ॥ कंचनरचि सुभगभद्रासन मोतिन

कीलहरानहै।तापरबैठीचन्द्रज्योतिसीआननचन्द्रसकानहै ॥लाल चरणतल लालैकरतल लालबसन परिधानहै।अंगअंग लखिपरत मनोहर भूषणकी झमकानहै ॥ दोउकरकमलन कमलाबिराजत सखीखवावत पान है । चँवरढरत गृह मह मह महकत बाजत देवनिशानहै १ सियजू रानिनमें महरानी । औरसभै रौ-तानी ॥ चितवत भौंहखड़ी करजोरे इन्द्रानी ब्रह्मानी । गोरा-पानलगावत रचि राचि रमाखवावत आनी ॥ आठौसिद्धि खड़ी करजोरे नवनिधि मनहुं बिकानी । कोटिन ब्रह्माण्डनकी प्रभुता रोमरोम अरुझानी ॥ जो माया एकैघाटेपर सबहिं पियावत पानी । सोउचाहत जाकी करुणाको बारबार सनमानी ॥ जा-बिन पातौ हिलिनस कत जो सब घटमाहँ समानी । संत जन-नकी इष्ट देवता राम प्रिया जगजानी २ ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ गुणहीतक कहनो सुनन आगे अकथ अपार । सियछबि गुणते पारगुणि सकुचत करत बिचार ॥

देवस्वामीपद ॥ सियजूकी छबि मोसेकहिनहिंजाय । इन्दीबर सेनयननमें परिसुरमा अतिशरमाय ॥ पानपकि अधरनपर आ-वत फीकी लाललखाय । नयोमजीठी लालमहावर पदकेछुवत हेराय ॥ कनकबरण तनमेंकशमीरी केसरलागि नहिं नाय । अंग अंग चमकनसे भूषण चमक मन्दपरिजाय ॥ शरदचांदनीमें तारा गण छबि जस कछुदरशाय । सीयदेवता सकल छबिनकी कहौं सो इहांशरमाय सूर्यचंद तारागण याकीझलकहिसे झलकाय ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ शेष सियागुण अगमकहँ कहनलगे दै ताल । कहिनसके खाएकशक लाजनि धसे पताल ॥

देवस्वामी०पद ॥ श्री जानकी रहस्य अगम अति कैसेकै कोउ जानैगो । भूमिसुता कोउ जनकसुता कोउ कोउ लक्ष्मीकरिमानै गो ॥ कल्पित सही कहौंनकहांसे बीज रुधिरको आनैको । विद्या रूप कहैगोकोऊ तदपि नहीं पहिंचानैगो ॥ तहां अविद्या मिलिहै तबका दोउ एकैमें सानैगो । कोटिनब्रह्माण्डनकी जननी कोउ

ऐसीमति ठानैगो ॥ मायातकतो सूतमिलाहै धुरलों कैसेसेतानै-गो । देवमुनिनकी जान रामहैं यामेंवेदप्रमानैगो ॥ रामजानकी जान जानकी कातहूँ पतित बखानैगो ॥

युगलानन्यशरणपद० ॥ हरषीं मिथिलापुर नारियां । बरषबधावन नवलासिया सुनि महामोद उरधारियां ॥ मंगलपुरचहुंपासराशि सुख बीथी बगर बजारियां । अतिअनुराग जाग सबके हिय रमा उमा मतवारियां ॥ युगल अनन्य बधाई सियकी गावत प्रीति प्रचारियां १ हरषीं मिथिलापुरनारियां।बर्षबधावन जनक ल-लीको मोदप्रमोद निहारियां॥ फूलीकली मनोरथबेली रसिकज-नसुखकारियां।युगलअनन्यपरममंगलउररंगआरतीसाजियां २

कृपानिवास०पद ॥ नगरबगरमें धूमसुघरघर बर्षगांठ प्यारीजन-कललीकी । गावतप्रमदा बिशदबधाई सुभगसुनैना कोखफली-की ॥ मंगलगंधप्रकट मिथिलासर रामभँवराहित कमलकलीकी। बिपुल बिलास प्रकाश सकलजग जीवनकृपानिवास अलीकी॥

संग्रह०दोहा ॥ उतदशरथघरनी सबैबैठी सजिशुभसाज । आई सासुनगृहे सिय संगमें सखी समाज ॥ सासुनसों शासन लई चलिआई निजअयन । नृत्यगानलखि सखिनके सियारामकिय शयन ॥ प्रातजगे नितनेमाकिय दानादिये सियकंत । नितनवमं-गल मोदमें भावसंतकरअंत ॥

इतिबसंतऋतुबिहारसंग्रहसमाप्तः ॥

श्रीसीतारामोजयति ॥

अथ ग्रीष्मऋतु विहार ॥

संग्रह वर्णन ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ बैठे सोहत सियाराम एक समय सिंहासन आसन आस पास सखियनके मंडलराजहीं । पाणि जोरि यक सखी सयानी अपने मन ग्रीषम अनुमानी मृदुबानी रस सानी छतियां यों कहीं ॥ बिन अपराधै पथिक जनन पुनि पति बांच्छित नारिनको बिथहि हृदय दाहत बसंतभो अंतहै । यदपि तेज सहित ग्रीषम तन तदपि रमणि आगमन जनावै सीय रोकर बिरहिनि हियरेसम संत है ॥ निकट बसे हिय रस उपजावो युवतिन युवन सँयोग करावो यह बसंतने निदरि लैआवहि दूर के । जे बिरही यक बिधुहि बिलोकत ते बसंत बिबिध बिधि शोकत ते गवने जब अयन तपित कर सूरके ॥ पथिन देहि अवसरन नारी बहु मुख शशिन निहारि निहारी तेइ बिरही रहत अनंद अघाय है । अरिदलि प्रजन सकल सुख सारत यह जनु नृपकी नीति बिचारत भारि बसंतहि फल दिये फल छायहै ॥ सरस सूखिगय हैं घन बन बिकलहि जाय छयहै मृगगण सूचित करहि स्वामि ढिग जाकर जनुरिपु दुखलहै । निरधन निकटरहत नहिं गायन सोइ अनुभव अब भयो तकतबन कुसुमनि बिन रस लतिकन अलिगण बकुलन नहिं रहै ॥ ग्रीषम ताप अज्ञान ताप हर द्वै औषधि ये बदहि बिबुध बर बरकर सरसिज मुदमैकुच हर परसन । चलिये प्रभु शीतल खसखाने मोउर डरपत पवन सरसने सुनि गवने बिश्वनाथ नाथ ग्रीषम सरसने ॥

संग्रह०दोहा ॥ सुनि नागरिके बचनबर दूजी सखिहरषाइ । मधुर बैन बोलतभई अपनी युक्तिबनाइ ॥

रघुराज० कवित्त ॥ गहनमें गावनमें गिरिमें सु गोधनमें गृह में गिरामें गोरी ग्रीषम यों छैगयो । गानमें सु गायकमें गुनमें गुनी जनमें गोपति गोगणमें गर्म अतिह्वै गयो ॥ गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें गुरु गुरु जनहूमें त्यों गलानि गुण बैगयो । रघुराज गदत गरीबको नेवाज गाढो ज्ञानिनके ज्ञानमें अज्ञान अज्वै गयो ॥ गुलगुले गिलिम गलीचे गादीगेह बिछे गोरसके फेन ऐसे गरक गुलाब हैं । गोरस गिलासनमें हिमगिरि गोहनके गिरत सु गैलनमें गेहनते आवहैं ॥ गोरि गंग सरिस सुगेहनी सुनैरी गिरा रघुराज गदत गुमानके गमावहैं । गिरिते गहनते गवाक्षनते गौन करैं ग्रीषम गुरावकीये गरम गिराबहैं ॥

संग्रह० दोहा ॥ ग्रीषम ऋतुमें हेसखी तपनि दिवस अरु रैन। लालललो सुकुमार अति सुनी अपरकह बैन ॥

देवस्वामी०पदरागसारंग ॥ ग्रीषममें पूजौंगी सियबरको । महँकदार रंगी फूलनसे रचिहौं सुंदर घरको ॥ अतर गुलाब सींचि चारिउदिशि पवन झकोरै करको । रूप फुहारे धरिहौं जन में शुचि सुगंध जलभरको ॥ तावदानमें सरस धूपको देइहौं डारि अगरको । भीतरपूरी चंदनके पट मृगमद बहुत गरको ॥ ताके बीच कनकसिंहासन सजिमोतिनके लरको ॥ तापर इष्टदेवको भजिहैं घसिचंदन केसरको । तीनिताप तब आपुनशैंगे पाय अनंद लहरको ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ रामसिय शीतल खसखाने राजिरहेहैं । मंडित मलयज धुरी कपूरनि पुहुमी लतनि वितान तनेनभ सुछबिगहे हैं ॥ तामधि चंदकिरणिसे नीके सिंचे सुगंधनि बिछे बिछौना पलँग डसे हैं । छातै छतनि झरोखनि झांपैं ताखानि अतरदान छबिथापैं अति बिलसेहैं ॥ चहुंकित कुसुमनि पखुरिन नल जल कन कन मुकुतन शोभसनेहैं । क्यारिन बीच बारि

बहि बिलसत बहुबिधि बनज बिचरिरहे चंचल मीनघने हैं ॥ चंद्रमणिन सिंहासन बैठे सिय रघुनंदन आगे अलियां गायरही हैं। बीण मृदंग उपंग तमूरनि कोउ बजाय बर स्वर गहि-गावत सुख उमहींहैं ॥ कोउसखि चमरकरहिं हियहरषित कोऊ कुसुमनिके बिजन चलावत चपललसी हैं। बिश्वनाथ तेहि अवसर ध्यावत तीनिहुं तापहि तुरत नशावत मति हुलसी हैं १ जानकी करलै बीण बजायो ॥ सब मुरछनन श्रुतिन संग शा-रँग पंचम स्वरन दरन दरशायो ।पैंतस कोटितान बिस्तारे ठोंकि मीडि लिय भेदै। करि आलापनि गायगीत बिश्वनाथ बजायो बेदै २ छबिमय पुहुकरनीको पुहुकर मनहुं ओसकण छाजै। सियमुख श्रमसी कर अतिराजै ॥ लै सियबर सो बीण राम अति हिय हरषि बजायो ।बिश्वनाथ सबके श्रवणन घन आनँद रसबर सायो ३ जानकी शारंग सरस अलाप्यो। मन मोहन पिय मन मोहन मनु मोहन मंत्रै जाप्यो ॥ हरि हिय हरषि हारनिज गल को सिय गलमों पहिरायो। बिश्वनाथ लखि सुछबि स्वामिनी सखियन गण सुखछायो ४ ॥

ज्ञानाअलि०पद राग सोरठ ॥ खसखसके बँगले नीके छाये नव-कुसुम कलीके। सरस फुवारे बरसत झरिझरि सुखद मनोहरहीं के ॥ केशरि अगर अंग अनुलेपन सुमन शिंगार सीयपीके। भीने बसन अंग छबि दरसै सरसै स्वाद अमीके ॥ फूले कमल तड़ागन बागन सुमन सुगंध सरस जीके। ज्ञानाअलि त्रिभुवन सुखमासुख जेहिलखिलागतफीके ॥

युगलानन्यशरण० गजल ॥ बँगला बना दिलदारका क्या खूब रँगीला। खिरकी लगी हरतरफ शरफ शान सजीला ॥ फूलोंकी अजब तौरसे नक़शा नवीनहै। खुशबूसे मुअत्तरहुआ कुल खल्क़ रसीला ॥ खसकी खुशी भरीहुई टट्टीहै तरबतर। जीता है जिस में माह बरफ शरदकी लीला ॥ मनके हरन रंगीन नहर कहर गमहरे। छूटे अजब अजूब से सरशार नवीला ॥ आगे बहारदार

रचे खुशबागकी खूबी । हरदमें कली खिलती है सौंदर्य वसीला॥ इसतौरके बंगलेमें जशन जानकी जीवन । लखियेलगन लगाय के अली हेम छबीला ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ दोउ सुखसने गये तहखाने । जाकी दिपाति दिवाल बरफमय बिबिध कुसुमके बने बिताने ॥ अवनी भरयो सुगंधित पानी बूड़े पदिक पलँगके पाये । श्वेत पीत औ नीलक लाले जलमें परे कमल भलभाये ॥ क्षीरफेन औ स्वधासफाई निदरत बिछी सेज छबिछाई । तामें दोउ सोये सुख भोये हरषैं अलियां पांयदबाई ॥ कोई सखि बिजनडोलावें करलै चूरी । कंकण बजन न पावें ॥ बिश्वनाथ यहि अवसर ध्यावते तीनों ताप तुरत मिटि जावें १ जागि दोउ सरयू बिहार करि बागहिं आये । बरबिहारकर बिबिध भांति पुनि सदन सिधाये ॥ बैठे सितघन घटा अटनलत चहुंकित भाये । बिश्वनाथ ब्यारी करि दोउ बीरि न खाये २ सखी कोउ कह्यो करिय सुख शैन । मूंदहिं खुलहिं नींदबश दोऊ लसहिं अलसयुत नैन॥ सुनि सोये सुखभोये सखियां ब्यजन करहिं युतचैन । बिश्वनाथ करिगान पाहरू फिरहिं चहूंकित ऐन ३ ॥

चंद्रअली०दोहा ॥ बजत बाजनेरंगके अंतहपुर चहुंओर । श्रवण सुनत नागरिनमन मोद प्रमोदन थोर॥हेसजनी रजनी गई उर अति भई उमंग । कबदेखैं पर्य्यंकपर लली लाल दोउ संग ॥ जगे ठगे मन सखिनके पगे प्रेमकी ओर । लगे लगनिमें जगमगे सिय पिय खगे मरोर ॥ अरस परस भुज अंशदै नवपरयंकासीन । नेह देह सुधि बिगत सखि लखि किन परम प्रवीन १ हे सजनी या दम्पति छबिपै कहा वारने कीजे । प्रीति बिवश मांतेगत सुधि लखिनिवछावरि जलपीजे ॥ जिनकेजागत अंग प्रभातै रबिकर आभलजानी । जादिन करकी ज्योति साखि बुमकत मणिगण अभिमानी ॥ तन मन प्राण मीन गति यह जल सिय पिय निरखतजीजे । गवर श्याम सुखधाम रूपमणि

मधुर माधुरीपीजे ॥ अरस परस शिंगार मारछकि कियो लियो रसभारी। नवपर्यंकासीन सुभग दोउ चन्द्रअलीबलिहारी ॥

संग्रहकर्त्ता०दोहा ॥ उठि शय्याते राम सिय प्रातकृत्य सबकीन। पुनि दंपति अतिहेतुसों भोजनकिय सुखभीन ॥

इति ग्रीष्मऋतुबिहार समाप्तः ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

अथ पावसऋतु बिहार ॥

संग्रहवर्णन ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ एकसमय बैठेरघुनन्दन कह्यो लखहु सावन छबिछायो। सोसुनि बचन सखा रघुबरसों कहतभयो मन भायो ॥ केवल पथिकजनाहि सतावत जो ग्रीषम यह अंतभयो है। अचरजकहा जगतदुखदायक अनय जोग्रीषम छीजगयोहै ॥ मेदुर मुदिर मढ़े अंबरबर चहुंकिबकत ससहितउछाहै। ग्रीषम आतप तपितजगतताकि पावस मनहुं छबिकिय छाहै ॥ तृण जल आदिक प्रजन जीविका ग्रीषममहँ माहि ग्रासजोकीनी। पावस राज सुराजपायकै विश्वनाथ प्रकटे करिदीनी ॥

संग्रह०दोहा ॥ बैठे निजमहलन अटा सबसमाजयुत राम। देखि श्यामघन कोउसखा कहेबचन अभिराम ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ कोउकह घन येगरजि बरसिकै जगग्रीषम गरमी तुरतनशावै। जिमि मज्जनउपदेशनि करिजन हिय हरि तापनि सुखसरसावै ॥ श्यामशरीर पीतपट विजुरी अरु सुरधनु

उपवीत बनाये । विश्वनाथ मणिमाल बलाका जगपालत घन हरि छबिछाये ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ कोउ प्रियसखा जोहि घन तेहिक्षण मृदुहँसि कही रामसों बानी । यह पावस छबिमय क्षण क्षणमहँ बरसत रस शिंगार मिसि पानी ॥ जड़ हुलसत सुखते प्रफुल्लित करि उत कंठितै तरुण लपटावै । नहिं अचरज गरजनि सुनि डर मिसि चेतन तिय पियगल लगिजावै ॥ कीन्हों प्रण पावस पुहुमी पति सबकहँ सदनहिं माहँ बसैहों । मानि निदेशन बसहिं विदेशहिंताकोदुसह कलेश सहैहों ॥ सोई प्रगट लखिपरत चमकचपलनिजते तेजाहिसोदियेजारी । धुरवानहियेह धूमतिनहिंकेकीन्हे दशहु दिशहिं अंधियारी ॥ परमसुखदजोपिय बियोग सोइ अति दारुण दुखदाईहोई । जोघहरानि सुनिनचत मोरहिय बिरहनि घनसम धमकत सोई ॥ युगुनगणन जगमगत चहूंदिशि बिश्वनाथ इमि परहिं निहारे । हेरत पाति ताजितन बिरहनि जिय जहँ तहँ बिरह अगिनि अब जारे १ कोउकह यहऋतु अति अनुकूलैं लहि तिय हिय सुखभरती । घन अंधियारी सारी सजि तिमि बिजुरी मिली बिचरती ॥ भूषणध्वनि झिल्लिन झनकारन मिली मग जानि नजाई । अरु संकेतएकंत लहहिं अति कढ़ैको निशिभई भयदाई ॥ उपजैं बहुसंजीवनि औषधिमृतकनक हँकरि ज्यावै । जिनपरसे युवतिन पगजावक इंद्रबधूह्वैधावै ॥ सखनबचन यहिभांति बिबिध सुनि हँसि हँसाय कहि बातैं ॥ बिश्वनाथ बनबिहरन गवनेतुरँगन चढ़ि हरषातैं २ पावस हरित पुहुमिमहँ बिचरत लसत सखन संगराम । सुरँग पोशाक सुरंग मणि भूषण सुरँग तुरँग अभिराम ॥ तहँ कोउ सखा कह्यो छबि जोई जल कन दूबन नौंक । घनछाबिछाय बरस भुवदुलिचे जनु जलजनि चौंक ॥ बरषातेजलजलमय संयुत शृंगन गिरिऊपर घन सघनै । दूजो तनधरि धरणि धरन जनुकढ़िधारयो शिर गगनै ॥ कोऊकह सुरधनुधरणी ते उठि नभलगि ललित बिराजै ।

बहुरंग पुहुपन पूजित हरिपग जगनापत जनुछाजै ॥ हर-षित कोऊ कह जलबरषत भुवसरसतसबठौरें । नहिं अकाश अवकाश सुयशतव छलकि बिश्वकहँबौरें ॥ बिचरि बनहिं सरयू बिलोकि छबि फिरिआये निजऐन । बिश्वनाथ पुनि झूलनगवने सीयसंग भरिचैन ॥

ज्ञानाअलि० पद ख्याल ॥ रसिक दुलारे प्यारे झूलन पधारे । श्रीदशरथसुत जनकनंदनी सियगोरी पियघनतनकारे ॥ रतनरचित मणिजटितहिंडोरा बिमलादिक सखि रुचिर सुधारे । सरयू तीर कुंजद्रुम फूले गुंजत भवँर सुरभिमतवारे ॥ कोकिल मोर पपीहा बोलत घनगरजत सुखवृष्टि प्रचारे । बजतमृदंग ताल सारंगी सखि गावहिं बर चरित सँभारे ॥ शीतलमन्द सुगन्ध पवनबह सखि तन अतन बढ़ावन हारे । ज्ञानाअलि के धन जीवन दोउ निज सहचरि लखि निकट हँकारे ॥ पदलावनी ॥ सरसऋतु झूलन छबिछाई । निरखि पियप्यारी मनभाई ॥ नवल तरु सुमन सरसफूले । सोहावनि सरयू सरि कूले ॥ भवँर रस मत्त फिरैं भूले । पवनबह शीतल सुखमूले ॥ दोहा ॥ मधुर मधुर ध्वनि कोकिला बोलत दादुर मोर । पियपिय रटत पपीहरा प्यारी घनगरजत चहुँ ओर । दामिनिदमकत दुरिजाई । रसिक दोउ झूलन सुखदानी । सखिनरुचिजानी मनमानी ॥ संग सिय सोहैं पटरानी । पियाकी जीवन जगजानी ॥ दोहा ॥ झूलनलगे हिंडोलना अँग अँग उमग न माय । ज्ञानाअलि छबि लखिछकी निशिदिन कछुन सोहाय ॥ झुलावैं झूलनपदगाई ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ हिंडोरे झूलत अति अनुराग । सियजू की भीजत सुरँग चूनरी सुभगराम शिर पाग ॥ गावतराग मलार सखीसब छबि छहरति बरबाग । बिश्वनाथ मुख निरखत हर-षत सरसत सरस सोहाग १ सावन सरससोहावन झूलत युगुलकिशोर । उड़त पीतपट सारी छबि छहरति चहुँओर ॥ सुखसनि अलियें झुलावहिं गावहिं रागमलार । बाजहिं बाजन

मधुर ध्वनि बीण मृदंग सितार ॥ हरित अवनि सुठि सोहत इन्द्रबधुनके जाल । तरुतरु हरित सपेतिन मत्तअनंदित लाल ॥ कुजहिं कोकिल पपिहरा सरस पुकारि पुकारि । नाचतचहुँकित मोरवा पूंछ सँवारि सँवारि ॥ धावहिं नभपथ घन घनबरसहिं किये उमाह । उमडहिं सरसी सर सरि बगरन अंबु प्रवाह ॥ दमकि लसहिं घन बीजुरी बिलसहिं नभ बकपांति । सोहहिं इन्द्र शरासन जिनकी बहुरंगकांति ॥ पहिरि कुसुँभरँग सारी आलियें भुलावन जाहिं । भूलहिं और भुलावहिं संग अति मुदमाहिं ॥ जहँहैं सहित बिनोदन सिय सिये पिय सुकुमार । बिश्वनाथ तहां चलिये लहिये सुखको सार ॥

अग्रदास०पद ॥ भूलत सीताराम हिंडोरे । गौर श्याम अभिराम मनोहर रतिपति को चित चोरे ॥ नील पीत बर बसन लसत तन उठतसुगंध झकोरे । सहचरिहर्षि भुलावत गावत छबि निरखत तृणतोरे ॥ मंदमंद मुसुकात छबीलो मुरकत थोरे थोरे । अतिसुकुमार अग्रकीस्वामिनि डरपि गहतपटछोरे ॥

सग्रह०दोहा ॥ हे सजनी देखनचलो भूलत सिय रघुलाल । युगलचंद की छबिछटा लखिके होउनिहाल ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागमलार ॥ आलीरी राघोजूके रुचिर हिंडोलनो भूलन जैये । फटिक भीति सुचारु चहुँदिशि मंजु मणिमय पोरि । गचकांच लखि मन नाच शिखि जनु पांचशर सुफँसोरि ॥ तोरण बितान पताक चामर ध्वज सुमन फल घोरि । प्रतिछाहँ छबि कबि साखिदै प्रतिसों कहैं गुरहोरि ॥ मदन जयके खंभसे रचे खंभ सरलबिशाल । पाटीर पाटिबिचित्र भौंरा बलित बेलना लाल ॥ डांडी कनक कुमकुमातिलक रेखैसि मनसिज भाल । पटुलीपादिकराति हृदयजनु कलधौतकी मनमाल ॥

उनये सघन घनघोर मृदुझरि सुखद सावनलाग । बकपांति सुरधनु दमक दामिनि हरित भूमि बिभाग ॥ दादुर मुदित भरे सरितसर महि उमग जनु अनुराग । पिक मोर मधुप चकोर चातक शोर उपवन बाग ॥ सो समौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि । गुन रूप योवनसींव सुंदरिचलीं झुंडनिझारि ॥ हिंडोलसाल बिलोकि सबअंचल पसारिपसारि । लागीं अशीशनराम सीतहिं सुखसमाजु निहारि ॥ झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सुहब गौड़ मलार । मंजीर नूपुर बलय ध्वनि जनु काम करतलतार । अति मचत श्रमकन मुखनि बिथुरे चिकुर बिलुलितहार ॥ तम तड़ित उडुगण अरुण बिधु जनु करत ब्योम बिहार ॥ हिय हरषि बरषि प्रसून निरखति बिबुध तियतृणतूरि । आनंदजल लोचन मुदित मन पुलक तन भरिपूरि ॥ सब कहहिं अबिचलराजनीति कल्याण मंगल भूरि । चिरजिवो जानकि नाथ जग तुलसी सजीवनमूरि ॥ पदराग सूहो ॥ कोशलपुरी सुहावनी सरिसरयू के तीर । भूपावलीमुकुट मणि नृपति जहां रघुबीर ॥ पुर नर नारि चतुर अति धरम निपुणरत नीति । सहज सुभाय सकल उर श्रीरघुबरपदप्रीति ॥ छंद ॥ श्रीरामपदजलजात सबके प्रीति अबिचल पावनी । जोचहत शुक सनकादि शंभु बिरंचि मुनि मन भावनी ॥ सबही के सुंदर मंदिराजिर राउरंक न लखिपरे । नाकेश दुर्ल्लभ भोग लोग करहि न मन विषयनि हरे ॥ सब ऋतु सुख प्रद सोपुरी पावस अति

कमनीय । निरखत मनहिं हरति हठि हरित अवनि रमनीय ॥ बीरबहूटि बिराजहीं दादुर ध्वनि चहुं ओर। मधुर गराजि घनबरषहीं सुनि सुनि बोलत मोर ॥ छंद॥ बोलत चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने। खग बिपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने ॥ बकराजि राजित गगन हरिधनु तड़ित दिशि दिशि सोहहीं। नभ नगरकी शोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥ गृह गृह रचे हिंडोलना महिगच कांच सुढार । चित्र बिचित्र चहूंदिशि परदा फटिकपगार ॥ सरल बिशाल बिराजहि बिद्रुम खंभ सुजोर । चारु पाणि पटुपुरटकी झरकत मरकत मोर ॥ छंद ॥ मरकत भँवर डांड़ी कनक मणिजटित द्युति जगमगरही ।पटुली मनहुंबिधिनिपुण-ता निज प्रगटकरि राखी सही ॥ बहुरंग लसत बितान मुकुतादाम सहित मनोहरा । नवसुमनमाल सुगंधलोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥ झुंड झुंड झूलन चलीं गजगा-मिनि बरनारि । कुसुंभ चीर तन सोहहीं भूषण बिबिध संवारि॥ पिकबयनी मृगलोचनी शारद शशिसमतुण्ड। राम सुयश सब गावहीं सुस्वरसुशारंग गुण्ड॥ छंद ॥ शा-रंग गौड़ मलार सोरठ सुहो सुघरनिवाजहीं। बहुभांति तान तरंग सुनि गंधर्ब किन्नर लाजहीं ॥ अति मचत छूटत कुटिल कच छबिअधिक सुंदरिपावहीं। पर उड़त भूषण खसत हँसिहँसि अपर सखी झुलावहीं॥फिरिफिरि झूलहिं भामिनीअपनीअपनीबार । बिबुधबिमान थकित भये देखतचरित अपार॥बरखिसुमन हरषहिं सुरवरणहिं

हरिगुणगाथ। पुनि पुनि प्रभुहिं प्रशंसहीं जय जय जानकिनाथ॥ छंद॥ जय जानकीपति बिशद कीरति सकललोक मलापहा। सुर बधू देहिं अशीश जीवहु राम सुख संपति महा॥ पावससमय कछु अवधबरणत सुनि अघौघ नशावहीं। रघुबीरके गुणगण नवलनित दास तुलसी गावहीं॥

पंडित हरिहरप्रसाद० दोहा॥ झूलत रंग हिंडोलना दंपति भरे उमंग। मेरु शृंगराजत मनहुँ घनदामिनि यकसंग॥

अग्रदास० पद मल्लार॥ लागत तीज सुहाई अवधपुर॥ रंग रंगीली अति सुकुमारि सब मिलि झूलन आई। कंचन खंभजटित मणि हीरा डांडिन चुनी जड़ाई॥ भवँर प्रबाल बनीबर शोभा पचरंग डोरि सुहाई॥ होड़ा होड़ी मच्यो हिंडोरा महिमा बरणि न जाई। अग्रअली प्रभु दंपति झूलैं जनकलली रघुराई १ झूलत सिया राजीव नैन। रतन जटित हिंडोलना सखी राम सुखके ऐन॥ श्यामअँगपर गौरझलकै दामिनी घनगैन। मैथिली रघुबीर शोभानिरखि लाजतमैन॥ नामपियकोलेहु नागरि होयसखियन चैन। जानकी नहिं लेति मुखसों देति लोचन सैन॥ परस्पर झूलत झुलावत बदत मधुरे बैन। अवध पुरनिज केलि दंपति अग्र आनँद दैन॥

प्रियाशरण० पद॥ रंगझूलन झूलेप्यारी जनक किशोरी। राज सुवन रघुनन्दनके सँग लसत मनोहर जोरी॥ सावन तीज सुहावन लागत बोले मोर अरु मोरी। हरिहरिभूमि लताझुकि आई सरयूलेत हिलोरी॥ नन्हिनन्हिबुंद पवन अतिसुंदर परसि श्याम अरु गोरी। प्रियाशरण छबि अद्भुतबाढ़ी जाइ न बरणी सुख सोरी॥

रामसखे०पदरागमलार॥ जानकी तीज हिंडोरे सोमबट झूलति पियरँगभीनी। ओढ़ेअरुण झीनि तनसारी इन्द्रबधूछबिछीनी॥

आपन गाय गवावति पियको हँसिहँसितान नवीनी। रामसखे लखि यहप्यारी सुख भइ रति अति मनहीनी॥

ज्ञानाअलि०लावनी॥ प्रियतम प्यारी दोउ तीज हिंडोरे झूलैं। सरयूतट कुंज निकुंज सखिन सुखमूलैं॥ रसमत्त परस्पर रूप छके समतूलैं। करि हाव भाव दृग फेरि हरषिहियफूलैं॥ दोउ रसिक छैल छबि खानि हरत हिय शूलैं। ज्ञानाअलि झोका देत परस्पर हूलैं १ रसिक दोउ रहसिरहसि झूलैं। सरसऋतु पावस सुखमूलैं॥नवलतरु लता ललित दरसै। उमड़ि घनघटा अटापरसै॥ बड़ेबडे बुंदन नित बरसै। झुलावैं झूलैं सुखसरसै॥ दोहा॥ अलि चपलावलि अचलह्वै पिय प्रीतम घनपाय। नित नवसुख बरसनलगी झूलन गाय बजाय॥ सुनतपियप्यारी चित फूलैं॥ नवल सिय रसिकलाल झांकी। बिलोकनि अलबेली बांकी॥नेकु जेहिओर बिहँसिताकी। सोइ बड़भागिनि मतिपाकी॥ दोहा॥ श्री सरयूतट निकटही सोम श्रवण बटछांह। नाहनेह ज्ञानाअली बढ़त धरे गलबांह॥ यही सुख प्रीतम अनुकूलै॥

रघुराज०पद॥ सरयूबन दोऊ झूलैं। श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनी अंगन अरुण दुकूलैं॥ गजमणिमयछड़ पटुलिअरुणमणि माणिक बेल न बिकसित बहुकणि। बिशदबिशाल प्रबालखम्भमणि॥ मुकतनि झालरिझूलैं। जममग जरकस बिपुलबितान। जड़े हरिहीरक डंडमहान॥ उतंग निशान दिपन्त दिशान नहिं सुरशा रंगतूलैं। लालबिभूषण लाल पोशाक। नहिंसमता जिन की कहुँनाक॥ मनोजके लाजनकी कहुँधाक। झुलावहिं सखि अनुकूलैं॥ छाइरहे क्षिति बासव बाल। लसै नवपल्लव तालतमाल॥ नदैंमदमत्तमयूर रसाल। हरैं हियकी सबशूलैं। परैं घनबिन्दु मनोकलिकुन्द। दमंकत दामिनि देत अनंद॥ बहैतहँ मारुत शीतलमन्द। झरैं लतिका बहु फूलैं॥ भरे अनुराग दोऊ बड़भाग। कहै रघुराज सुनै पिय राग॥ बजावत बाजन पाय सुहाग। सुहावन आनँदमूलैं १ सियके पियकी छबिदेखैं। झूलि

रहे सरयूसरि तीर मचाइअनंद अलेखैं ॥ उड़ैं अलकैं पौन प्रसंग मुखै छहरैं पटपीतहिसंग मनो शशिपै चलिजात भुजंग नेवारत दामिनि देखैं । कोमल बुन्द झरैं घनवृन्द पितांबर अंचलकर अरबिन्द परस्पर वारत सिय रघुनंद । हँसैं दोउ आनँदवेखैं । आवतजात हिंडोल सोहात प्रभासित श्याम क्षमा छहरात सुहावन गायलखैं सखिव्रात तजैं रघुराज निमेखैं २ ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ झूलनआये दोऊहो । गलबाहींकीन्हें सिय रघुनंदन सखियां चहुंकितहो ॥ यक तो अवधनगर मन भावन पुनि सुखछावन भावनहो । फेरि सुहावन सावन बोलैं मोरवा जित तितहो ॥ परमबिशाल लालमणि बँगला बन्यो बाग के बीचहिहो । बोलहिं लाल तमालनिमाते संगसपेतिनहो ॥ रेशम सोन सूतयुत झुलना पलंगबन्यो तेहि सोवतहो । तामें विश्व नाथ दोऊ झूलत हरषत क्षण क्षणहो ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ लाललाललालैलली सखा सखी सब लाल । झूलतलाल हिंडोलने चहुँदिशि गावत बाल ॥

देवस्वामी०पद ॥ भले दोउ लालैलाल लसे । मानहुं दोउनके अंतरके प्रगट राग बिकसे ॥ लालबागमें लालडोरसे लालहिंडोलकसे । लालसखी कर फूललियेहैं बहुत सुगंधबसे ॥ लाल बसन भूषण औ आसन लालचवर हुलसे । लाल लली तेहि मध्य बिराजत पानखाय बिहँसे ॥ लालछत्र मंडल शिर सोहत दोऊ काम रसरसे । रंगलालकी या लालीलखिदेवनकेमनफँसे ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ झूलतदोउ सुखसने हिंडोररि । भीजतललन की ललित पगड़िया सुरंग सियाकी चूँदरि ॥ लागतझूंक डरपि नहिं नहिं कहि प्रिया पिया गरलागै । सो सुख दशहि सकहिं नहिं कछु कहि बिश्वनाथ अनुरागै ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ हरेहरे भूषणधरे हरे हरे सबचीर । हरे हरे झूलतहरे झूलन सिय रघुबीर ॥

देवस्वामी०पद ॥ आज दोउ झूलत रंगभरे । सजि सब साज

हरे ॥ हरितकुंज घनलता हरितहैं तरिवर हरितफरे । हरितभूमि नभ हरी हरीमय पक्षी हरितचरे । हरित हिंडोरा हरित डारमें हरितडोरजकरे । हरित बसन भूषण औ आसन चामर हरित ढरे ॥ हरित सखी दोउओर झुलावत मेघराग उचरे ॥ दोउ किशोर तेहिमध्य लसतहैं हरित छत्र शिरधरे ॥ पीतश्याम आपुस में मिलिकै हरितरंगउधरे । कोइल कीर मोरगणके मिस देखहिं देव खरे ॥

ज्ञानाअलि०रागतिल्लाना ॥ सियरसिक बिहारीभूलैं । सावनकुंज सरित सरयूतट बन प्रमोद मुदमूलैं ॥ नख शिख सुमन शृंगार सजोरी अवधचन्द्र चन्द्राननिगोरी निवछावरि रति मदन करोरी तेहिसम एक न तूलैं ॥ सियझूलैंपिय झमकिझुलावैं निरखि निरखिछबि बलिबलि जावैं मनभावै कटिलचकनिमचकनि हरषि हियशूलैं । नागरि बयस शिरोमणि सारीसियप्यारी सबराजकुमारी लिये सौंजठाढ़ीचहुंओरनि सेवासुख अनुकूलैं ॥ मृगनयनी कल कोकिल बयनी गजगमनी सब रति मददमनी ज्ञानाअलि सब निमिकुल छवनी क्षण क्षण छबिलखि फूलैं ॥

युगलानन्यशरण०ग़ज़ल ॥ झूलैं लली लालनअली मुद मौजहिंडोले । क्षण क्षणमें छटा छबिनई करैकेलि कलोले ॥ गुणगावतीं सखियां सबी हियहौंसला खोले । रसरागिनी बड़भागिनी रति रूपमय डोले ॥ क्यारंग अदांअंगहै बाणी यही बोले । जिय युग्मने यहिरातभी निजनेह निचोले १ झूलन बहारदारमें गुण गाइये प्यारी । हासिलनहींआलकिये टुक समझियेवारी ॥ भीजे सनेह नीरसे झूले लली लालन ॥ झोंका झलक अजूब चमक चांदनी चालन ॥ मुसक्यात मज़ेदार मोहब्बतके फंदमें । फँसिकै कहीं निकसेनहीं अनुराग बंदमें ॥ श्रीजानकी जिवनकी सुछबि हेरिये हीमें । लतिका सनेह हेमहरित हूजिये जीमें ॥

रघुराज०पद ॥ आयेहो कनक मंदिरमें जनकदुलारीराजदुलारे । झूलन हेत किये गलबाहीं अंगसजी अलिसंग सोहाहीं बानिक

वेष बनाये । रतनहिंडोरे जरकसडोरें जोरे नैननिदाये । श्रीरघुराज लहैं सखियां सुख दंपति झमकि झुलाये ॥

प्रियाशरण०पद रेखता ॥ रतन मणिधाममें प्यारी । सकल गुण रूप उजियारी ॥ पियासँग झूलती सुखमें । रति शतकोटि बलिहारी ॥ हिंडोरा मणिमयी सोहैं । झकाझकदेखि मनमोहैं ॥ बढ़ी सुखसिंधुकी लहरें । युगलमुख सहचरी जोहैं ॥ रहे सुख छाय गावनके । युगल रसरीति भावनके ॥ नचैंबर सुंदरी नारी । रती किन्नरी लजावनके ॥ अली सुखसिंधुकोदेखैं । सुफल निज जन्मको लेखैं ॥ झूलैं पिय लाडिली संगमें । मुदित प्रियाशरण छबि पेखैं ॥

युगलानन्यशरण० पद ॥ झूलैं प्यारी झुलावै प्यारो ॥ मधुर मधुर करकंज मंजुगहि रेशमरजु सुकुमारो । नैनन निरखि नवेली बिधुमुख मंद हँसनि नृपवारो ॥ उरझिरहे अँग अंग रंगरस सुरझनि अगम निहारो । युगल अनन्य अली दोउ नेहिन ऊपर सर्वस वारो ॥

बैजनाथ० लावनी ॥ आजु रघुनंदन सियप्यारी । झमकि झुकि झूलत छबि न्यारी ॥ चहूँदिशि बिपुल अली राजैं । नचैं कोउ सुभगताल साजैं ॥ दोहा ॥ कंचनजटित हिंडोलना बिद्रुमखम्भ बिशाल । गजमणीदाम काम मनमोहित भँवर रसाल ॥ कंज मणि सोहैं अरुणारी । शीशपर मुकुट सुभग सोहै ॥ श्रवणमें कुंडल मनमोहै ॥ दोहा ॥ छूटी अलक कपोलपै झलकत झोका देत । पानखान मुसक्यान माधुरी चितवत चित हरिलेत ॥ मालगर मोतिनकी धारी । चरणदोउ जावक युतराजै ॥ अंग अंग भूषण सुखसाजै ॥ दोहा ॥ मोतिनकी कवरी गुही बेंदी शोभित भाल । बैजनाथ रघुनंद रूपकी मोहनयंत्र बिशाल ॥ बाम दिशि राजत सुकुमारी ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ गावैंहोहो सखि ललितहिंडोर आजुसंग प्रीतमप्यारी । उड़नि सियातन द्युति सनिसारी ॥ जनु दामिनि

दमकति नभन्यारी । नाचत दोउ मुसक्यात परस्पर चतुरसखी कोउ भाव बिचारी ॥ चकितैंरहीं निहारि निहारी बिश्वनाथ तन मन धन वारी १ हिंडोरनाहो सिय हरि झूलतछबि सरसाय । उगे दोउदिशि सुरधनुहो दोउ बरखंभ बनाय । पवन पाटुरी मेघसंग झुली जनु बिजुरी दुरिजाय ॥ झूलि पटारी ऊंचिहो जहँ कोउ सखिहु न जाय । तहँ सोये दोउ सुखसनिहो सखियनकहँ दुख छाय ।। बरसत रिमि झिमि मेघहो बिश्वनाथ घहराय । हमरे पियाकी खबरियाहो महँगे मोल बिकाय २ ॥

इति पावसऋतु बिहार संग्रह समाप्तः ॥

श्रीजानकीवल्लभायनमः ॥

अथ शरदऋतु बिहार ॥

संग्रहवर्णन ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ एकसमय सखन सहित चढ़ि चढ़ि तुरंगन बिहरनको भरि उमंग बिशद बिपिन गौने । भाष्यो कोउ हरषि सखा महामलिन बरषाके सखा नागभखा पखा परिहरिभे मौने॥ पावस संगरहे समल अवनी आकाशहुजल यहिअवसर कीन्ह्यो भल शरद अमल कैसे । नशी विषय बासना उपासना प्रकाश हिये बिश्वनाथ भक्त चित्त करति भक्ति जैसे ॥

रघुराज०कवित्त ॥ सोह्यो शुद्ध सलिल सुसरिता सरनहूं में सूखिगे सुपंथ त्यों सफाई शरदकी । शिखी शिखिनीके सुख सकल सुखाने सुखी सिंधुर समाने जल शोष भैंसमदकी ॥ सुंदर सरोज सरयूमें सरसानलागे सरसी सरस शशि सुंदराई सदकी ।

सुंदर सदन बैठी सखिनकी स्वामिनी सरेखु रघुराज सुखसुखमा शरदकी ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ बोले रघुनंदन उये अति प्रचंड मारतंड तेज चंड पूरण नवखंडहिं करिदीनो । घनघन अंधियार सहजतेजाहिं ननहिं हारसों संधारन करतार सानराखि तीखकीनो ॥ मिटे सघन मेघनके अतिप्रसन्न भयो गगन ज्ञानपाय बिन अज्ञान सज्जन उर जैसे । हंसन ध्वनि सरन बिमल बिलसे अति अमल कमल बिश्वनाथ कथा सुनत संतन दिल ऐसे १ कोउकह सुनि मोदरंग बरणत कविनारि अंग छबि उमंगको प्रसंग अधिकै निरसानी । जोपै उपमानहीन भैतौ उपमेयहीन परिहै असशरद नारि मनमें अनुमानी ॥ व्यापकहै जग अभंग शोभा निजअंग अंग देके उपमाननको परम पीन कीनी ॥ मुख शोभा बिधु बिशाल केशपास ते सिंवाल नैन कंज खंज अधर सुछबि जवदीनी । भूषण मुक्तन मयूषदीनी है नखत गणन किंकिणि नूपुरन सुरन हंसने सिखाई । बिश्वनाथ भुज मृणाल नासा तिल कुचन भार नमित काय फलित लतन सुछबि सोइ छाई २ चहुंकित अबरस बरसत भाई । जिततित तकत सरस सुख सरसत जगत शरद ऋतुकी छबि छाई ॥ बिगसित सतपरन मकरंदन लिये सुगंधन मारुत आवै । पाय शरदको संग अनंगहि भयो मत्त मातंग जनावै ॥ बिबिध रंगके मुद उमंग भरि शुकन अवली मुख धानकी बाली । उड़त गगन जनु शरद छीनि लिये पावस सुरधनु सु छबि बिशाली ॥ मन रंजन खंजन बन बिचरहिं कुसुमित कासहुहरष जनायो । बिश्वनाथ तकि घटज अतिथ गुणि पावस जल जनु शरद चढ़ायो ३ यहि बिधि बरणत बिहरत कानन चारौं बंधु परम छबि छाये । अनुपम निरखि सरयूकी शोभा सांझ समय पुनि सदनहिं आये ॥ बैठे सहित जानकी रघुबर सखियन मंडल चहुंकित भायो । बिश्वनाथ तेहि अवसर पूरण उदित इन्द्रदिशि सोम सोहायो ४ ॥

रघुराजसिंह० पद ॥ आई शारद पूरणमासी । छायरही शारद पारदसी चंदकिरणि छबिरासी ॥ बिकसी सकल चमेली नवेली हेली हृदय हुलासी । कलित कुमुद मदप्रद सर सोहत पंकज अवली खासी ॥ सारस चक्रबाक कल हंस मनोहर शोर बिकासी । कुंजथली महँ कुसुमावली भली कवि सुरबर सरितासी ॥ शीतल मंद सुगंध समीर बहत सिगरो श्रमनासी । भलो रासको आयो औसर छबि छकि पविन आसी ॥ रास बिलास बिरचि पिय संगम आशा भरशर ऐंचहुं गांसी । जनकलली उठिगहहु गली यह बिनय करत तुवदासी । श्री रघुराज तोहिं परखे उत सरयू बिपिन नेवासी ॥

ज्ञानाअलि० पद रेखता ॥ आजु रसरास तैयारी । सखिनसँग सीय सुकुमारी ॥ मंगल भरि कनककर थारी । कलश कल सुरभि बर वारी ॥ साजि नवसत मनहारी । नवल तन लालकी प्यारी ॥ सबै निमिबंश उजियारी । सलोनी सुमुखि छबिभारी ॥ यंत्र तंत्रादि करतारी । सप्तस्वर सहित लय धारी ॥ मुर्छना मुरनि हँसि नारी । निरखि सखि सबै मतवारी ॥ ज्ञानाअली अलि सोज सजिसारी । पिया हित मिलन चलि भारी ॥ लावनी ॥ शरदऋतु दम्पति छबि छाई । नेकु रति मदन भीक पाई ॥ अलिगण गावैं मनभावैं । बजावैं बाजन सुख छावैं ॥ नईनइ तानन सरसावैं । सप्तस्वर क्षण क्षण दरशावैं ॥ दोहा ॥ नटनि कला कुशला सबै पिय प्यारी सुखपाय । नाचनलगीं उमंगसों गति स्वर ताल मिलाय ॥ मूर्छना छुम छननन भाई ॥ विविध रसकेलि कला छाकी । छबीली अलबेली बांकी ॥ निरखि सिय रसिक लाल भांकी । सखिन की गति मति सबथाकी ॥ दोहा ॥ चटक चांदनी शरदकी पिय प्यारी मुखचंद । चष चकोर ज्ञानाअली छबि रस पियत अनंद ॥

युगलानन्यशरण० गजल ॥ सरयूपुनीत में रसरास रची है । हर चारतरफ चांदनी महताब खचीहै ॥ रँग रँग की पोशाक पहिरि

प्यारियां आईं । मंडल मनोज शानमथन बीच नचीहै ॥ तर तान तरहदार तबीयतमें खुश लगी । सुनसुन छकी अपसरस बीच बाम सचीहै ॥ करकंज कलित जोरियुगल जानकीजीवन । क्याखूब लगे नृत्यकरन मजा मची है ॥ लखी लाल लली नेह भई चित्रसी सखियां । अलि हेमलता गानसुन गुणगायबचीहै ॥

ज्ञानाअलि० लावनी ॥ देखो सखि रहस कलोल नटत पियप्यारी। यह चटकचांदनी शरदचन्द उजियारी ॥ सुन्दर अशोक बनकुंज सदा सुखकारी । फूले द्रुम लता बितान मधुप गुंजारी ॥ बीणा धरि बीण बजाय गायलय धारी । सहजा सितार कर धारिलेत गति न्यारी ॥ चन्द्राननि मृदँग टँकोर चन्द्रकल तारी । सुभगा जु सप्तस्वर घोरि रहस मतवारी ॥ यह रासबिलास अपारसिंधु अति भारी । ज्ञानाअलि क्योंकर कहै पंगु मतिहारी ॥ पदराग सोरठ ॥ नृत्यत नटवर नटनागरि आगरि थिरकि थिरकि प्यारी । श्री रघुनन्दन निमिकुल नंदनि छाई छटा शरदनिशि चांदनि चन्द्राननि सारी । चंचल चरण लोल चित हेरनि भुज अंसनि करकंजनि फेरनि नवयौवन नारी । सुभगा सुखद सप्तस्वर गावैं कोउ सितार बहुयंत्र बजावैं ज्ञानाअलि बलिहारी ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ चारु सखिन मुख चंदनि चहुंकित बाहत रहे चबाइ चकोर ॥ कोकिल कलरव करहिं सिखहिं जनु कल किंकिणी नूपुरुन शोर । हरषित जाय सरयू तटराजैं रतन सिंहासन युगल किशोर । बिश्वनाथ सखियां तेहि अवसर चहुंकि भ्रमकिरहीं तेहि ठोर ॥

रामसखे० पद राग हमीर तिताला ॥ बैठे दोऊ शरद समय सरयू तट रघुनंदन सियप्यारी । बन प्रमोद नव सुमन कुंज सित मंडल मणि छबिकारी ॥ हीरनमय शिर क्रीट चांद्रिका मोतिन जरित काछनिसारी । बजत यंत्र सित नगन मढे मृदु नृत्यत तान सँभारी ॥ भोडल मिलि सित रची चांदनी श्वेतइ भोग

धरे रुचिकारी । राम सखे सित बनी कान्ति सब अमृत शशि द्युतिकारी ॥

देवस्वामीकृत पद राग सोरठ ॥ शरद में सियबर को शिंगार । निशिमें सब उपचार ॥ जैसी पूरण शरद चांदनी निरमल भो उजियार । तैसे छत्रचमरपट भूषण रचिये श्वेतैहार ॥ कस्तूरी केशर अंजन बिनु श्वेतै श्वेत प्रकार । शुद्ध सत्वगुण श्वेत शरद ऋतु यामें यतनो सार । चीनी दूध दही नरियर जल इनमें वही बिचार । मुक्ताहार कपूर आरती सोरठको उच्चार ॥ सिया राम तहँ पांसा खेलत याको ललित बिहार । सिया बिजयसो जगमंगलहैं राम बिजयउद्धार ॥

मधुरअली०पद ॥ रास क्रीड़ासनै शरदकी यामिनी सुखदाई । पूरण राका चन्द्र उदित भयो कुंज महल छबिछाई ॥ फूल बितान व्यजन बर भूषण राजत गुलम गेंदवाई । सीताराम तहां बनिबैठे मधुरअली आरती लै आई ॥

बिश्वनाथसिंह०पद॥ जलबिहार करन सरयूमें प्रविशे सुखमाहीं। दृगन छबि दरसिदरसि चरण मीन परसिपरसि सुखमें रही न तन नेकहु सुधि नाहीं ॥ छुवत भखन भभकि उभकि तियपियगर गहहिं ससकि उरसों उरमसकि सुछकि सुखछावैं । तहँ भल करि जलबिहार पहिरे पट परम प्यार आये पुनि निजअगार बिश्वनाथ भावैं १ यहि बिधि सुबिहार करत अवधि अवध मोद भरत तहां यकपाख टरत आयगै देवारी । दीप ठटनि अटनि अटनि दिपाति परे मणिन ठटनि भई छहरिछहरि छटनि अद्भुत उजियारी ॥ चहुँकित लखि परहिं ज्योति ऐसी तहँ सुछबि होति जोवत पुर परम ज्योति जनबहु बपुधारी । प्रमुदित निज नाथ साथ बारैं तिय दीपहाथ बिश्वनाथ सुछबि गाथ रहैं जन निहारी २ हरषित चहुँकित निकसहिं नारी । सारी श्याम सुभग तन सोहहिं मणिन भूषणनि धारी ॥ दीपहिं दीपति तिन

की चहुँकित लखी छबि मन बिश्वनाथ बिचारी । चकित चखन जनु चहति दिवारी यहिपुर बिपुल दिवारी ३ ॥

संग्रह०दोहा ॥ लसैउच्चआवास पै दीपावलीप्रकास । सुन्दरता अद्भुत लखी कहनर भरे हुलास ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागआसावरी॥ सांझसमय रघुबीरपुरीकी शोभा आजुबनी । ललितदीपमालिका बिलोकहिं हित करि अवधधनी ॥ फटिक भीति शिखरनिपर राजति कंचनदीप अनी । जनु अहिनाथ मिलनआये मणि शोभित सहसफनी ॥ प्रतिमंदिर कलशनिपर भ्राजहिं मणिगण द्युति अपनी । मानहुं बिपुलप्रगटि पुरलोहित पठइ दिये अवनी ॥ घर घर मंगलचार एकरस हरषित रंकगनी । तुलसीदास कल कीरति गावत जो क-लिमल शमनी ॥

संग्रह०दोहा ॥ राजभवन अरु नगरमें सरयूतट जलमाहिं । बिबिधभांति दीपावली जगमगात चहुँघाहिं ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ बैठे सिय पिय ऊंचि अटारी । सियसंग हिय हरषत बरषत सुख निरखत पुरछबिभारी॥ दम्पति सकल सुछबिकी संपति नूतद्यूत सुखदाई । खेलनलगे अनूपम सुख सों भुजभरि भेंटलगाई ॥ जीते हरि उर आनंद भरिकै भलीं चलीं मुसक्याते । अतिहि लजाति दीपतन ताकति सिया चो-रावति गातें ॥ दीपनि ढांकि जो पिय सुखपायो सो कवि कैसे गावै । बिश्वनाथ सुमिरत छबि अनुपम क्षण क्षण छकि छकि जावै १ सखियांआय प्रचारि सियाको बाजी फेरि लगाई । करि बहुछन्द फन्द रघुबरहीं दीनेउ हरषि हराई ॥ तियभूषण पोशाक नवाने पियको दिय पहिराई । बिश्वनाथ गये शयन भयन को अति अनुपम छबि छाई २ ॥

ज्ञानाअलि०पदरागभैरवी ॥ यामिनी यामरहीं बड़भागीं । श्रीजानकि सखि जागीं ॥ गायउठीं भैरव सुराग सब पिय प्यारी गुण पागीं । मुखमंजन अम्लान अंग अँग सजि शिंगार सोहागीं ॥ हिलि मिलि सर्वेश्वरी महल चलि जाय जाय पग लागीं । सेवा समय सजग ललनागण युगल केलि पट तागीं ॥ सखियन सहित चारु शीला अलि मंद मंद गति बागीं । जाय महल पहुंची ज्ञानाअलि उत्थापन पद रागीं १ जागी नृप नन्द चन्द छबि अमृत रसबोर ॥ अलिगण भीर अधीर दरश बिनु अरुण उदै भयो भोर । शशिकर हीन क्षीन तारागण गगन बिमल चहुं ओर ॥ सुनि उठिबैठि पियाप्यारी दोउ चितै कृपा दृगकोर । निरखि युगल छबि छकी छबीली लगन जगी जिय जोर ॥ जुरिआईं सुखसेज निकट अलि द्युतिदामिनि नहिं थोर । ज्ञानाअलि घन तड़ित घेरिज्यों नचत मुदित मनमोर २॥

रामसखेजी० पद ॥ राघव भोरहिं जागे नींद भरी अँखियन मन भावन । बैठे उठि फूलन शय्यापर कोटिन काम लजावन॥ मृदु मुसकात जमुहात सिया तन झुकि झुकि परत सुहावन। रामसखे यामधुर रूपलखि मोजिय अतिही जिवावन ॥

श्रीतुलसीदासजी०पद ॥ भोर जानकीजीवनजागे । सूत मागध प्रवीण बेणु बीणाध्वनि द्वार गायक सरस रागरागे॥ श्यामल सलोनेगात आलस बश जमुहात प्रिया प्रेम रसपागे । उनींदे लोचनचारु मुखसुखमा शिंगार हेरि हेरि हारे मार भूरिभागे ॥ सहज सुहाई छबिउपमा न लहै कबि मुदित बिलोकनलागे । तुलसीदास निशि अनूपरूप रहत प्रेम अनुरागे ॥

बिश्वनाथसिंह० सोरठा ॥ होत भोर सियराम जागे बैठे पलंग पर । दोऊ सुखमाधाम झुकि झुकि राजहिं नींद सों ॥ सियउर रघुबर राखि सियहु राखि रघुबरहि उर । खञ्जन मन अभि-

लखि दोऊ चले उठि पलँगते ॥ दोहा ॥ यहि बिधि आये बाहिरै किय प्रिय सखन प्रणाम । तिनहिं लखत मुसक्यात कछु डीठि कनौड़ी राम ॥ चौपाई ॥ भोर नहान गई परभातैं । सीय सखिन लगि तोरति गानैं ॥ मणि चौकी बिचित्र अति चारू । बैठी सिय लज्जित शिंगारू ॥ सुंदरि सखी दतून करावै । उपटन करत अंग छबि छावै ॥ पुनि बर अंग फुलेल लगाई । अंग अँगौछहिं अलि अनवाई ॥ चुवत अंग अलि बसन निचोवैं । सिय अँग तजत मनहुँ ये रोवैं ॥ करि शुभसीय रामको ध्यानै । पुनि दिय बिबिध भाँतिके दानै ॥

संग्रहक० ॥ सखियन सिय शृंगारकरायो । लखि छबि अलियन मन सुखपायो ॥ गई जानकी सासुन गेहू । करिसेवा उर परम सनेहू ॥ सिय कौशल्या मंदिर आई । चरण लागि बैठीसुखपाई ॥ दोहा ॥ आयसु पाई सासुको सिय आई निज धाम । बैठिझरोखे बाग दिश चामर ढारति बाम ॥

बिश्वनाथसिंह ॥ कीन दतून बैठि सिंहासन । लेपे अंगन तेल सुबासन ॥ मज्जन करन सरयु कहँ गये । सखन संग सुठि शोभन छये ॥ कीन बिनोद बिबिध बिधि जलकै । यकयक दै छीटे करतलकै ॥ प्रभुपद परसत अति सुखछाय । उछलत जल महँ मीन सुहाय ॥ जलते अधिकै मान सुपासू । जनु यह चहहिं रामसँग बासू ॥ पुनि पीतांबर पहिरि सोहाये । नित्य कर्म करि गृहकहँ आये ॥ जाय मातुपहँ कीन कलेऊ । अनुज सखन युत परम सनेऊ ॥ करि पोशक आभूषण पहिरे । सखन संग आये पुनि बहिरे ॥ सोरठा ॥ भूपतिके दरबार गये छबीलेचारिऊ सब बलि बलि सुखसार दशरथ यकटक तकिरहे ॥ दोहा ॥ पूतन करत प्रणाम नृप अनुपम लहि आनंद । बैठाये शिरसूंघिकै चारौ रघुकुल चंद ॥ सोरठा ॥ कछु करि तहँ दरबार आये रघुनन्दन अयन । निज निज सबैअगार गयेसखा परणामकरि ॥

संग्रहक०छंदचौबोला ॥ मणि गण जटित सुभग सिंहासन बैठे

सिय रघुराई । चारुशील अलियां सेवामहँ बैठेमन हरषाई ॥ नवयोबन सुखमाके सागर राम जानकी जोरी । निरखत युगल चंद मुख सखियां मानहु चंद्र चकोरी ॥ कंचन थार कटोरन व्यंजन सखियन धरे बनाई । सरयूजल निर्मलभरि झारी राम सिया ढिग आई ॥ बोली जेंवन समय भयोहै चलिये दंपति-प्यारे । सुनिकै बचन प्रेमरस साने भोजन भवन पधारे ॥

रामसखे०पद ॥ मिलिजेंवत पीतम राम सिया दोउ मंगलमोद बढ़ावैं हो । कौर परस्पर देत चंद मुख मंद मंद मुसक्यावैं हो ॥ भोजन बिबिध परोसत बिमला कमला व्यजन डुलावैं हो । शोभासिंधु कहि न परै कछु माधुरि कुंज सुहावैं हो ॥ चंद्रकला सखि झारि लिये कर सरयू जल अँचवावैं हो । रामसखे प्रभु थार प्रसादी रह्यो अवशेष सो पावैं हो १ अँचवनकरत रामसिय प्यारी । श्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जलझारी ॥ चंद्रावती खरी दर्पण लिये चंद्रकला सुकुमारी । सुभगा लिये बागो पीतमको सहजा लिये सियासारी ॥ करिअँचवन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी । रामसखे बलि दंपति छबिपर सुन्दर बदन निहारी २ ॥

देवस्वामी०पदरागधनाश्री ॥ मेरुसों सिंहासन यह रामराय रावरो । कंचनमय झलझलात महाप्रभन आवरो ॥ लाल हरित रतन जड़ित कतहुँ श्वेत झांवरो । मंगल बुध शुक्रबसे मनहुँ भानु डावरो ॥ श्वेतछत्र चंद्र निरखि उठत चित्तचावरो । आरति मिस भानु मनहुँ देइ रह्यो भांवरो ॥ तापर श्री महाराज लसत रूपसांवरो । जाहि देखि महादेव होइ रह्यो बावरो ॥

प्रेमसखी०कवित्त ॥ रतन सिंहासन हुताशनके अनुरूप शेष ना बखानिसकै जाके शतमाथहैं । सिद्धिन समेत फल चारि परे चारो ओर ध्याइ पाइ होत जीव तुरत सनाथहैं ॥ प्रेमसखी बीज मंत्र मणिसेजरेहैं जामें चारो वेद पायो जो कहत गुणगाथहैं ।

नाथनिको नाथ जो अनाथनिको नाथ आपु जानकी समेत जापै राजैं रघुनाथहैं ॥ गोरे श्याम अंग रति कोटिन अनंगसंग जाकी छबि देखि होत लज्जित बिचारेहैं । चंद कैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी नासिका सुहाई नैन जोर छोरवारेहैं ॥ ओठ अरुणारे तैसे कुंदसे दशन प्यारे ललित कपोलन पै कच घुँघुँरारे हैं । अंस भुज धारे दोऊ नील पीतपट धारे प्रेमसखी रामसिया जीवनहमारेहैं ॥ छप्पै ॥ मुकुटशीश नगजटित चंद्रिका अधिक सुहाई । कुटिल अलक झुकिरही कपोलनपर छबिछाई ॥ मंद मंद मुसुकात दोऊ चितवत तिरछो हैं । लटकन मन हरि लेत ललित अधरन परसोहैं ॥ प्रति अंग अंग शोभा अधिक प्रेम सखी हिय में रहै । मन मुदित होत गुड़ खाइ ज्यों गूंग स्वाद कैसे कहै ॥ दोहा ॥ दंपति छबि कछु मैं कही रही यथा मतिमोरि । प्रेमसखी अब कहत है सखी सखीन निहोरि ॥ सवैया ॥ छत्र बिराजत चन्द्रमा सों गहि चन्द्रकला कर आपु खरीहै । चौंरलिये कमला बिमला दोउ ढारतहैं ओसरी ओसरी है ॥ पास खड़ी सुभगा सुथरी बतियां कहती कछु पाइ परीहै । पान खवावत प्रेम सखी सियके पियको अनुराग भरी है ॥ कवित्त ॥ कामकी लतासी चपलासी काम अबलासी बिमलासी चारु जाकी चेरिन कि चेरी हैं । प्रेमसखी कैयो कोटि सुभगा समान सखी रंभासी गनावैं कौन वैसी बहुतेरी हैं ॥ प्रेम सों पगी हैं रसरूप उमगी हैं मानौं पन्नगी नगी हैं पांति पांति चहुं फेरी हैं । सौंजले खड़ी हैं सब अंग सुथरी हैं मानौं चित्रपूतरीहैं परिचारि सियकेरी हैं ॥ बीणाको बजावैं कोउ मीठे स्वर गावैं कोउ भावको बतावैं सब अंगनि नवाइकै । कोऊ तालधारी कोऊ लेत गति न्यारी न्यारी कोऊ सुकुमारी मुसुकात हाउभाइकै ॥ कोऊ मान कीन्हें कोऊ तन मन वारि दीन्हें कोऊ मुख देखैं कोऊ रहत लजाइकै । प्रेमसखी राम सिया बदन बिलोकि होत मनमें मुदित जैसे रंकनिधि पाइकै ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतपदरागकल्याण ॥ आजु रघुबीर छबिजाति नहिं कछु कही। सुभग सिंहासनासीन सीतारमनभुवन अभिराम बहुकाम शोभासही । चारु चामर ब्यजन छत्र मणिगण बिपुलदाम मुक्तावली ज्योति जगिमग रही॥ मनहुं राकेशसंग हंस उड़गण बरहि मिलनआये हृदयजानि निज नाथही। मुकुट सुंदरशिरसि भालबर तिलक भ्रूकुटिलकच कुंडलनि परमआभालही। मनहुं हरडर युगल मकरध्वजके मकरलागि श्रवणनि करत मेरकी बतकही॥ अरुण राजीवदल नयन करुणाअयन बदन सुखमासदन हास त्रयतापही। बिबिध कंकणहार उरसि गजमणिमाल मनहुं बगपांति युग मिलिचली जलदही॥ पीत निरमलचैल मनहुं मरकत शैलपृथुल दामिनि रहीछाइ तजि सहजही। ललित शायक चाप पीन भुजबल अतुल मनुजतन दनुजबन दहन मंडन मही॥ जासगुण रूप नहिं कलित निरगुन सगुन शंभु सनकादि शुक भक्ति दृढ़करगही। दासतुलसी रामचरण पंकजसदा बचन मन करमचहै प्रीतिनितनिरबही॥

कृपानिवास०पद ॥ सुभगसिंहासन आसन नवछबि नवलकिशोर किशोरी। राम श्यामघन मूरति मानौं तड़ित सिया तन गोरी॥ ललित बिभूषण लसनि बसनि तन उपमाबर टकटोरी। मनहुं सकल शुभचिंतक त्रिभुवन तिनकी आशउदोरी॥ सारी फरकर लै दृगसों दृग प्राण एक द्वै गोरी। नभपै पवन पवन ज्यों नभमें चंद्र चंद्रिका सोरी॥ गानकेलि कौतुक सखि उघटत रिझवत हेतु बिभोरी। मनहुं उभयरस सिंधु लहरसी लहरतिसुथल करेरी॥ लाल लड़ावत लाल लाड़िली लाड़पाल लड़कोरी।

पानिवास श्रीजानकीबल्लभ मोहिये तेन टरोरी॥ छन्द॥ जनकनंदनी जनककुंवरि बर जनकसुता सुकुमारी। जनक लड़ैति लाड़लड़ी श्रीजनककिशोरी प्यारी॥ जयति जानकी सियजू सीतानाम मैथिली गायो। रामप्रिया श्रीरामरमनी बर रामजीवन धन पायो॥ रामबल्लभा प्राणप्राणनी पटरानी सुखदानी। महल बिहारनि सुरति उदारनि सुखकारनि सबमानी॥ नवल किशोरी गोरी भोरी थोरी बय थुरबोली। नवयोबन नवबाला तरुणी नवला पुष्पनि तोली॥

पदरागआसावरीचौताल॥ सदा चिरंजीवो रंगभरी जोरी। सदा बिहार करौ रँगमंदिर रंगकिशोर किशोरी॥ सदासुहागलके अनुरागनि रंगे रहौ बड़भाग बढ़ोरी। पियके प्राण बसौ सिय सुंदरि सियमन श्याम बसोरी॥ पियकी चाह सुचातक लौं रहौ सियकी स्वाति बरसोरी। सियमुख चंद्रसुधा द्रवौ नित पियकी आंखि चकोरी। हमरे नैन प्राणकीसर्बसु अधिकसुखरस सरसोरी। कृपानिवास उपास महलकी टहल लगी सो लगोरी॥

पदरागजैतीगोरी॥ जयसीताबर राम जयति सुखसागर नागर प्यारी। जय गुणमाल विशाली प्रीतम सुरति बिहार बिहारी॥ जय रसमूल सुहाग रसीली मान्य रूप उजियारी। जयमुख चंद चकोर सांवरो कामिनि केलि अहारी॥ जय रसरहसि उदार निकारनि कोविद केलिकलारी। जय रस इच्छक अखंड बिनोदी संपति कोश उघारी॥ जय पिय नैन कमलके सरकल जीवन जीय जियारी। जय उरोज पंकज बन मधुकर भोगी अधर सुधारी॥ जय पिय मानस हंसनि बाला बिमल बिनोद अपारी। जय चितवनि सियस्वाति सुचातृक परम सुखासनधारी॥ जय बल्लभ रतिदानि सुहागिनि राग रँगीली भारी। जय सिय चोल अतोल बलाहक रसिक मयूर अधिकारी॥ जय सुखसेज हेज बरषावन सावन सुरति सुखारी। जय सिय सार सुप्यार पियासे पीवत तृपति न नारी॥ जय पिय प्राण प्रीति

प्रतिपालक मालक तन मन सारी । जय सिय संग अनंग बिलासी चपल चतुर सु खिलारी ॥ जयति प्रसाद अनादि केलि रस बश अहलाद उचारी । जय गुण राश सिया बल्लभ पर अलिनिवास बलिहारी ॥

संग्रह० दोहा ॥ परम उदार कृपानिधी राम सियाजी आप । ह्वैप्रसन्न बर दीजिये याचत राम प्रताप ॥ सिय बल्लभजू करि कृपा पुरवहु मम अभिलास । यह समाज युत उरसदन संतत करहु निवास॥ शारद चन्द्र बिलोकि कै ज्यों चकोर सुख पाय । त्यों सियबर तुव माधुरी मोमन रहे लुभाय ॥ हनुमत रूपलता गुरू सेवत सब सुखदानि । सुफल होय मन कामना अस वेदन की बानि ॥ सीताराम शरण बर शासन के अनुकूल । राम प्रताप प्रसंग यह लिखे सुखद रसमूल ॥ पंडित श्याम सुनाथ जू सुजन निरंजन लाल । कवि राधाबल्लभ सहित सम्मति दई बिशाल ॥ और अनेकहु संत बुध इन सबकेरि सहाय । सीताराम बिवाह बर संग्रह लियो बनाय ॥ कविताज्ञान न लेश मोहिं जोरि कहौं कर दोय । सियबर कृपा प्रभावते जो कुछ नीकी होय ॥ बनो न होय प्रसंग जहँ अरु ममचूक बिचारि । निज सदगुणते सुजन सब लीजिय ताहि सुधारि ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह
परमानंदत्रैलोक्यमंगलषट्ऋतुबिहार समाप्तम्
श्रीजानकीबल्लभजीकेअर्पण मस्तु॥

दोहा ॥ परम रम्य जयपुर नगर रामप्रताप निवास ।
बगरूके ठाकुर निकट मेरो है आवास ॥

अग्रदेवस्वामीकृतपदरागभैरवी ॥ श्रीमत अवधपुरीको ध्यान। मुनिजन जीवन प्रान ॥ कनकबरण जगमग तनमें जस चंदन की महकान। शुद्ध सत्व गुण शोभित अम्बर क्षीरसमुद्र समान ॥ शंख चक्र दोउकर कंठनमें सुमनमाल लहरान। पाप शमनहै शंख चक्र तौ देत तेज बल ज्ञान ॥ करुणा मैत्रीआदिक सखियां गावत मंगलगान। करुणानिधिकी करुणा मूरति रामचन्द्रकी जान ॥ जेहि सेवत ब्रह्मादि देव मुनि करि करि निज अस्थान। पुरी शिरोमणि पतित पावनी गावत वेद पुरान ॥ पद ॥ बन्दौं श्रीसरयूके चरण अशरणके जे शरन ॥ नखशिख प्रतिअंगन में झलकत तीरथगण आभरन। तक्षिणधार पाप नाशनको रघुबर असिकी ढरन ॥ करुणाबिंदु गिरा श्रीहरकी आंखिनसे दुख हरन। बिधि मानससरमें मेरुवत सो सरयू तारातरन ॥ सरसे मुनि बशिष्ठ लेइआये उत्तर कौशल थरन। बाशिष्ठी तेहिते यह गाई गंग भगीरथ बरन ॥ जाके अंदर राम बसत नित त्रिभुवन मंगल करन। देवमयी देवनकी जननी यम कांपत जेहिडरन ॥ पदरागजंगला ॥ सरयूरज बिरजकरत मनको। सेवतहीं तनको ॥ जो रस ज्ञानहुंमें नहिं सो रस परसत इन कनको। याकीअनुता प्रगट देखावत कोटिन ब्रह्मनको ॥ जाकोनाम रेतसो रेतत रेतन के बनको। बहुत तेजसी और निरोगी शरणागत जनको ॥ मन को रंजत प्रभु चरणनमें राग बढ़ावनको। ताते रज यह नाम सोहावन भ्रम भय भंजनको ॥ देव मुनिनके मनजनु छाये वोह रस पावनको। इनसे प्रेम नहीं तौ धिक धिक जग जीवनधनको ॥ पदरागखंमाच ॥ अवधि क्षेत्र शंभु कहा मच्छके अकार। श्रीसरयू मानहुं शृंगार तार हार ॥ सहसधार मच्छबद शीश गोपतार। जनम भवन हृदय ललित पोंछ सरग द्वार ॥ विद्या रविकुंड नयन महल रंगदार। सिद्धपीठ पीठ पक्ष पवनको कुमार ॥ आंखनके बिंदुको आंखही अगार। मच्छ अर्थ आंख महादेव को बिचार ॥ पदरागसोरठ ॥ बिरतिकी मूरति पवनकुमार। संतो

करहु बिचार । जनमतहीसे ब्रह्मचर्य ब्रत दल फल मूल अ-हार । कहांरहीं तव बिषयन पररति सदा यकंत बिहार । असन बसन को सुख न सहत नित बरषा घाम तुषार । राम च-रितके रसिक शिरोमणि रामनाम आधार । बिना अलंब नि-शंक निडर अतिगे भवसागर पार । रावण बन बिषयाबन ताको बरबस कीन उजार ॥ शूरबीर बिषयन से हारे कपि बिषयन को मार । महाबीर यहि हेतु देव यह बिदित सकल संसार ॥ पद रागमलार ॥ सावन नित संतनके धरमे । रति मति सियबर मे । नित बसंत नित होरी मंगल जैसी बस्ती तैसोइ जंगल दल बादल से जिनकेदंगल पगेरटनकी झरमे । सुकरम बीजन को बोवतहैं तन मन को नितही धोवतहैं वृथा न छिनहूं को खोवतहैं चारि पदारथ करमे ॥ रूखा सूखा पाय रहतहैं दुख सुख को सम जानि सहतहैं काहूसों कछु नाहिं चहतहैं मगन रामरस रसमे ॥ सिया राम को रूप निहारहिं सदाजीत पद कबहुँ न हारहिं इष्टदेवको जे बलिहारहिं लहरत माला गरमे॥ पदरागजंगला ॥ मतवारन से अरज यही । अपनेअपने इष्टनको तुम व्यापक मानतहौ कि नहीं ॥ व्यापक मानहु तो इष्टन में कतहुँ न बयर बिरोध चही ॥ नहिं व्यापक वहतौ वाहूमें जीव दशाही आयरही ॥ कानिर्गुण कासगुण मत में रहिहै एकै बात सही । सार भाग सबही को लीजे रससे तजिये छाछ मही ॥ बूसी बाद सार निज करनी बोल गये असतसार गही । देव मंत्र दमडीके कारण जिनबेचो कहि दही दही ॥ इतिश्रीदेवस्वामी कृतपद सम्पूर्णम् ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आ.ई,ई) के छापेख़ाने में छपी
अक्टूबर सन् १८८३ ई० ॥

इस पुस्तकका हक़तसनीफ़ महफ़ूज़है बहक नवलकिशोर प्रेस

विज्ञापनपत्र ॥

विचित्रचरित्र ॥

तयार है ! तयार है ! तयार है ! अब यह अपूर्व कथा विचित्र चरित्र नामी तयार है इसपुस्तक में १४४७ सफे हैं और आदि से अन्ततक प्रेम-बीर-शृंगार और करुणा आदि अनेक रसों से भरे हुए नानाप्रकारके छन्द आख्यानों से पूर्ण है मुख्य आशय इस पुस्तक का यहहै कि इस भरतखण्डमें एकसमय ऐसा होगया है कि उस समयमें सर्वत्र म्लेच्छोंका राज्य होगयाथा और वह म्लेच्छ ऐसे मायावी थे कि दूसरी पृथ्वी दूसरा आकाश दूसरा सूर्य और दूसरा चन्द्रमा माया बल से बना देते थे और अपने को ईश्वर समझते थे और संसारी मनुष्य भी उनको अपना ईश्वर सृष्टिकर्ता जानकर उनकी पूजा और उपासना ईश्वरके समान करते थे निदान ऐसा होगया था कि उस समय में संपूर्ण वेदमार्ग संसार से उठगये थे और जो सृष्टिकर्ता परमेश्वर है उसका कोई नामभी नहीं जानता था ऐसा कठिन समय प्राप्त होनेपर उस समय के महात्माओं ने सच्चिदानन्द ईश्वरसे इन म्लेच्छों के नाश होने की प्रार्थनाकी और उसके अनुसार एक शत्रुंजय नामी बड़ा हरिभक्त राजा उत्पन्नहुआ और उसने सहस्रों वर्ष युद्ध करके सब पृथ्वी के मायावी म्लेच्छों का नाश करके सन्मार्ग को स्थापित किया यह तो इस पुस्तकका तात्पर्याशय है और इसके अन्तर्गत जो कथा वर्णित हैं वह यहहैं १ माया से रचेहुए सहस्रोंदेश और पर्वतोंका वर्णन २ सहस्रों मायाकृत वन बाग उपवन और बाटिकाओं की शोभाका कथन ३ मायाकृत असंख्यदुर्ग प्रासाद मन्दिर नगर ग्राम और सभाओं की अद्भुत सुन्दरता का आख्यान ४ मायाकृत लाखोंनदी सरोवर और समुद्रों की शोभा की कथा ५ सहस्रों मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छियोंके मायाकृत स्वरूप और सामर्थ्यका निरूपण ६ शतशः मायाकृत युद्ध होनेकी कथा ७ नानाप्रकारके माया-

कृत अस्त्रशस्त्रोंका वर्णन ८ सहस्रों स्त्री और पुरुषोंकी नखशिख शोभा और शृंगार और उनके परस्पर प्रीतिमान् और आसक्त होनेकी कथाओंका कीर्त्तन ९ करोडों प्रपंच और छल रचना और बहुरूप धारण करने की विद्या के द्वारा म्लेच्छोंका विजय करना और और नानाप्रकार की सुन्दर शोभायमान और चित्त को प्रसन्न करनेवाली कथावर्णित हैं और ये उक्तआख्यान यथोचित रस सम्बन्धी नानाप्रकारके छन्दों से संपुटित हैं इस पुस्तककी पूरी पूरी प्रशंसा पढ़नेही से जानी जासक्तीहै परन्तु हम संक्षेपमात्र इतना कहसक्ते हैं कि स्वस्थताके समय को व्यतीत करने के लिये और इसके पढ़ने से चित्तको प्रसन्न और आह्लादित करनेके लिये यहपुस्तक अद्वितीय है और ऐसा अद्भुतहै कि हरप्रकारके व्यसनी मनुष्यके लिये उपयोगीहै हरभक्त इसको पढ़कर ईश्वर में दृढ़प्रीति और विश्वास करेंगे--शूरबीर इसके पाठसे बीररसमें छकित होजायँगे रसिकोंका चित्त इसके अवलोकन से प्रफुल्लित होजायगा बिरहियों को इसका पाठ प्रिय दर्शनकी समान सूचित होगा और ईश्वरीय बनस्पति रचना को अवलोकनकाव्यसन रखनेवालों को इसके पाठ में परम प्रीति उत्पन्न होगी॥

इस अपूर्व ग्रंथ को स्वदेश निवासी महज्जनों की प्रीति के निमित्त श्रीमद् भार्गवबंशावतंस श्रीयुतमुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने आगरा नगर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौड़बंशावतंस पंडित कुंजबिहारीलाल उपनाम कुंजलाल से रचना कराकर अपने निज नामांकित यन्त्रालयमें मुद्रित कराया है अब हमको आशा है कि हमारे भारतदेश निवासी इस मनोहर अपूर्व और अद्भुत ग्रंथको ले ले कर पढ़ें और इसके पाठ से परमानन्द प्राप्त करके हमको कृतार्थ करें॥

मनेजर नवलकिशोर
प्रेस लखनऊ

यहपुस्तक ६१ जुज़ ४ वर्क़कीहै क़ीमतफ़ीजिल्द ३) रु०हैपरंतु सौदागरोंकोअथवा औरभी बड़ीतादादके ख़रीदारोंको चाहिये कि दफ़र मतबासेख़तकिताबतकरें—